वेद प्रकाश शर्मा
बीवी का नशा
थ्रिलर उपन्यास
http://hindi4us.blogspot.in

थ्रिलर

बीवी का नशा

वेद प्रकाश शर्मा

बीवी का नशा

ISBN : 978-81-849-1084-1

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनाएं काल्पनिक हैं। किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कोई सम्बंध नहीं है। उपन्यास में स्थान आदि का वर्णन केवल कथ्य को विश्वसनीय बनाने के लिए किया गया है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है।

•
प्रकाशक
राजा पॉकेट बुक्स
330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611410, 27612036, 27612039
•
वितरक
राजा पॉकेट बुक्स
112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां,
दिल्ली-110006
फोन : 23251092, 23251109
•
मुद्रक
राजा ऑफसेट
1/51, ललिता पार्क
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

BIWI KA NASHA
VED PRAKASH SHARMA

मूल्य : अस्सी रुपए

"सुहागरात की नेकलेस संध्या को देते वक्त मैंने मजाक में उसकी कीमत पचास लाख बताई थी। सुबह को सच्चाई बताने का अवसर ही नहीं मिला, जब सोकर उठा तो पाया कि संध्या बेड पर नहीं बल्कि ड्राइंग रूम में है और कुछ देर पूर्व आई अपनी मम्मी और कुछ सहेलियों को गर्व के साथ इतरा-इतराकर नेकलेस के बारे में बता रही है।"

बीवी का नशा

वेद प्रकाश शर्मा

थ्रिलर उपन्यास

उन दिनों मैं 'कानून का बेटा' के क्लाईमैक्स से बुरी तरह जूझ रहा था जब संजय भारद्वाज मेरठ आया—रोडवेज पर बस से उतरते ही 'स्वामी पाड़ा' के लिये एक रिक्शा ली और इसके बाद '३१८ स्वामी पाड़ा' पर पहुंचा।

दोपहर का वक्त था।

मैं अपने छोटे-से कमरे में, छोटी-सी टेबल पर लिखने में तल्लीन था।

संजय का सामना 'बहादुर' से हुआ।

'बहादुर' जानता है कि जब मैं लिख रहा होऊं तो आगन्तुक को क्या जवाब देना है अतः उसने कह दिया—"बाबू जी शाम छः बजे के बाद मिल सकते हैं।"

संजय ने पूछा—"हैं नहीं क्या?"

"लिख रहे हैं।"

"अच्छा उन्हें छोड़ो, भाभी जी यानी उनकी 'मिसेज' को बुला दो जरा।"

बहादुर ने मैसेज मधु को दिया।

मधु दरवाजे पर पहुंची तो संजय को खड़ा देखते ही चौंक पड़ी—वह 'राजा पॉकेट बुक्स' के प्रकाशक के बेटे की पार्टी में संजय से मिल चुकी थी, बोली—"अरे, आप यहां भाई साहब?"

संजय ने हाथ जोड़कर नमस्ते की।

मधु ने भी हाथ जोड़ दिये।

मधु संजय को ऊपर ले आई—सीधा मेरे कमरे में और ढुका हुआ दरवाजा खुलते ही जब मैंने उस तरफ देखा तो संजय को देखते ही उछल पड़ा, मुंह से निकला—"अरे संजय, तुम?"

वह कुछ नहीं बोला।

बोलने का मौका मैंने दिया भी नहीं, इतने जबरदस्त झटके के साथ खड़े होकर उसे अपने गले लगाया कि कुर्सी उलट गयी—मेज पर पड़ी

बेजान वस्तुओं को भूकम्प का सामना करना पड़ा।

संजय को अपने यहां देखकर मैं बेहद खुश था।

'कानून का बेटा' का क्लाईमैक्स दिमाग से काफूर।

यहां यह स्पष्ट कर देना बेहद जरूरी है कि जिन दिनों मैं लिखता हूं उन दिनों अपने कमरे से बाहर की दुनिया से लगभग कट जाता हूं। अखबार पढ़ने तक का टाईम नहीं निकाल पाता।

अर्थात् इस बात का मुझे बिल्कुल 'इल्म' नहीं था कि पिछले हफ्ते संजय के साथ कितनी अनोखी, अनूठी, रोमांचकारी, उलझनभरी और दिलोदिमाग को हिला देने वाली दुर्घटना घटी है?

हां, उसके आने के ढंग और हुलिये ने मुझे उलझन में जरूर डाला था।

हाथ में कोई सूटकेस नहीं।

'शेव' बढ़ी हुई थी, कपड़े अस्त-व्यस्त—साफ नजर आ रहा था कि वह कम-से-कम एक हफ्ते से नहीं नहाया है।

आंखें सुर्ख होकर साफ-साफ चुगली खा रही थीं कि पिछ्ले कई दिन से सो भी नहीं सका है।

कहने का मतलब यह कि उसे उस अवस्था में देखकर मुझे 'विचित्र' सा तो जरूर लगा क्योंकि संजय हमेशा टाई-शाई लगाकर 'टंच' रहने वाला शख्स था किन्तु इस बारे में उसके आते ही सवाल ठोक देना मुनासिब नहीं था।

मधु नीचे जा चुकी थी।

शायद चाय बना रही होगी, वह जानती है कि किसी के आते ही सबसे पहले क्या करना है।

करिश्मा, गरिमा और खुशबू स्कूल गयी हुई थीं।

सो!

पानी लेकर बहादुर हाजिर हुआ।

जब वह पानी पी चुका तो मैंने पूछा—"और सुनाओ संजय, क्या लिख रहे हो आजकल?"

"कुछ नहीं।"

"क्यों...लेखक को कुछ-न-कुछ लिखते रहना चाहिये भाई।"

"मैं तुम्हारे पास एक इन्तहाई जरूरी काम से आया हूं वेद!"

"ऐसा क्या जरूरी काम है जिसके लिए जरा भी सब्र नहीं कर पा रहे हो? तुम्हें यहां पहुंचे दो मिनट से ज्यादा नहीं गुजरे हैं और लगे 'काम' की बात करने?"

संजय ने मेरे शब्दों पर ध्यान नहीं दिया, अपनी ही धुन में बोला वह—"मुझे विभा जिन्दल से मिलना है।"

"व...विभा?" मैं उछल पड़ा, दिल 'धक्क' से रह गया था।

"हां!" उसने कहा—"वही विभा जिन्दल जिसके बारे में तुमने अभी 'साढ़े तीन घण्टे' नामक उपन्यास में लिखा था। वह, जिससे अपनी स्टूडेन्ट लाईफ में तुम 'एकतरफा' मुहब्बत कर बैठे थे—मैं उस विभा जिन्दल से मिलना चाहता हूं जो 'जिन्दल पुरम्' की बहूरानी है। 'साढ़े तीन घण्टे' में जिसने अपने पति और ढेर-सारे लोगों के हत्यारे को बेनकाब किया था।"

हमेशा की तरह विभा जिन्दल का नाम जुबान पर आते ही मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा, गहराइयों से एक मीठी-सी कसक उठी—यह वह दर्द था जो हर शख्स को बड़ा प्यारा लगता है।

खुद को नियंत्रित करके मैंने पूछा—"तुम विभा से क्यों मिलना चाहते हो?"

"तुम्हारे ख्याल से वह बेहद-बेहद 'ब्रिलियेन्ट' है ना?"

"बेशक!" मैंने कहा—"अगर तुमने 'साढ़े तीन घण्टे' का जिक्र किया है तो जाहिर है कि मेरा यह उपन्यास तुमने पढ़ा है और अगर पढ़ा है तो 'विभा' के बारे में यह सवाल पूछना ही नहीं चाहिये—उसमें मैंने विभा की एक-एक 'एक्टिविटी', सोचने का तरीका और गुत्थियों को सुलझाने की उसकी कला का विस्तार से विवरण किया है—सारा उपन्यास विभा की खूबियों से भरा पड़ा है, तुमने पढ़ा ही होगा कि अपने पति का कत्ल होने के बाद उसने कैसे-कैसे कारनामे अंजाम दिये? कितने चालाक हत्यारे को सात तालों के अन्दर से निकालकर बेनकाब कर डाला।"

संजय गम्भीर स्वर में बोला—"मैं उपन्यास की नहीं वास्तविक जिन्दगी की बात कर रहा हूं वेद!"

"क्या मतलब?"

"मुमकिन है कि 'साढ़े तीन घण्टे' में तुमने विभा के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर लिख दिया हो। हम लेखक लोग ऐसा अक्सर...।"

"नहीं संजय।" मैंने उसकी बात काटकर कहा—"साढ़े तीन घण्टे की खासियत ही यह थी कि उसमें लिखा एक भी शब्द न काल्पनिक था और न ही बढ़ा-चढ़ाकर लिखा गया था—इसके बावजूद ज्यादातर पाठकों ने उसे मेरे काल्पनिक उपन्यासों से ज्यादा पसन्द किया। यह सच्चाई है दोस्त कि जिन्दलपुरम् में घटी विचित्र घटनायें मेरी कल्पनाओं से बाहर की चीज थीं।

"अगर तुम सच कह रहे हो, यदि वास्तव में विभा जिन्दल उतनी ही 'ब्रिलियेन्ट' है जितनी 'साढ़े तीन घण्टे' में दिखाई थी तो 'सच्चाई' को उजागर करने की वह मेरे लिए आखिरी उम्मीद है दोस्त!"

"कौन-सी सच्चाई?"

बड़े अजीब स्वर में कहा संजय ने—"सुनकर दहल उठोगे वेद!"

"ऐसा क्या हो गया है?"

कुछ कहने के लिये अभी संजय ने मुंह खोला ही था कि मुझे अपने ठीक सामने जीने की सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर 'शगुन' नजर आया।

मेरा दो वर्षीय बेटा।

वह सीढ़ियां चढ़ तो सकता है मगर उतर नहीं सकता। गिरने का डर रहता है—गिरने का डर तो चढ़ते वक्त भी रहता है और यही वजह है कि घर के सारे सदस्य उसके चौकीदार हैं, कड़ा पहरा रहता है मगर फिर भी सबको 'धता' बताकर यदा-कदा चढ़ ही जाता है।

मैंने ऊंची आवाज में पुकारा—"अरे बहादुर!"

"हां साब!" नीचे से बहादुर की आवाज आई।

"देखो...ये शगुन ऊपर चढ़ आया है।" मेरे इस वाक्य के खत्म होते-होते 'पट्ठा' उछलता-कूदता कमरे में आ गया और अपने फटे हुए जूते संजय को दिखाता हुआ बोला—"अंका जूता फत्त।"

संजय समझा नहीं कि वह क्या कह रहा है?

हां, शगुन को गोद में जरूर उठा लिया उसने।

मैंने हंसते हुए कहा—"ये तुम्हें बता रहा है कि इसका जूता फट गया है।"

"ओये-होये, हमारे बेटे को पापा फटा हुआ जूता पहनाते हैं—कोई बात नहीं, अंकल अपने बेटे के लिये नया जूता लायेगा।" कहने के साथ संजय ने शगुन के गाल पर चुम्बन जड़ दिया।

तभी उसे लेने आए बहादुर से मैंने कहा—"ठीक उसी तरह इसकी चौकसी बढ़ा दो, सुरक्षा-प्रबन्ध और कड़े कर दो जिस तरह पंजाब में कोई नई वारदात होने पर सरकार करती है।"

मेरा वाक्य सुनते ही संजय ठहाका लगाकर हंस पड़ा।

बहादुर शगुन को 'किडनैप' करके ले गया—किडनैप शब्द का इस्तेमाल इसलिए किया है क्योंकि उसकी गोद में शगुन यहीं रहने के लिए हाथ-पांव चला रहा था।

इधर, ठहाके के बाद संजय अचानक पुनः पहले की तरह गम्भीर हो गया था, बोला—"मैं हैरान हूं कि इस तरह ठहाका लगाकर हंस कैसे पड़ा?"

"क्यों?" मैंने पूछा—"हंसने पर पाबन्दी है क्या ?"

"मेरे हंसने पर पाबन्दी ही समझो दोस्त।"

अब।

मुझे गम्भीर हो जाना पड़ा, बड़ी अजीब-अजीब बातें कर रहा था संजय!

उसने विभा से मिलने की इच्छा जाहिर की थी, यह कहा था कि जो हुआ है उसे सुनकर मैं दहल उठूंगा—यहां तक कि अपने हंसने पर

पाबन्दी लगी बता रहा था—इन सब बातों से जाहिर था कि वह कोई उलझा हुआ और गम्भीर मसला लेकर मेरे पास आया है, अतः पूछा—"क्या बात है संजय, किस समस्या में घिरे हुए हो तुम?"

"मेरा दावा है वेद कि जैसी समस्या का शिकार इस वक्त मैं हूं वैसी समस्या किसी अन्य के जीवन में कभी नहीं आई होगी और मजे की बात ये है कि इस समस्या के तानेबाने अपने चारों तरफ मैंने खुद बुने हैं।"

"बताते क्यों नहीं यार कि हुआ क्या है?" मैं बेचैनी-भरे स्वर में कह उठा—"तुमने तो अपनी बातों से मुझे हलकान करके रख दिया।"

उसने सवाल किया—"दूसरे लोगों की तरह तुम भी मानते हो ना कि मुजरिम जब जुर्म करता है तो कोई-न-कोई ऐसी भूल-चूक या गलती जरूर कर बैठता है जिसके फलस्वरूप अंततः पकड़ा जाता है?"

"बिल्कुल मानता हूं।" मैंने अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा—"बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि 'सर्वमान्य सिद्धान्त है' ये—जुर्म, जुर्म ही होता है—उसे करते वक्त भले ही मुजरिम चाहे जितनी चालाकी का इस्तेमाल करे मगर कहीं-न-कहीं उससे 'चूक' हो ही जाती है।"

"संजय चैलेंजिंग मुस्कराहट के साथ बोला—"मैं तुम्हारे इस सिद्धान्त को बुरी तरह 'फ्लाप' कर चुका हूं।"

"नहीं।" मैंने सख्ती के साथ कहा—"यह सिद्धान्त फ्लाप' नहीं हो सकता।"

टूटे स्वर में कहा उसने—"हो चुका है दोस्त!"

"मैं नहीं मान सकता।" मैं अड़ गया—"हां, इतनी बात मान सकता हूं कि जो 'चूक' मुजरिम से हुई हो उसे 'इन्वेस्टीगेटर' पकड़ न पा रहे हों मगर 'चूक' हुई जरूर होगी।"

"उम्मीद तो मुझे भी यही है, इसी उम्मीद के भरोसे तुम्हारे पास आया हूं और इसी उम्मीद के बूते पर विभा जिन्दल से मिलना चाहता हूं।"

"हुआ क्या है?" सवाल करते वक्त मेरे मस्तक पर बल पड़ गए।

"मैंने एक हत्या कर दी है।"

"ह...हत्या?" मैं उछल पड़ा—"त...तुमने?"

"हां।"

"न...नहीं।" मेरे मुंह से चीख निकल गई—"तुम हत्या नहीं कर सकते संजय, बकवास कर रहे हो तुम।"

जवाब में उसके होंठों पर बेहद फीकी मुस्कान रेंग गई, बोला—"इसमें बाल बराबर भी शक नहीं है कि मैंने हत्या की है मगर समस्या यह नहीं है दोस्त।"

"फ...फिर—समस्या क्या है?" मैं अभी तक हकला रहा था।

"यह तो तुम मानते हो ना कि जुर्म करने से पहले और जुर्म करते वक्त प्रत्येक मुजरिम का भरपूर प्रयास रहता है कि उससे कोई ऐसी भूल-चूक या गलती न हो जिससे बाद में पकड़ा जा सके?"

"निःसन्देह हर मुजरिम का यही प्रयास रहता है मगर उसके मन्सूबे कभी पूरे नहीं होते संजय—घटनास्थल पर किसी 'धुरन्धर' और 'सुलझे हुए दिमाग' के 'इन्वेस्टीगेटर' के पहुंचते ही मुजरिम की 'प्लानिंग' रेत के घरौंदे की तरह 'धरधरा' कर धराशायी हो जाती है।"

"दुख की बात यही है कि मेरे मामले में ऐसा नहीं हुआ।"

"क्या मतलब?"

"मैंने भी उसी मानसिकता के साथ हत्या की जिस मानसिकता के साथ प्रत्येक मुजरिम करता है यानी ऐसा 'मास्टर प्लान' बनाया कि मैं कभी भी, किसी भी हालत में न पकड़ा जा सकूं—उसी 'मास्टर-पलान' पर अमल करके हत्या की—मैंने अपने चारों तरफ सबूत और शहादतों के धागों से बुनकर एक ऐसा जाल बिछा लिया कि दुनिया के माने हुए और धुरन्धर-से-धुरन्धर इन्वेस्टीगेटर्स की पूरी टीम भी मुझ तक न पहुंच सके—मैंने अपने लिए एक 'अभेद्य किला' बनाया था, ऐसा किला जिसकी दीवारें सबूत और शहादतों से 'गढ़ी' थीं—मैंने खुद को इस इच्छा के साथ इस 'अभेद्य किले' में बन्द कर लिया कि कभी पकड़ा नहीं जाना है मगर..."

"मगर?"

"ऊपर वाले ने कुछ ऐसा चक्कर चलाया कि आज मैं खुद, खुद को हत्यारा साबित करने के लिए बेताब हूं, मरा जा रहा हूं मगर कामयाब नहीं हो पा रहा।"

"क्या बक रहे हो तुम?"

"यह सच है वेद, इंसान की जिन्दगी में अक्सर ऐसी घटनायें घट जाती हैं जो उसकी आंखें खोल देती हैं—अपने द्वारा किए गए जुर्म को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने के लिए प्रेरित कर डालती हैं—यूं समझो कि मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है—आज मैं अपने द्वारा किए गए जुर्म को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करना चाहता हूं, उसकी सजा पाना चाहता हूं मगर समस्या ये है कि कोई मुझे गुनहगार मानने को तैयार नहीं है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि 'आज' अपने जुर्म को साबित करने के लिए मेरे पास कोई 'सबूत' नहीं है।"

"स...सबूत?"

"हां।" संजय के मुंह से गुर्राहट-सी निकली—"सबूत...वे सबूत,

हमारा कानून जिनका गुलाम है—तुम जानते हो कि अदालत मेरे यह 'कहने मात्र' से हत्यारा नहीं मान लेगी कि मैंने हत्या की है, वह मुझसे सबूत मांगेगी—मुझे साबित करना होगा कि मैं हत्यारा हूं।"

"अजीब बात कर रहे हो, अपने द्वारा किए गए जुर्म का सबूत नहीं है तुम्हारे पास?"

"नहीं है, यही तो मजे की बात है।"

"ऐसा नहीं हो सकता।" मैंने अविश्वसनीय स्वर में कहा—"तुमने कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी स्पॉट पर ऐसी भूल-चूक या 'मिस्टेक' जरूर की होगी जिसके बूते पर तुम्हें हत्यारा साबित किया जा सकता है—ऐसा कोई-न-कोई 'प्वाइंट' जरूर होगा। यह अलग बात है कि वह तुम्हारी नजरों में नहीं आ रहा है या तुम उस 'प्वाइंट' को नहीं पकड़ पा रहे हो।"

"मैं सारी वारदात बड़े-से-बड़े जासूस, न्यायाधीशों, पुलिस कमिश्नर, क्राईम-रिपोर्टर्स और धुरन्धर वकीलों को सुना चुका हूं मगर उनमें से कोई भी उस 'प्वाइंट' को नहीं खोज सका जिससे मुझे हत्यारा साबित किया जा सके।"

"मैं फिर भी नहीं मान सकता कि ऐसा कोई 'प्वाइंट' तुमसे छूटा ही नहीं होगा, भले ही चाहे वह जितना 'माईनर' हो मगर होगा जरूर।"

"इसी उम्मीद के साथ मैं विभा से मिलना चाहता हूं।" संजय कहता चला गया—"मैं उसे सारा किस्सा सुना दूंगा वेद—विवरण सहित बताऊंगा कि मैंने 'किस तरह' किस 'प्लॉन' के साथ हत्या की थी और तब...तब मैं उससे पूछंगा कि 'वह कौन-सा प्वाइंट' है जिससे मैं कोर्ट में हत्यारा साबित हो सकता हूं—अगर विभा ने भी शिकस्त मान ली, उसने भी पूरा किस्सा सुनने के बाद दूसरे लोगों की तरह कह दिया कि 'मुझे हत्यारा साबित करने वाला कोई प्वाइंट नहीं है' तो...तो मैं चीख-चीखकर कहूंगा कि कहां हैं वे धुरन्धर जो यह दावा पेश करते हैं कि मुजरिम से कोई-न-कोई भूल जरूर होती है'—ऐसे धुरन्धरों की धज्जियां उड़ाकर रख दूंगा मैं—...............—जो लोग उसके खिलाफ 'प्वाइंट' नहीं ढूंढ सकते जो खुद अपने द्वारा किए गए जुर्म की तफसील बयान कर रहा है वे लोग उस मुजरिम को क्या पकड़ेंगे, उस अपराधी के खिलाफ 'क्या प्वाइंट' ढूंढ सकेंगे जो हमेशा खुद को कानून से बचाने के लिए प्रयत्नशील रहता है?"

हैरत में डूबा मैं अवाक् मुद्रा में संजय के चेहरे को देखता रह गया।

बुरी तरह भभक रहा था वह।

मैं सचमुच दहल उठा। एक पल को तो भ्रम हुआ कि कहीं संजय पागल तो नहीं हो गया है?

संजय का किस्सा मुझे अपने अब तक के सभी उपन्यासों से ज्यादा

अनोखा, अनूठा और दिलचस्प लगा, बोला—'विभा जिन्दल निश्चय ही तुम्हारे बयान में से वह 'प्वाइंट' ढूंढ़ निकालेगी जिसकी तुम्हें तलाश है।"

"तो चलो।" वह व्यग्र हो उठा—"इसी वक्त जिन्दलपुरम् चलो वेद!"

"पहले तुम मुझे अपना किस्सा सुनाओ।"

"गाड़ी में सुना दूंगा, प्लीज....समय बरबाद मत करो।"

मेरे कुछ कहने से पहले ही चाय और नाश्ते के साथ मधु ने कमरे में कदम रखा।

□□□

हम अपनी गाड़ी से जिन्दलपुरम् के लिए रवाना हुए।

रास्ते में संजय ने अपने द्वारा किए गये जुर्म का विवरण सुनाया—मैं ध्यानपूर्वक, एक-एक प्वाइंट पर गौर करता हुआ सुन रहा था—कोशिश यह थी कि मैं ही वह प्वाइंट ढूंढ़ निकालूं जिसके बूते पर संजय को हत्यारा साबित किया जा सके मगर अन्त तक पहुंचते-पहुंचते मेरा दिमाग चकरा उठा।

खोपड़ी चकरघिन्नी बन गयी।

कहीं भी, एक भी तो लूज प्वॉइंट नजर नहीं आया मुझे।

मेरे प्रेरक पाठको,

अगले चैप्टर से मैं संजय द्वारा किए गए जुर्म का मुकम्मल ब्यौरा एक-एक प्वॉइंट के साथ कहानी के रूप में सिलसिलेवार आप लोगों के सामने रख रहा हूं—इस 'ऑफर' के साथ कि अगर आप उस 'प्वॉइंट' को खोज सकते हैं जो संजय को हत्यारा साबित कर सके तो खोजें मगर आपके पास केवल तब तक का समय है जब तक कि हम विभा जिन्दल के पास न पहुंच जाएं।

क्योंकि।

मुझे पूरा विश्वास है कि विभा उस प्वॉइंट को खोज निकालेगी।

अगर आप उससे पहले खोज सकते हैं तो खोजें मगर ध्यान रहे—एक-एक पंक्ति—एक-एक लफ्ज ध्यान से पढ़ने पर ही 'वह प्वॉइंट' मिल सकता है क्योंकि अगले दृश्य की पहली ही पंक्ति से एक योजना शुरू होगी, ऐसी योजना जो धीरे-धीरे परवान चढ़ती हुई अपने 'क्लाईमैक्स' पर पहुंचेगी और यह 'क्लाईमैक्स' उसी पंक्ति पर जाकर खत्म होगा जिसके तुरन्त बाद आप जिन्दलपुरम् की तरफ बढ़ रहे मुझसे और संजय से पुनः मिलेंगे अतः हमारे विभा के पास पहुंचने से पहले अपनी बुद्धि की परीक्षा खुद लें, खुद परखें कि आप कितने बुद्धिमान हैं?

□□□

वह बंगला दुल्हन की नानिन्द सजा हुआ था जिसके बाहर, फुटपाथ

पर दोनों तरफ दूर-दूर तक गाड़ियों की कतारें लगी थीं—हालत यह थी कि बड़ी मुश्किल से संजय ने अपनी गाड़ी पार्क की और लॉक करने के बाद बोला—"ऐसा लग रहा है जैसे शहर के सारे अमीर यहीं इक ट्ठा हो गए हों।"

"संध्या का पति शहर के नम्बर वन अमीरों में से एक है।" किरन ने कहा—"उसकी 'मैरिज-एनीवरसरी' पर सारे शहर के अमीर इकट्ठा नहीं होंगे तो क्या भिखारी आएंगे—भंवर शहर के अस्सी परसैन्ट पैट्रोल-पम्पों का मालिक है, विभिन्न शहरों में उसके दस पिक्चर-हॉल हैं—भट्टे और फार्म-हाउस आदि जाने क्या-क्या हैं?"

"तुमसे संध्या की दोस्ती कैसे हो गई?"

"कॉलिज में साथ पढ़ती थी, यूं तो हजारों लड़कियां साथ पढ़ती हैं मगर दोस्ती दो-चार से ही हो पाती है किन्तु हमारी दोस्ती दो-चार से भी नहीं थी, न संध्या की कोई और फ्रैन्ड थी न मेरी—हां, हम दोनों में ऐसी दोस्ती थी कि सारा कॉलेज ईर्ष्या करता था।"

वे बंगले के सजे हुए बाहरी द्वार पर पहुंचे।

लम्बे-चौड़े लॉन् में बने पंडाल से जोरदार म्यूजिक की आवाज आ रही थी। चल रहे गाने की मधुरता से स्पष्ट था कि 'प्रेम भाटिया एण्ड पार्टी' मेहमानों का मनोरंजन कर रही है।

द्वार 'क्रॉस' करने से पहले किरन ने अपनी सुराहीदार गर्दन में पड़ा सोने का नेकलेस सीधा किया, कलाइयों मे पड़ी सोने की चुड़ियों को निहारा—तगड़ी, हस्तबन्द, नथ और टीका दुरुस्त किए।

संजय ने उसकी यह अदा नोट की थी।

तब, जबकि वे पंडाल के द्वार पर पहुंचे।

मेहमानों का स्वागत करने के लिए वहां संध्या और भंवर स्वयं मौजूद थे।

किरन पर नजर पड़ते ही संध्या बेबाक अंदाज में चिल्ला उठी—"अरी, तू अब आई है—इतनी देर बाद?"

किरन को कुछ कहने का मौका नहीं मिला क्योंकि संध्या ने लपककर उसे गले लगा लिया था।

भंवर खूबसूरत नहीं था और संध्या भी सांवली थी, नाक-नक्श भी खास न थे।

मगर।

सोलह श्रृंगार, कम-से-कम दस हजार की साड़ी और सोने के गहनों ने उसे सुन्दर बना दिया था।

गले में एक नेकलेस था।

सम्पूर्ण गहनों के बीच वह ऐसा लग रहा था जैसे तारों के बीच चन्द्रमा—असंख्य हीरों से जड़ा दस झालरों वाला वह नेकलेस संध्या की

नाभि तक का था—नाभि के पास से चन्द्राकार गोलाई के साथ पुनः उसके काले कंठ की तरफ जा रहा था, इस नेकलेस के सामने अन्य गहने 'ठीकरे' से लगने लगे।

जाने क्यों संजय की दृष्टि उस पर चिपककर रह गई?

पार्टी चलती रही।

मेहमान आते-जाते रहे।

चलती पार्टी के दरम्यान वे कई बार संध्या और भंवर से अलग भी हुए, मिले भी परन्तु संजय की चोर-दृष्टि रह-रहकर नेकलेस को निहारती रही।

बारह बज गए।

संजय और किरन ने डिनर ले लिया।

अधिकांश मेहमान जा चुके थे, जब उन्होंने भंवर-दम्पत्ति से इजाजत चाही तो संध्या ने उनकी बात काट दी, एक न सुनी और रात के दो बजे तब विदा किया जब लगभग सभी मेहमान जा चुके थे—विदा होते वक्त संजय के दिमाग में वे कीटाणु घुस चुके थे जो किसी को भी बरबाद कर सकते हैं।

□□□

वह लाल रंग की मारुति थी, न आगे नम्बर प्लेट न पीछे।

वे कुल चार युवक थे, चारों के चेहरों पर नकाब—उस वक्त रात के पौने दो बजे थे और भंवर के बंगले के बाहर खड़ी एकमात्र फियेट को अपनी गाड़ी में बैठे-ही-बैठे यूं घूर रहे थे जैसे वह कोई हसीना हो, ड्राइविंग-सीट पर बैठे नकाबपोश ने कहा—"मेरे ख्याल से आज रात के लिए यही शिकार ठीक रहेगा।"

"मेरा ख्याल भी यही है।" दूसरे ने कहा।

"तो फिर यहां क्यों बैठे हो, अपने हिस्से का काम निपटाओ?"

"ओ०के०।" कहने के बाद वह मारुति से उतरा, फियेट के नजदीक पहुंचा और जाने क्या जादू किया उसने कि फियेट का लॉक खुल गया।

अन्दर प्रविष्ट होकर उसने लॉक पुनः लगा लिया, वह पिछली सीट और अगली सीट की पुश्त के बीच छुप गया।

कहा नहीं जा सकता कि उसे यह बात मालूम थी या नहीं कि यह फियेट फेमस उपन्यासकार संजय भारद्वाज की है।

□□□

गाड़ी स्टार्ट करके आगे बढ़ाते हुए संजय ने पूछा—"तुमने संध्या के नेकलेस पर ध्यान दिया किरन?"

"आज ही नहीं, मैं उस नेकलेस को पहले भी देख चुकी हूं।"

"पहले कब?"

"संध्या और भवर की शादी के अगले दिन, रिशेप्सन पर।"

"ओह।"

"संध्या ने मुझे बताया था कि उसका गोल्डन नाईट प्रेजेन्ट है।"

"यानी सुहागरात को भंवर ने भेंट दी थी?"

"हां।"

ड्राइविंग करते हुए संजय ने एक नजर किरन की बायीं तर्जनी में मौजूद हीरे की उस अंगूठी पर डाली जो उसने सुहागरात को, किरन को भेंट की थी। बोला—"तुम्हें वह नेकलेस कैसा लगता है?"

"बहुत अच्छा।"

सुनने के बाद संजय अचानक चुप हो गया। गाड़ी के अंदर सिर्फ इंजन की आवाज गूंज रही थी—कुछ देर तक किरन उसके बोलने की अपेक्षा करती रही मगर जब संजय को चुपचाप ड्राइविंग करते पाया तो स्वयं बोली—"तुम्हें कैसा लगा?"

"बहुत अच्छा लेकिन...।"

"लेकिन?"

"यह हकीकत है किरन कि वह नेकलेस संध्या की छोटी-सी और सांवली गर्दन में उतना नहीं जंचा जितना किसी गोरी और सुराहीदार गर्दन में जंचता।"

"ऐसी गर्दन कहां से लाओगे?"

"है मेरे पास।" कहने के साथ जो संजय ने किरन की गर्दन की तरफ देखा तो किरन के मस्तिष्क को झटका-सा लगा—अभी तक सारी वार्ता को वह हल्के-फुल्के ढंग से ले रही थी, मजाक समझ रही थी किन्तु यह महसूस करते ही उसके मुखड़े पर गम्भीरता छाती चली गई कि संजय बेहद गम्भीर है, बोली—"आखिर तुम कहना क्या चाहते हो?"

"इससे ज्यादा कुछ नहीं कि अगर तुम्हारे गले में भी एक वैसा ही नेकलेस पड़ा हो तो तुम्हारी खूबसूरती में चार-चांद लग जाएं।"

"सं...संजय।" किसी भयानक आशंका से किरन का लहजा कांप गया—"ऊट-पटांग बातें मत सोचो।"

"इसमें ऊंट-पटांग क्या है?"

"देखो संजय।" किरन उसे समझाने वाले भाव से बोली—'किसी की इतनी कीमती चीज देखकर हम उसकी प्रशंसा तो कर सकते हैं मगर उसे पाने के बारे में सोचना पागलपन है।"

"क्या कीमत है उसकी?"

"एक साल पहले संध्या के रिसेप्शन पर पूछी थी, तब उसने पचास लाख कहा था।"

"प...पचास लाख?" संजय हकला गया।

"अब तो और महंगा हो गया होगा।" किरन कहती चली गई—"वह हमारे बूते से बाहर की चीज है संजय और इंसान को ऐसी चीज हासिल

करने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए जो उसके बूते से बाहर हो।"

हालांकि कीमत सुनने के बाद संजय के हौसले खुद पस्त हो गए थे और किरन ने जो कुछ कहा था वह इसी इच्छा से कहा था कि वह वैसा नेकलेस उसे पहनाने की बात अपने दिमाग से निकाल दे परन्तु संजय को लगा कि वह उसकी खिल्ली उड़ा रही है, उस पर व्यंग्य कस रही है—उसे ऐसा भी लगा कि किरन उसे 'तुच्छ' समझ रही है, उसे एक अजीब-सी और ऐसी हीनता का आभास होता चला गया जिसका आभास कराने की वास्तव्र में किसी ने भी कोशिश नहीं की थी, थोड़े नाराजगी-भरे स्वर में पूछा उसने—"क्या तुम यह समझती हो कि वह मेरे बूते से बाहर है?"

"तुम्हारे नहीं संजय, मैंने 'हमारे' शब्द का इस्तेमाल किया था, वह हमारे बूते से बाहर की चीज है।"

"ऐसा कैसे कह सकती हो तुम?"

"उनमें और हममें बहुत फर्क है, भंवर की आमदनी के अनेक स्त्रोत हैं—शायद उसे खुद ठीक से मालूम नहीं होगा कि उसे कितनी आमदनी है जबकि यहां तो तुम रात-रातभर जागकर अपने दिमाग की नसों में दौड़ रहे खून को टाइपराइटर के माध्यम से कागजों पर उतारते हो तब कहीं जाकर गिने-चुने पैसे हाथ लगते हैं।"

"मेरे ख्याल से ऐसा नहीं है कि मैं वैसा नेकलेस तुम्हारे लिए नहीं बनवा सकता।" संजय कहता चला गया, "पचास लाख की ही तो बात है—जब मैं और बेहतर लिखूंगा तो मेरे उपन्यास की डिमांड और ज्यादा होगी, ज्यादा उपन्यास बिकेंगे तो प्रकाशक भी मुझे ज्यादा पैसा देगा और एक दिन मैं वैसे नेकलेस को हासिल करने में कामयाब हो जाऊंगा।"

हालांकि किरन का दिल चाहा कि वह कह दे कि उपन्यास चाहे कितने बिकने लगें, प्रकाशक चाहे जितना पैसा देने लगे मगर पचास लाख का 'अंक' तब भी उससे बहुत दूर रहेगा। किन्तु यह सब उसने कहा नहीं—यह सोचकर नहीं कहा कि ये शब्द संजय में निराशा भर देंगे और निराशा एक लाइलाज कुंठा को जन्म देती है अतः सम्भलकर बोली, "हां, यह बात तो ठीक है—कोशिश की जाये तो क्या नहीं किया जा सकता?"

"तुम्हारी दूध-सी गोरी और सुराहीदार पतली गर्दन में वैसा नेकलेस ठीक वैसे ही खिलेगा किरन जैसे चोली-दामन पर खिलती है—दरअसल कारीगर ने उसे बनाया ही तुम जैसी अप्सरा की कल्पना करके होगा—वैसे नेकलेस में तुम दूज का चांद-सी लगोगी, सौन्दर्य तुम्हें देखकर खुद शरमा जायेगा।" ड्राइविंग करते हुए संजय की आंखों में स्वर्णिम सपनों का सागर उमड़-सा पड़ा, वह कहता चला गया—"मैं

रात-दिन एक कर दूंगा, अच्छे-से-अच्छा लिखूंगा मगर तुम्हें वैसा नेकलेस पहनाकर रहूंगा—तुम बेहद-बेहद खूबसूरत लगोगी किरन, बोलो—क्या तुम मेरे द्वारा इतनी मेहनत के बाद हासिल किए गये नेकलेस को नहीं पहनोगी?"

किरन को लगा कि शायद यह फितूर ही अपने काम की तरफ से उदासीन हो चले संजय को सही मार्ग पर लाने का कारण बनने जा रहा है अतः बोली, "पहनूंगी क्यों नहीं? जिस चीज को हासिल करने के लिए तुम इतनी मेहनत करोगे उसे तो मैं इतरा-इतराकर पहनूंगी।"

"वैरी गुड किरन! मैं तुम्हारे मुंह से इन्हीं शब्दों को सुनने का तलबगार था।" कहीं खोया-सा संजय कहता चला गया—"अब देखना, मैं कितनी मेहनत करूंगा, एक-एक उपन्यास कितनी लगन से लिखूंगा—घर पहुंचने के बाद से मेरा हर लम्हा बेशकीमती होगा, हर क्षण मेरे कदम नेकलेस की तरफ बढ़ेंगे...।"

"मगर तू घर नहीं पहुंचेगा बेटे!" चलती गाड़ी के अंदर एक तीसरी आवाज उभरी।

पति-पत्नी चौंके।

मगर।

अभी ठीक से कुछ समझ नहीं पाये थे कि एक व्यक्ति अपने हाथ में मौजूद रिवॉल्वर की नाल किरन की कनपटी से सटाता हुआ गुर्राया—"अगर जरा भी चालाकी की तो गोली मार दूंगा।"

□□□

किरन को सांप सूंघ गया।

संजय इस बुरी तरह हड़बड़ाया कि गाड़ी सड़क पर मदमस्त शराबी के समान लड़खड़ा उठी।

वह गुर्राया—"गाड़ी सम्भालो संजय बाबू, वरना अपनी इस प्यारी-प्यारी बीवी के साथ तुम भी दुनिया से कूच कर जाओगे।"

संजय ने खुद को बड़ी मुश्किल से सम्भाला।

गाड़ी की स्पीड स्वतः कम होती चली गई।

"स्पीड कम मत करो।" वह पुनः गुर्राया—"गाड़ी को पहले जैसी रफ्तार पर चलने दो।"

संजय के पैर ने एक्सीलेटर पर कुछ इस तरह दबाव बढ़ाया जैसे रिवॉल्वरधारी के शब्द उसकी ताकत थे—स्पीड बढ़ गयी, गाड़ी अब पूरी तरह संजय के काबू में थी।

परन्तु।

दिमाग में सांय-सांय हो रही थी।

बैंक व्यू मिरर की मदद से वह देख चुका था कि रिवॉल्वरधारी के चेहरे पर नकाब है, हाथों में दस्ताने—जबरदस्त कोशिश के बाद वह

बड़ी मुश्किल से पूछा सका—"क...कौन हो तुम?"

"तुम्हारी तरह अपनी बीवी का एक दीवाना।" नकाबपोश ने मजाक किया।

"य...यहां—हमारी गाड़ी में कैसे पहुंच गए?"

"फियेट का लॉक मैं पांच पैसे के एक सिक्के से खोल लेता हूं।"

"ल...लेकिन।"

"मैं तुम्हारी गाड़ी में तुम्हें अपना इण्टरव्यू देने के लिए नहीं छुपा था बेटे!" संजय के सवालों के सिलसिले को खत्म करने के बाद वह कहता चला गया—"मुझे नहीं मालूम कि तुम अपनी बीवी को कौन-सा नेकलेस पहनाना चाहते हो ? हां —इतना जानता हूं कि जो जेवरात तुम्हारी बीवी ने पहन रखे हैं वे मेरी बीवी के जिस्म पर इससे बेहतर लगेंगे।"

संजय की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

किरन स्टेचू के मानिन्द बैठी थी, मानो पलकें तक न झपक पाई हों।

"सुना नहीं तुमने?" उसने रिवॉल्वर की नाल से किरन के सिर को टहोका—"जेवर उतारने शुरू करो और तुम चुपचाप गाड़ी चलाते रहो मिस्टर संजय—अगर जरा भी चालाकी की तो अपनी इस खूबसूरत बीवी से हाथ धो बैठोगे। मुझे अकेला मत समझना—पीछे एक गाड़ी आ रही है, उसमें मेरे तीन साथी और हैं।"

संजय की रही-सही हिम्मत भी जवाब दे गई।

मुंह से बोल न फूटा।

पीछे आ रही गाड़ी की हैडलाइट काफी देर से उसकी निगाह में थी और उसने सोचा था कि शायद उससे कोई मदद मिल सके परन्तु यह सुनने के बाद तो उसके हौसले ही पस्त हो गए कि उस गाड़ी में इसी लुटेरे के साथी हैं। वह समझ गया कि लुटेरों ने योजना बनाकर उन्हें घेरा है।

सड़क पर दूर-दूर तक कोई अन्य वाहन नहीं था।

"सबसे पहले गले में पड़ा नेकलेस उतारकर मेरे हवाले करो।" नकाबपोश का स्वर बेहद कठोर था—"उसके बाद अंगूठी, टीका, झुमके, नथ, हस्तबन्द और तगड़ी...जल्दी करो।"

किरन ने सहमी नजरों से संजय की तरफ देखा।

संजय हालात को काफी हद तक समझ चुका था, बोला—"वही करो किरन, जो यह कहे।"

"वैरी गुड, इसे कहते हैं समझदारी।" नकाबपोश ने चटखारा लिया—"जान है जो जहान है, नेकलेस मेरे हवाले करो किरन देवी और भगवान से दुआ करो कि संजय बाबू जिन्दा रहें, अगर ये रहे तो इस किस्म के जाने कितने जेवर तुम फिर पहन लोगी।"

किरन के मुंह से बोल न फूटा।

मारे गुस्से के संजय पागल हुआ जा रहा था मगर कुछ कर नहीं सकता था—रिवॉल्वर अगर खुद उसकी कनपटी पर रखा होता तो शायद वह कोई प्रयास करता किन्तु हालात उलट थे, किरन के जीवन का रिस्क वह नहीं ले सकता था।

सो।

गाड़ी चलती रही।

किरन के जिस्म से जेवर उतरते रहे।

अपना आतंक निरन्तर बनाए रखने के लिए नकाबपोश बीच-बीच में उन्हें धमकाता रहा, किरन का अंतिम गहना अपनी जेब में ठूंसने के बाद उसने संजय से कहा—"गाड़ी रोको।"

संजय का पैर एकदम ब्रेक पर पहुंच गया।

तीव्र चरमराहट के साथ गाड़ी रुक गई और मुश्किल से तीन मिनट बाद पीछे वाली गाड़ी भी ब्रैकों की चरमराहट के साथ उनकी गाड़ी के ठीक बराबर में रुकी।

मारुति की ड्राइविंग-सीट से झांकते हुए एक नकाबपोश ने पूछा—"काम हो गया नम्बर सेविन?"

"यस बॉस।" संजय की गाड़ी में मौजूद नकाबपोश ने कहा।

मारुति की पिछली सीट से कहा गया—"आ जाओ।"

नम्बर सेविन का हाथ फियेट के पिछले दरवाजे के 'क्लोजर' की तरफ बढ़ा ही था कि बॉस गुर्राया,"ठहरो।"

नम्बर सेविन ठिठक गया।

मारुति की ड्राइविंग-सीट पर बैठे बॉस की नजरें किरन पर स्थिर थीं। मुंह से वासनामयी स्वर निकला—"जो माल तुम्हारे हाथ लगा वह तो लगा ही होगा नम्बर सेविन, मगर माल ये भी अच्छा है।"

"ज...जी?"

"इसे गाड़ी से उतार लो।"

"न...नहीं...नहीं।" किरन चीख पड़ी।

"खामोश।" नम्बर सेविन ने रिवॉल्वर से उसके सिर को टोहका—"शोर मचाने की कोशिश मत करो।"

मारुति के दरवाजे खुले।

आनन-फानन में फियेट को तीनों नकाबपोशों ने घेर लिया। स्वयं बॉस संजय के सिर पर सवार था, अपने हाथ में दबा रिवॉल्वर उसकी कनपटी से सटाता हुआ गुर्राया—जिन्दा रहना चाहते हो तो चुपचाप बैठे रहो।"

"म...मगर सारे गहने तो तुम ले चुके हो, अब क्या चाहते हो?"

"सबसे खूबसूरत गहना तो तुम्हारी बीवी है बेटे, उसे चाहते हैं हम।"

संजय के होश उड़ गये।

नम्बर सेविन गुर्राया—"तुम हमें रोक नहीं सकते मिस्टर संजय क्योंकि जो हमें करना है उसे तुम्हें गोली मारने के बाद भी कर सकते हैं।"

संजय का दिमाग जाम होकर रह गया था।

तभी, एक अन्य नकाबपोश ने बाहर से फियेट का दरवाजा खोलकर किरन से कहा—"चल, बाहर निकल!"

"नहीं।" क़िरन चीख पड़ी—"मैं बाहर नहीं निकलूंगी।"

"ऐसे नहीं निकलेगी मेरी रानी तो हम गोद में उठाकर निकाल लेंगे।" कहने के साथ उसने दोनों हाथ गाड़ी के अंदर डाले और किरन को पकड़कर बाहर खींच लिया।

"बचाओ...बचाओ...मुझे इन दरिन्दों से बचाओ संजय।" किरन चीख पड़ी।

वह लगातार चीख रही थी।

संजय को पुकार रही थी, गुहार कर रही थी।

और।

उन चीखों ने संजय के समूचे जिस्म में बिजली-सी दौड़ा दी।

सोचने-समझने की शक्ति लुप्त हो चुकी थी—इस वक्त उसके समूचे अस्तित्व में सिर्फ-और-सिर्फ इस अहसास की बिजली कौंध रही थी कि किरन मदद के लिए चिल्ला रही है।

सो।

उसने परवाह नहीं की कि बॉस के रिवॉल्वर से निकली गोली उसके सिर को तरबूज बना सकती है।

जिस वक्त दो नकाबपोश चीखती-चिल्लाती और प्रतिरोध करती किरन को मारुति की पिछली सीट पर ठूंसने का प्रयत्न कर रहे थे ठीक उस वक्त संजय ने एक झटके से अपने साईड वाला दरवाजा खोला।

दरवाजे की चोट जिस्म पर पड़ते ही बॉस रिवॉल्वर सहित सड़क पर जा गिरा।

संजय ने गाड़ी एक झटके से आगे बढ़ाई।

उस वक्त नम्बर सेविन अपनी साईड का दरवाजा खोलकर फियेट से बाहर निकलने का प्रयास कर रहा था—तीव्र झटका लगने का अंजाम यू हुआ कि वह मुंह के बल सड़क पर जा गिरा।

परन्तु संजय को होश नहीं था कि वह क्या कर रहा है।

वह अपनी गाड़ी को टर्न देकर मारुति के सामने अड़ा देना चाहता था मगर इस इरादे पर उस वक्त पानी फिर गया जब एक झटका खाकर गाड़ी बन्द हो गयी—शायद हड़बड़ाहट के कारण क्लच और एक्सीलेटर का तारतम्य गड़बड़ा गया था।

संजय के पास गाड़ी को पुनः स्टार्ट करने का समय नहीं था।

हालांकि वह काफी तेजी से दरवाजा खोलकर बाहर निकला किन्तु तब तक हाथ में रिवॉल्वर लिए बॉस अपने उन दोनों चमचों की मदद के लिए मारुति के नजदीक पहुंच चुका था जो किरन को अपनी गाड़ी में ठूंसने के लिए जूझ रहे थे।

अब...संजय को किसी अंजाम की परवाह नहीं थी।

वह निहत्था ही उन पर झपट पड़ा।

गुत्थम-गुत्था हो गया।

संयोग से तभी वे सब एक ट्रक की हैडलाईट से नहा गये।

ट्रक करीब बीस मीटर दूर, सामने वाले मोड़ से प्रकट हुआ था।

नम्बर सेविन चीख पड़ा—"भागो बॉस, ट्रक आ रहा है।"

संजय का हौसला कुछ और बढ़ गया, वह उस नकाबपोश के ऊपर चढ़ बैठा जो इस वक्त उसके कब्जे में था—नम्बर सेविन और चौथा नकाबपोश गाड़ी की तरफ लपके।

ट्रक बेहद नजदीक आ चुका था।

संजय की गिरफ्त में फंसे नकाबपोश की तरह बॉस भी दौड़कर मारुति में सवार होने के लिए मरा जा रहा था मगर किरन चीचड़ी की तरह उससे चिपटी हुई थी, वह चीखा—"म...मुझे मुझे छोड़ दे हरामजादी...छोड़ मुझे।"

परन्तु किरन ने उसे कसकर पकड़ लिया।

ट्रक रुक चुका था, उसकी ड्राइविंग-सीट से कोई चिल्लया—"ठहरो सालो, मैं आ रहा हूं।"

और।

घबराकर बॉस ने गोली चला दी।

गोली की आवाज के साथ किरन के मुंह से निकलने वाली चीख फिजा में दूर-दूर तक गूंज गई, अपने शिकार को दबोचे संजय ने जब उस दिशा में देखा तो किरन को कटे वृक्ष की तरह सड़क पर गिरती पाकर पूरी शक्ति से चीख पड़ा—"क...किरन!"

वह उसकी तरफ लपका।

उसका शिकार अपने बॉस की तरह मारुति की तरफ।

उधर ट्रक से ड्राइवर और उसका हैल्पर कूदे इधर मारुति एक झटके से आगे बढ़ गयी—बॉस और उसके तीन चमचे उसमें सवार हो चुके थे—ड्राइवर और हैल्पर ने निरन्तर दूर होती मारुति का नम्बर पढ़ने की चेष्टा की परन्तु उन्हें नम्बर-प्लेट नजर नहीं आई।

और संजय।

इस वक्त उसे किरन के अलावा किसी की परवाह नहीं थी, उसके जिस्म को झिझोड़ता हुआ वह लगातार चिल्ला रहा था—"किरन...किरन...क्या हुआ तुम्हें?"

ड्राइवर और हैल्पर दौड़कर उसके नजदीक पहुंचे, ड्राइवर ने उसकी नब्ज टटोली और उत्तेजित स्वर में बोला —"अभी सिर्फ बेहोश है, इसे फौरन डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए।"

पलक झपकते ही संजय ने किरन को गोद में उठा लिया और अपनी गाड़ी की तरफ लपका—ड्राइवर और हैल्पर का धन्यवाद अदा करने का उसे होश न था—उनसे एक भी बात किए बिना संजय ने किरन के बेहोश जिस्म को गाड़ी की अगली सीट पर डाला और खुद झपटकर ड्राइविंग सीट पर बैठा।

इसके बाद।

फियेट रिवॉल्वर से निकली गोली जैसी रफ्तार के साथ ड्राइवर और हैल्पर से दूर होती चली गयी।

□□□

ऑपरेशन थियेटर के बाहर पगलाया-सा घूम रहा संजय दरवाजा खुलते ही डॉक्टर की तरफ लपका। सवालों की झड़ी लगा दी उसने—"क्या हुआ डॉक्टर, किरन ठीक तो है न, उसे किसी चीज की जरूरत तो नहीं है?"

"नहीं।"

"उसे जिस चीज की जरूरत हो, आप मुझसे कहें—मैं फौरन, इसी वक्त मुहैया कर सकता हूं—पैसे की कोई प्रॉब्लम नहीं है, उसके लिए मैं अपनी जान भी दे सकता हूं।"

"नहीं-नहीं, इतने मत घबराइये मिस्टर संजय।" उसके उतावलेपन पर मुस्कराते हुए डॉक्टर ने कहा—"आपकी पत्नी बिल्कुल ठीक है, जरा भी सीरियस नहीं है—खुद उनका और आपका भाग्य अच्छा था कि जब गोली लगी तब रिवॉल्वर का रुख आपकी पत्नी के पेट की तरफ सीधा न होकर तिरछा था यानी गोली सीधी पेट में नहीं धंसी बल्कि तिरछी होकर केवल गोश्त में अटककर रह गयी। अगर सीधी लगती तो पसलियों को तोड़ सकती थी।"

"आपने गोली तो निकाल दी है ना?"

"जी हां, गोली निकाल दी है और ऐसा इन्तजाम भी कर दिया है कि उसका जहर न फैल पाए—अभी बेहोश है पर खतरे से पूरी तरह बाहर—कुछ देर बाद होश में आ जायेगी।"

"थैंक्यू...थैंक्यू वैरी मच डॉक्टर।"

तभी, गैलरी के एक छोर पर पदचाप उभरी।

दोनों ने एक साथ उधर देखा।

उनमें से दो को संजय देखते ही पहचान गया, एक ट्रक ड्राइवर था दूसरा हैल्पर—उनके साथ एक पुलिस इंस्पेक्टर और दो सिपाही थे।

इंस्पेक्टर मोटा और गुड्डा था।

एकदम काला।

इतना ज्यादा गुड्डा था वह कि संजय गारण्टी से कह सकता था कि अगर उसे सामान्य कुर्सी पर बैठाया जाए पांव तो जमीन पर नहीं टिकेंगे।

वर्दी उसके जिस्म पर कुछ जंच नहीं रही थी।

बैल्ट, बाहर को निकली हुई तोंद से नीचे की तरफ फैली जा रही थी।

उनके देखते-ही-देखते यह कारवां नजदीक आ गया।

कोयले जैसे काले इंस्पेक्टर की गंदली-सी आंखें संजय और सिर्फ संजय को घूर रही थीं, उस वक्त भी जब डॉक्टर से हाथ मिलाते हुए उसने कहा—"पुलिस स्टेशन फोन करने के लिए धन्यवाद डॉक्टर!"

डॉक्टर ने कहा—"यह तो मेरी ड्यूटी थी।"

परन्तु।

काले चेहरे पर ऐसा कोई भाव नहीं था जैसे उसने डॉक्टर के शब्द सुने हों—निरन्तर संजय को ही घूर रहा था वह जबकि संजय की समझ में उसकी इस 'कहरभरी' नजर का कोई कारण नजर नहीं आ रहा था—हां, उसे यह इल्म जरूर हुआ कि अगर यह इंस्पेक्टर इस नजर से मुजरिम को घूर ले तो निश्चय ही मुजरिम के तिरपन कांप जायें।

तनावपूर्ण खामोशी के बाद उसने हाथ संजय की तरफ बढ़ाते हुए कहा—"मुझे इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम कहते हैं।"

"त...त्रिवेन्द्रन?" संजय उछल पड़ा—"क...क्या तुम वही त्रिवेन्द्रम हो जिसका नाम लगभग रोज अखबारों में छपता है, जिसे 'जटिलतम' केसों की बखिया उधेड़ने का मास्टर कहा जाता है?"

"मैंने बहुत ढूंढा।" उसने अजीब स्वर में कहा—"मगर पुलिस विभाग में अभी तक दूसरा त्रिवेन्द्रम नहीं मिला!"

"य...यानी तुम वही त्रिवेन्द्रम हो?"

उसने उसी मुद्रा में कहा—"मैंने आपकी तरफ हाथ बढ़ा रखा है।"

"ओह, सॉरी!" संजय ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा—"मुझे संजय कहते हैं, संजय भारद्वाज!"

"ट्रक का ड्राइवर मेरे पास थाने पहुंचा—उसने मुझे वह सब बताया जो देखा था, तभी डॉक्टर साहब ने फोन पर सूचना दी कि यहां एक पुलिस केस आया हैं—मैं समझ गया कि दोनों मामले एक ही हैं।"

"जरूर समझ गए होंगे, तुम्हारी तारीफ मैंने सुनी है।"

"क्या हुआ था?"

"ज...जी?"

उसने थोड़े कठोर स्वर में पूछा—"शुरू से बताओ, क्या हुआ था?"

संजय ने बताना शुरू किया, सबकुछ सच-सच बताता चला गया

वह, ध्यानपूर्वक सुनने के बाद त्रिवेन्द्रम बोला—"यानी पहले उनकी योजना सिर्फ तुम्हारी बीवी के गहने लूटने की थी—वह काम उन्होंने सफलतापूर्वक कर भी लिया। घपला तब हुआ जब उनके बॉस की नीयत तुम्हारी बीवी पर खराब हुई।"

"ऐसा ही लगता है।"

"यह ड्रामा क्यों नहीं हो सकता?"

"ड...ड्रामा?"

"हां।" त्रिवेन्द्रम गुर्रा उठा—"तुम्हारे द्वारा रचा गया ड्रामा।"

"म...मेरे द्वारा?" संजय हकला गया—"क्या बात कर रहे हो इंस्पेक्टर।"

"बको मत!" त्रिवेन्द्रम इतनी जोर से दहाड़ा कि संजय की अन्तरात्मा तक दहल उठी, वह कहता चला गया—"आजकल ऐसा बहुत होने लगा है—लोग अपनी बीवी को छोड़कर दूसरी औरतों से इश्क लड़ाने लगते हैं और फिर उसके लिए बीवी की हत्या कर देते हैं—विद्या जैन हत्याकाण्ड में भी तो यही हुआ था, डॉक्टर जैन ने अपनी प्रेमिका को पत्नी बनाने के लिए वर्तमान पत्नी को अपने सामने दो हत्यारों से कत्ल करवा डाला—होशियारी यह बरती कि अपने किराए के गुण्डों से खुद को भी घायल करा लिया ताकि पुलिस को शक न हो पाए—क्या तुमने भी ऐसा ही नहीं किया हो सकता?"

"नहीं इंस्पेक्टर!" संजय से पहले डॉक्टर बोल पड़ा—"ऐसा नहीं हो सकता, कम-से-कम मिस्टर संजय के बारे में ऐसी कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि जब से ये अपनी जख्मी बीवी को लाए हैं और जो कुछ इन्होंने किया और कहा है उसे देख और सुनकर मैं गारन्टी से कह सकता हूं कि मिस्टर संजय अपनी बीवी को सामान्य व्यक्ति से ज्यादा प्यार करते हैं।"

"तुम नहीं समझोगे डॉक्टर।" त्रिवेन्द्रम ने कहा—"ऐसे प्लान रचने वाले लोग एक्टिंग के मामले में दिलीप कुमार को पछाड़ने की क्षमता रखते हैं।"

डॉक्टर चुप हो गया।

मारे गुस्से के संजय का सारा जिस्म कांप रहा था, खुद को बड़ी मुश्किल से सम्भाले था वह जबकि इस बारे त्रिवेंद्रम ने सीधा उससे सवाल किया—"मेरे आरोप के बारे में आपको क्या कहना है मिस्टर संजय?"

संजय ने कठोर स्वर में पूछा—"क्या तुम मेरे कहे पर यकीन करोगे?"

"कोशिश करूंगा।"

"नहीं करोगे।" संजय गुर्रा उठा—"मुझे मालूम है कि तुम बिल्कुल यकीन नहीं करोगे इसलिए मुझे कुछ नहीं कहना—तुम्हारा आरोप इतना घिनौना है कि इसका विरोध करने में भी मुझे ग्लानि महसूस होगी, अतः अपने सूत्रों से पता लगाओ कि मेरी कोई गर्लफ्रेण्ड है या नहीं—मेरे परिचितों से जाकर पूछो कि हम पति-पत्नी के सम्बंध कैसे हैं, मैं जानता हूं कि तुम्हें हर जगह से एक ही जवाब मिलेगा।"

"वह क्या?"

"यह कि संजय अपनी बीवी से प्यार नहीं करता बल्कि उसके दिमाग पर 'बीवी का नशा' छाया हुआ है।"

"ओह?" त्रिवेन्द्रम की गंदली आंखें फैल गईं—"ऐसा?"

"जी हां।" गुस्से में भरे संजय ने कहा—"ऐसा।"

तभी, ऑपरेशन थियेटर से बाहर निकलती एक नर्स ने बताया—"पेशेन्ट को होश आ गया है डॉक्टर।"

"जाइए।" संजय ने त्रिवेन्द्रम से कहा—"अपनी जासूसी झाड़नी शुरू कीजिए, मुझे मालूम है कि तुम मुझसे पहले किरन से मिलने और उसका बयान लेने के तलबगार हो।"

"सवाल तलब का नहीं, ड्यूटी का है मिस्टर संजय—ड्यूटी का निर्वाह करने के लिए निःसन्देह मुझे सबसे पहले किरन के पास जाना होगा, उसका बयान लेना होगा मगर...।"

"मगर?"

"यदि कानून की धाराओं से न बंधा होता तो मुझे अन्दर जाने की कोई जरूरत नहीं रह गई थी।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मैं जान चुका हूं कि विद्या जैन हत्या-काण्ड वाला यहां कोई चक्कर नहीं है, इस मामले में मेरी इन्वेस्टीगेशन तुमसे शुरू होकर तुम्हीं पर खत्म हो चुकी है।" कहने के बाद उसने संजय की तरफ एक दोस्ताना मुस्कराहट उछाली और गोल लोटे की तरह लुढ़कता हुआ ऑपरेशन थियेटर में चला गया।

□□□

चार दिन बाद।

"क...क्या...क्या कहा?" संजय उछल पड़ा—"उन बदमाशों का पता लग गया है जिन्होंने हमें लूटा था?"

"हां!" दूसरी तरफ से त्रिवेन्द्रम ने कहा—"तुम इसी वक्त थाने चले आओ।"

"मैं आ रहा हूं इंस्पेक्टर!" कहने के बाद उसने रिसीवर जोर से क्रेडिल पर पटका और अस्पताल के ऑफिस में ड्यूटी पर मौजूद नर्स से बोला—"कमरे में मेरी पत्नी को मैसेज पहुंचा देना कि फोन सुनने

के बाद मैं किसी जरूरी काम से चला गया हूं, कुछ देर बाद लौटूंगा।"

"जी, बहुत अच्छा।"

संजय हवा के झोंके की तरह बाहर निकल गया—लगभग दौड़कर उसने गैलरी पार की और फिर दौड़ता हुआ ही पार्किंग में पहुंचा।

उसकी गाड़ी ज्यों-की-त्यों खड़ी थी।

ठीक उसी पोज में जिसमें चार रात पहले तब खड़ी की थी जब जख्मी किरन को लेकर हड़बड़ाई और बौखलाई अवस्था में यहां पहुंचा था—तब से उसने गाड़ी को हाथ नहीं लगाया था।

लगाता भी कैसे?

वह अस्पताल से कहीं गया ही नहीं था।

कोठी पर भी नहीं।

नित-कर्मों तक से वह अस्पताल में ही निवृत होता रहा था।

जेब से 'की रिंग' निकालकर उसने लॉक खोला।

ड्राइविंग-सीट पर बैठा।

तीर की-सी तेजी के साथ वह अस्पताल से बाहर निकल गया।

सड़क पर कुछ दूर जाने के बाद अपनी आदत के मुताबिक 'बैक व्यू मिरर' को बायें हाथ से थोड़ा सैट करना चाहा तो वह कुछ ज्यादा टर्न हो गया।

गाड़ी की पिछली सीट दिखाई देने लगी।

और।

यही क्षण था जब वह बुरी तरह चौंक पड़ा।

नजर उस रिवॉल्वर पर चिपककर रह गई जो 'बेक व्यू मिरर' में साफ-साफ नजर आ रहा था, लावारिस-सा वह गाड़ी की पिछली सीट पर पड़ा था।

यह वही रिवॉल्वर था जिसके बूते पर नम्बर सेविन ने किरन के जेवर उतरवाये थे।

संजय को याद आया—जिस वक्त उसने अचानक गाड़ी आगे बढ़ा दी थी उस वक्त नम्बर सेविन पिछले दरवाजे से निकलने का प्रयत्न कर रहा था।

मुंह के बल सड़क पर गिरा था।

उसे झटका लगा था।

शायद उसी झटके में रिवॉल्वर यहां गिर गया था।

संजय ने गाड़ी सड़क से हटाकर कच्चे में रोक दी और फिर स्टेयरिंग छोड़कर अपनी सीट पर बैठा-बैठा गर्दन घुमाकर रिवॉल्वर को देखने लगा, बहुत देर तक सिर्फ देखता रहा।

दिल धाड़-धाड़ करके बज रहा था।

शायद सोच रहा था कि रिवॉल्वर को छुए या नहीं?

संजय को याद आया—जिस वक्त उसने अचानक गाड़ी आगे बढ़ा दी थी उस वक्त नम्बर सेविन पिछले दरवाजे से निकलने का प्रयत्न कर रहा था।

मुंह के बल सड़क पर गिरा था।

उसे झटका लगा था।

शायद उसी झटके में रिवॉल्वर यहां गिर गया था।

संजय ने गाड़ी सड़क से हटाकर कच्चे में रोक दी और फिर स्टेयरिंग छोड़कर अपनी सीट पर बैठा-बैठा गर्दन घुमाकर रिवॉल्वर को देखने लगा, बहुत देर तक सिर्फ देखता रहा।

दिल धाड़-धाड़ करके बज रहा था।

शायद सोच रहा था कि रिवॉल्वर को छुए या नहीं?

फिर, उसे ख्याल आया कि नम्बर सेविन ने दस्ताने पहन रखे थे, रिवॉल्वर पर उसकी अंगुलियों के निशान होने का सवाल ही नहीं उठता, सो हाथ बढ़ाकर रिवॉल्वर उठा लिया।

संजय उसे उलट-पुलटकर देखने लगा।

उसने ताड़ लिया कि वह 'प्वाइंट फाईव कैलीवर' है।

'सेफ्टी लॉक' ऑन था।

यानी ट्रेगर दबते ही गोली चल सकती थी।

सबसे पहले उसने 'सेफ्टी लॉक' ऑफ किया।

चैम्बर खोला।

छः-की-छः गोलियां मौजूद थीं।

□□□

त्रिवेन्द्रम के सामने पहुंचते ही उसने सवाल किया—"कहां हैं वे हरामजादे?"

"बैठो, आराम से बैठ जाओ।" त्रिवेन्द्रम ने शान्त स्वर में कहा—"उत्तेजित होने की जरूरत नहीं है क्योंकि अब तुम अपनी उत्तेजना से उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

"मैं उनके बॉस से मिलने का तलबगार हूं जिसने किरन को गोली मारी थी।" संजय बैठता हुआ बोला।

"मुझे दुःख है कि तुम्हारी यह तमन्ना कभी पूरी नहीं होगी।"

"क्यों?"

"क्योंकि वे चारों मर चुके हैं।"

"मर चुके हैं?" संजय उछल पड़ा।

"हां।"

"कब, कहां, कैसे...किसने मारा उन्हें?"

"कल रात उन्होंने ठीक उसी तरह एक 'मैरिज पार्टी' से लौट रहे दम्पत्ति को लूटने का प्रयास किया जिस तरह तुम्हें लूटा था।" त्रिवेन्द्रम

ने बताया—"तुम्हारे साथ वारदात होते वक्त जिस तरह इत्तफाक से एक ट्रक पहुंच गया था उसी तरह कल रात गश्ती पुलिस की एक वायरलैस जीप वहां पहुंच गयी—जब पुलिस वालों ने देखा कि कुछ नकाबपोश लाल रंग की मारुति में सवार हैं और एक उस एम्बेसडर से निकलकर मारुति की तरफ बढ़ रहा है जिसमें लुटने वाले पति-पत्नी थे तो पुलिस ने रुकने की चेतावनी दी—रुकने के स्थान पर मारुति ने दौड़ना शुरू किया, जो नकाबपोश एम्बेसडर से निकला था वह मारुति की तरफ दौड़ा, एक ने उसके लिए मारुति का पिछला दरवाजा खोल रखा था—वे दोनों वहीं पुलिस की गोली से मारे गए, जिसने मारुति का दरवाजा खोल रखा था उसकी लाश भी लुढ़ककर सड़क पर गिर गयी—बाकी दोनों गाड़ी को भगाकर ले जाने की कोशिश करने लगे—पुलिस की वायरलैस जीप पीछे लग चुकी थी, वायरलैस पर अन्य गश्ती जीपों को भी उस गाड़ी के बारे में सूचना दे दी गयी थी—मारुति को हर दिशा से घेरा जा रहा था मगर उससे पहले ही, लूट वाले स्थान से करीब पांच मील दूर अनियंत्रित होकर मारुति एक पेड़ से जा टकराई और पुलिस के देखते-ही-देखते धू-धू करके जलने लगी।"

"तुम यह कैसे कह सकते हो कि ये वही लुटेरे थे जिन्होंने हमें लूटा था?"

जवाब में त्रिवेन्द्रम नीचे झुका और मेज के उस तरफ से एक पोटली उठाकर मेज के बीचों-बीच रखकर खोलता हुआ बोला—"मुझे पूरा विश्वास है कि ये जेवर तुम्हारे होंगे।"

अपने जेवरों पर नजर पड़ते ही संजय उछल पड़ा, मुंह से निकला—"अरे, ये तो सचमुच किरन के जेवर हैं, तुम्हें कहां से मिले?"

त्रिवेन्द्रम ने हल्की मुस्कान के साथ पूछा—"अब और किसी सुबूत की जरूरत तो नहीं है।"

"न...नहीं, म...मगर इंस्पेक्टर, मैं इन जेवरों के दुबारा हासिल होने की उम्मीद पूरी तरह छोड़ चुका था।" मारे खुशी के संजय कांप रहा था, कहता चला गया वह—"मैं तुम्हारा बेहद-बेहद शुक्रगुजार हूं इंस्पेक्टर, मैंने पहले कभी इतनी जल्दी किसी केस को हल होते नहीं सुना।"

"सच्चाई ये है कि इस केस में मैंने या पुलिस ने खास कुछ नहीं किया, इत्तफाक से वे गश्ती वायरलैस जीप के चंगुल में फंस गए और उसके बाद सबकुछ खुद होता चला गया।"

संजय केवल आश्चर्य व्यक्त करके रह गया।

त्रिवेन्द्रम ने कहा—"चैक कर लीजिए, जेवर पूरे हैं या नहीं?"

जब संजय ने जेवर चैक किए तो हीरे की वह अंगूठी नदारद थी

जो उसने सुहागरात को किरन को दी थी, बोला—"एक हीरे की अंगूठी कम है।"

"ओह, उसे शायद वे लोग बेच चुके थे।"

"कोई बात नहीं, बाकी सारे जेवर मिल गए, यह क्या कम है?" संजय ने कह तो दिया परन्तु अंगूठी के बिना उसे अपनी खुशी अधूरी-अधूरी-सी लग रही थी।

□□□

लूट की घटना के करीब एक महीने बाद किरन ने अपनी मम्मी से कहा—"तुम्हें मेरे लिए एक डुप्लीकेट नेकलेस बनवाना है मम्मी!"

शकुन्तला देवी ने चौंकते हुए पूछा—"कैसा नेकलेस?"

"ऐसा!" कहने के साथ किरन ने उन्हें एक कलर्ड फोटोग्राफ दिया। इस फोटों में किरन के साथ एक सांवली युवती खड़ी थी—उस पर नजर पड़ते ही शकुन्तला देवी कुछ और चौंक पड़ीं, बोलीं—"यह तो संध्या का फोटो है, तेरी सबसे पक्की सहेली।"

"संध्या के गले में पड़े नेकलेस को देखो मम्मी, इसकी कीमत पचास लाख रुपये है।"

"प...पचास लाख?" शकुन्तला देवी हकला-सी गई।

"हां।"

"म...मगर तू ऐसा डुप्लीकेट नेकलेस क्यों बनवाना चाहती है?"

"मेरे पति की इच्छा है।"

"संजय की इच्छा?"

"सिर्फ इच्छा ही नहीं है मम्मी बल्कि पागल-से हो उठे हैं वे, कहते हैं कि जब तक मुझे ऐसा नेकलेस नहीं पहना लेंगे तक तक कोई और काम नहीं करेंगे। अपने 'लिखने वाले काम' की तरफ भी ध्यान नहीं रहा है उनका।"

"मैं समझी नहीं।"

"पिछले दिनों हम संध्या और भंवर की 'मैरिज एनीवर्सरी' की पार्टी में गए थे—यह फोटो उसी पार्टी का है—यहीं, उनकी नजर इस नेकलेस पर पड़ी थी—बस, तभी से दिमाग पर मुझे ऐसा नेकलेस पहनाने की धुन सवार है।"

"क्या संजय समझता है कि तुझे पचास लाख का नेकलेस पहना सकता है?"

"वे नेकलेस की असली कीमत नहीं जानते।"

"उनके अनुमान से कितने का होगा?"

"यही कोई एक-दो लाख का।"

"क्या हीरों को परखने में इतना बेवकूफ है वह?"

"उन्हें हीरों के बारे में क्या मालूम, लेखक हैं—कभी किताबों की

दुनिया से बाहर निकले होते तो पता लगता।"

"तो उसे इसकी असली कीमत बता दे, दिमाग से 'फितूर' अपने आप निकल जाएगा।"

"म...म...मम्मी, ऐसा हरगिज मत कर देना।" किरन ने इस तरह कहा जैसे उन्होंने कोई बहुत अवैध बात कह दी हो—"वे मेरे पति हैं, मैं उन्हें अच्छी तरह जानती हूं—जिस चीज की 'धुन' उनके दिमाग पर एक बार सवार हो जाती है, उसे हासिल किए बिना चैन से नहीं बैठते—यह तो पचास लाख की बात है अगर उनसे यह कह दिया जाए कि नेकलेस एक करोड़ का है तब भी जो फितूर घुस चुका है वह निकलेगा नहीं बल्कि और बुरी तरह 'जोंक' की भांति दिमाग से चिपक जाएगा।"

"मगर उस अवस्था में संजय कर क्या सकेगा?"

"यही तो मुसीबत है कि वे कुछ नहीं कर सकेंगे—हां, अपना दिमाग जरूर खराब कर बैठेंगे—इस हद तक कि कुछ 'लिखेंगे' भी नहीं—आजकल उनकी यही हालत है, शादी से अब तक छः महीने में प्रकाशक से दो उपन्यासों का एडवांस लेकर खा चुके हैं मगर लिखा कुछ नहीं—प्रकाशक घर के चक्कर काट रहा है, लिखने की जगह चौबीस घन्टे दिमाग पर नेकलेस का भूत सवार हैं अगर कुछ दिन और यही हाल रहा, यानी उनके दिमाग पर से नेकलेस का 'भूत' नहीं उतारा गया तो रोटियों के भी 'लाले ' पड़ जाएंगे।"

शकुन्तला देवी अपनी बेटी का चेहरा देखती रह गईं।

जबकि किरन कहती चली गई—"मैंने बहुत सोच-समझकर यह फैसला किया है मम्मी, उनके दिमाग से नेकलेस का भूत उतारने के लिए इसके अलावा और कोई चारा नहीं है कि मैं ऐसा ही 'डुप्लीकेट' नेकलेस पहन लूं—'वे' कभी नहीं ताड़ सकेंगे कि नेकलेस डुप्लीकेट है।"

"चल ठीक है, मान लिया कि नहीं ताड़ सकेगा परन्तु जब एक दिन संजय अचानक तेरे गले में ऐसा नेकलेस देखेगा तो क्या यह सोचकर चौंक नहीं पड़ेगा कि यह तुझ पर कहां से आ गया?"

"दस दिन बाद 'धन-तेरस' है, तब तुम डुप्लीकेट तैयार करा लेना और खास 'धन-तेरस' वाले दिन उसे लेकर हमारी कोठी पर आना—संजय के सामने मुझसे कहना कि जब तू पिछली बार आई थी तो संध्या जैसे नेकलेस का जिक्र कर रही थी—देख, मैंने तेरे लिए वैसा नेकलेस बनवाया है।"

"अब भी सोच ले, कहीं कोई गड़बड़ न हो जाए?"

"मैंने सब सोच लिया है मम्मी, तुम फिक्र मत करो—अगर अपनी बेटी को सुखी देखना चाहती हो तो 'धन-तेरस' तक यह नेकलेस तैयार

करा दो।"

"जैसी तेरी मर्जी।" शकुन्तला देवी ने बात खत्म कर दी जबकि किरन यह सोच-सोचकर हैरान थी कि मम्मी ने जितने सवाल किए थे उन सबकी कल्पना संजय ने पहले ही कर ली थी—उन्होंने एक सवाल भी ऐसा नहीं पूछा जिसका जवाब संजय ने उसे पहले ही न समझा दिया हो।

वह खुश थी, शायद इसलिए क्योंकि अपने पतिदेव का असली इरादा वह खुद भी नहीं जानती थी।

□□□

अपनी मम्मी से हुई सभी बातें किरन ने विस्तारपूर्वक संजय को बताईं, सुनने के बाद उसने पूछा—"मम्मी को शक तो नहीं हुआ कि तुम्हें उनके पास मैंने भेजा था?"

"रत्ती भर भी नहीं।"

"गुड!" संजय कह उठा—"अब धन-तेरस के बाद तुम्हारे गले में भी वैसा ही नेकलेस होगा किरन जैसा मैंने संध्या के गले में देखा था, भले ही उसकी कीमत पचास लाख न हो मगर कम-से-कम देखने में तो वैसा ही लगेगा।"

"बिल्कुल वैसा ही लगेगा लेकिन..."

"लेकिन?"

किरन ने अजीब स्वर में पूछा—"तुम यह समझते हो ना संजय कि संध्या बहुत खुश है, सुखी है?"

"इसमें क्या शक है?" संजय कहता चला गया—"वह पत्नी भला खुश और सुखी क्यों नहीं होगी जिसके पति की हैसियत उसे पचास लाख का नेकलेस पहनाने की है—संध्या को भला क्या दुःख हो सकता है, किस चीज की कमी है उसे—वह जो चाहे पलक झपकते ही हाजिर हो सकता है।"

"तुम्हारी तरह मैं भी उसे बहुत सुखी समझती थी संजय, सोचती थी कि दुनिया में ऐसी कौन-सी खुशी है जो उसे हासिल नहीं है मगर कल...जब उसने अपनी सबसे प्यारी सहेली यानी मेरे सामने अपना कलेजा चीरकर दिखाया तो पता लगा कि मेरे मुकाबले वह बेहद बदनसीब है, जो मुझे हासिल है वह उसे हासिल नहीं है।"

"ऐसा क्या है?"

"दिल का चैन, सुकून।"

"मैं समझा नहीं किरन, पता नहीं तुम क्या कह रही हो?"

"भंवर वैसा नहीं है संजय, जैसा हम सोच रहे थे।" किरन कहती चली गई—"संध्या के अलावा उसके सम्बंध एक दूसरी औरत से भी हैं।"

"क्या कह रही हो तुम?"

"संध्या मुझसे झूठ नहीं बोल सकती।"

संजय ने चकित स्वर में पूछा—"और उन सम्बंधों के बारे में संध्या को मालूम है?"

"अगर न होता तो बताती कैसे?"

"क्या भंवर भी जानता है कि उसे मालूम है?"

"इतना ही नहीं, उस दूसरी औरत को लेकर संध्या और भंवर में काई बार तकरार भी हो चुकी है—संध्या के लाख प्यार से रोकने, लड़ने-झगडने के बावजूद भंवर उससे मिलना नहीं छोड़ता।"

"क्या कहता है?"

"कहता है कि रखैल रखना अमीर आदमियों के ढेर सारे शौकों में से एक शौक है और पत्नी को पति के इस शौक में टांग नहीं अड़ानी चाहिए।"

"वह दूसरी औरत कौन है?"

"नाम अलका है, संध्या बता रही थी कि 'विकास-विहार' की 'सौरभ' नामक बिल्डिग में भंवर ने उसे आधुनिक सुख-सुविधाओं से पूर्ण तीन कमरों का एक फ्लैट दिया हुआ है।"

"फ्लैट का नम्बर?"

"चौंसठ।"

"क्या संध्या ने कभी इस जंजाल से मुक्ति पाने के बारे में नहीं सोचा?"

"हर समय सोचती रहती है मगर कभी कोई उपाय नहीं सूझा—कह रही थी कि यह दुःख ऐसा है जिसका रोना वह हर किसी के सामने नहीं रो सकती—मैं वह पहली और आखिरी शख्स हूं जिससे इस बारे में बातें करके उसने अपना मन हल्का किया है—संध्या यह भी कह रही थी संजय कि अगर मुझे इस समस्या का कोई हल सुझाई दे तो मैं उसे जरूर बताऊं—वह सारी जिन्दगी मेरी अहसानमन्द रहेगी।"

"कुछ सूझा?"

"नहीं—समस्या विकट है।" किरन ने कहा—"तुम सोचो संजय, कोई राय दो कि संध्या अपने पति को अलका नाम की दूसरी औरत के पंजे से कैसे निकाले—तुम बड़ी-से-बड़ी समस्या हल कर देते हो, दिमागी दांव-पेचों से भरे तुमने ऐसे-ऐसे उपन्यास लिखे हैं जिन्हें पढ़कर पाठक दांतों तले उंगली दबा लेते हैं—इस समस्या को हल करने के लिए तुम उसी दिमाग का इस्तेमाल करो, अगर तुम उसे इस भंवर से निकाल सको तो उसी पर नहीं खुद मुझ पर बहुत बड़ा अहसान होगा—वह मेरी सबसे प्यारी सहेली है, उसे भंवर में फंसी देखकर मैं तड़प-सी उठी हूं—बोलो संजय; तुम किरन के लिए कुछ सोचोगे ना?"

"कोशिश करूंगा।" उसने कहा।

"थैंक्यू...थैंक्यू वैरी मंच संजय।" मारे खुशी के किरन मानो नाच उठी।

संजय का ध्यान उस पर नहीं था।

उसने जहन में संध्या का नेकलेस पुनः चकराने लगा था, साथ ही चकरा रही थी यह बात कि किरन से मिली जानकारी का लाभ क्या और कैसे उठाया जा सकता है?

□□□

संजय ने एक कोठी किराए पर ले रखी थी।

बाहरी हिस्से में उसका ऑफिस था, भीतरी हिस्से में 'रेजीडैंस'।

'लेखन-कक्ष' पन्द्रह-बाई-सोलह का एक कमरा था।

बीचों-बीच एक विशाल और चमकदार सनमाईका वाली मेज पड़ी थी—बहुत सी किताबें उस पर करीने से सजी हुई थीं—टाइपराईटर अपने स्थान पर रखा था—उसके पीछे थी ऊंची पुश्त वाली वह गद्देदार रिवॉल्विंग चेयर जिस पर बैठकर संजय अपने दिमाग में घुमड़ने वाले विचारों को टाइपराईटर के जरिए कागजों पर उतारता था।

कमरे की तीन दीवारों पर शीशे की किवाड़ वाली अलमारियां थीं, उनमें असंख्य उपन्यास सजे थे—कुछ उसके और ज्यादातर दूसरे लेखकों के—चौथी दीवार में एक दरवाजा था, दरवाजे में लोहे की जाली लगी हुई थी और जाली के पार था करीब एक गज चौड़ा 'साईड़-लॉन'—इस दरवाजे में बाहर की तरफ से एक ताला लगा हुआ था।

संजय की 'रूबी' नामक एक सैक्रेट्री थी।

वह लेखन-कक्ष के बारह 'रिशेप्सन' में बैठा करती थी—देश के विभिन्न शहरों, कस्बों और गांवों से आने वाले संजय के पाठकों और उनके पत्रों से निपटने के अलावा रूबी 'ऑफिस' की देखभाल भी करती थी—प्रत्येक नया उपन्यास लिखने से पहले उसके कथानक पर रूबी से 'डिस्कस' करने की संजय को आदत-सी पड़ गई थी।

लेखन-कक्ष में पहुंचने के बाद संजय अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

दोनों पैर मेज पर टाइपराईटर के बराबर में रखे और पीठ के धक्के से रिवॉल्विंग-चेयर की पुश्त पीछे कर ली, सिर पुश्त से टिकाकर उसने आंखें बन्द कर लीं और हौले-हौले कुर्सी पर झूलने लगा। कुर्सी बहुत धीरे-धीरे चूं-चूं करने लगी।

यह उसका 'सोचने वाला पोज' था।

रूबी के शब्दों में 'संजय भारद्वाज' का यह वह पोज था जिसमें वह अपने दिमाग से 'छेड़खानी' कर रहा होता था।

परन्तु आज—

इस पोज में आते ही दिमाग छिटककर संध्या के नेकलेस पर स्थिर

हो गया।

और फिर वह दिमाग जो दिमागी 'दांव-पेचों' से भरी कहानी सोचा करता था, संध्या के नेकलेस के बारे में सोचता चला गया।

□□□

रूबी प्रत्यक्ष में भले ही आज की डाक देखने में व्यस्त नजर आ रही हो किन्तु वास्तव में उसके कान लेखन-कक्ष की तरफ लगे थे—ये कान टाइपराईटर की खट-खट सुनने के तलबगार थे कि—

वह उछल पड़ी।

कॉलबेल बजी थी और यह तभी बजती थी जब संजय को उसकी जरूरत हो—सो, उसने बड़ी फुर्ती से अपना आंचल वक्ष-स्थल पर डाला और पलक झपकते ही लेखन-कक्ष का ढुका हुआ दरवाजा आहिस्ता से खोलने के बाद धीमे स्वर में बोली—"यस सर!"

"कम इन।" कुर्सी की पुश्त से सिर टिकाए संजय ने कहा, उसकी आंखें अब भी बन्द थीं।

रूबी आगे बढ़कर मेज के इस तरफ, ठीक संजय के सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गई और यही क्षण था जब संजय ने न सिर्फ आंखें खोलीं बल्कि पैर नीचे लटकाकर कुर्सी पर सीधा बैठता हुआ बोला—"मेरे दिमाग में नई कहानी का पूरा तो नहीं मगर धुंधला-धुंधला-सा खाका बन रहा है, उसके बारे में तुम्हें बताना चाहता हूं।"

"शुरू कीजिए सर।"

"नए उपन्यास की कहानी एक ऐसे किरदार की कहानी होगी जो इतनी सफाई से जुर्म करता है कि कहीं भी, किसी भी स्पॉट पर भूल-चूक या गलती नहीं करता, धुरन्धर-से-धुरन्धर इन्वेस्टीगेटर अपना सिर खपाकर रह जाता है मगर कोई 'क्ल्यू' नहीं मिलता—मुजरिम ने जुर्म इतने 'परफैक्ट-प्लान' के साथ किया होता है कि दूर-दूर तक वह नहीं फंस सकता।"

"कहानी के बारे में बताना शुरू कीजिए।"

"मेरा मुख्य किरदार बेहद गरीब है, दुनिया में उसका अपना एक बेटे के अलावा कोई नहीं है। उसकी पत्नी बेटे को जन्म देते ही चल बसी थी—मेहनत-मजदूरी करके—अपना पेट काट-काटकर उसने बेटे को उच्च शिक्षा दिलाई है। शुरू से उसका एक ही सपना है, बेटे को डॉक्टर बनाना—संक्षेप में यूं समझो कि वह अपने बेटे से बेहद-बेहद प्यार करता है और उसे डॉक्टर बनाने के लिए कुछ भी कर सकता है—सुन रही हो ना?"

"सुन रही हूं।"

"बेटा नब्बे परसेन्ट पढ़ाई पूरी कर चुका है यानी अब उसे 'एम०बी०बी०एस०' में एडमीशन लेना है उस वक्त मेरे मुख्य किरदार

के सामने समस्या यह आती है कि बिना पांच लाख के एम० बी० बी० एस० में एडमीशन नहीं हो सकता, करैक्ट।"

रूबी ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

संजय ने आगे कहना शुरू किया—"शुरू में अपनी 'नेचर' के मुताबिक मुख्य किरदार सीधे कामों से पांच लाख हासिल करने की कोशिश करता है मगर हाथ निराशा लगती है—तभी उसकी नजर अपने एक दोस्त की अंगुली में मौजूद होरे की अंगूठी पर पड़ती है बातों-ही-बातों में उसे पता लगता है कि अंगूठी की कीमत दस लाख रुपये है—सोचता है कि अगर वह उसके हाथ लग जाए तो आधे यानी पांच लाख में तो बिक ही जाएगी—शुरू में वह यह सोचकर इस ख्याल को दिमाग से निकालने का प्रयत्न करता है कि अंगूठी चुराना अपराध होगा। परन्तु बेटे का प्यार जीत जाता है, अन्त में वह दृढ़ निश्चय कर लेता है कि बेटे की खुशी की खातिर वह अंगूठी को उड़ाएगा—अन्डरस्टैंड?"

रूबी ने पुनः स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

"वह अंगूठी उड़ाना भी चाहता है और यह भी नहीं चाहता कि इस जुर्म में कभी पकड़ा जाए।"

रूबी बोली—"ऐसी इच्छा हर मुजरिम की होती है।"

"सुनती रहो।" संजय एकाग्रचित होकर कहता चला गया—"अंगूठी वाला दोस्त अंगूठी को किन्हीं विशेष अवसरों पर ही पहनता है, हर वक्त नहीं पहने रखता।"

रूबी ने पूछा—"बाकी समय कहां रखता है?"

"बैंक-लॉकर में।" संजय ने बताया—"वह अंगूठी को विशेष अवसर से एक दिन पहले बैंक-लॉकर से निकालकर लाता है और अगले दिन पुनः उसी में डाल आता है।"

"यानी मुख्य किरदार को अंगूठी उड़ाने के लिए एक बार में तीन दिन और दो रातें मिलेंगी?"

"जाहिर है।"

"आगे।"

"एक दिन मुख्य किरदार को अपने दोस्त से पता लगता है कि उसकी बीवी किसी अन्य मर्द से अनैतिक सम्बंध रखती है और उसके पीछे पागल है वह मुख्य किरदार से यह भी कहता है कि अगर वह उसे ऐसी कोई तरकीब बता दे जिससे वह अपनी बीवी को उसके प्रेमी के मोह-जाल से निकाल सके तो वह उसका अहसानमन्द रहेगा।"

रूबी ने केवल स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

"मुख्य किरदार के पास एक रिवॉल्वर है—रिवॉल्वर भी ऐसा जिसके बारे में उसके अलावा किसी को नहीं पता कि है।" संजय अपने एक-एक

शब्द पर जोर देता हुआ बोला—"और वह जानता है कि आगे भी कम-से-उस वक्त तक किसी को भनक लगने की कोई सम्भावना नहीं है जब तक कि वही अपने मुंह से न उगल दे।"

"मान लिया कि है।"

"ठीक ऐसा ही एक रिवॉल्वर अंगूठी वाले दोस्त के बेडरूम में, बैड की दराज में भी रखा है—उस रिवॉल्वर पर साईलेंसर भी लगा हुआ है। यहां एक बात और स्पष्ट कर देनी जरूरी है और वह यह कि अंगूठी या तो लॉकर में रहती है या दोस्त की अंगुली में—अन्य किसी स्थान पर वह उसे नहीं रखता।"

"यानी या तो लॉकर से उड़ाई जा सकती है या दोस्त की अंगुली से?"

संजय ने कहा—"लॉकर से उड़ाने की तो बात ही दिमाग से निकाल दो। क्योंकि हमारा मुख्य किरदार इतना 'परफैक्ट' मुजरिम नहीं है कि वह किसी अन्य के लॉकर को खोल सके—अगर होता तो उसे दोस्त की अंगूठी के पीछे पड़ने की क्या जरूरत थी—किसी के भी लॉकर को खाली कर सकता था।"

"यानी अंगूठी को वह सिर्फ अपने दोस्त की अंगुली से उड़ा सकता है?"

"अब सोचना ये है कि वह अंगूठी को कैसे उड़ाए? सोचो रूबी...सोचकर जवाब दो।"

सोचने के लिए रूबी ने अपने दिमाग पर जोर डाला, कुछ देर बाद बोली—"दोस्त होने के नाते मुख्य किरदार को यह तो पता होगा ही कि अंगूठी कब लॉकर में है और कब उसके दोस्त की अंगुली में रहेगी?"

"जाहिर है।"

"जब अंगूठी अंगुली में हो तब मुख्य किरदार कहीं से क्लोरोफार्म हासिल करे अथवा किसी खाद्य-पदार्थ या पेय में कोई ऐसी चीज मिलाए जिससे वह बेहोश हो जाए, जब वह अंगूठी उड़ा सकता है।"

संजय ने रहस्यमय मुस्कान के साथ सवाल किया—"और जब वह होश में आएगा?"

"जी?"

"वह समझ रहा होगा कि बेहोश करने वाला उसका दोस्त है, अंगूठी गायब होगी—क्या इन हालात में उसे यह समझने में जरा भी दिक्कत पेश आएगी कि अंगूठी किसने गायब की है?"

"वह इस ढंग से बेहोश कर सकता है कि बेहोश होने वाले को पता ही न लगे कि उसे किसने बेहोश किया था?"

"इससे भी काम नहीं चलेगा।"

"क्यों?"

"मुख्य किरदार अंगूठी के बारे में अंगूठी के मालिक से इतनी चर्चा कर चुका है कि वह यह समझ गया होगा कि दोस्त की दिलचस्पी या नजर अंगूठी पर है और जब अंगूठी गायब होगी तो पुलिस उससे पूछेगी कि उसे किस-किस पर शक है तब वह पुलिस को अंगूठी में अपने दोस्त की दिलचस्पी का जिक्र जरूर करेगा और तुम जानती हो कि पुलिस के लिए छोटा-मोटा नहीं, बहुत बड़ा 'क्ल्यू' है।"

"म...मगर।" रूबी उलझ गई—"अंगूठी के मालिक को यह अहसास होना कि अंगूठी में उसके दोस्त की दिलचस्पी है, एक ऐसा प्वाइंट है जिससे मुख्य किरदार पुलिस के सन्दह के घेरे में आएगा-ही-आएगा, भले ही चाहे किसी भी ढंग से उड़ाए।"

"सही प्वाइंट पकड़ लिया है तुमने और इस प्वाइंट की रोशनी को देख लेने के बाद मुख्य किरदार के पास एक और मात्र एक ही रास्ता शेष बचता है।"

"वह क्या?"

"यह कि दोस्त को इस काबिल न छोड़े कि वह पुलिस को अपना बयान दे सके।"

"क...क्या मतलब?" रूबी उछल पड़ी—"क्या करेगा वह?"

"अपने दोस्त का कत्ल।" कहते वक्त संजय के जबड़े भिंच गए।

"क...कत्ल?" रूबी हकला गई—"वह अंगूठी के लिए उसे मार डालेगा?"

"अगर खुद को कानून की पकड़ से दूर रखना चाहता है तो उसे ऐसा करना ही पड़ेगा रूबी, मजबूरी है।"

"क्या ऐसी कोई तरकीब नहीं हो सकती जिससे वह दोस्त का कत्ल किए बगैर अंगूठी हासिल कर ले और खुद को कानून की पकड़ में भी न आने दे?"

"सोचो—तुम सोचो कि क्या ऐसी कोई तरकीब है?" संजय कहता चला गया—"कम-से-कम मेरे दिमाग में नहीं आती—अगर तुम ऐसी कोई तरकीब बता सको तो यकीनन मैं तुम्हारा अहसानमन्द होऊंगा क्योंकि दिल से मुख्य किरदार अपने दोस्त का कत्ल नहीं करना चाहता, उसे सिर्फ अंगूठी उड़ानी है।"

"एक रास्ता है सर!"

"क्या ?"

"अंगूठी के मालिक को पता ही न लगे कि अंगुली से अंगूठी उड़ा ली गई है।"

फीकी मुस्कान के साथ कहा संजय ने—"तुम शायद डुप्लीकेट अंगूठी के बारे में सोच रही हो?"

"जी हां।" रूबी ने अपने शब्दों पर जोर दिया—"आप जानते हैं

कि इस दुनिया में ऐसे-ऐसे कारीगर पड़े हैं जो कोहिनूर तक का डुप्लीकेट तैयार कर लेते हैं—मुख्य किरदार किसी ऐसे ही कारीगर से डुप्लीकेट अंगूठी तैयार कराता है और किसी भी तरह उसे दोस्त की अंगूठी से बदल देता है, डुप्लीकेट अंगूठी इतनी एक्यूरेट बनी हुई होगी कि...।"

"इस तरकीब पर मैं सोच चुका हूं रूबी, नहीं चलेगी।"

"क्या कमी है इसमें?"

"यह तो तुम मानती हो ना कि डुप्लीकेट चीज चाहे जितनी 'एक्यूरेट' बने लेकिन रहती डुप्लीकेट ही है। अगर ऐसा न होता तो अब तक जाने कितने कोहिनूर चलन में होते?"

"जी हां, यह तो सच है।"

"कहने का मतलब यह कि 'डुप्लीकेट' से लोगों को एक बार, दो बार या दस बार तो धोखा दिया जा सकता है मगर हमेशा के लिए धोखा नहीं दिया जा सकता।"

"पक्की बात।"

"यानी कभी-न-कभी अंगूठी के मालिक को जरूर पता लगेगा कि अंगूठी डुप्लीकेट है और जब भी पता लगेगा तभी वह पुलिस को 'वह बयान' देगा जिससे सीधा मुख्य किरदार फंसता है।"

"मगर जो कुछ मुख्य किरदार सोच रहा है वह तो इससे भी ज्यादा खतरनाक होगा?"

"कैसे?"

"वह दोस्त का कत्ल करके अंगूठी गायब करेगा, पुलिस जब देखेगी कि अंगूठी गायब है तो समझ जाएगी कि कत्ल अंगूठी के लिए हुआ है।"

"क्या मतलब ?"

"उसकी अंगुली में वैसी ही अंगूठी होगी जैसी का जिक्र कुछ देर पहले तुम कर रही थीं।"

"यानी डुप्लीकेट?"

"हां।"

"बात तो घूम-फिरकर फिर वहीं आ गई सर, पुलिस की नजरों से कब तक यह बात छुपी रहेगी कि अंगूठी डुप्लीकेट है?"

"हालांकि मुख्य किरदार षड्यन्त्र कुछ ऐसा फैलाएगा कि दोस्त की मौत की वजह पुलिस को साफ-साफ, कुछ और नजर आए तथा पुलिस उसी लाईन पर सोचती रहे और आगे बढ़ती रहे, अंगूठी पर उसका ध्यान ही न जा पाए मगर फिर भी, मान लेते हैं कि उसका षड्यन्त्र विफल हो जाता है—पुलिस देर-सवेर यह जान लेती है कि मौत की वजह वह नहीं है जो 'साफ-साफ' नजर आ रही है बल्कि अंगूठी है—इसके बावजूद मुख्य किरदार पर कहीं कोई आंच नहीं आती क्योंकि

पुलिस को यह बताने वाला कोई नहीं है कि अंगूठी पर किसी की नजर थी!"

"म...मगर सर, यह बात हलक से कुछ उतर नहीं रही है कि एक अंगूठी के लिए मुख्य किरदार अपने दोस्त का कत्ल कर देगा।"

"कत्ल वह अंगूठी के लिए नहीं, अपने बेटे के लिए करेगा।"

"क्या मतलब?"

"अपने बेटे से वह बेइन्तहा प्यार करता है।" कहते-कहते जज्बातों के भंवर में फंसा संजय का चेहरा भभकने लगा—"तुम भूल गयीं रूबी, मैंने शुरू में कहा था कि अपने बेटे के लिए वह कुछ भी कर सकता है, कुछ भी...हत्या भी!"

चकित अंदाज में रूबी संजय के चेहरे को देखती रह गयी, कुछ देर देखती रही और फिर बोली—"आपको क्या हो गया है सर, पहले कभी किसी कहानी पर 'डिस्कस' करते वक्त मैंने आपको इतना 'सैन्टीमैंटल' होते नहीं देखा?"

"क...कुछ नहीं...कुछ नहीं।" संजय सकपका गया—"मैं कहानी में शायद कुछ ज्यादा ही डूब गया हूं।"

□□□

धन-तेरस वाले दिन!

शकुन्तलादेवी उन्हें 'डुप्लीकेट नेकलेस' देकर जा चुकी थीं।

उनके जाते ही किरन के गले में पड़े नेकलेस को प्रशंसनीय दृष्टि से देखता हुआ संजय कह उठा—"वाह, मार्वलस—कारीगर ने कमाल कर दिया किरन, इतना 'एक्यूरेट' नेकलेस बना है ये कि अगर संध्या और भंवर खुद देखें तो धोखे में आ जायें—चकरा उठें कि उनका नेकलेस बैंक के लॉकर से निकलकर तुम्हारे गले में कैसे पहुंच गया?"

"मम्मी के सामने मैंने एक्टिंग तो बेहतरीन की ना?"

किरन ने पूछा।

संजय बोला—"मुझसे बेहतर नहीं।"

जवाब में किरन ठहाका लगाकर हंस पड़ी—संजय ने भी उसका साथ दिया और अभी दोनों अपनी कामयाबी पर दिल खोलकर हंस ही रहे थे कि फोन की घण्टी बज उठी, संजय ने रिसीवर उठाया और बोला—"संजय भारद्वाज हीयर!"

"नमस्ते जीजा जी!" दूसरी तरफ से संध्या की चहकती आवाज उभरी।

संजय कह उठा—"हैलो संध्या, कैसी हो?"

"फाइन, आप सुनाइये।"

"ठीक हैं, आज कैसे हमारा फोन नम्बर याद आ गया?"

"परसों हमारे यहां एक छोटी-सी पार्टी है।"

"प...पार्टी?" लाख रोकते-रोकते संजय का दिल धक्क से रह गया।

"हां।"

"किस खुशी में?"

"भंवर प्रत्येक दीवाली को एक छोटी-सी पार्टी के बहाने अपने सभी परिचितों को बंगले पर बुलाते हैं—इनका कहना है कि इस बहाने सब लोग साल में कम-से-कम एक बार मिल लेते हैं—आपको जरूर आना है।"

"भला ऐसा हो सकता है कि तुम पार्टी दो और हम नहीं आयें?" संध्या ने पूछा—"किरन कहां है?"

"मेरे नजदीक खड़ी है।"

"अब आप हम दोनों सहेलियों के बीच से हटेंगे?"

संजय धीमे से हंसा, बोला—"लो, बात करो।"

कहने के बाद उसने रिसीवर किरन को दे दिया। किरन संध्या से बात करने लगी और संध्या की आवाज तो दूर, संजय के कानों तक बगल में खड़ी किरन तक की आवाज नहीं पहुंच रही थी।

क्योंकि वह सोचों में गुम हो चुका था।

दिल असामान्य गति से धड़क रहा था।

क्या इस 'छोटी-सी' पार्टी में संध्या बैंक-लॉकर से निकलवाकर अपना पचास लाख वाला नेकलेस पहनेगी? क्या वह 'घड़ी' आ गयी है जिसका इन्तजार वह महीनों से कर रहा था?

□□□

पार्टी ज्यादा भव्य तो नहीं थी मगर 'छोटी' भी नहीं कही जा सकती—कुल मिलाकर छः-सात सौ व्यक्ति तो थे ही—संध्या के गले में पड़े नेकलेस को देखकर जहां संजय को खुशी हुई वहीं, जाने क्यों दिल पसलियों पर चोट मारने लगा।

चौंका तब, जब पंडाल में 'अलका' को दाखिल होते देखा।

वह एक अन्य व्यक्ति के साथ थी।

भवंर ने संध्या से उनका परिचय मिस्टर एवं मिसेज गोपाल टंडन कहकर कराया।

इस वक्त वह हल्के फिरोजी कलर की टीसू की साड़ी का सेट पहने हुए थी—अपनी आदत के मुताबिक दायें कान के ऊपर बालों में उसने फिरोजी कलर के मोती वाला 'हेयरबैण्ड' लगा रखा था।

संजय की नजरें उसी पर स्थिर थीं।

किरन ने छेड़ा—"उधर धूर-धूर क्या देख रहे हैं जनाब?"

"आं?" संजय चौंका—"क...कुछ नहीं।"

"कुछ तो देख रहे थे?"

संजय ने बता देने में कोई बुराई नहीं समझी, बोला—"वह अलका

है किरन।"

"अ...अलका?" किरन उलझी—"कौन अलका?"

"भूल गयी, भवर की रखैल।"

"क...क्या?" किरन के हलक से चीख-सी निकल गई।

"इस तरह चीखो मत किरन।" संजय ने जल्दी से कहा—"अगर किसी ने सुन लिया और बात संध्या के कानों तक पहुंच गयी तो वह हंगामा कर सकती है, सारी पार्टी तबाह हो जायेगी।"

किरन सम्भली, निगाहें अलका पर से हट नहीं रही थीं, धीमे से पूछा उसने—"क्या वह शादीशुदा है?"

"नहीं।"

"म...मगर उसके साथ एक मर्द तो है?"

"होगा कोई भंवर का चमचा जो उसके पति का 'रोल' कर रहा है।" संजय कहता चला गया—"अलका को पार्टी में बुलाने का भंवर ने यह खूबसूरत बहाना ढूंढा है—मैंने अपने कानों से सुना, भंवर ने संध्या से उनका परिचय मिस्टर एवं मिसेज टंडन कहकर कराया था।"

"मगर तुम्हें कैसे पता कि वह अलका है?"

"कल मैं जब अपने प्रकाशक के साथ ताजमहल में लंच ले रहा था तब मैंने इसे भंवर के साथ वहां देखा था—सारी तो नहीं किन्तु इनके बात करने की कुछ आवाजें मेरे पल्ले पड़ी थीं, भंवर इसे अलका कहकर पुकार रहा था—एक-दूसरे में इतने मस्त थे कि भंवर मुझे देख नहीं पाया।"

"मगर यह बात तुमने मुझे तो बताई नहीं?"

"उस वक्त सोचा था घर पहुंचकर जिक्र करूंगा मगर फिर बात दिमाग से 'स्लिप' हो गयी।"

"कमाल है, इतनी बड़ी बात तुम्हारे दिमाग से 'स्लिप' हो गयी!"

"देखो, भंवर उसकी तरफ बढ़ रहा है—वह उनके पास पहुंच गया, तीनों बातें कर रहे हैं।"

"और बेचारी संध्या।" किरन संध्या को मेहमानों से घिरी देखकर दर्द-युक्त स्वर में कह उठी—"उसका तो ध्यान तक भंवर की तरफ नहीं है, वह ख्वाब में भी नहीं सोच सकती कि भंवर क्या गुल खिला रहा है?"

"देखो।" संजय कह उठा—"कथित टंडन उनके नजदीक से हट गया।"

किरन ने कहा—"अब वे दोनों पंडाल के एक कोने की तरफ बढ़ रहे हैं।"

"तुम यहीं ठहरो किरन, मैं छुपकर उनकी बातें सुनने की कोशिश करता हूं।" कहने के बाद वह किरन का जवाब सुने बिना तेज कदमों

के साथ एक तरफ को बढ़ गया और अगले दो मिनट बाद भंवर और अलका के बेहद नजदीक परन्तु कनात के पीछे खड़ा उनकी बातें सुन रहा था।

भंवर ने अभी-अभी कहा था—"नहीं अलका, कल रात नहीं...फिर कभी।"

"क्यों?"

"पूरी एक रात गायब रहने के लिए मुझे संध्या के सामने कई दिन पहले बैक-ग्राऊड बनानी पड़ती है।"

"इतना डरते हो उससे?"

भंवर का मायूस स्वर—"डरना पड़ता है अलका, वह मेरी बीवी है।"

"बीवी है तो क्या हुआ, एक दिन तुम्हीं ने तो बताया था कि वह शक्ल में भले ही मुझे न पहचानती हो मगर जान चुकी है कि तुम अलका नाम की किसी 'लड़की' को विकास विहार में रखे हुए हो।"

"हां, यह सच है।"

"जब इतनी बात खुल चुकी है तो डर किस बात का?"

"समझने की कोशिश करो अलका, यह ठीक है कि वह तुम्हारे बारे में जानती है और यह भी ठीक है कि जब वह तुम्हारे बारे में मुझसे बात करती है तो डांट-डपटकर उसे चुप कर देता हूं मगर इसका ये मतलब नहीं कि मैं उससे झगड़ा मोल लूं—कम-से-कम इस 'इशू' पर तो मैं उससे झगड़ ही नहीं सकता, नौकर-चाकर सुनेंगे तो क्या कहेंगे—कल जैसे ही मैं उससे रात-भर गायब रहने की बात छेडूंगा वह तुरन्त समझ जायेगी कि यह रात में विकास-विहार में गुजारना चाहता हूं और यह समझते ही वह झगड़ा शुरू कर देगी।"

"और अगर कल की रात तुमने मेरे बिस्तर पर नहीं गुजारी तो मैं झगड़ पड़ूंगी।"

"क्या मतलब?"

"बात नहीं करूंगी तुमसे।"

"अलका प्लीज, समझने की कोशिश करो।"

"तुम तो मुझे इस पार्टी में बुलाते हुए भी डर रहे थे—मैंने ही इस तरकीब से यहां आने का प्रोग्राम बनाया—अब बोलो, क्या संध्या को जरा भी शक हुआ?"

"नहीं।"

"इसी तरह मैं कल तुम्हें फोन करूंगी, तुम अपनी बीवी के सामने फोन पर ऐसी बातें करोगे जैसे सूचना मिल रही हो कि तुम्हारे दिल्ली वाले 'हॉल' में आग लग गई है—रिसीवर रखने के बाद तुम यही बात संध्या को बताकर कहोगे कि तुम्हें फौरन दिल्ली जाना पड़ेगा,

बस—काम बन जायेगा।"

अलका द्वारा कहे गये ये आखिरी शब्द थे जो धीमे होते-होते संजय के कानों तक पहुंचे—वह न सुन सका कि भंवर ने इन शब्दों का क्या जवाब दिया—वह समझ गया कि बात करते हुए वे वहां से हट गये हैं।

संजय भी हटा।

घूमकर पुनः पंडाल में पहुंचा।

तब तक भंवर और अलका अलग हो चुके थे—किरन ने मिलते ही उससे पूछा कि क्या सुना—संजय को बता देने में कोई बुराई नजर नहीं आई।

□□□

सुनने के बाद से घर पहुंचने और सोने तक किरन संध्या की बदकिस्मती का रोना रोती रही—साथ ही संजय से कहती रही कि वह संध्या को इस मुसीबत से पीछा छुड़ाने की कोई तरकीब सोचे—संजय ने यह कहाकर पीछा छुड़ाया कि रात को कुछ सोचने का प्रयत्न करेगा।

सुबह उठते ही किरन ने पूछा—"कुछ सोचा?"

उस वक्त संजय ने यह कहकर बात टाल दी कि 'काफी सोचा मगर अभी कुछ सूझा नहीं' मगर दोपहर पौने दो बजे वह स्वयं बोला—"इसकी तो मात्र एक ही तरकीब दिमाग में आती है किरन।"

"क्या?" किरन उत्सुक हो उठी।

जवाब में संजय ने जो तरकीब जताई वह किरन को बहुत ज्यादा तो नहीं जंची परन्तु ऐसी भी नहीं लगी जिससे पूरी तरह 'रिजैक्ट' किया जा सके—आपसी बातचीत के बाद उन्होंने निश्चय किया कि ढाई के बाद संध्या के पास जायेंगे।

बातों-बातों में उसे तरकीब बताने का निश्चय हुआ।

पौने तीन बजे वे बंगले पर पहुंचे।

हमेशा की तरह संध्या ने गर्मजोशी के साथ उनका स्वागत किया, बोली—"आप कमाल की चीजें, लिखते हैं जीजाजी, आपके उपन्यास पढ़ते-पढ़ते 'इन्हें' भी लिखने का भूत सवार हो गया है!"

"किसे...भंवर को?" संजय ने आश्चर्य से पूछा।

"हां, आजकल एक उपन्यास लिख रहे हैं हजरत!"

संजय और किरन ठहाका लगाकर हंस पड़े।

उस वक्त संध्या बेड की पुश्त पर रखे कांच के एक जग से, कांच के गिलास में पानी उंडेल रही थी जब हंसते हुए संजय ने कहा—"इसका मतलब तो ये है कि भंवर से मिलना पड़ेगा, रिक्वेस्ट करनी पड़ेगी कि भाई ये उपन्यास लिखने बन्द करो!"

"क्यों!" पानी पीती हुई संध्या ने पूछा।
"अगर भंवर उपन्यास लिखने लगा तो मेरे उपन्यासों को कौन पूछेगा?"
इस बार किरन के साथ संध्या ने ठहाका लगाया, गिलास वापस बेड की पुश्त पर रखती हुई बोली—"जनाब पर इतना भूत सवार है कि एक दिन हाथ में चोट लगी हुई थी, बोले हाथ लिखने काबिल नहीं जबकि दिमाग में उससे आगे का मैटर खलबली मचाए हुए है जितना लिख चुका हूं—कहने लगे कि मैं बोल रहा हूं तुम लिखो।"
संजय को लगा कि व्यर्थ की बातों में समय जाया हो रहा है अतः विषय चेंज करके मतलब की बात पर आता हुआ बोला—"आपने एक दिन मुझसे रिवाल्वर चलाना सीखने की इच्छा प्रकट की थी ना संध्या जी?"
"हां।"
"आज में उसी मूड से आया हूं!"
"ओह, श्योर...मेरी खुशनसीबी है जीजा जी जो आपने याद रखा।" कहने के साथ उसने दराज खोली, रिवॉल्वर बाहर निकाला और इससे ज्यादा उसे कुछ भी करने का मौका दिए बगैर संजय ने रिवॉल्वर उसके हाथ से ले लिया, बोला—"सबसे पहले इसे खाली कर लेते हैं।"
"ठीक है।"
संजय ने सारी गोलियां निकालकर बेड पर डालीं, साइलेंसर निकाला और उछालकर अधखुली दराज में डाल दिया, बेड पर बैठता हुआ बोला—"उफ्फ...कितनी गर्द है इस पर?"
दोनों में से कोई कुछ नहीं बोली।
संजय ने जेब से रूमाल निकालकर उसे साफ करना शुरू किया—किरन और संध्या यही समझ रही थीं कि वह धूल साफ कर रहा है जबकि वास्तव में वह उस पर से अपनी अंगुलियों के निशान मिटा रहा था।
रिवॉल्वर को अच्छी तरफ साफ करने के बाद उसने रूमाल से पकड़कर ही उसकी तरफ बढ़ाया और बोला—
"इसे इस तरह पकड़ लीजिए जैसे आपने फिल्मों में आर्टिस्टों को देखा होगा।"
रिवॉल्वर संध्या के हाथ में पहुंच गया।
संध्या ने उसे उसी तरह पकड़ा जैसे संजय ने बताया था।
यही क्षण था जब संजय ने रूमाल जेब में रखने के बहाने अपनी जेब से एक गोली निकालकर बेड पर पड़ी इस रिवॉल्वर की छः गोलियों के बीच डाल दी।
अब बेड पर सात गोलियां पड़ी थीं।

संध्या ने पूछा—"इसी तरह ना?"
"तर्जनी ट्रेगर पर रखो।" संजय ने बताया।
संध्या ने वैसा ही किया।
तुम्हें नाल के सिरे पर एक बहुत छोटी 'कील-सी' और चैम्बर के ठीक ऊपर एक 'खांचा' नजर आ रहा है?"
"हां।"
"रिवॉल्वर को अपनी दायीं आंख के सामने लाओ बायीं आंख बन्द कर लो।"
संध्या ने हुक्म का पालन करने के बाद पूछा—"अब ?"
"हाथ सीधा करो।"
संध्या ने हाथ सीधा कर लिया।
"सामने दीवार पर एक पेन्टिंग टंगी है, पेन्टिग में एक कबूतर बना हुआ है।" संजय ने कहा—"अब दायीं आंख से तुम कबूतर के सिर, रिवॉल्वर की नाल पर मौजूद कील और सांचे को देखो—रिवॉल्वर को ऐसी स्थिति में लाओ कि ये तीनों चीजें एक सीध में नजर आयें।"
संध्या प्रयास करने लगी।
उसका सम्पूर्ण ध्यान उस वक्त तीनों चीजों की सैटिंग पर था और सोफे पर बैठी किरन बीच में संध्या के होने की वजह से संजय को नहीं देख सकती थी अतः मौके का लाभ उठाकर संजय ने बेड से 'इस' रिवॉल्वर की एक गोली उठाकर जेब में डाल ली, बोला—"आं...हां...हां...हाथ कांपे नहीं, बिल्कुल स्थिर रहना चाहिए।"
"अब?" उसने हाथ को स्थिर किया।
"देखता हूं।" कहकर संजय उसके पीछे पहुंचा और ऐसा दर्शाने का प्रयत्न करने लगा जैसे रिवॉल्वर की पोजीशन चैक कर रहा हो जबकि वास्तव में वह संध्या के गले में पड़े नेकलेस में खो-सा गया था।
"बोलो ना, मेरा हाथ दुखने लगा है।"
"हां, ठीक है—ट्रेगर दबा दो।"
"क्लिक।" संध्या ने ट्रेगर दबा दिया।
"आं...हां...हां...यही तो वह संवेदनशील प्वाइंट है जिसमें जरा-सी गड़बड़ होने पर गोली कहीं-की-कहीं जाती है।" संजय ने कहा—"ट्रेगर दबाते वक्त हाथ बहुत ज्यादा हिल गया था, इतना ज्यादा कि अगर इसमें गोली होती तो कबूतर की तो बात ही दूर, पेन्टिग में भी नहीं लगती।"
"क्या मतलब?"
"जिस वक्त ट्रेगर दबाया जाए उस वक्त हाथ बाल बराबर भी हिलना नहीं चाहिए।"
"ऐसा कैसे हो सकता है, जब मैं ट्रेगर दबाने के लिए दबाव डालूंगी

तो...।"

"ऐसा भी हो जाएगा संध्या जी—ऐसा न हो तो कभी किसी के रिवॉल्वर से निकली गोली सही निशाने पर न लगे—दरअसल यह 'प्रैक्टिस' से होता है, बाद में हाथ इतना सध जाता है कि ट्रेगर दबाते वक्त जरा भी नहीं कांपता-यहां आइये, इस बार यहां से कबूतर, कील और खांचे को एक सीध में लेकर ट्रेगर दबाइए—खास ख्याल यह रखना है कि हाथ न कांपे।"

संध्या उस स्थान पर खड़ी होकर निशाना लगाने का प्रयत्न करने लगी जहां संजय ने कहा था और संजय ने उसे किरन की आंखों और अधखुली दराज के बीच खड़ा किया था, अधखुली दराज से साइलेंसर ठीक उस वक्त संजय की जेब में पहुंच चुका था जब संध्या ने पूछा—"ठीक है?"

"हां, ट्रेगर दबाओ।"

संध्या ने 'खट्ट' से ट्रेगर दबा दिया।

संजय बोला—"वैरी गुड, आपने खुद महसूस किया होगा कि इस बार हाथ कम कांपा था।"

"हां।"

"फिर कोशिश कीजिए।"

तभी किरन ने पूछा—"जीजा जी तो ऑफिस में ही होंगे संध्या?"

"नहीं।" निशाना साधने का प्रयत्न करती संध्या ने बताया—"दिल्ली गए हैं।"

"क्यों?"

"लंच से पहले फोन आया था, वहां हमारे एक हॉल में आग लग गयी है।"

"ओह!" किरन के मुंह से ऐसी आवाज निकाली जैसे सुनकर अफसोस हुआ हो, नजरें संजय से मिली थीं—जैसे कह रही हों कि वहीं हुआ जैसी उम्मीद थी—उन दोनों की भावनाओं से अनभिज्ञ संध्या तीनों चीजों को 'सीध' में लेने का प्रयास कर रही थी।

किरन ने पुनः पूछा—"कब तक लौटेंगे?"

"कल सुबह, कहकर गए हैं कि एयरपोर्ट से सीधे ऑफिस पहुंच जायेंगे।" संध्या ने बताया—"कल लंच पर मुझसे मिलेंगे मगर तू मुझे डिस्टर्ब मत कर किरन, देख—मेरा हाथ कांप रहा है।"

संजय अधखुली दराज के नजदीक खड़ा था।

उसने आहिस्ता से, अपनी जांध से अधखुली दराज बन्द कर दी।

संध्या ने कहा—"देखो जीजा जी।"

"देख रहा हूं।"

उसने पुनः ट्रेगर दबा दिया।

"नहीं।" संजय ने कहा—"इस बार ट्रेगर दबाते वक्त हाथ पहले से ज्यादा कांपा।"

किरन पर जैसे रहा नहीं गया, कह उठी—"जीजा जी दिल्ली नहीं गए हैं संध्या।"

"क...क्या मतलब?" उसने चौंककर किरन की तरफ देखा।

"वे यहीं हैं, इसी शहर में।"

"कहां हैं?"

"अपनी रखैल के पास, अलका के पास।"

संध्या के दिलो-दिमाग पर मानो बिजली गिरी—निशाना साधने की तो बात ही दूर, वह यह भी भूल गई कि हाथ में रिवॉल्वर है—चेहरे पर आश्चर्य लिए वह किरन को आंखें फाड़े इस तरह देखती रह गयी जैसे साक्षात् कुतुबमीनार को अपने कमरे में देख रही हो, होंठ कांपे—"न...नहीं किरन, ऐसा नहीं हो सकता।"

"ऐसा ही है पगली।"

"तुझे कैसे मालूम?"

एक ही सांस में किरन सबकुछ बताती चली गयी—सुनने के बाद संध्या के होश उड़ गए, गुस्से में तमतमाई हुई वह दांत भींचकर बोली—"मैं उसे जिन्दा नहीं छोडूंगी, कच्ची चबा जाऊंगी उसे।"

"नहीं संध्या जी—प्लीज, गुस्सा मत कीजिए।" संजय बोला—"गुस्सा करने से समस्या सुलझेगी नहीं बल्कि और उलझ जाएगी।"

"यह समस्या किसी भी तरह नहीं सुलझ सकती।"

"सुलझ सकती है, मेरे दिमाग में एक तरकीब है।"

"तरकीब?"

"हां संध्या।" किरन ने कहा—"मैं कल तभी से इनके पीछे पड़ी हुई थी जब से पार्टी में मिसेज टंडन बनी अलका को देखा, काफी कोशिश के बाद ये एक तरकीब सोचने में कामयाब हुए हैं।"

"क्या तरकीब है वह?"

"बताने की दो शर्तें हैं।" संजय ने कहा।

वह संजय की तरफ पलटी—"शर्तें?"

"सबसे पहले आप रिवॉल्वर को दराज में रख दें।" संजय ने हल्की-सी मुस्कान के साथ कहा—"और दूसरी यह कि गुस्सा थूक दें क्योंकि इससे बात और बिगड़ सकती है—गुस्से में आप इससे ज्यादा कुछ नहीं करेंगी कि इसी वक्त विकास-विहार जाकर भंवर बाबू को रंगे हाथ रखैल के साथ पकड़ लें। मगर जरा ठंडे दिमाग से सोचिए, अगर आपने ऐसा किया तो क्या होगा—यही ना कि भंवर बाबू अभी आपसे

थोड़े बहुत डरते हैं—छुपकर जाते हैं—मगर उसके बाद वे नंगे हो जायेंगे, खुलेआम जाया करेंगे।"

बात संध्या की समझ में आ रही थी।

संजय ने गर्म लोहे पर चोट की—"जबकि मेरे दिमाग में एक ऐसी तरकीब है जिससे हो सकता है कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।"

"मैं वह तरकीब सुनना चाहती हूं।"

"सबसे पहले रिवॉल्वर दराज में रखिए।"

संध्या ने रिवॉल्वर की तरफ इस तरह देखा जैसे पहली बार उसे उसकी मौजूदगी का अहसास हुआ हो और फिर वह दराज की तरफ बढ़ गयी मगर संजय ने कहा—"बेड पर पड़ी गोलियां तो डाल लीजिए इसमें।"

वह ठिठकी।

बेड की तरफ मुड़ी। जिस वक्त वह गोलियां रिवॉल्वर में डाल रही थी उस वक्त संजय चहलकदमी करता हुआ किरन के समीप सोफे पर आ बैठा—संध्या ने चैम्बर बन्द किया, सेफ्टी लॉक ऑफ करके दराज की तरफ बढ़ी। यहां संजय का प्रयास ये था कि संध्या का ध्यान दराज से गायब साइलेंसर पर न जाए अतः उधर संध्या ने दराज खोली इधर संजय ने कहा—"एक बात तो है संध्या जी!"

"क...क्या?" दराज खोले उसने तुरन्त पलटकर संजय की तरफ देखा।

संजय ने कहा—"अगर आप थोड़े ठंडे दिमाग से काम लें तो अलका से पीछा छुड़ा सकती हैं।"

"कैसे?"

"बताता हूं, दराज बन्द करके इधर आइए।"

अब।

दराज में झांकने का होश भला उसे कहां रहा था?

रिवॉल्वर को दराज में डालने के बाद यंत्रचालित-सी संध्या ने दराज बन्द की और उसके नजदीक आकर बोली—"बोलिए, क्या करना होगा मुझे?"

"आराम से बैठकर सुनें।"

वह उनके ठीक सामने वाली सोफा चेयर पर बैठ गई।

संजय ने समझाने वाले भाव से कहना शुरू किया—"यह तो आप समझ गई हैं ना कि गुस्सा करने से बात बिगड़ेगी ही—अगर गुस्से में अलका को मार डालती हैं तब भी और भंवर बाबू को उसके साथ रंगे हाथ पकड़ने के बारे में सोचती हैं तब भी?"

उसने स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

"गुड।" संजय ने कहा—"मेरा ख्याल यह है कि अगर आप इस बारे में भंवर बाबू को भूलकर अलका से बात करें तो हल निकल सकता है।"

"क्या?" संध्या भड़क उठी—"उस रखैल से बात करूंगी मैं—नहीं, उस पर तो मैं थूकना भी पसन्द नहीं करूंगी?"

"मैं जानता हूं कि आप अलका से बेहद-बेहद नफरत करती हैं और ऐसा स्वाभाविक भी है। आप जैसी अवस्था में एक पतिव्रता पत्नी अपने पति की रखैल से नफरत के अलावा और कर भी क्या सकती हैं मगर यदि आप सचमुच अपने पति का पीछा उससे छुड़ाना चाहती हैं तो प्लीज, इस नफरत को प्रदर्शित न करें, दबाए रखें।"

"क्या मतलब?"

"आप उसके पास जायें, नम्रता और प्यार के साथ सारी बातें खोलकर कहें—कहें कि वह आपके दाम्पत्य जीवन में जहर न घोले पल्ला पसारकर आप उससे अपने सुहाग की भीख मांग सकती हैं।"

"आप तो साफ-साफ कह रहे हैं कि मैं उसके सामने गिड़गिड़ाऊं?"

"बात को गहराई से समझने की कोशिश कीजिए संध्या जी!" संजय अपने एक-एक लफ्ज को प्रभावशाली बनाने का प्रयत्न कर रहा था—"अगर हमारा काम गधे को बाप बनाने यानी उसके सामने गिड़गिड़ाने से निकल सकता है तो नीति यह कहती है कि बेहिचक गिड़गिड़ा लेना चाहिए।"

"क्या इस तरह गिड़गिड़ाने से वह मान जाएगी?"

"गारण्टी तो कोई भी नहीं ले सकता संध्या जी—हां, एक उम्मीद रखी जा सकती है—जरा सोचिए, आखिर है तो वह भी औरत ही—क्या एक औरत होकर वह दूसरी औरत का दर्द नहीं समझेगी, क्या उसके मर्म का अहसास नहीं करेगी—सुना है कि औरत कैसी भी हो मगर दिल की बहुत कोमल होती है। पुरुष के मुकाबले औरत कई गुना ज्यादा संवेदनशील होती है—एक औरत दूसरी औरत के जज्बातों का अहसास पलक झपकते कर लेती है, मैं आपसे उसके उसी अहसास को जगाने की बात कर रहा हूं—अगर आप उसे भावुक करने में सफल हो गयीं तो यकीनन कामयाबी आपके चरण चूमेगी!"

"मेरे ख्याल से यह ठीक रहेगा संध्या।" किरन काफी देर बाद बोली।

संध्या के चेहरे पर मौजूद भाव बता रहे थे कि बात उसकी समझ में आ गई है, बोली—"हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहने से बेहतर तो यह है कि मैं इस तरकीब को आजमाकर देखूं।"

"मेरे ख्याल से कामयाबी जरूर मिलेगी।"

"ठीक है, मैं विकास-विहार जाकर उससे बात करूंगी।"

"कब?"
"दो-चार दिन बाद, जब भी मौका मिला।"
"कल ही बात क्यों नहीं करतीं?"
"कल?"
"भंवर बाबू ने आपसे कहा है कि वे दिल्ली से सुबह ही लौट आएंगे और सीधे ऑफिस पहुंचेंगे। इसका मतलब ये है कि वे दस बजे तक अलका के फ्लैट से ऑफिस पहुंचने का प्रोग्राम बना चुके हैं।"
"जाहिर है।"
"आप साढ़े दस बजे के करीब ऑफिस में फोन करके मालूम कर सकती हैं कि वे पहुंचे या नहीं?" संजय अपने प्लान के मुताबिक कहता चला गया—"अगर पहुंच गए हो तो आप उसी समय विकास-विहार जा सकती हैं। लंच के लिए भंवर बाबू एक बजे यहां पहुंचेंगे तब तक आपके पास काफी टाइम होगा।"
"ठीक है।" संध्या ने कहा,"मैं कल ही ट्राई करती हूं।"
"म...मगर मैं एक 'रिक्वेस्ट' करना चाहूंगा संध्या जी।" संजय ने ऐसी एक्टिंग की जैसे हिचकता हुआ कह रहा हो।
"बोलिए?"
"आप अलका या भंवर बाबू से इस बारे में बात करते वक्त मेरा या किरन का नाम बीच में न लाएं।" संजय ने एक-एक शब्द तौलकर कहा—"यह बात सिर्फ इसलिए कह रहा हूं कि कहीं भंवर बाबू यह न सोच बैठें कि हम लोगों ने आपके कान भरे हैं।"
"वैसा तो मैं खुद ही नहीं करूंगी।" संध्या ने कहा—"क्योंकि भंवर की 'नॉलिज' में आप लोग अलका के बारे में कुछ नहीं जानते।"
संजय के होंठों पर मुस्कान फैल गई।
यह मुस्कान वह मुस्कान थी जो मछेरे के होंठों पर अपने जाल में फंसी सबसे 'कीमती' मछली को देखकर उभरती है।
□□□
लेखन कक्ष में टाइपराईटर से निकलने वाली खटखट की आवाज गूंज रही थी। संजय की अंगुलियां टाइपराईटर के बटनों पर किसी 'डिस्को गर्ल' की टांगों की मानिन्द थिरक रही थीं और 'परिणामस्वरूप' ये शब्द टाइप होते जा रहे थे—
मैं सारा जाल बिछा चुका हूं।
संध्या के कत्ल की सभी तैयारियां मुकम्मल हो चुकी हैं—बेडरूम से उठाकर वह टेप भी यहां यानी ऑफिस में पहुंचा चुका हूं जिसमें एक बार लगाई गई 'कैसिट' खत्म होने पर 'ऑटोमैटिक-रिवर्स' होने के बाद पुनः चलने लगती है।
रूबी को नहीं मालूम कि मैं ऑफिस में कोई टेपरिकॉर्डर ले आया हूं।

इस वक्त रात के दस बजे हैं। संजय टाईप करता चला गया—कल दिन में दस बजे के आसपास उन बीजों से पौधे निकलने शुरू होंगे जो मैंने आज तक बोए हैं और करीब ढाई बजे तक मैं सारी फसल काट चुका होऊंगा।
संध्या का नेकलेस कल ढाई बजे के बाद से मेरी मिल्कियत होगा।
वह इस दुनिया में नहीं होगी।
अब तो केवल एक ही बात सोचनी है, यह कि कल किस वक्त मैं क्या कर रहा होऊंगा बल्कि 'सोचनी' भी नहीं है, सोच तो चुका हूं—जो 'सोचा' है उसे अपने दिमाग में इस टाइपराईटर के जरिए 'क्लियर' करना है।
वही कर रहा हूं।
ताकि ऐन वक्त पर कोई चूक न हो सके।
मैं संध्या को ऐसी सलाह दे आया हूं जिससे किसी भी हालत में बात 'बन' नहीं सकती, बिगड़ेगी ही बिगड़ेगी। यह सलाह मैंने अलका की नेचर और उसके मिजाज को देखकर दी है।
संध्या के गिड़गिड़ाने का उस पर कोई असर होने वाला नहीं है।
हां, इस घटना को अलका 'क्रेश' जरूर करेगी।
वह उसी समय फोन पर या अपने फ्लैट पर भंवर को बुलाएगी और जमकर संध्या के विरुद्ध उसके कान भरेगी क्योंकि इसी में उसका फायदा है।
मैं यही चाहता हूं।
यह कि जब भंवर अपने बंगले में कदम रखे तब क्रोधाग्नि से उसका सम्पूर्ण दिलो-दिमाग और जिस्म सुलग रहा हो, बंगले में आते ही वह संध्या पर बरस पड़े, उधर क्योंकि संध्या जानती है कि वह रात-भर कहां रहा, अपनी नाकामी की खीज भी उसके दिलो-दिमाग पर सवार होगी।
अतः।
वह भी बरसेगी।
जमकर 'महाभारत' होगा।
उस वक्त गुस्से में वे एक-दूसरे को जो कह जाए कम होगा और उन शब्दों को सुनेंगे बंगले के सारे नौकर।
भंवर बकबाककर चला जाएगा, बचेगी रोती-सिसकती संध्या।
तब—
मेरा एक्शन शुरू होगा।
मैंने एक पूरी कैसिट में टाइपर्राटर की खट्खट् भर ली है।
आज शाम अपने नए उपन्यास के कुछ पेज यह कहकर रूबी को दे चुका हूं कि मैंने अब तक यह लिखा है और वह रात को पढ़कर

सुबह मुझे अपनी रिपोर्ट दे—इतने पेज मैंने रोक लिए हैं जितने करीब दो घण्टे में टाइप करता हूं—मैं उसके सामने लेखन-कक्ष में कल दोपहर सवा बजे के आसपास घुसूंगा।

हालांकि वह जानती है कि जब मैं काम कर रहा होऊं तो चाहे जितनी जरूरी बात हो, न वह खुद मुझे डिस्टर्ब कर सकती है न किसी अन्य को करने दे सकती है, फिर भी कल इस बारे में 'खास' और 'सख्त' हिदायत देकर यहां घुसूंगा।

डेढ़ बजे वह 'टेप' ऑन हो जाएगा जिसमें टाइप की खट्-खट् भरी है।

रिसेप्शन में अपनी सीट पर बैठी रूबी यह समझती रहेगी कि मैं काम में मशगूल हूं—इस ख्याल का तो बेचारी को स्वप्न भी नहीं चमक सकता कि अन्दर टेप बज रहा होगा।

टेप की एक साइड पौने घण्टे की है।

जब वह 'खत्म' हो जाएगा तो 'ऑटोमैटिक-रिवर्स' होकर पुनः 'प्ले' होने लगेगा।

इधर टेप चलना शुरू होगा उधर लोहे वाले उस दरवाजे का ताला खोलकर मैं बाहर निकल जाऊंगा, जिसकी चाबी हमने इस कोठी के मालिक से आज तक ली ही नहीं है।

कोठी से बाहर निकलने के लिए मुझे चौकीदार की नजरों से भी बचना होगा मगर वह कोई इतना मुश्किल काम नहीं है जिसके बारे में यहां, अपने टाइपराईटर से 'डिस्कस' करूं।

कोठी से बाहर निकलने के बाद एक टैक्सी पकड़नी है।

इस टैक्सी को नदी के पुल पर छोड़ना होगा क्योंकि वहां स्थित बूथ से मुझे दो फोन करने हैं।

पहला भंवर की रखैल यानी अलका को, दूसरा भंवर के ऑफिस में।

अपनी आवाज को मैं भंवर की आवाज से नहीं मिला सकता मगर थोड़ी चेंज करने के लिए माऊथपीस पर रूमाल जरूर डाल सकता हूं—दूसरी तरफ से जैसे ही अलका अपना नाम बताएगी मैं यह कहना शुरू कर दूंगा कि—मैं भंवर बोल रहा हूं अलका—बहुत गड़बड़ हो गई है, तुमसे बात करने के बाद मैं सीधा बंगले पर गया था। वहां संध्या ने मुझे आत्महत्या कर लेने की धमकी दी—इस सम्बंध में मुझे तुमसे फौरन बात करनी होगी अतः बिना एक भी मिनट गंवाए 'नेहरू पार्क' में मुझसे मिलो।

यह स्पॉट मेरे प्लान का सबसे ज्यादा संवेदनशील स्पॉट होगा।

अगर अलका को जरा भी शक हो गया कि फोन भंवर का नहीं था तो मेरी आगे तक की सारी प्लानिंग गड़बड़ा जाएगी।

अतः—

मुझे किसी भी हालत में उसे यह शक नहीं होने देना है।

बल्कि कहना चाहिए कि 'आवाज' के बारे में सोचने का उसे मौका नहीं देना है, ऐसी एक्टिंग करनी होगी मुझे जैसे भंवर बहुत बौखलाई हुई अवस्था में बोल रहा हो—जो शब्द फोन पर कहने हैं उनका चुनाव मैंने बहुत सोचसमझकर किया है—अगर उसे 'आवाज' पर थोड़ा-बहुत शक हुआ भी तो मेरे द्वारा कहे गए शब्द उसे 'वाश' कर देंगे। वह यह सोचने पर मजबूर हो जाएगी कि इस बात का पता भंवर के अलावा और किसी को चल ही कैसे सकता है कि 'मैंने (अलका) संध्या के फ्लैट पर आने की बात भंवर से कही थी?'

यही सोच उसे खींचकर नेहरू पार्क ले जाएगी।

मुझे उम्मीद नहीं है कि कुछ ही देर पूर्व संध्या से झगड़कर ऑफिस में पहुंचा भंवर लंच के लिए पुनः बंगले पर जाएगा मगर गया भी तो अपने नियमानुसार एक चालीस पर लौट जाएगा यानी जब मैं उसके ऑफिस में फोन मिलाऊंगा तब वह वहीं होगा मगर मुझे उसके पर्सनल फोन का नहीं उस फोन का नम्बर मिलाना है जो रिसेप्शनिस्ट की मेज पर रखा रहता है।

उधर मेरे माउथ-पीस पर अब भी रूमाल पड़ा होगा—अपनी आवाज को 'पतली' यानी ऐसी बनाने की कोशिश करूंगा जैसे कोई लड़की बोल रही हो—ऐसी आवाज निकालने की पिछले कई दिन से मैं कोशिश भी कर रहा हूं और अच्छी तरह जानता हूं कि अगर कोई इस बात पर ध्यान दे कि यह आवाज लड़की की है या नहीं तो निश्चित रूप से इस नतीजे पर पहुंच जाएगा कि आवाज लड़की की नहीं है बल्कि कोई मर्द आवाज को लड़की की बनाने की चेष्टा कर रहा है।

अलका की आवाज की नकल करना तो मेरे लिए असम्भव ही है।

यही सब सोचकर मैंने प्रोग्राम यह बनाया है कि फोन पर भंवर से बात नहीं करूंगा, सिर्फ उसकी रिसेप्शनिस्ट से बात करूंगा, कहूंगा कि मैं अलका बोल रही हूं, ऑफिस में भंवर बाबू होंगे—उनसे कहो कि कुछ देर पहले उनकी पत्नी ने मुझे फोन किया था और इस बात पर आग-बगूला हो रही थी कि मैंने उसकी और अपनी मुलाकात का जिक्र भंवर से क्यों किया—संध्या ने मुझे कत्ल करने की धमकी दी है अतः भंवर बाबू यह 'मैसेज' मिलते ही मुझे यानी अलका से 'गाँधी पार्क' में मिलें।'

पहले ही स्वीकार कर चुका हूं कि रिसेप्शनिस्ट को मेरी आवाज पर 'शक' हो सकता है।

परन्तु।

शक के बावजूद यह मैसेज उसे भंवर को देना पड़ेगा।

और 'मैसेज' ऐसा है कि जिसे सुनते ही भंवर के होश उड़ जाएंगे,

दिमाग 'हवा' हो जाएगा—रिसेप्शनिस्ट से यह पूछने की उसे 'सुध' ही न रहेगी कि यह मैसेज देने वाले की आवाज कैसी थी—रिसेप्शनिस्ट अगर कुछ बताना भी चाहेगी तो भंवर उसे इतना मौका देने से पहले ही बाहर निकल चुका होगा—वैसे मनोविज्ञान यह कहता है कि 'मैसेज' सुनते ही जो हालत भंवर की हो जाएगी उसकी मौजूदगी में, आवाज के बारे में उससे बात करने का रिसेप्शनिस्ट में साहस नहीं रह जाएगा।

भंवर आंधी-तूफान की तरह 'गांधी-पार्क' पहुंचेगा।

मैं टैक्सी द्वारा 'डिफेंस कॉलीनी' स्थित भंवर के बंगले के पीछे।

टैक्सी मुझे भंवर के बंगले से कुछ पहले छोड़ देनी होगी, बंगले के पीछे पैदल पहुंचूंगा।

वहां चौबीस घण्टे सन्नाटा रहता है।

काफी दूर तक जंगल पड़ा है।

एक-दूसरे के बेहद नजदीक दो ऐसे पेड़ हैं जिनके बीच छुपे किसी व्यक्ति को कोई तब भी नहीं देख सकता जबकि बराबर से गुजर न जाए—हालांकि खूब चैक कर चुका हूं और इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि उधर से भूले से भी कोई व्यक्ति नहीं गुजरता।

मोटी जड़ों वाले उन दो पेड़ों में से एक की जड़ में 'गड्ढा' खोदकर मैं आज रात आठ बजे एक 'एयर-बैग' छुपा आया हूं—भंवर को फोन करने के बाद सीधा वहां पहुंचूंगा।

दोनों पेड़ों के बीच अपने जिस्म पर एक लबादा और चेहरे पर नकाब डालूंगा।

ये दोनों चीजें मैंने अलका के फ्लैट से उड़ाई गई उसकी धोती की, अपने लेखन-कक्ष में बैठकर सुई-धागे से खुद बनाई हैं।

इस काम में मुझे कुल पन्द्रह मिनट लगे थे।

चौगा और नकाब मैंने 'टैम्प्रेरी' तौर पर बड़े-बड़े 'टांकों' वाली सिलाई लगाकर तैयार किए हैं, ऐसे कि जिसे देखते ही कोई भी भांप जाए कि उनके तैयार होने में पन्द्रह मिनट से ज्यादा समय नहीं लग सकता।

किरन के 'मशीन वाले डिब्बे' से पन्द्रह मिनट के लिए चुराया गया सुई-धागा वापस डिब्बे में रख चुका हूं।

रबर के दस्ताने पहनने के बाद मैं एयर-बैग से नम्बर सेविन वाला रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले लूंगा।

रिवॉल्वर की नाल पर संध्या की दराज से गायब किया गया साइलेंसर लगा होगा, उस पर से अपनी अंगुलियों के निशान साफ कर चुका हूं।

उस वक्त मेरे रिवॉल्वर में केवल एक गोली होगी—वह गोली जो मैंने संध्या को रिवॉल्वर चलाना सिखाते वक्त उड़ाई है—भंवर के बंगले की चारदीवारी पार करने में कोई दिक्कत पेश नहीं आएगी क्योंकि वह इतनी ऊंची है ही नहीं कि दिक्कत पेश कर सके।

अब—

मुझे खास तौर पर दो बातों का ख्याल रखना है।

पहली यह कि चारदीवारी से संध्या के कमरे तक जाते कोई न देख सके—हालांकि इसकी सम्भावना न के बराबर है क्योंकि कई बार चैक कर चुका हूं, उस वक्त बैक-लॉन में कोई नहीं होता मगर फिर भी, सतर्क तो मुझे रहना ही होगा, नसीब धोखा भी दे सकता है।

दूसरी बात मेरे पद-चिन्हों के बारे में है।

ये कहीं नहीं छूटने चाहिएं—न पेड़ों के पास, न लॉन में और न ही संध्या के कमरे में।

एयर-बैग कन्धे पर होगा।

संध्या आरामकुर्सी पर सो रही होगी। दोपहर डेढ़ बजे वह हर हाल में सो जाती है।

मेरे जूते क्रेपसोल के हैं, बिना आवाज पैदा किए खिड़की की चौखट से कमरे के फर्श पर उतरना होगा मुझे।

कुर्सी की पीठ मेरी तरफ होगी।

यहां—

संध्या की नींद और मेरी सावधानी का मुकाबला होगा। मुझे कुर्सी के बेहद नजदीक पहुंचना है।

अपनी सांस तक रोक लेनी है मुझे।

क्योंकि हल्की-सी आहट होते ही वह जाग सकती है।

पहली स्थिति यह होगी कि संध्या की नींद हार जाए, मेरी सावधानी जीते यानी संध्या सोती रहे और मैं कुर्सी के पीछे पहुंचकर, उसकी दायीं कनपटी पर ठीक वहां गोली मार दूं जहां आत्महत्या करने वाला शख्स मारता है।

दूसरी स्थिति यह होगी कि मेरी सावधानी हार जाए।

संध्या की नींद उचट जाए।

उस अवस्था में मेरे पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं रह जाएगा कि संध्या के जागते ही उसकी तरफ रिवॉल्वर तान दूं—धमकी दूं कि अगर उसने चीखने या जोर से बोलने की कोशिश की तो मैं गोली मार दूंगा।

आवाज सुनते ही वह पहचान जाएगी कि मैं कौन हूं?

मुझे उस वक्त, वहां, उस अवस्था में देखकर भौंचक्की रह जाएगी वह।

निश्चित रूप से ऐसी अवस्था में मुंह से बोल न फूटेगा।

मुझे गुर्राकर कहना पड़ेगा कि 'मैं यहां सिर्फ नेकलेस के लिए आया हूं और तुम्हें कत्ल करने का मेरा कोई इरादा नहीं है मगर यदि गड़बड़ की तो मेरे पास तुम्हें मार देने के अलावा कोई चारा नहीं बचेगा।'

ऐसा इसलिए कहूंगा ताकि अपनी जान बचाने के लालच में संध्या

न सिर्फ खामोश रहे बल्कि मौत के डर से मेरे आदेशों का पालन भी करे। अगर उसे यह इल्म हो गया कि मैं हर हाल में उसका कत्ल करने वाला हूं तो दुनिया की कोई ताकत उसे शोर मचाने से नहीं रोक सकेगी और उस अवस्था में दुनिया की कोई ताकत मुझे फांसी के फंदे से भी नहीं बचा सकेगी।

लिहाजा—

मुझे संध्या को यकीन दिलाना होगा कि अगर वह चुप रही, किसी किस्म की गड़बड़ नहीं की तो मैं नेकलेस लेकर उसे जीवित छोड़कर चला जाने वाला हूं।

उस अवस्था में वह मेरे आदेशों का पालन करने के लिए मजबूर होगी।

मैं धमकाता हुआ उसे आरामकुर्सी पर उसी पोज में लेट जाने का हुक्म दूंगा जिसमें वह सोती है—आंखें बन्द करा दूंगा; उसके समीप पहुंचूंगा—वह सोच रही होगी कि मैं गले से नेकलेस निकालना चाहता हूं।

ये क्षण काफी नाजुक होंगे क्योंकि अगर गोली चलने से क्षण-भर पूर्व भी संध्या को आभास हो गया कि मैं उसे गोली मारने वाला हूं तो मर भले ही जाए मगर चीखकर मेरे लिए बखेड़ा खड़ा कर जाएगी।

अतः—

मुझे किसी हालत में ऐसा नहीं होने देना है।

अपने असली मकसद की 'जरा-सी भी भनक' उसे दिए बिना बायें हाथ से उसका मुंह भींचूंगा, दायें हाथ में दबे रिवॉल्वर से गोली ठीक वहां मारूंगा जहां आत्महत्या करने वाला मारता है।

दोनों अवस्थाओं में करना मुझे यही है।

वैसे भगवान से दुआ यह है कि मुझे 'दूसरी स्थिति' की जहमत न उठानी पड़े।

संध्या की नींद न उचटे।

वह सोयी ही रहे और मैं अपना काम कर दूं।

खैर, यह तो वक्त बताएगा कि मुझे कौन-सी स्थिति से निपटना होगा—हां, प्लान यह है कि संध्या की मौत के बाद मैं लाश के गले से नेकलेस निकालकर एयर-बैग में डालूंगा।

एयर-बैग से नेकलेस निकालकर लाश के गले में।

नेकलेस की अदला-बदली करने के बाद दराज की तरफ बढ़ूंगा।

धोती की तरह मैं अलका के फ्लैट से उसका एक 'हेयरबैण्ड' भी उड़ा लाया हूं। इसी 'हेयर-बेण्ड' को दराज के मुट्ठे में फसाकर उसे खोलूंगा।

ताकि उस पर मौजूद संध्या की अंगुलियों के निशान मिट न सकें।

इसके बाद रुई के एक छोटे-बण्डल से निकाले गए दो 'फायों' की

मदद से दराज में पड़े रिवॉल्वर को इतनी सावधानी से निकालूंगा कि उस पर से संध्या के फिंगर-प्रिन्ट्स न मिट पाएं।

रुई के 'फायों' से पकड़कर ही उसका सैफ्टी-लॉक खोलूंगा। चैम्बर में पड़ी गोलियों के पृष्ट भाग में 'गुदे' नम्बर पढ़कर जानूंगा कि वह गोली कौन-से छोद में है जिसे मैं संध्या को रिवॉल्वर चलाना सिखाने के बहाने उसके रिवॉल्वर की पांच गोलियों में मिला गया था। उस गोली का नम्बर है—पी० के०—८६२६६५।'

यह 'नम्बर सेविन वाले रिवॉल्वर' की गालियों में से एक है।

उस गोली को उस छेद में डालूंगा जिसमें मौजूद गोली को 'पहली बार' ट्रेगर दबाने पर चलाना है।

उस छेद में फंसी गोली को निकालकर उस छेद में डालूंगा जिससे 'अपनी' गोली निकाली होगी।

इतना काम करने के बाद चैम्बर बन्द कर दूंगा।

सेफ्टी-लॉक ऑन।

साइलेंसर अपने रिवॉल्वर की नाल से हटाकर इस रिवॉल्वर की नाल पर।

एयर-बैग से रुई का एक बड़ा वाला बण्डल निकालकर फर्श पर खड़ा कर दूंगा, अपने दोनों जूतों से मुझे बण्डल के निचले सिरों को कस लेना होगा—मेरे दस्ताने-युक्त दोनों हाथों में रिवॉल्वर की मूठ होगी।

मगर संध्या की अगुलियों के निशान मूठ पर से तब भी नहीं मिटेंगे क्योंकि मूठ और मेरे हाथों के बीच 'फाये' होंगे, दस्ताने से ढकी तर्जनी ट्रेगर पर।

मैं झुकूंगा।

रिवॉल्वर का रुख बण्डल के व्यास की तरफ करके गोली चला दूंगा।

रुई के जाले इतने बारीक, धने और उलझे हुए होते हैं कि 'प्वाइंट फाइव कैलीवर' से निकली गोली बड़े बण्डल के पार नहीं निकल सकेगी बल्कि अपनी क्षमतानुसार रुई के कुछ हिस्से को जलाने के बाद उसी में फंसी रह जायेगी।

अब मैं चैक करूंगा कि रिवॉल्वर पर कही कोई रुई का रेशा तो नहीं लगा है अगर लगा होगा तो साफ कर दूंगा—यह रिवॉल्वर इसी अवस्था में मुझे संध्या के दायें हाथ में फंसा देनी होगी।

ठीक यूं जैसे आत्महत्या करने वाले के हाथ में फंसी मिलती है।

पूरी तरह संतुष्ट होने के बाद अपना रिवॉल्वर, दोनों 'फाये' और रुई का बड़ा बण्डल एयर-बैग के हवाले करूंगा, मेज की दराज को खुली छोड़ दूंगा—हां, उसके मुट्ठे में फंसे हेयर-बेण्ड को वहां से निकालकर बेड पर डालना नहीं भूलूंगा।

टाइम काफी होगा अतः किसी किस्म की जल्दबाजी नहीं मचाऊंगा मैं।

अच्छी तरह चैक करूंगा कि मेरे वहां आगमन का कोई चिन्ह् तो बाकी नहीं रह गया है, अगर रहा होगा तो मिटाना होगा और सारे निशानों को मिटाता हुआ वापस पेड़ों की जड़ में पहुंचूंगा।

जिस्म से चोगा और चेहरे से नकाब उतारकर एयर-बैग में।

एयर-बैग सहित अब मुझे सड़क पर पहुंचना होगा। टैक्सी द्वारा विकास-विहार 'सौरभ' नामक बिल्डिंग तक।

सीढ़ियों द्वारा फोर्थ फ्लोर पर।

अलका इस वक्त 'नेहरू पार्क' में होगी और चौंसठ नम्बर यानी उसके फ्लैट की चॉबी हमेशा की तरह गैलरी में बिछे कार्पेट के नीचे।

तीन कमरों के इस फ्लैट के बेड-रूम में एक 'गोदरेज' की अलमारी रखी है—चोगा, नकाब और दस्ताने मुझे इस अलमारी के नीचे इतने गहरे तक ठूंस देने होगे कि सामान्य अवस्था में अलका की नजर में न आयें।

फिर—

बाथरूम में पहुंचूंगा।

एयर-बैग से 'पोलीथिन' की वह थैली निकालूंगा जिसमें पहले ही अपनी गाड़ी से निकालकर करीब एक लीटर पैट्रोल भर चुका हूं। नेकलेस, नम्बर सेविन वाला रिवॉल्वर और शेष बची इसकी पांचों गोलियां निकालकर जेब में डालूंगा। इसके बाद रुई के बड़े बण्डल से चली हुई गोली का 'खोल' निकालकर जेब के हवाले करूंगा।

अब सबसे पहले मुझे सम्पूर्ण रुई को जलाकर राख करना है।

इसके बाद एयर-बैग पर पैट्रोल छिड़ककर, पोलीथिन की थैली सहित उसमें आग लगा दूंगा।

यह काम मुझे बैग, रुई और पोलीथिन की थैली को 'लेट्रीन सीट' में डालकर करना है ताकि सब चीजों की राख को आसानी से फ्लश में बहा सकूं—'लेट्रीन सीट' अथवा बाथरूम में मुझे कहीं भी ऐसा कोई चिह्न नहीं छोड़ना है जिससे बाद में पुलिस यह जान सके कि वहां कुछ जलाया गया है भले ही उसके लिए चाहे मुझे हजार बार सर्फ से लेट्रीन सीट को साफ करना पड़े, वहां पैट्रोल की गंध तक नहीं छोड़नी है मुझे।

पूरी तरह संतुष्ट होने के बाद अपने वहां जाने के बारीक से बारीक चिन्ह् को मिटाता हुआ फ्लैट से बाहर निकलूंगा। चाबी को रूमाल से साफ करके कार्पेट के नीचे रखूंगा और टैक्सी द्वारा सीधा कोठी के नजदीक तक।

एक बार फिर मुझे चौकीदार और रिसेप्शन में बैठी रूबी की नजरों को धोखा देकर गैलरी वाले दरवाजे से लेखन-कक्ष में पहुंचना होगा।

टेप ऑफ करूंगा।

कैसिट निकालकर जेब में।

टेपरिकॉर्डर को गैलरी में रखने के बाद अन्दर की तरफ से खड़ा होकर, बाहर ताला लगाकर चाबी जेब में रखूंगा।

दराज से 'ये' कागज निकालकर अपने कपड़ों में छुपा लेने में मुझे किसी किस्म की दिक्कत नहीं होगी, जिनमें मेरा पूरा प्लान होगा—हाथ में वे कागज लिए लेखन-कक्ष से रिसेप्शन में कदम रखूगा जिनमें मेरे नए उपन्यास का उससे आगे का मैटर टाइप होगा जितना रूबी पढ़ चुकी होगी।

वह समझेगी कि यह मैटर मैंने अभी-अभी टाइप किया है।

ये कागज उसे पढ़ने के लिए देकर पुनः गैलरी में पहुंचूंगा, वहां से टेपरिकॉर्डर उठाता हुआ कोठी के अन्दर यानी अपने बेडरूम में—किरन को किसी काम में व्यस्त करके उसकी अलमारी के लॉकर में असली नेकलेस रख दूंगा।

इसके बाद—

अपने प्रकाशक से मिलने का बहाना करके गाड़ी से समुद्र तट पर पहुंचूंगा।

एक मोटरबोट किराये पर लूंगा।

मैंने कई बार देखा है, मोटरबोट किराये पर देने वाला लेने वाले की शक्ल-सूरत या हुलिए पर तवज्जो नहीं देता।

बड़ा शुष्क और उदासीन-सा व्यक्ति है वह।

ऐसा कि अगर एक घण्टे बाद पुलिस मुझे लेकर उसके पास जाये और पूछे कि 'एक घण्टे पहले इस आदमी ने तुमसे मोटरबोट किराये पर ली थी या नहीं' तो जवाब में यही कहेगा कि 'मुझे नहीं पता'।

मोटरबोट लेकर मुझे समुद्र में उतनी दूर निकल जाना होगा जितनी दूर निकल सकूंगा।

रिवॉल्वर, लेखन-कक्ष की चाबी, पांच जीवित गोलियों और इस्तेमाल हुई छठी गोली के खोल सहित कैसिट को भी मुझे समुद्र के हवाले कर देना होगा—जेब से माचिस निकालकर 'इन' कागजों की राख बनानी होगी और जब मैं समुद्र तट पर वापस आऊंगा। तब जेब में ऐसा कुछ नहीं होगा जिसके आधार पर मुझे संध्या का हत्यारा साबित किया जा सके।

बेशक जेब में कुछ नहीं होगा मगर समुद्र तट से लौटते ही मुझे किरन से जरूर निपटना पड़ेगा, क्योंकि जैसे ही उसे यह पता लगेगा कि किसी ने उसकी सबसे प्यारी सहेली की हत्या कर दी है, उसे जबरदस्त दुःख होगा—अगर यह पता लग गया कि लाश के गले में नकली नेकलेस पाया गया है तो वह तुरन्त समझ जायेगी कि हत्या मैंने की है।

अतः—

कोठी पर पहुंचते ही उससे इस बारे में बात करूंगा।

वह मुझे प्रकाशक के यहां से इतनी जल्दी लौटता देखकर चौंकेगी और सवाल करेगी—मैं चेहरे पर दुःख, मायूसी और खौफ का प्रदर्शन

करके कहूंगा—'मैं तुमसे कुछ बातें करनी चाहता हूं किरन, मगर हिम्मत नहीं पड़ रही है।'

वह जरूर पूछेगी—'ऐसी क्या बात है?'

'बात ऐसी है किरन जिसे सुनकर तुम्हें शॉक भी लगेगा और मुमकिन है कि मुझसे नफरत भी करने लगो।' मैं कहूंगा।

'ऐसी क्या बात है?' वह पूछेगी।

कुछ देर ऐसी ड्रामेबाजी करूंगा जैसे बताते हुए डर लग रहा हो, खुद से ग्लानि हो रही हो और जब वह जानने के लिए पूरी तरह आतुर हो उठेगी तो कहूंगा कि—'मुझे तुम्हारे प्यार ने दीवाना बना दिया था किरन, तुम्हें संध्या वाला नेकलेस पहनाने की ललक ने मुझे पागल कर दिया इसलिए ऐसा कर बैठा मगर...'

'कैसा कर बैठे तुम?'

मैंने वह डुप्लीकेट नेकलेस यह सोचकर बनवाया था कि किसी दिन संध्या के नेक्लेस से चेंज कर दूंगा।'

'क...क्या? वह कह उठेगी।

'सच कह रहा हूं किरन, सचमुच मेरे दिल में यह बदनीयती थी और इसीलिए मैं वहां गया था।'

घोर आश्चर्य में घिरी किरन पूछेगी—'कहां गये थे?'

'भंवर के बंगले पर, छुपकर संध्या के बेडरूम में।'

'क...क्या—तुम वहां कब गये थे?' किरन के मुंह से कुछ ऐसे शब्द निकलेंगे।

मैं उसे बता दूंगा।

यह कि टेप की मदद से रूबी को मैं किस तरह धोखा देकर वहां गया था, अपनी योजना का यह पार्ट उसे सचसच बता दूंगा—जाहिर है कि मारे हैरत के वह आंखें और मुंह फाड़े मुझे देख रही होगी, उसी वक्त अपनी बात पूरी करने के साथ में अन्त में कहूंगा—'म...मगर मैं सच कह रहा हूं किरन, मेरा यकीन मानना—तुम्हारी कसम खाकर कहता हूं कि वहां केवल यह सोचकर गया था कि सोती हुई संध्या के गले से असली नेकलेस निकालकर नकली नेकलेस डाल दूंगा और यही मैंने किया भी है। तुम्हारी कसम, मैंने संध्या को नहीं मारा, वह तो मेरे वहां पहुंचने से पहले ही मरी पड़ी थी।'

मेरे मुंह से यह सुनते ही उसके हलक से चीख निकल पड़ेगी—मैं उसे जैसे-तैसे सम्भालूंगा—बार-बार कसम खाकर यकीन दिलाऊंगा कि जाने किस जालिम ने उसकी हत्या कर दी है—जब मैं वहां पहुंचा तो वह कुर्सी पर मरी पड़ी थी मैंने उसे नहीं मारा—मैं तो सिर्फ उसकी लाश के गले से असली नेकलेस निकालकर उसमें नकली नेकलेस डालने का गुनहगार हूं।'

हालांकि यह काम बेहद 'टिपिकल' होगा।

मगर मैं जानता हूं कि किरन को सम्भाल लूंगा। उसे पक्के तौर पर यकीन दिला दूंगा कि मैंने सिर्फ नेकलेस चेंज किया है, संध्या की हत्या नहीं की।

यह सब इसी 'स्पॉट' पर किरन को सच-सच बता देना मेरी मजबूरी होगी क्योंकि अंततः नेकलेस पहनना तो उसे ही है—मुझे यह बात उसके दिमाग में ठूंस-ठूंसकर भरनी होगी कि अगर हमने किसी से यह जिक्र किया कि संध्या की लाश के गले में नकली नेकलेस है, असली हमारे पास है तो मैं संध्या की हत्या के जुर्म में पकड़ा जाकर फांसी तक पहुंच जाऊंगा।

मैं अच्छी तरह जानता हूं कि किरन तो क्या, दुनिया की हर सुहागिन उस अवस्था में एक और केवल एक ही कदम उठायेगी—वह कदम, जो उसके सुहाग को फांसी के फंदे तक पहुंचने से रोके।

एक तरफ पचास लाख का नेकलेस है, पति की जान है।

दूसरी तरफ नेकलेस भी जा रहा है, पति की जान भी।

इन दो अवस्थाओं में से एक पत्नी, हर हालत में 'पहली अवस्था' को चुनेगी और 'राज' हमेशा 'राज' ही रहेगा भगवान से यही दुआ है कि मेरा सम्पूर्ण प्लान सफल रहे, ऐसी कोई अप्रत्याशित दुर्घटना न हो जिसकी मैं कल्पना नहीं कर सका हूं।

□□□

'मुझे यहीं, उन हालात पर भी गौर कर लेना चाहिए जो 'इन्वेस्टीगेशन' के दरम्यान पेश आयेंगे ताकि अगर प्लान में कोई गड़बड़ हो तो उसी वक्त नोटिस में आ जाए और मैं उसे दूर कर लूं।' अपने ही दिमाग में घुमड़ रहे विचारों से बहस-सी करता संजय टाइप करता चला गया—'अपने बेडरूम में संध्या नहीं बल्कि उसकी लाश है, यह भेद ढाई के बाद किसी वक्त खुलेगा।

भेद खुलते ही हड़कम्प मच जायेगा।

पुलिस को सूचना दी जायेगी।

जिस इलाके में भंवर का बंगला है उसके थाने का इंचार्ज त्रिवेन्द्रम है।

इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम!

लाश उसे आराम कुर्सी पर अधलेटी अवस्था में पड़ी मिलेगी, हाथ में रिवॉल्वर फंसा होगा—गोली वहां लगी हुई होगी जहां आत्महत्या करने वाला शख्स मारता है।

परन्तु—

मैंने अखबारों में पढ़ा है कि त्रिवेन्द्रम तीक्ष्ण दृष्टि, पैने दिमाग और बाल की खाल निकालने वाला 'खुर्राट' पुलिसिया है, और खुर्राट पुलिसिये घटना-स्थल पर पहुंचते ही उस दृश्य के विपरीत सोचना शुरू

करते हैं, जो उन्हें सबसे पहले नजर आता है यानी त्रिवेन्द्रम सोचेगा कि एक नजर में देखने पर जो मामला आत्महत्या का-सा नजर आ रहा है कहीं हत्या का मामला तो नहीं है?

बैक-लॉन में खुली खिड़की।

केवल 'ढुका' हुआ दरवाजा ऐसे 'सिम्बल्स' हैं, जो तुरन्त उसके इस विचार को पुष्ट करेंगे।

लिहाजा—

वह बारीकी से कमरे की जांच करेगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि बेड पर पड़ा 'हेयर-बेण्ड' उसकी नजरों से बच नहीं सकेगा।

त्रिवेद्रम नौकरों के बयान लेगा।

ऐसा हो नहीं सकता कि वह नौकरों के बयान से यह न जान ले कि बारह बजे के आसपास 'किसी अलका' को लेकर भंवर और संध्या के बीच जबरदस्त 'महाभारत' हुआ था।

तब!

त्रिवेद्रम खुद भंवर के ऑफिस में फोन करेगा।

पता लगेगा कि या तो वह नहीं है या वह कुछ देर पहले पहुंचा है, गर्ज यह है कि त्रिवेन्द्रम को यह पता लगाने में किसी किस्म की दिक्कत नहीं होगी कि भंवर ऑफिस से किस वक्त से किस वक्त तक गायब रहा?

वह नौकरों से हेयर-बेण्ड के बारे में पूछेगा।

पता लगेगा कि हेयर-बैण्ड संध्या का नहीं है, यही क्षण होगा, जब त्रिवेन्द्रम पक्के तौर पर इस नतीजे पर पहुंच जायेगा कि संध्या ने आत्महत्या नहीं की बल्कि उसकी हत्या की गई है।

सन्देह के दायरे में होगा भंवर।

भंवर जैसे ही बंगले पर पहुंचेगा त्रिवेन्द्रम उससे पूछेगा कि—

'क्या बारह बजे के आसपास किसी अलका को लेकर अपनी पत्नी से आपका झगड़ा हुआ था?'

'आप फलां टाईम से फलां टाईम तक कहां थे?'

'अलका कौन है?'

'क्या बेड से बरामद हेयर-बैण्ड अलका का है?"

इन सब सवालों के जवाब भंवर को सच-सच देने होंगे—अगर झूठ बोलेगा तो और बूरी तरह फंस जायेगा क्योंकि त्रिवेन्द्रम के सामने कोई भी झूठ चलने वाला नहीं है।

भंवर के बयान के बाद त्रिवेन्द्रम अपने दिमाग में घुमड़ रहे सवालों का जवाब पाने के लिए अलका से मिलने की इच्छा व्यक्त करेगा—भंवर के पास त्रिवेन्द्रम को अलका के फ्लैट पर ले जाने के अलावा कोई चारा नहीं होगा।

इतनी देर तक इन्तजार करने के बाद अलका 'नेहरू पार्क' से लौट

चुकी होगी।

वह त्रिवेन्द्रम के सवालों से घबरा जाएगी—हेयर-बैण्ड के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा यह कह सकती है कि 'यह हेयर-बैण्ड काफी दिन से गुम था'—इस बात पर त्रिवेन्द्रम द्वारा यकीन कर लेने का सवाल ही नहीं उठता—यही बात और अन्य सुबूत मिलने की सम्भावना त्रिवेन्द्रम को फ्लैट की तलाशी लेने के लिए प्रेरित करेंगे।

तलाशी में मिलेंगे दस्ताने, नकाब और चौगा।

अलका की धोती के!

इस सबकी बरामदगी के बाद भंवर को गिरफ्तारी से दुनिया की कोई ताकत नहीं बचा सकती।

हालांकि भंवर और अलका यह कह रहे होंगे कि इन सब चीजों से उनका कोई वास्ता नहीं है, ये चीजें किसी अन्य ने अलमारी के नीचे 'प्लांट' की हैं—इस सन्दर्भ में वे त्रिवेन्द्रम को यह भी बतायेंगे कि फ्लैट की चाबी गैलरी में बिछे कार्पेट के नीचे रहती थी अतः कोई भी उन चीजों को वहां आसानी से 'प्लांट' कर सकता है—त्रिवेन्द्रम पूछेगा कि 'चाबी कार्पेट के नीचे रहती थी, यह बात तुम दोनों के अलावा कौन जानता था'—जवाब में वे किसी का भी नाम नहीं ले सकेंगे और मेरा नाम लेने का तो सवाल ही नहीं उठता—वे 'प्लांट' वाली बात कहेंगे जरूर और त्रिवेन्द्रम सुनेगा भी मगर विश्वास नहीं करेगा क्योंकि न तो विश्वास करने की कोई वजह खुद उसके पास होगी न ही भंवर या अलका दे पायेंगे—हां, जब अलका यह कहेगी कि वह भंवर का फोन आने पर 'नेहरू-पार्क' गई थी तो भंवर जरूर उछल पड़ेगा, कहेगा कि उसने कोई फोन नहीं किया—अलका यह बताएगी कि फोन पर उससे क्या कहा गया था। उसे सुनते ही त्रिवेन्द्रम इस नतीजे पर पहुंचेगा कि फोन उसी ने किया था और अब मुकर रहा है अन्यथा किसी अन्य को क्या मालूम कि उसके, संध्या और अलका के बीच किस किस्म की खिचड़ी पक रही है?

जाहिर है कि भंवर उस वक्त साफ-साफ कह रहा होगा कि हत्या किसी अन्य ने की है और उसे 'फ्रेम' करने की कोशिश की गयी है, तर्क के तौर पर यह भी कहेगा कि उसे अलका को नेहरू पार्क भेजे जाने से सारा मामला स्पष्ट है परन्तु यह सब कुछ वह 'सिर्फ' कह रहा होगा—साबित नहीं कर पाएगा और पुलिस के सामने 'सिर्फ कहने-भर' से कुछ नहीं होता, वह भी उस आदमी के कहने-भर से जिसकी तरफ से बरामद होने वाले सारे सबूत और हालात चीख-चीखकर इशारा कर रहे हों।

उस वक्त त्रिवेन्द्रम के दिमाग में बड़े स्पष्ट अंदाज में यह कहानी बन चुकी होगी कि संध्या के अलका से मिलने और फिर इसी 'इशू' पर

संध्या से हुए झगड़े की वजह से भंवर इतना उत्तेजित हो उठा कि उसने संध्या को कत्ल करने का इरादा कर दिया—कत्ल इस तरीके से करना चाहता था कि संध्या द्वारा की गई आत्महत्या नजर आए, पुलिस इस नतीजे पर पहुंचे कि संध्या ने अपने पति के एक अन्य औरत से सम्बंध होने और उसी 'इशू' पर हुए झगड़े से दुःखी होकर आत्महत्या कर ली है वह जानता था कि डेढ़ बजे संध्या हर हाल में सो जाती है अतः डेढ़ के आसपास वह 'एक्शन' में आया।

सबसे पहले उसने अपने ऑफिस में रखे 'पर्सनल' फोन द्वारा अलका को नेहरू पार्क भेजा।

ऐसा इसलिए किया क्योंकि नकाब और चौंगे की जरूरत थी, ये दोनों चीजें जितनी जल्दी और आसानी से वह अलका के फ्लैट से हासिल कर सकता था उतनी आसानी से अन्य कहीं से नहीं—चौगे और नकाब की जरूरत इसलिए थी क्योंकि अगर कोई उसे संध्या के बेडरूम में उस वक्त आते-जाते देख भी ले जो उसके सोने का टाईम है तो जान न सके कि वह कौन है?

भंवर जानता था कि अलका नेहरू पार्क जाएगी मगर चाबी कार्पेट के नीचे मौजूद होगी।

यहां त्रिवेन्द्रम के सामने यह तथ्य भी होगा कि चाबी का राज सिर्फ-और-सिर्फ भंवर को ही मालूम था।

हत्यारा सबसे पहले यह सोचता है कि हत्या के बाद जब पुलिस सभी लोगों से यह पूछताछ कर रही होगी कि वारदात के वक्त आप कहां थे तो वह क्या जवाब देगा—यही जवाब गढ़ने की कोशिश भंवर ने भी की है।

त्रिवेन्द्रम इस नतीजे पर पहुंचेगा कि 'शहादत गढ़ने' के लिए उसने खुद अपने ऑफिस से अलका के नाम से अपनी रिसेप्शनिस्ट को फोन किया और जब वह 'मैसेज' लेकर उसके सामने पहुंची तो उसे यह बताने का अवसर दिए बिना चला गया कि रिसेप्शनिस्ट की आवाज मर्दानी होने का शक था।

ऑफिस से वह गांधी पार्क नहीं बल्कि सीधा अलका के फ्लैट पर पहुंचा। आनन-फानन में एक धोती से चोगे और नकाब तैयार की।

नकाब और चोगे को देखकर त्रिवेन्द्रम इस नतीजे पर पहुंच ही चुका होगा कि उन्हें तैयार करने में पन्द्रह मिनट से ज्यादा नहीं लग सकता—अतः स्पष्ट है कि उन्हें तैयार करके गाड़ी द्वारा अपने बंगले की तरफ बढ़ा।

दस्ताने उसने ऑफिस से विकास-विहार के या विकास-विहार से अपने बंगले के रास्ते में पड़ने वाले किसी दुकान से खरीदे!

बैक-लॉन द्वारा संध्या के कमरे में पहुंचा।

वह सो रही थी।

भंवर जानता था कि भरा हुआ साईलेंसरयुक्त रिवॉल्वर दराज में रखा रहता है, वह यह भी जानता था कि रिवॉल्वर और दराज के मुट्ठे पर संध्या की अंगुलियों के निशान होंगे क्योंकि पिछली रात वह बंगले में था ही नहीं—इसी जानकारी ने तो उसे हत्या को आत्महत्या दर्शाने के लिए प्रेरित किया था।

त्रिवेन्द्रम समझ जायेगा कि संध्या की नींद नहीं उचटी, भंवर दबे-पांव दराज के नजदीक पहुंचा—अलका के कमरे से लाए हेयर-बैण्ड को मुट्ठे में फंसाकर दराज खोली—रिवॉल्वर भी इस ढंग से निकाला होगा कि उस पर से संध्या की अंगुलियों के निशान न मिट पायें और सोती संध्या को गोली मारकर रिवॉल्वर उसके हाथ में फंसा दी।

वापस लौटा।

परन्तु...वहीं हुआ जैसा अक्सर होता है।

सर्वमान्य सिद्धांत है कि मुजरिम घटनास्थल पर कोई-न-कोई सुबूत जरूर छोड़ जाता है।

त्रिवेन्द्रम सोचेगा कि इस केस में भी वही हुआ है।

यानी जल्दबाजी और मर्डर के बाद दिमाग पर छाई स्वाभाविक हड़बड़ाहट के कारण भंवर घटनास्थल पर हेयर-बेण्ड जैसी छोटी और मामूली चीज भूल गया।

यह सारी कहानी त्रिवेन्द्रम के दिमाग में तब और पुष्ट हो जायेगी जब उसे फिंगर-प्रिंट्स विभाग की रिपोर्ट मिलेगी।

उसमें साफ लिखा होगा कि दराज के मुट्ठे और रिवॉल्वर के दस्ते आदि पर तो मृतक की ही अंगुलियों के निशान हैं मगर ट्रेगर पर नहीं हैं, ट्रेगर किसी दस्ताने-युक्त अंगुली ने दबाया है।

सुबूतों और हालात के आधार पर तैयार हुई त्रिवेन्द्रम की थ्यौरी यह होगी कि उसी जल्दबाजी और हड़बड़ाहट के कारण, जो मर्डर के बाद हत्यारे के दिलो-दिमाग पर स्वाभाविक रूप से सवार रहती है, भंवर चोगे, नकाब और दस्ताने को कहीं अन्य ठिकाने नहीं लगा सका—सीधा विकास-विहार वाले फ्लैट पर पहुंचा और तीनों चीजें अलमारी के नीचे इतनी अन्दर ठूंस दीं कि अलका को भी नजर न आयें—यह सोचकर कि इन्हें वह चाहे जब ठिकाने लगा सकता है।

दूसरी अवस्था यह होगी कि भंवर किसी वक्त ताड़ जाये कि संध्या के गले में डुप्लीकेट नेकलेस है, इस अवस्था में वह त्रिवेन्द्रम को यह 'राज' बताने के बाद कहेगा कि उसके अलका से सम्बंध तथा उसी दिन इस 'इशू' पर हुए झगड़े की आड़ में उसे 'फ्रेम' करने की कोशिश की गयी है।

किन्तु—

भंवर के पास यह साबित करने के लिए कुछ नहीं है कि उसका नेकलेस असली ही था।

सो, त्रिवेन्द्रम के पास इस नतीजे पर पहुंचने के अलावा कोई चारा नहीं होगा कि हत्यारा अपनी आत्महत्या वाली चाल 'पिट' जाने के कारण खुद को बचाने के लिए नकली नेकलेस वाला झमेला डालकर बेवजह केस को उलझाने और पुलिस को भ्रमित करने की चेष्टा कर रहा है जबकि वास्तव में नेकलेस शुरू से ही नकली था।

भंवर के बयान को 'अपने बचाव में दिया गया हत्यारे का बयान' मान लेने के अलावा त्रिवेन्द्रम के पास कोई चारा नहीं होगा।

फिर, त्रिवेन्द्रम यह भी तो सोचेगा कि 'अगर किसी की नजर नेकलेस पर ही थी तो वह सोती हुई, या किसी अन्य तरीके से संध्या के नेकलेस से अपना नेकलेस बदल लेता, हत्या क्यों करता?

इस 'क्यों' का जवाब मेरे पास तो है मगर त्रिवेन्द्रम के दिमाग में नहीं आ सकता।

वह इस नतीजे पर पहुंचेगा कि हत्या पूरे प्लान के साथ सोच-समझकर की गई है, अचानक नहीं हुई और जिसे सिर्फ नेकलेस चाहिए वह हत्या की योजना क्यों बनायेगा?

लिहाजा, हत्या की वजह नेकलेस नहीं हैं?

साबित कर चुका हूं त्रिवेन्द्रम के दिमाग में यह थ्यौरी उन सुबूतों और हालात की वजह से बनेगी जो चीख-चीखकर भंवर को हत्यारा कह रहे होंगे—हालांकि कम-से-कम इस वक्त की मेरी समझ के मुताबिक ऐसा कोई प्वाइंट नहीं है जिसकी वजह से त्रिवेन्दम के दिमाग में उक्त थ्यौरी न बने।

मगर फिर भी, एक पल के लिए मान लेता हूं कि त्रिवेन्द्रम उस ढंग से नहीं चलता जैसी मैंने कल्पना की है—माना कि वह भंवर के बयान पर 'किसी वजह' से मुकम्मल यकीन कर लेता है, मान लेता है कि नेकलेस असली था और हत्या नेकलेस की वजह से ही हुई है और हत्यारे ने भंवर को 'फ्रेम' किया है।

अब सवाल उठेगा कि ऐसा किसने किया?

त्रिवेन्द्रम के ही नहीं भंवर के दिमाग में भी दूर-दूर तक ऐसा कोई नाम नहीं उभरेगा।

उन्हें ऐसा शख्स चाहिए, जो न सिर्फ भंवर और अलका के सम्बन्धों से वाकिफ हो बल्कि यह भी जानता हो कि अलका का फ्लैट कहां है और उसकी चाबी कहां रहती है—भंवर की नॉलिज में, उसके अन्य परिचितों की तरह 'हम' भी अलका के बारे में कुछ नहीं जानते।

लिहाजा!

हमारी स्थिति भंवर और संध्या के अन्य परिचितों और रिश्तेदारों से भिन्न बिल्कुल नहीं होगी।

इस अवस्था में त्रिवेन्द्रम भंवर के प्रत्येक रिश्तेदार और परिचित को चैक करेगा, खासतौर पर यह जानने की कोशिश करेगा कि वारदात के वक्त कौन कहां था?

इस मामले में मेरी 'एलीबी' बेहद मजबूत है।

रूबी गवाह होगी कि मैं लेखन-कक्ष में लिख रहा था।

कहने का मतलब यह कि त्रिवेन्द्रम सिर खपाकर रह जायेगा, कुछ हाथ नहीं लगेगा उसके।

हां, एक अन्य रास्ता है उसके पास।

यहा कि 'डुप्लीकेट' नेकलेस को लिये-लिये उन कारीगरों के पास घूमे जो ऐसे नेकलेस बनाते हैं, हालांकि असली कारीगरों को ढूंढ़ना उसके लिए 'भूसे में से सुई' ढूंढ़ने जैसा होगा मगर मान लिया कि ढूंढ़ लेता है—पहली बात तो यह कि अपनी जान बचाने की खातिर कारीगर उसे बनाना कबूल ही नहीं करेगा, कर भी ले तो केवल 'किरन की मम्मी' का हुलिया बयान कर सकेगा, नाम-पता वह नहीं जानता—इस हुलिये का जिक्र त्रिवेन्द्रम भंवर से करके यह पूछ सकता है कि क्या वह इस हुलिये की किसी औरत को जानता है?

भंवर ने 'किरन की मम्मी' को कभी नहीं देखा, तो—उसका जवाब इन्कार में होगा।

त्रिवेन्द्रम का यह रास्ता ब्लॉक।

एक तरफ त्रिवेन्द्रम के सारे रास्ते ब्लॉक होंगे, दूसरी तरफ हालात और सुबूत उसे हर सवाल का जवाब दे रहे होंगे। ऐसी अवस्था में निच्चानव्वे परसेन्ट चांस ये होंगे कि वह भंवर को गिरफ्तार करके कोर्ट में पेश करे, पांच परसेन्ट चांस इस बात के हैं कि भंवर को हत्यारा न माने।

माना कि नहीं मानता।

तब भी।

मैं कहीं नहीं फंस सकता।

एक भी तर्क, एक भी सबूत या रत्ती-भर भी सम्भावना इस बात की नहीं है कि दुनिया की कोई ताकत मुझे संध्या का हत्यारा साबित कर सके—हालांकि त्रिवेन्द्रम मुझ तक पहुंच ही नहीं सकता, पहुंच भी गया तो कहां से लायेगा ऐसा गवाह जो कह सके कि मुझे विकास-विहार वाले फ्लैट की तो क्या उनके सम्बन्धों की भी जानकारी थी, कहां से लायेगा वे गवाह जो कह सकें कि मैंने भंवर और अलका को फोन किये थे?

कैसे पता लगायेगा कि दरअसल कत्ल उस रिवॉल्वर से हुआ ही नहीं है जो उसे घटनास्थल से बरामद होगा—जिस रिवॉल्वर से वास्तव

में कत्ल हुआ है उसे त्रिवेन्द्रम तो क्या अगर मैं खुद भी चाहूं तो बरामद नहीं कर सकता—उसकी गोलियां, कैसिट, लेखन-कक्ष की चाबी आदि सबकुछ समुद्र के गर्भ में गर्त हो चुका होगा।

कैसे साबित करेगा कि सध्या की हत्या मैंने की है?

मेरे खिलाफ कोई प्वाइंट, कोई सुबूत, कोई शहादत, कोई तर्क या कोई लिंक नहीं है—एक त्रिवेन्द्रम की तो बात ही दूर, अगर हजार त्रिवेन्द्रम मिल जायें, तब भी वे दीवारों से टकरा-टकराकर मर जायेंगे मगर मुझ तक नहीं पहुंच सकते।

मैं 'अभेद्य किले' में बैठा हूं, ऐसे 'अभेद्य किले' में जिस तक किसी की पहुंच नहीं हो सकती।

□□□

टाइप किये हुए कागजों को संजय ने कई बार पढ़ा।

हर बार उसे लगा कि एक भी प्वाइंट ऐसा नहीं है जो त्रिवेन्द्रम को उस तक ला सके। पूरी तरह संतुष्ट होने के बाद कागज दराज में रखे।

उस वक्त रात के बारह बजे थे जब ऑफिस को लॉक करके अपने बेड-रूम में पहुंचा।

और वहां कदम रखते ही एक बात उसकी समस्त कल्पनाओं के विपरीत हो गयी।

अभी तक जाग रही किरन ने पूछा—"क्या संध्या के रिवॉल्वर का साइलेंसर तुम्हारे पास है?"

"क...क्या मतलब?" संजय हकला गया।

"उसका फोन आया था, दराज से साइलेंसर गायब है।" किरन कहती चली गयी—"सम्भावना व्यक्त कर रही थी कि बातों-बातों में शायद भूलवश जीजाजी ने अपनी जेब में डाल लिया हो।"

संजय तुरन्त कोई जवाब न दे सका।

दरअसल वह निश्चय नहीं कर पाया कि क्या जवाब दे?

दिलो-दिमाग पर एक अजीब-सी घबराहट काबिज हो गयी, चेहरे पर पसीने की बूंदें झिलमिलाने लगी थीं। उसकी हालत से अनभिज्ञ किरन कहती चली गयी—"मैंने कह दिया कि तुम लिख रहे हो अतः डिस्टर्ब नहीं किया जा सकता मगर...।"

"मगर?"

"संध्या साइलेंसर के लिये बहुत चिंतित थी, कह रही थी कि जैसे ही लिखकर उठो—मैं तुमसे पूछूं और जो भी जवाब हो फोन पर उसे बताऊं।"

संजय को लगा कि झूठ बोलने से गड़बड़ ज्यादा लम्बी हो जायेगी, अतः बोला—"मैं भी तुम्हें यही बताना चाहता था, लेखन-कक्ष में जब किसी चीज की तलाश में जेब में हाथ डाला तो यह देखकर दंग रह

गया कि उसमें संध्या के रिवॉल्वर का साइलेंसर पड़ा हुआ था, उस वक्त बातें ही कुछ ऐसी हो रही थीं कि बेध्यानी में मैंने जेब में डाल लिया होगा।"

"थैंक्स गॉड!" किरन ने ठंडी सांस खींची—"उसे बता देना चाहिये कि साइलेंसर हमारे पास है।"

"इस वक्त?"

"मेरा ख्याल है कि उसे तब तक नींद नहीं आयगी, जब तक जान न लेगी कि साइलेंसर सुरक्षित है।"

"ठीक है, तुम खाना गर्म करो मैं उसे बता देता हूं।"

किरन किचन में चली गयी।

संजय ने संध्या के नम्बर डायल किये।

दूसरी तरफ से फोन तुरन्त उठा लिया गया।

संध्या ही थी।

संजय ने बताया कि साइलेंसर बेध्यानी में उसके साथ आ गया है—संध्या ने राहत की सांस ली, जब उसने यह कहा कि कल सुबह साइलेंसर पहुंचा देगा तो संध्या ने कहा—"नहीं...नहीं...आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है मैं तो बस यह सोचकर चिंतित हो उठी थी कि आखिर चला कहां गया, आराम से पहुंचा देना।"

संजय ने पूछा—"आप कल सुबह अलका से मिल रही हैं ना?"

"हां।"

"भगवान आपको कामयाबी दे।" कहने के बाद उसने सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया।

खाने के दरम्यान जब किरन ने पूछा कि संध्या से क्या बातें हुईं तो उसने कहा—"सुबह को उठते ही सबसे पहले साइलेंसर उसके पास पहुंचाना है।"

इसके बाद—

जाने क्या-क्या बातें होती रहीं?

साढ़े बारह तक किरन सो गयी परन्तु संजय की आंखों में नींद का नामोनिशान न था।

आखिर एक बात ऐसी हो ही गयी जिसकी वह कल्पना नहीं कर पाया था।

वक्त से पहले संध्या को पता लग गया कि उसका साइलेंसर गायब है और यह बात किरन की 'नॉलिज' में भी आ गयी कि साइलेंसर उसके पास है।

संजय यह सोच रहा था कि आगे चलकर इस छोटी-सी घटना के क्या-क्या 'इफैक्ट्स' होंगे?

साइलेंसर वाला मामला केवल दो व्यक्तियों की नॉलिज में आया

संध्या और किरन।
संध्या तो किसी को कुछ बताने के लिये जीवित ही नहीं रहनी है।
और किरन?
किरन को संध्या की मौत के बाद वह शीशे में उतार लेगा।
थोड़ा सोचने के बाद लगा कि साइलेंसर वाली यह घटना उसकी कल्पनाओं के विपरीत जरूर है मगर ऐसी नहीं है कि योजना में किसी किस्म की तब्दीली करनी पड़े।
किन्तु।
इस घटना ने संजय को यह सोचने पर विवश कर दिया कि अगर आगे भी कोई ऐसी घटना घट गयी जिसकी वह कल्पना नहीं कर पाया है तो?
तो क्या होगा?
सोचते-सोचते संजय के दिमाग पर एक अजीब-सी घबराहट हॉवी हो गयी—अन्तरात्मा से आवाज आ रही थी कि सारी चालाकियों के बावजूद वह पकड़ा जायेगा—उस क्षण संजय का दिल चाहा कि जो कुछ अगले दिन करने जा रहा है, उसे न करे।
खैरियत इसी में है।
परन्तु।
तभी, उसकी दृष्टि सोती हुई किरन की गोरी, लम्बी एवं सुराहीदार गर्दन पर पड़ी।
कल्पनाओं में संध्या का नेकलेस किरन के कंठ में नजर आने लगा। दीवाना-सा वह झुका—बहुत आहिस्ता से उसने किरन की गर्दन चूम ली—इतनी आहिस्ता से कि किरन की नींद न उचट पाये।
जहन में एक ही ख्याल उभरा—'नहीं, यह गर्दन उस नेकलेस से महरूम रहने लायक नहीं है।'
सारा डर, सारा खौफ और सारी शंकाएं दिमाग से काफूर हो गयीं।
दिलो-दिमाग पर एक नशा काबिज हो गया था।
किरन का नशा, उसकी सुराहीदार गर्दन का नशा।
बीवी का नशा।
जब सोचें इस नशे में डूबीं तो संजय को लगा कि साइलेंसर वाली घटना से वह व्यर्थ ही जरूरत से ज्यादा डर गया था। उसकी कल्पनाओं के विपरीत कुछ नहीं हो सकता।
वह कभी नहीं पकड़ा जा सकता।
□□□
"संध्या...संध्या!" भंवर पर मानो खून सवार था—"कहां है संध्या?"
"मैं यहां हूं, इस तरह चिल्ला क्यों रहे हो?"

भंवर ने उसे खूंखार नजरों से घूरते हुए सवाल किया—"त...तुम अलका के पास गयी थीं, उसके फ्लैट पर?"
"ओह, तो यह बात भी उस चुड़ैल के पेट में नहीं पची?"
मारे गुस्से के भंवर का बुरा हाल था—"अलका के फ्लैट पर जाने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"
"क्यों?" संध्या ने कटाक्ष किया—"आप दिल्ली जाने के बहाने रात-रात-भर वहां रह सकते हैं, मैं जा भी नहीं सकती?"
"जुबान संभालकर बात करो संध्या!"
"म...मुझसे...आप मुझसे जुबान संभालने की बात करते हैं?" संध्या भड़क उठी—"अपने गिरेबान में झांकिये जरा।"
"मैं पूछता हूं कि वहां गयी क्यों थीं तुम?"
"पल्ला पसारने गयी थी, अपने सुहाग की भीख मांगने गयी थी उससे।" गुस्से में कहते-कहते संध्या का स्वर भर्रा गया—"म...मगर उस बाजारू औरत को क्या पता कि सुहाग क्या होता है। उसे रत्ती बराबर रहम नहीं आया मुझ पर—उल्टे गालियां सुनाने लगी, ऐसी-ऐसी गन्दी गालियां जिनकी एक औरत के मुंह से मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी—उफ्फ—वह औरत नहीं चुड़ैल है...डायन है।"
भंवर गुर्राया—"अगर तुमने अलका को गालियां बकीं तो अच्छा नहीं होगा।"
"क्या अच्छा नहीं होगा, आप मार डालेंगे ना मुझे?" संध्या चीखी—"मार डालिये, लीजिये...गला घोंट दीजिये मेरा और खूब गुलछर्रे उड़ाइये उसके साथ!"
"स...संध्या!" भंवर दहाड़ा।
"इस तरह चिल्ला-चिल्लाकर आप मुझे चुप नहीं कर सकते।" संध्या बिफर पड़ी—"मैं एक बार नहीं, हजार बार कहूंगी कि वह औरत नहीं वेश्या है, तवायफ है और मैं सारी दुनिया को चीख-चीखकर बताऊंगी कि आपने उसे फ्लैट दे रखा है, आप उसे पालते हैं—आप...उसने ठीक ही कहा था, भद्दी-भद्दी गालियों के साथ उसने मुझसे कहा था कि जब मुझसे अपना पति नहीं संभाला जाता तो उसके आगे क्यों गिड़गिड़ा रही हूं।"
भभकते भंवर ने कहा—"अगर सुनना ही चाहती हो तो सुनो, मैं अलका को नहीं छोड़ सकता—चीख-चीखकर नहीं बल्कि ढोल बजा-बजाकर जिसे चाहो बता दो—मैं किसी से नहीं डरता, अब तक अलका विकास-विहार में रहती थी कल से यहां, इस बंगले में रहेगी—तुम्हें रहना हो तो रहो, वरना अपने पीहर जा सकती हो।"
कहने के बाद वह मुड़ा और तेजी के साथ ड्राइंग-रूम से बाहर

निकल गया।

□□□

"संध्या का फोन था?" संजय ने पूछा।

रिसीवर रखती हुई किरन ने कहा—"हां।"

"क्या कह रही थी?"

"तुम्हारी बताई हुई तरकीब ने मामला बिगाड़ दिया है संजय!"

"क्या मतलब?"

"बता रही थी कि वह अलका के सामने खूब रोई-गिड़गिड़ाई ही नहीं बल्कि उसके पैर तक पकड़ लिए मगर उसे बाल बराबर भी रहम नहीं आया। उल्टी भद्दी-भद्दी गालियां देने लगी—बुरी तरह बेइज्जत और जलील करके उसने संध्या को अपने फ्लैट से बाहर धकेल दिया।"

"ओह!" संजय ने आश्चर्य-भरे स्वर में अफसोस का मिश्रण किया।

किरन कहती चली गयी—"इतना ही नहीं, उस रखैल की बच्ची ने फौरन यह सूचना भंवर को दे दी और संध्या को बंगले पर पहुंचे अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि गुस्से में भरा भंवर पहुंच गया और जाने क्या-क्या कहने लगा। संध्या का कहना है कि वह भी अलका के फ्लैट पर हुए अपमान और गुस्से की वजह से जाने क्या-क्या बक गयी।"

"फिर?"

"दोनों में जमकर झगड़ा हुआ, सारे नौकरों ने सुना और अन्त में भंवर यह कहकर चला गया कि कल से अलका बंगले में रहेगी। उसे रहना है तो रहे नहीं रहना है तो अपने पीहर चली जाये।"

"यह सब तो खैर भंवर ने गुस्से में कहा होगा, ऐसा करेगा नहीं वह।"

"यही बात फोन पर मैंने संध्या को समझाई।" किरन ने बताया—"कहा कि गुस्से में कुछ कह बैठना अलग बात है और कहे पर अमल करना अलग—ऐसा करने से पहले एक लाख बार सोचेगा वह। अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को भंवर इस तरह धूल में नहीं मिला सकता।"

"मैं तुमसे सहमत हूं—फिक्र मत करो, अब इस बारे में भंवर से मुझे खुद बात करनी होगी।" कहने के बाद उसने अपनी रिस्टवॉच पर नजर डाली और बोला—"फिलहाल कुछ देर मेरा काम करने का मूड है।

किरन चुप रही, शायद अभी भी संध्या के ख्यालों में गुम थी वह।

संजय ने पूछा—"साइलेंसर के बारे में तो कुछ नहीं कह रही थी?"

"उसके बारे में क्या कहती, सुबह तुम दे तो आये थे?"

"मैंने सोचा कि शायद उसने 'धन्यवाद' कहा हो, खैर—फिलहाल चलता हूं।" कहने के बाद वह बेड-रूम से बाहर निकल गया। किरन

के जवाब ने उसे बता दिया था कि साइलेंसर के बारे में संध्या से उसकी कोई बात नहीं हुई। दरअसल सुबह वह घर से यह कहकर निकला था कि संध्या का साइलेंसर लौटाने जा रहा है और इधर-उधर समय बिताने के बाद वापस आने पर किरन से कहा था—'मैं साइलेंसर संध्या को दे आया हूं।"

□□□

संजय खुश था।

अभी तक सबकुछ उसकी योजना के मुताबिक हुआ था।

नदी के पुल के नजदीक वाले पब्लिक टेलीफोन बूथ से उसने अभी-अभी 'आनन-फानन' में अलका को नेहरू-पार्क पहुंचने के लिए कहकर सम्बन्ध-विच्छेद किया था।

अब उसने संजय के ऑफिस का नम्बर रिंग किया था।

दूसरी तरफ से रिसीवर उठाये जाते ही संजय ने सिक्का बॉक्स में डाला और अपने मुंह से जनाना स्वर निकालने की भरसक चेष्टा के साथ बोला—"सुनो, तुम्हारे बॉस ऑफिस में होंगे, उनसे कहो...।"

"भंवर बाबू ऑफिस में नहीं हैं।" उसकी बात काटकर कहा गया।

"क...क्या?" संजय हकला गया।

दिमाग भक्क' से उड़ गया था।

उसकी योजना के मुताबिक भंवर को इस वक्त अपने ऑफिस में होना चाहिए था, मगर वह नहीं था और इस सच्चाई ने संजय को चकराकर रख दिया, अभी अपने होश संभाल भी नहीं पाया था कि दूसरी तरफ से रिसेप्शनिस्ट ने पूछा—"क्या उनके लिए कोई मैसेज है?"

"आं, हां।" संजय चौंका परन्तु आवाज को पतली ही बनाये रहा, नारी-स्वर में उसने जल्दी से पूछा—"कहां गये हैं?"

"एक बजे लंच के लिए गये थे, जब से नहीं लौटे।"

"ठीक है, आते ही उन्हे यह मैसेज देना।" कहने के बाद उसने एक ही सांस में मैसेज दिया और जवाब की परवाह किये बगैर सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया।

माऊथ-पीस से रूमाल हटाया उसने।

महसूस किया कि चेहरा पसीने से तर-बतर हो रहा है।

दिल धाड़-धाड़ करके बज रहा था।

लंच के बाद एक चालीस तक वह हर हाल में ऑफिस पहुंच जाता था।

संजय ने रिस्टवॉच में टाइम देखा—एक पैंतालिस।

'आज कहां रह गया वह?' संजय बुदबुदाया।

'अलका के पास?' जहन से जवाब निकला।

'नहीं, वह वहां नहीं था—अलका से तो मैंने अभी बात की है।'

मगर।
सोचता-सोचता अटक गया संजय।
सोचा—'अलका से बात ही क्या की है मैंने, उसने रिसीवर उठाकर 'हैलो' ही कहा था कि मैंने 'धाड़' से मैसेज दे दिया—उसे कुछ कहने का अवसर ही कहां दिया था, आवाज सुनने की चेष्टा ही कब की?"
उफ्फ!
संजय का दिमाग झन्ना गया।
यह सोचकर उसके रोंगटे खड़े हो गये कि जिस वक्त वह भंवर बनकर अलका को नेहरू पार्क पहुंचने के लिए कह रहा था उस वक्त अगर भंवर फ्लैट में, उसके पास ही बैठा हुआ हो तो क्या होगा?
संजय के होश उड़ गये।
बड़ी तेजी से यह विचार उसके दिमाग में कोंधा कि—'अगर ऐसा हुआ तो न अलका नेहरू पार्क पहुंचेगी न ही भंवर गांधी पार्क और उस अवस्था में वह चोगा, नकाब और दस्ताने उसके फ्लैट में प्लांट नहीं कर पायेगा।'
बुरी तरह तनावग्रस्त वह बूथ से निकला।
एक टैक्सी रोकी।
बैठा।
'डिफैंस कॉलोनी' चलने के लिए कहकर संजय ने सिर पिछली सीट की पुश्त से टिका दिया, आंखें अन्दर कर लीं—वह बेकाबू हो चले अपने दिलो-दिमाग पर काबू पाना चाहता था।
दस मिनट बाद डिफैंस कॉलानी के चौराहे पर पहुंचकर ड्राइवर ने पूछा—"किधर चलना है साब?"
"आं...बस यहीं...यहीं उतार दो।" उसने दरवाजा खोलकर सड़क पर कदम रखा।
टैक्सी का पेमेन्ट किया।
टैक्सी चली गयी।
मगर विचारों में गुम संजय वहीं खड़ा रहा, अपने दिमाग को घबराहट से मुक्त करके वह कुछ सोचना चाहता था शायद यह कि क्या वर्तमान हालात में वह सब करना ठीक रहेगा जो करना चाहता था।
प्रबल संभावना यहीं है कि भंवर अलका के पास फ्लैट ही पर होगा।
यदि ऐसा है तो सारी योजना 'फ्लाप' हो चुकी हैं।
इस अवस्था में उसे खुद को यहीं रोक लेना चाहिए।
वह संध्या की हत्या नहीं कर सकता, नेकलेस हाथ नहीं लगेगा।
परन्तु।
नेकलेस हथियाने का जैसा मौका आज है वैसा जीवन में फिर कभी नहीं आयेगा, जो हालात उसने आज 'क्रियेट' कर दिये हैं। वैसे फिर

कभी 'क्रियेट' नहीं कर सकेगा।
संजय फैसला नहीं कर पा रहा था कि क्या करे?
अचानक उसकी दृष्टि एक पब्लिक टेलीफोन-बूथ पर पड़ी, दिमाग में बड़ी तेजी से यह विचार कौंधा कि क्यों ना एक बार फिर अलका के फ्लैट का नम्बर डायल करे?
अगर रिसीवर उठाया जाता है और अलका बोलती है तो जाहिर है कि वह नेहरू पार्क नहीं गयी, भंवर वहीं है और उस वक्त वे 'मेरे फोन' पर ही चर्चा कर रहे होंगे।
यदि 'बैल' जाती रहती है, फोन नहीं उठाया जाता तो साफ है कि शंका निर्मूल है। भंवर वहां नहीं था और वह मेरे फोन को भंवर का फोन समझकर नेहरू पार्क जा चुकी है।
संजय को यह तरकीब जमी।
तुरन्त बूथ में घुसा, नम्बर रिंग किया।
'बैल' जाने लगी।
पसीने से सराबोर संजय रिसावर उठाये जाने का इन्तजार करता रहा।
मगर, रिसीवर नहीं उठाया गया।
बैल लगातार जा रही थी।
दो मिनट इन्तजार करने के बाद संजय ने सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया।
अब—
वह भंवर के बंगले के पीछे पहुंचा।
हाथों में दस्ताने पहने, शरीर पर चोगा, चेहरे पर नकाब।
कंधे पर एयर-बैग।
हाथ में प्वाइंट फाईव कैलीवर।
पूरी तैयारी के साथ चारदीवारी की तरफ बढ़ा ही था कि दिमाग में पुनः एक ऐसी शंका उठी जिसने उसके होश उड़ा दिये, चारदीवारी की तरफ बढ़ते कदम जमीन पर चिपककर रह गये।
शंका यह उभरी कि 'यदि भंवर अपने बेडरूम में संध्या के पास हुआ तो?'
दिमाग के किसी कोने ने तुरन्त इसका खण्डन किया—'नहीं, ऐसा हरगिज नहीं हो सकता—यह टाइम संध्या के सोने का टाइम है, इस वक्त वहां कोई नहीं हो सकता।'
शंका ने पुनः कहा—'यह मत भूल संजय कि आज के हालात आम हालात से भिन्न हैं, आज के हालात में संध्या को नींद आना मुश्किल है—मुमकिन है कि ठीक एक बजे भंवर लंच के लिये वहां पहुंचा हो, कुछ देर पहले झगड़े पति-पत्नी का दिमाग शान्त हो और एक-दूसरे पर चिल्लाने के लिये माफी मांग बैठे हों—भंवर ने कहा हो कि अब वह

अलका से कोई सम्बन्ध नहीं रखेगा—अगर यह माहौल बना होगा तो निश्चय ही आज संध्या नहीं सोई होगी और भंवर उसके पास होगा।'

ऑफिस से भंवर की नदारदगी इस शंका को पुष्ट कर रही थी।

वह कुछ नहीं कर सकेगा, न संध्या का कत्ल, न नेकलेस हासिल।

उल्टा फंस जायेगा। पकड़ा जायेगा।

दिमाग में शकाओं का ऐसा जाल बिछा कि दिल घबराने लगा।

अपना सारा बदन उसे चिपचिपा-सा लग रहा था।

हाथ-पैर ढीले।

यह सोचकर संजय ने चारदीवारी की तरफ बढ़ना जरूर शुरू किया कि पहले यह जायजा लेगा कि कमरे में भंवर है या नहीं, अगर हुआ तो बिना कुछ किये चुपचाप वापिस आ जायेगा परन्तु उसका विवेक अभी भी चीख-चीखकर कह रहा था—"लौट जा संजय, लौट जा—यह काम तेरे बस का नहीं है, जो शख्स इतनी ठोस योजना बनाने के बावजूद छोटी-छोटी शंकाओं से घिरकर घबरा जाये, नर्वस हो जाये, वह कत्ल करने के बाद खुद को बचा नहीं सकता—अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। किसी को पता नहीं लगेगा कि तू कितने भयानक इरादे के साथ यहां तक आया था—लौट जा संजय, लौट जा।'

परन्तु—

किरन की खूबसूरत गर्दन और नेकलेस ने उसे विवेक की चीख नहीं सुनने दी।

यह सोचकर बढ़ता चला गया कि यह शंका भी पिछली शंका की तरह निर्मूल हो सकती है।

बाउण्ड्री वाल लांघकर वह लॉन में पहुंच गया।

बेडरूम की खुली खिड़की यहीं से नजर आ रही थी।

सतर्क निगाहों से चारों तरफ का निरीक्षण करता हुआ नंगे-पांव खिड़की की तरफ बढ़ा। दिल की धड़कनें खिड़की के नजदीक पहुंचने के अनुपात में तीव्र होती जा रही थीं।

रिवॉल्वर इस तरह हाथ में लिए हुए था जैसे किसी भी क्षण ट्रेगर दबाने के लिए तैयार हो।

वह खिड़की पर पहुंचा।

सारी शकाएं एक झटके से दिमाग से बाहर हो गयीं।

कमरे की स्थिति कम-से-कम उसके लिए एक आदर्श-स्थिति कही जा सकती थी।

पूरी तरह खामोशी, कहीं कोई आवाज नहीं।

दरवाजा ढुका हुआ था।

आराम कुर्सी पर संध्या सोई पड़ी थी। पैर कुर्सी के ठीक सामने रखी सैन्टर-टेबल पर फैले हुए थे और टेबल पर रखा था एक कांच का

गिलास—हमेशा की तरह उसकी पीठ खिड़की की तरफ थी, चेहरा ढुके हुए दरवाजे की ओर।

अब, संजय को अपने द्वारा कल्पित दो में से एक स्थिति से निपटना था।

या तो वह सोती रहेगी या जाग जायेगी।

गले में नेकलेस दमक रहा था।

संजय खिड़की पर चढ़ा, आहिस्ता से कमरे के फर्श पर उतरा।

संध्या की नींद नहीं उचटी।

उचटती भी कैसे...संजय ने उतनी आवाज भी उत्पन्न नहीं होने दी थी, जितनी चींटी के रेंगने से होती है।

दबे-पांव कुर्सी की तरफ बढ़ा।

दिल धाड़-धाड़ करके पसलियों से सिर टकरा रहा था, अपने दिल के धड़कने की आवाज संजय को साफ सुनाई दे रही थी—उसे यही डर सताने लगा कि संध्या कदमों की आवाज से तो नहीं मगर दिल के धड़कने की आवाज से जाग सकती है। उसने बहुत चाहा—बहुत चाहा कि दिल इतनी जोर—जोर से न धड़के किन्तु उस पर काबू न पा सका वह।

जिस्म के हर मासाम ने ठंडा पसीना उगल दिया था।

ये वे क्षण थे जब संजय को यह अहसास हुआ कि टेबल पर बैठकर योजना 'गढ़' लेना बेहद आसान है, परन्तु उसे कार्यान्वित करना एवरेस्ट पर चढ़ने से भी कहीं ज्यादा मुश्किल।

मेज पर बैठकर आदमी सोच सकता है कि वह घबरायेगा नहीं, नर्वस नहीं होगा।

परन्तु—

उत्तेजना के क्षण जुर्म करने वाले की समस्त इन्द्रियों को अपनी मुट्ठी में कैद कर लेते हैं।

और उन्हीं से गुजरता हुआ संजय दबे-पांव से कुर्सी की तरफ बढ़ रहा था।

वह किसी भी क्षण दूसरी अवस्था यानी उस स्थिति से निपटने के लिये तैयार था, जब संध्या की नींद उचट जायेगी, मगर वह क्षण उसने आने नहीं दिया।

संध्या बेखबर सोती रही।

संजय कुर्सी के बेहद नजदीक पहुंच गया, संध्या के सिर पर।

और फिर—

गजब की फुर्ती के साथ उसने बायां हाथ उसके मुंह पर रखा। दायें हाथ में दबे रिवॉल्वर से ठीक उसी वक्त कनपटी पर गोली चलाई।

साइलेंसरयुक्त रिवॉल्वर से तो सिर्फ 'पिट्ट' की हल्की-सी आवाज

निकलकर रह गयी मगर गिलास के टेबल से फर्श पर गिरने की जोरदार आवाज ने संजय को डरा दिया।

वह टूट गया था।

कांच के टुकड़े झनझना उठे।

जबकि संध्या सिर्फ एक क्षण के लिए छटपटाई थी।

फिर शान्त पड़ गयी।

मगर—

संजय गौरिल्ले की तरह झपटकर ढुके हुए दरवाजे साथ वाली दीवार से चिपककर खड़ा हो गया।

होश फख्ता थे।

पसीने-पसीने हुआ संजय सांस रोके कमरे में किसी के दाखिल होने की प्रतीक्षा कर रहा था। रिवॉल्वर हाथ में इस तरह दबा था जैसे किसी भी क्षण आग उगलने के लिए तैयार हो।

इस वक्त इस सच्चाई को वह पूरी तरह भूल चुका था कि उसके हाथ में खाली रिवॉल्वर है। उसमें एकमात्र जो गोली थी उसे वह 'यूज' कर चुका है।

दिमाग में केवल एक ही बात थी।

यह कि गिलास टूटने की जोरदार आवाज ने गड़बड़ कर दी है।

कमरे में कोई आता ही होगा।

और—

उसे उससे निपटना होगा।

परन्तु—

कोई नहीं आया, कहीं कोई हलचल नहीं।

मारे खौफ के अभी तक संजय की टांगें कांप रही थीं।

जब उसे यकीन हो गया कि गिलास के टूटने की आवाज ने किसी को आकर्षित नहीं किया है तो उसने आराम-कुर्सी की तरफ देखा।

कुर्सी अपने 'पट्टों' पर जोर-जोर से झूल रही थी।

संध्या की गर्दन एक तरफ को लुढ़क चुकी थी।

कनपटी पर बने सुराख से खून यूं बह रहा था जैसे बांध टूटा हो—उबल-उबलकर लहू आराम-कुर्सी के चोड़े हत्थे पर से होता हुआ कुछ कुर्सी पर और कुछ फर्श पर गिर रहा था।

संजय के रिवॉल्वर से निकली गोली का निशाना कनपटी की वह नस थी जिस पर गोली लगने के बाद इंसान को पलभर से ज्यादा छटपटाने का अवसर नहीं मिलता।

तभी तो लोग इस नस पर गोली मारकर आत्महत्या करते हैं।

मुंह से निकलने वाली चीख को उसने बायें हाथ से घोंट ही दिया था।

खून के छींटे रिवॉल्वर की नाल पर लगे साइलेंसर पर ही नहीं बल्कि चोगे पर भी गिरे थे।

हाथ में रिवॉल्वर लिए संजय इस वक्त आंखें फाड़े उस हौलनाक मंजर को देख रहा था। नकाब से झांक रही आंखों में खौफ के चिन्ह साफ नजर आ रहे थे।

यह अहसास उसे थरथरा रहा था कि उसने एक हत्या कर दी है।

देखते-ही-देखते पट्टों पर झूलती कुर्सी धीमी होते-होते रुक गयी—कनपटी पर बने सुराख से अब खून बूंद-बूंद करके टपक रहा था—संजय भी अपने अनियंत्रित हो चले दिमाग पर काफी हद तक नियंत्रण पा चुका था।

उसने ध्यान से देखा, संध्या के जिस्म और लिबास के साथ नेकलेस का एक हिस्सा भी खून से भीग गया था—संजय वहीं, फर्श पर बैठ गया।

एयर-बैग खोला।

उसमें से नेकलेस निकालकर फर्श पर बिखरे खून में इस नेकलेस का ठीक वह और उतना हिस्सा भिगोया जितना असली नेकलेस का भीगा था।

फिर, फर्श पर बिखरे कांच के टुकड़ों से बचते हुए उसने नेकलेस चेंज कर लिया।

चेंज करने के बाद एक बार पुनः लाश का निरीक्षण किया। लाश के सामने से वह तभी हटा जब सन्तुष्ट हो गया कि त्रिवेन्द्रम लाश को देखकर यह नहीं ताड़ सकता कि गोली लगने से पहले संध्या यह नहीं बल्कि कोई अन्य नेकलेस पहने हुए थी। गिलास के टूट जाने की वजह से भी उसे अपनी योजना में किसी किस्म की तबदीली करने की जरूरत नहीं थी। चोगे के अलावा संध्या का खून उसके लिबास या जिस्म पर कहीं नहीं लगा था। पचास लाख के इस नेकलेस को एयर-बैग में डालने से पूर्व संजय एक बार उसे चूमने का लोभ संवरण न कर सका।

हां, चूमते वक्त उसने यह ध्यान रखा था कि खून होंठों पर न लग पाये।

□□□

रिसेप्शन में बैठी रूबी संजय के नये उपन्यास के उन कागजों को पढ़ रही थी, जिन्हें व्यस्तता की वजह से पिछली रात पढ़ नहीं पाई थी।

लेखन-कक्ष के अन्दर खट्-खट् की आवाज निरन्तर आ रही थी।

तभी वहां किरन ने कदम रखा।

रूबी ने चौंककर उसकी तरफ देखा। चौंककर इसलिये क्योंकि किरन यहां नहीं आती थी।

कुर्सी से खड़ी होती हुई रूबी ने पूछा—"कहिये?"

"मुझे संजय से मिलना है।"
"इस वक्त?" रूबी ने आश्चर्य के साथ पूछा।
किरन ने दृढ़तापूर्वक कहा—"हां, इसी वक्त।"
"आप टाइपराईटर की आवाज सुन रही हैं ना?"
"सुन रही हूं।"
"इस आवाज का मतलब है कि वे काम में मशगूल हैं।" रूबी अपने एक-एक शब्द को नाप-तोलकर बोल रही थी—"और यकीन मानिये, इतने लम्बे समय तक खट्-खट् की यह आवाज मैंने महीनों बाद सुनी है—जाहिर है कि अपने नये उपन्यास की कहानी में वे उसी तरह 'रम' चुके हैं जैसे पिछले उपन्यासों की कहानी को लिखते वक्त 'रम' जाया करते थे—इस वक्त वे स्वयं को भी भूले हुए होंगे।"
"क्या कहना चाहती हो?"
"कुछ कहना नहीं बल्कि 'रिक्वेस्ट' करना चाहती हूं, यह कि इस वक्त उन्हें डिस्टर्ब न करें।"
"मुझे उनसे जरूरी काम है।"
"प...प्लीज!" रूबी गिड़गिड़ा उठी—"इस वक्त रहने दीजिये। कुछ देर बाद, तब देख लीजिये जब वे काम खत्म कर लें—जो विचार इस वक्त उनके जहन में घुमड़ रहे होंगे, अगर आपने डिस्टर्ब किया तो वे फिर कभी जहन में नहीं आ सकेंगे।"
"म...मगर उनसे बेहद-बेहद जरूरी काम है।"
"सुन चुकी हूं।"
किरन ने चकित स्वर में पूछा—"फिर भी नहीं मिलने दोगी?"
"स...सॉरी, मैं मजबूर हूं।"
किरन को गुस्सा आ गया, गुर्राई—"तुम होती कौन हो मुझे रोकने वाली?"
"मैं उनकी सेक्रेट्री होती हूं।" रूबी का लहजा भी सख्त हो गया था।
"और मैं उनकी पत्नी हूं।"
"धीमे बोलिये, प्लीज—आप नहीं जानतीं कि अगर वे डिस्टर्ब हो गये तो कितना नुकसान होगा और हां, बेशक आप उनकी पत्नी हैं मगर घर में—यहां, ऑफिस में नहीं—ऑफिस की मालकिन मैं हूं, यहां सिर्फ वह होगा जो मैं चाहूंगी—मेरे रहते आप पत्नी होने के बावजूद भी उन्हें डिस्टर्ब नहीं कर सकतीं।"
"और मैं तुम्हें एक पल में इस नौकरी से छुट्टी दिला सकती हूं।" किरन ने दांत पीसे।
रूबी की आंखें भर आयीं, अधर कांपने लगे मगर रोई नहीं

वह—रोने के इतने नजदीक पहुंचकर भी नहीं रोई। कहती चली गयी—"बेशक...बेशक आप मेरी नौकरी छीन सकती हैं, मगर मुझे कोई गम नहीं होगा, क्योंकि मेरी नौकरी पूरी ईमानदारी, पूरी दृढ़ता के साथ अपनी ड्यूटी का निर्वाह करने के अपराध में जायेगी—मुझे मंजूर है, जब वे काम कर चुकें तो बेशक मेरी शिकायत कर दीजिये—मेरी नौकरी छीन लीजियेगा मगर प्लीज, इस वक्त यहां से चली जाइये।"
किरन उसे देखती रह गयी।
उसे—
जिसे संजय की 'सिर्फ सेक्रेट्री' नहीं कहा जा सकता था।
अगर वह सिर्फ सेक्रेट्री होती तो अपनी नौकरी चली जाने की कीमत पर उससे यह सब न करती। निश्चय ही उसके दिल का तार उस लेखक से जुड़ा था जिसे वह मुल्क की संपत्ति समझती थी।
आंखों में आश्चर्य मिश्रित गुस्सा लिए कुछ देर तक किरन रूबी को देखती रही फिर एक झटके से पैर पटकती हुई रिसेप्शन से बाहर चली गयी।
□□□
संजय संध्या के बेडरूम से वह सारा काम मुकम्मल करके बाहर निकला जो अपने टाइपराटर से 'डिस्कस' किया था। उसे किसी ने नहीं देखा।
दोनों पेड़ों के बीच पहुंचा।
नकाब, दस्ताने, रिवॉल्वर और चोगा एयरबैग में रखे।
डिफैंस कॉलोनी के चौराहे पर स्थित बूथ में पहुंचा वह।
भंवर के ऑफिस के नम्बर डायल किये।
फोन रिसेप्शनिस्ट ने ही उठाया। संजय माउथपीस पर रूमाल पहले ही डाल चुका था, उसने पहले जैसे नारी स्वर में पूछा—"क्या भंवर अभी तक ऑफिस नहीं पहुंचा?"
"आप कौन हैं और कहां से बोल रही हैं?"
"गांधी पार्क के बूथ से अलका बोल रही हूं।"
"क्या वे अभी तक वहां नहीं पहुंचे?"
"क्या मतलब?"
"मैंने आते ही आपका मैसेज दे दिया था और वे फौरन यहां से चले भी गये, अब तक तो गांधी पार्क पहुंच जाने चाहिए।"
"ओह, हां—पहुंच गये हैं, मैं इस वक्त उन्हें गाड़ी पार्क करते देख रही हूं, थैंक्यू!"
"मगर आपकी आवाज...।"
रिसेप्शनिस्ट की बात पूरी होने से पहले ही संजय ने सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया। जानता था कि यह क्या कहना चाहती थी, मगर कम-से-कम

अब उसे इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं थी।

होंठों पर वह मुस्कान उभरी जो चांद पर कदम रखते वक्त प्रथम चन्द्र-यात्री के होंठों पर उभरी होगी।

बूथ के बाहर निकलते हुए उसने सोचा—'सबकुछ ठीक है, योजना के मुताबिक।'

एक टैक्सी पकड़कर सीधा विकास-विहार पहुंचा।

चौंसठ नम्बर की चाबी कार्पेट के नीचे से मिल गयी।

नकाब, चोगा और दस्ताने अलमारी के नीचे ठूंसने के बाद बाथरूम में वह सब तो किया ही जो सोचा था, उसने अलावा संध्या के नेकलेस को रगड़-रगड़कर धोया भी—अच्छी तरह साफ करने के बाद जेब में डाला।

जब पूरी तरह संतुष्ट हो गया कि बाथरूम को चेक करने के बावजूद त्रिवेन्द्रम यह नहीं ताड़ सकता कि वहां क्या कुछ हुआ है तब बाहर निकला।

फ्लैट बन्द करके चाबी कार्पेट के नीचे।

टैक्सी द्वारा अपनी कोठी और फिर चौकीदार को धोखा देकर लेखन-कक्ष में पहुंचने में उसे किसी किस्म की दिक्कत नहीं हुई। वह टेपरिकॉर्डर के नजदीक पहुंचा और 'स्टॉप' का स्विच दबाते ही खट्-खट् बन्द हो गयी।

□□□

उस वक्त संजय के चेहरे पर घबराहट का एक भी चिन्ह् नहीं था। जिस वक्त लेखन-कक्ष से रिसेप्शन में कदम रखा—नये उपन्यास के कागजों को इस तरह संभाले हुए था वह जैसे अभी-अभी टाइप किये हों।

रूबी अपनी कुर्सी से खड़ी हो चुकी थी।

अपनी मुकम्मल कामयाबी पर मन-ही-मन 'बल्लियों' उछलते संजय ने रूबी के नजदीक पहुंचते हुए पूछा—"वे कागज पढ़ लिये?"

"य...यस सर।"

"कैसा चल रहा है उपन्यास?"

"बेहतरीन।"

"ठीक है, ये लो आगे के पृष्ठ पढ़कर बताना।"

टाइप हुए कागज उसके हाथ से लेती हुई रूबी ने धीमे से कहा—"भाभी जी आई थीं सर।"

"क...कौन किरन?" संजय उछल पड़ा।

रूबी ने इस तरह गर्दन झुका ली जैसे बहुत बड़ा अपराध किये हो, बोली—"ज...जी हां।"

"व...वह यहां क्यों आई थी?" संजय अलग हलकान हुआ जा रहा

था।

"कह रही थीं कि आपसे कोई जरूरी काम है।"

"फिर?"

"मैंने उन्हें अन्दर नहीं जाने दिया, रिक्वेस्ट की कि आपको डिस्टर्ब न करे।"

यह सच है कि अगर यह बात रूबी के मुंह से उसे तब सुनने को मिलती जब कि वह वास्तव में लेखन-कक्ष से काम करके निकला होता तो रूबी को बुरी तरह डांट पिलाता। किरन को लौटा देने के अपराध में वह सचमुच रूबी को 'बर्खास्त' भी कर सकता था, किन्तु इस वक्त तो हालात ही दूसरे थे।

रूबी ने उसकी 'पोल' खुलते-खुलते बचा ली थी।

संजय बोला—"तुमने बहुत अच्छा किया रूबी, सचमुच मैं डिस्टर्ब हो जाता।"

रूबी ने एक झटके से संजय की तरफ देखा। आंखें में आश्चर्य के चिह्न थे—शायद इसलिए क्योंकि कम-से-कम किरन को लौटा देने की बात सुनते ही वह संजय के भड़क उठने की कल्पना कर रही थी।

संजय हौले-हौले मुस्कराता रहा।

अभी रूबी के मुंह से बोल न फूटा था कि संजय ने कहा—"मैं चलता हूं रूबी, किरन से पूछना पड़ेगा कि क्या बात थी—कोई ज्यादा ही सीरियस मैटर होगा, वरना वह खुद यहां न आती।"

"ज...जी!" रूबी ने धीमे स्वर में कहा, परन्तु उसकी इस 'जी' को सुनने के लिए संजय वहां रुका नहीं, हवा के झोंके की-सी तेजी से बाहर निकल गया।

रूबी वापस अपनी कुर्सी पर बैठ गई।

उसके तो क्या, चौकीदार तक के फरिश्तों को पता नहीं लगा कि संजय कब जाली वाले दरवाजे के नजदीक गैलरी में रखे टेपरिकॉर्डर को उठाकर 'रेजीडेन्स' वाले हिस्से में पहुंच गया।

वहां पहुंचकर उसने किरन को कई आवाजें लगाईं।

उत्तर नदारद था।

कुछ देर बाद वह इस नतीजे पर पहुंच गया कि किरन इमारत में नहीं है।

बेचैन-सा हो उठा वह।

दिमाग की दीवारों से बार-बार दो सवाल टकरा रहे थे—'किरन कहां गयी होगी?'

'ऐसी क्या जरूरी बात थी जिसके लिए वह ऑफिस तक में जाने को तैयार थी?'

शका ने जन्म लिया—'कहीं संध्या अथवा भंवर से सम्बन्धित तो

कोई बात नहीं थी?'

'कहीं वह भवर के बंगले पर तो नहीं चली गयी?'

उफ्फ।

इस विचार के दिमाग में आते ही संजय बुरी तरह कांप उठा।

सारी कल्पनाएं चलचित्र की तरह उसकी आंखों के सामने नाच उठीं।

अगर किरन वहां गयी होगी तो या तो सबसे पहले संध्या की लाश को वहां देखेगी अथवा पुलिस इन्वेस्टीगेशन चल रही होगी—दोनों अवस्थाओं में वह वहां फंसी रह जायेगी।

संध्या के गले में पड़े नेकलेस को देखते ही पहचान लेगी वह।

एक पल में समझ जायेगी कि वह सब मैंने किया है।

और फिर—

त्रिवेन्द्रम के सामने वह टिक नहीं सकेगी।

इतनी काबलियत किरन में नहीं है कि उसे हकीकत पता लग जाये और त्रिवेन्द्रम के सवालों के जवाब में उसे छुपाये भी रखे। किरन से जरा-सी गलती होते ही वह 'धूर्त पुलिसिया' सबकुछ उगलवा लेगा।

सबकुछ।

'हे भगवान!' पसीने में नहाया संजय बड़बड़ा उठा—'आखिर क्या होने जा रहा है?'

वह दौड़ा।

पोर्च में पहुंचा।

गाड़ी गायब थी।

उसने ऊंची आवाज में लोहे वाले द्वार पर खड़े चौकीदार को पुकारा।

"जी शाब!" कहता हुआ गोरखा उसकी तरफ लपका।

संजय ने ऊंचे स्वर में पूछा—"मेमसाब कहां गयीं?"

"पता नहीं शाब!" उसने नजदीक पहुंचते हुए कहा—"बहुत गुस्से में लगती थीं मेमशाब, हमने उन्हें इतना तेज गाड़ी चलाते कभी नहीं देखा शाब!"

"तुम्हें कुछ बताया नहीं कि कहां जा रही हैं?"

"नहीं शाब, आप बताने की बात करता है—उन्होंने हमारे शलाम का जवाब भी नहीं दिया। ऐशा पहले कभी नहीं हुआ शाब, मेमशाब शलाम का जवाब जरूर देता था।"

संजय का दिमाग चकराकर रह गया।

अगर किरन भंवर के बंगले पर गयी है तो अपने बचाव का संजय को कोई रास्ता सुझाई नहीं दे रहा था। ऐसे 'मीडिये' से पकड़ा जाने वाला था वह जिस 'मीडिये' की दूर-दूर तक कल्पना नहीं कर सका था।

पोर्च में अभी वह किंकर्तव्यविमूढ़ अवस्था में खड़ा था कि—

ड्राइंग-हॉल में मौजूद फोन की घण्टी घनघना उठी।

जाने किस भावना से प्रेरित होकर वह वापस भागा।

हॉल में पहुंचा।

उस वक्त उसकी सांसें धौंकनी की तरह चल रही थीं। चेहरा पसीने-पसीने हो रहा था, जब रिसीवर उठाने के साथ एक झटके से बोला—"हैलो!"

"मैं किरन बोल रही हूं।"

"क...कहां से?" संजय ने तीव्र स्वर में, धड़कते दिल से पूछा।

"गाजीपुर से।"

"ग...गाजीपुर?" वह बौखला गया।

"हां।"

"व...वहां कैसे पहुंच गयीं तुम?"

"बम्बई जा रही हूं।"

"ब...बम्बई...क्यों?"

"पापा को 'हार्ट-अटैक' हुआ है, तुम जानते हो तीसरी बार हुआ है यह, मम्मी और डॉक्टर चड्ढा भी मेरे साथ हैं, चड्ढा ने कहा था कि इन्हें फौरन 'बीच कैंडी' ले जाना चाहिये।"

"प...पापा ठीक तो हैं?"

"अभी बेहोश हैं, डॉक्टर चड्ढा देख-भाल कर रहे हैं।" किरन ने बताया—"उन्हें किसी दवा की जरूरत थी सो यहां गाजीपुर के एक मेडिकल स्टोर से ले रहे हैं। मैंने यह सोचकर रिंग कर दिया कि शायद तुम्हारी उस चहेती सेक्रेट्री ने तुम्हें छोड़ दिया हो।"

"म...मगर तुम उससे कह सकती थीं कि..."

"वह जाहिल है—गंवार है—बात करने लायक नहीं है वह।"

"ओह, तुम तो जरूरत से ज्यादा नाराज लगती हो।"

"नहीं, नाराज नहीं हूं—वापस आने पर उसकी आरती उतारूंगी।"

"ऐसी बात नहीं है किरन—अगर तुम उसे बतातीं कि मैटर इतना सीरियस है तो वह निश्चय ही तुम्हें लेखन-कक्ष में आने देती।"

"मैंने कहा था कि सीरियस बात है, छोटी-मोटी बात पर क्या मैं वहां जाती?" किरन कहती चली गयी—"जैसे ही मम्मी ने मुझे फोन पर सूचना दी मैं दौड़ी-दौड़ी तुम्हारे पास गयी मगर तुम्हारी उस गंवार सेक्रेट्री..."

"किरन, छोड़ो उसे, गुस्सा थूक दो।" संजय ने जल्दी से कहा—"और सुनो, पापा को ध्यान से ले जाना—डॉक्टर चड्ढा से कहना कि वे हर पल उनका ख्याल रखें। पीछे-पीछे मैं भी पहुंच रहा हूं।"

"टाइम है तुम्हारे पास?

"उफ्फ...प्लीज किरन, गुस्सा थूक दो।"

किरन ने सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया। कुछ कहने के लिए संजय का मुंह खुला-का-खुला रह गया।

फिर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा।

सोफे पर पसर गया वह, लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगा—कछ इस तरह जैसे भागकर सैकड़ों भूतों से जान बचाने में कामयाब हुआ हो। अपने दिल की शंका और कल्पनाओं ने उसे किस कदर हिलाकर रख दिया था?

जबकि वास्तव में कहीं कोई गड़बड़ नहीं हुई थी।

सबकुछ ठीक था, सबकुछ।

ठीक उसी तरह, जिस तरह वह चाहता था।

उसका 'प्लान सचमुच मास्टर प्लान' था। एक प्वाइंट भी इधर से उधर नहीं हुआ था।

□□□

किरन के फोन के बाद उसने किसी किस्म की जल्दबाजी नहीं की।

नेकलेस लॉकर में रखा।

टैक्सी पकड़कर समुद्र-तट पर पहुंचा और जब उसने एक मोटरबोट किराये पर ली तो काउंटर पर बैठे व्यक्ति ने सचमुच उसकी 'शक्ल' तक नहीं देखी—जब वापस समुद्रतट पर कदम रखा तब निश्चित रूप से उसके पास कोई ऐसी चीज नहीं थी जो उसकी किसी भी 'करतूत' का पर्दाफाश कर सके।

समुद्र-तट से सीधा उस स्टैण्ड पर पहुंचा, जहां से बम्बई के लिए टैक्सियां मिलती थीं।

कुछ देर बाद वह एक टैक्सी में बैठा बम्बई की तरफ बढ़ रहा था। आंखें बन्द करके उसने सिर सीट की पुश्त से टिका दिया—पूरे दो घण्टे का सफर था, संजय एक बार पुनः सोच लेना चाहता था कि कहीं कोई ऐसा लूज़ प्वाइंट तो नहीं रह गया है, जो उसे त्रिवेन्द्रम के जाल में फंसा दे?

□□□

कमरे में संध्या नहीं उसकी लाश है, यह भेद करीब साढ़े तीन बजे तब खुला, जब एक नौकर उसके लिए कॉफी लाया—ढके हुए दरवाजे पर दो-तीन दस्तक देने पर भी जब दरवाजा नहीं खुला और न ही अन्दर से हर रोज की तरह 'कम-इन' की आवाज आयी तो नौकर ने आहिस्ता से एक किवाड़ को धकेला।

दोनों किवाड़ों के बीच एक चौड़ी झिरी बन गयी।

इसी झिरी में से नौकर की नजर लाश पर पड़ी।

ट्रे हाथ से छूट गयी, क्रॉकरी चकनाचूर।

मुंह से चीख निकली।

पहले तो पट्ठे की घिग्घी बंध गयी, फिर हलक फाड़-फाड़कर चिल्लाता हुआ भागा—"खून...खून...!"

बंगले में भूचाल आ गया।

चारों तरफ नौकर दौड़े-दौड़े फिरते नजर आये।

जिसने सुना कि मालकिन के कमरे में उनकी लाश है, उसी के छक्के छूट गये।

सबसे पहले भंवर के ऑफिस में फोन किया गया। वह वहां नहीं था।

फिर पुलिस को।

और—

फोन के ठीक बीस मिनट बाद वहां त्रिवेन्द्रम आ धमका। काला, गुट्टा, मोटी तोंद और गंदली आंखों वाला इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम।

उसके साथ चार पुलिसिये थे।

एक को दरवाजे पर तैनात होने का हुक्म देकर बिखरी कॉफी और टूटी क्रॉकरी से बचता हुआ वह कमरे में पहुंचा।

तीन पुलिसिये उसके साथ थे।

लाश 'फट्टों' वाली आरामकुर्सी पर लुढ़की पड़ी थी।

दोनों हाथ कुर्सी के हत्थों से अलग हवा में झूल रहे थे।

फर्श, कुर्सी और संध्या के लिबास पर पड़े खून का रंग अब काला पड़ने लगा था। गोली कनपटी पर ठीक उस जगह मारी गयी थी जहां आत्महत्या करने वाला मारता है।

मगर निश्चित रूप से वह आत्महत्या नहीं थी।

क्योंकि—

लाश के हाथ में या आसपास कोई रिवॉल्वर नहीं था।

टूटे हुए गिलास का कांच भी गायब था।

त्रिवेन्द्रम कुर्सी के ठीक सामने यानी लाश के सामने खड़ा उसका निरीक्षण कर रहा था। हाथ में दबे एक लम्बे, गोल एवं चिकने रूल से वह अपनी आदत के मुताबिक जांघ पर हौले-हौले वार कर रहा था।

फिर—

उसने खुली खिड़की की तरफ देखा।

फर्श पर बिखरे खून से बचकर त्रिवेन्द्रम गंदली आंखों से फर्श का 'एक्स-रे' करता हुआ खिड़की की तरफ बढ़ा। नजदीक पहुंचने के बाद कुछ देर तक बैक-लॉन और चारदीवारी के बाहर फैले जंगल को घूरता रहा—ध्यान से खिड़की की चौखट को घूरा।

एकएक उसका गुट्टा जिस्म हवा में उछला और पलक झपकते ही बिना चौखट पर पैर रखे लॉन में कूद गया।

तीनों पुलिसिये उसकी इस हरकत पर दंग रह गये।

मगर वह लॉन की घास को घूरता हुआ चारदीवारी की तरफ बढ़ा। कहीं-कहीं झुककर घास में बने छोटे से गड्ढे को ध्यान से देखने लगता था और इसी अवस्था में वह चारदीवारी भी पार कर गया।

जंगल में जाने उसने क्या किया?

करीब पन्द्रह मिनट बाद लौटा। कमरे में खिड़की वाले रास्ते से नहीं बल्कि पूरे लॉन का चक्कर काटकर फ्रंट लॉन में पहुंचा और फिर किसी से एक भी सवाल किये बगैर पुनः कमरे में।

इस बार वह बेड की खुली पड़ी दराज की तरफ बढ़ा।

दराज का निरीक्षण करने के बाद उसने बेड का निरीक्षण किया और फिर निराशा वाले अन्दाज में मुंह बिचकाकर इस तरह लाश की तरफ मुड़ा जैसे उसके ऑफिसर ने 'अबाउटर्न' कहा हो।

इस बार वह सीधा बेड-रूम से 'अटेच्ड-टॉयलेट' में पहुंचा।

टॉयलेट काफी बड़ा था, बारह बाई सात का तो रहा ही होगा—वाश-बेसिन के समीप टॉयलेट-सीट थी और उसके नजदीक लैट्रीन-सीट—'बाथ-टब' लैट्रीन की विपरीत दिशा में था—हलके फिरोजी कलर के टॉयल्स से जगमग करते टॉयलेट में वह हर चीज मुहैया थी जो कि किसी करोड़पति के टॉयलेट में होनी स्वाभाविक है।

एक दरवाजा ठीक उस दरवाजे के सामने था जिससे त्रिवेन्द्रम टॉयलेट में आया था।

वह उसी तरफ बढ़ा।

दरवाजा खोलने के लिए उसने अपनी तरफ खींचा परन्तु वह दूसरी तरफ से बन्द था—अब वह उस खिड़की की तरफ मुखातिब हुआ, जो संध्या के बेड-रूम की तरफ 'बैकलॉन' में खुलती थी।

उस पर 'मूवऐबल' धुंधला शीशा लगा था।

त्रिवेन्द्रम ने उसे 'मूव' किया, कुछ देर तक वहीं खड़ा बैक-लॉन का निरीक्षण करता रहा फिर वहां से हटकर टॉयलेट के फर्श को घूरा—एक बार पुनः निराशाजनक अन्दाज में होंठों को सिकोड़ता हुआ वापस कमरे में आ गया।

खून से बचता हुआ इस बार चेयर के नजदीक पहुंचा।

झुककर ध्यान से लाश के चेहरे, खास तौर पर उसके मुंह वाले स्थान को देखा—एकाएक उसने अपनी पकौड़े जैसी पपोटी नाक सिकोड़ी और फिर सम्पूर्ण लाश को इस तरह सूंघने लगा, जैसे खाने की प्रत्येक वस्तु को खाने से पहले कुत्ता सूंघता है।

तीनों पुलिसिये उसकी इस अजीब हरकत को विचित्र निगाहों से देख रहे थे।

जब वह लाश के नजदीक से हटा तब अपनी छोटी-सी गर्दन पर

रखे 'हंडिया' जैसे सिर को इस तरह हिला रहा था जैसे बात समझ में आ रही हो और यही वक्त था, जब वहां फोटोग्राफर और फिंगर-प्रिन्ट्स विभाग के लोग पहुंचे। इतनी देर में त्रिवेन्द्रम पहली बार बोला—"हत्यारे ने ग्लव्स पहन रखे थे अतः उसकी उंगलियों के निशान मिलने मुश्किल हैं। फिर भी, लाश के मुंह और दराज के मुट्ठे से निशान उठाये जाने चाहिये, किसी तीसरी जगह से निशान लेने की कोई जरूरत नहीं।"

फिंगर-प्रिन्ट्स-एक्सपर्ट ने सहमति में गर्दन हिलाई।

कुछ देर तक त्रिवेन्द्रम फोटोग्राफर को समझाता रहा कि उसे किस-किस कोण से लाश के फोटो लेने हैं, अंत में बोला—"लाश और उसके इर्द-गिर्द के अलावा एक फोटो तुम्हें खुली दराज का लेना है, दूसरा खिड़की की चौखट पर बहुत घुघले-से 'फुट-स्टैप' का और बैक-लॉन में जहां घास में हल्की नमी है वहां तुम्हें छोटे-छोटे गोल गड्ढे नजर आयेंगे, उन्हें भी कैमरे में बन्द करना है।"

"और?" फोटोग्राफर ने पूछा।

"बस।" कहकर वह कमरे से बाहर निकल गया।

□□□

सारे नौकर 'ड्राइंग हॉल' में एक ही स्थान पर इकट्ठा थे—उनके चेहरों पर हवाइयां उड़ रहीं थीं। नजदीक पहुंचते ही त्रिवेन्द्रम ने सवाल किया—"हमारे आने से पहले तुममें से किसी ने लाश के साथ छेड़खानी तो नहीं की थी?"

"न...नहीं साब!" उनमें से एक ने कहा—"छेड़खानी की बात तो बहुत दूर, हममें से कोई भी कमरे के अन्दर तक नहीं गया।"

"फिर यह कैसे पता लगा कि तुम्हारी मालकिन मर गयी है?"

कॉफी ले जाने वाले नौकर ने सारा वृतांत कह सुनाया। सुनने के बाद त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"तो तुमने हमसे पहले अपने साहब के ऑफिस में फोन किया था?"

"हां साब!"

"और उस वक्त वे वहां नहीं थे?"

"नहीं साब!"

"खैर, क्या तुममें से किसी ने किसी वक्त गोली चलने की आवाज नहीं सुनी?"

"नहीं साब!"

"क्यों नहीं सुनी?" त्रिवेन्द्रम ने यह सवाल एक-एक के चेहरे को घूरते हुए किया—"तुम्हारी मालकिन की हत्या रिवॉल्वर से हुई है, किसी ने गोली मारी है उन्हें—जब गोली चली होगी तो आवाज भी हुई होगी, फिर ऐसा कैसे हो सकता है कि तुममें से किसी ने गोली की आवाज न सुनी हो?"

सबकी सिट्टी-पिट्टी गुम।
मानो सांप सूंघ गया हो।
चेहरों पर हैरत और भय के भाव लिये एक-दूसरे की तरफ देखते रह गये वे। किसी के भी मुंह से बोल न फूटा जबकि त्रिवेन्द्रम के मुंह से गुर्राहट निकली—"सच-सच बताओ, तुम सब झूठ बोल रहे हो—हमें उसी वक्त फोन क्यों नहीं किया गया, जब गोली चली थी, जवाब दो?"
"स...साब, हम सच कहते हैं—हममें से किसी ने गोली की आवाज नहीं सुनी।" एक साथ कई नौकर कह उठे।
त्रिवेन्द्रम ने अपनी गंदली आंखों से उन सबके चेहरों का निरीक्षण किया और इस नतीजे पर पहुंचा कि वे शत-प्रतिशत सच बोल रहे हैं—वह समझ गया कि कत्ल साइलेंसर-युक्त रिवॉल्वर से हुआ है। उसने अगला सवाल किया—"आज सुबह से बंगले में कोई बाहरी व्यक्ति आया था?"
"नहीं साब, आज सुबह से तो कोई नहीं आया।"
"मेमसाब कहीं गयी थीं?"
"हां साब, साढ़े दस के करीब मेमसाब गयी थीं।"
"कहां?"
इस सवाल का जवाब किसी भी नौकर ने तुरन्त नहीं दिया। एक-दूसरे की तरफ इस तरह देखने लगे वे, जैसे आंखों-ही-आंखों में विचार-विमर्श कर रहे हों कि मालिक-मालकिन के झगड़े के बारे में इंस्पेक्टर को कुछ बतायें या नहीं जबकि त्रिवेन्द्रम भांप चुका था कि नौकर कुछ छुपाने की कोशिश कर रहे हैं, अतः गुर्राया—"अगर कुछ भी छुपाने की कोशिश की तो मैं तुम सबको अपनी मालकिन की हत्या करने के जुर्म में गिरफ्तार कर लूंगा।"
"नहीं साब, हममें से किसी ने कुछ नहीं किया।"
"तो सच-सच बताओ, साढ़े दस बजे संध्या देवी कहां गयी थीं?"
"उस वक्त हमें पता नहीं था साब, जब वे गयी थीं, मगर बाद में पता चला।"
"बाद में कब?"
इस सवाल के जवाब में त्रिवेन्द्रम को न सिर्फ यह पता लग गया कि भंवर की अलका नामक एक ऐसी रखैल भी है, जिसे उसने विकास-विहार में एक फ्लैट में रखा है, बल्कि यह भी पता लग गया कि दिल्ली जाने के बहाने भंवर पिछली रात उसी के आगोश में रहा था।
नौकरों से झगड़े का सारा वृत्तांत सुनने के बाद त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"झगड़े के बाद क्या हुआ?"
"गुस्से में भरे साब बंगले से बाहर चले गये, रोती हुई मेमसाब अपने

कमरे में—यह करीब सवा बारह बजे की बात है साब—मेमसाब के बेड-रूम में जाकर उनसे बात करने की हममें से किसी की हिम्मत नहीं पड़ी। साब और मेमसाब लंच साथ ही लेते थे—साब रोजाना लंच के लिये ऑफिस से एक बजे आते थे—हम सबको उसी समय का इन्तजार था। भगवान से दुआ कर रहे थे कि साब रोजाना की तरह आयें और मेमसाब से सुलह कर लें, लंच लें, मगर आज वे लंच के लिए नहीं आये।"
"फिर?"
"एक बजकर दस मिनट पर मैं बेड-रूम में पहुंचा, मेमसाब से लंच के लिए कहा, मगर उन्होंने गुस्से में मुझे इतनी बुरी तरह डांटकर कमरे से निकाला कि फिर दुबारा वहां जाकर लंच के लिए पूछने की हिम्मत हममें से किसी की नहीं हुई। डेढ़ बजे वे सो गयी होंगी।"
"दोपहर डेढ़ से ढाई तक मेमसाब सोती थीं ना!"
"सोती थीं?" त्रिवेन्द्रम चौंका—"डेढ़ से ढाई तक वे रोज सोती थीं?"
"हां साब, डेढ़ से ढाई तक वे हर हालत में सोती थीं।"
"अजीब बात है।" त्रिवेन्द्रम बड़बड़ाया—इस रहस्योद्घाटन ने उसे चक्कर में डाल दिया था अतः बोला—"ऐसा कैसे हो सकता है कि कोई शख्स एक फिक्स टाइम तक हर रोज सोये?"
"मेमसाब की इस सोने वाली खूबी के बारे में जब भी किसी को पहली बार पता लगता था इंस्पेक्टर साब, वह इसी तरह चक्कर में आ जाता था, जिस तरह आप आ गये हैं।" नौकर ने बताया—"अजीब बात होते हुए भी यह सच है कि मेमसाब दोपहर को ठीक डेढ़ बजे सो जाती थीं और ठीक ढाई बजे जग जाती थीं और उन्हें नींद भी उस आरामकुर्सी पर आती थी, जिस पर मरी पड़ी है। यह 'खास कुर्सी' उनके पीहर से उनके अगले ही दिन यहां आ गयी थी, जिस दिन वे दुल्हन के रूप में बंगले में आयी थीं—लंच के बाद साब वापस ऑफिस चले जाते थे और मेमसाब आरामकुर्सी पर पड़कर सो जातीं—मेमसाब की तरफ से हमें सख्त निर्देश थे कि डेढ़ से ढाई के बीच न तो कोई-बेड-रूम में जाये और न ही किसी को जाने दिया जाये। कोई ऐसी आवाज भी उत्पन्न न करे, जिससे मेमसाब की नींद में खलल पड़े—अतः डेढ़ से ढाई के बीच बंगले में पूरी तरह खामोशी छाई रहती है—करीब तीन महीने पहले एक नौकर से उनके कमरे में जाने की भूल हो गयी थी, उसे उसी दिन नौकरी से हटा दिया गया और मेमसाब सारा दिन ठीक उसी तरह सुस्त, निढाल और अलसाई-अलसाई-सी रहीं जैसे कोई व्यक्ति पूरी एक रात न सो पाने के कारण अगले दिन रहता है।"

चकित त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"ये आदत उनमें कब से थी?"
"मैंने एक बार उनसे पूछा था इंस्पेक्टर साब!" एक नौकरानी ने कहा—"तब उन्होंने बताया था कि डेढ़ से ढाई तक सोने की आदत उन्हें बचपन में ही पड़ गई थी। यह आदत उनकी दादी ने डाली थी।"
"क्या मतलब?"
"मेमसाब की परवरिश उनकी दादी ने ही की थी। वे नियमों की बड़ी ही पक्की थीं—उनकी धारणा थी कि दोपहर में खाने के बाद प्रत्येक व्यक्ति को आराम जरूर करना चाहिये मगर एक घण्टे से ज्यादा नहीं—जब मेमसाब छोटी-सी थीं, तब उनकी दादी को उनकी देखभाल करने के अलावा कोई काम नहीं था अतः सवा बजे के करीब उन्हें दूध पिलाकर गोद में हिलाते-हिलाते डेढ़ बजे तक सुला देतीं और ठीक ढाई बजे जगा देतीं—जब मेमसाब कुछ बड़ी हुईं तो उनकी दादी खाना खिलाकर सुला देतीं—जब वे मरी तब मेमसाब पन्द्रह साल की हो चुकी थीं और उन्हें लंच के बाद डेढ़ बजे सोकर ढाई बजे जगने की ऐसी आदत पड़ चुकी थी कि अगर न सो पातीं तो सारे दिन अलसाई-अलसाई-सी रहतीं। उन्होंने मुझे बताया था कि डेढ़ बजते ही उनकी आंखें स्वतः बन्द होने लगती हैं और ढाई बजते ही खुद खुल जाती हैं—उन्होंने यह भी कहा था कि दोपहर को बिस्तर पर तो क्या उस कुर्सी के अलावा अन्य कुर्सी पर भी उन्हें नींद नहीं आती थी जिस पर बचपन से सोती रही थीं।"
नौकरानी की बात सुनकर त्रिवेन्द्रम को वह घटना याद आ गयी जिसमें एक आदमी का बच्चा भेड़ियों के बीच 'पलने' के कारण भेड़िया बन गया था यानी उसे लगा कि अगर किसी का बचपन संध्या जैसी अवस्था में गुजरे तो ऐसी आदत पड़ जाना मुमकिन है, मगर फिर भी, आदत उसे अजीब ही लग रही थी, बोला—"यह रहस्य किस-किस को मालूम था कि संध्या देवी डेढ़ से ढाई बजे तक सोती हैं?"
"यह कोई रहस्य नहीं था।" यह नौकर ने बताया—"साब और मेमसाब के सभी परिचितों को यह बात पता थी ताकि इस एक घण्टे के दरम्यान उन्हें कोई डिस्टर्ब न करे।"
अभी त्रिवेन्द्रम नौकर से अगला सवाल पूछने ही वाला था कि भंवर वहां पहुंच गया।
वह बुरी तरह घबराया हुआ नजर आ रहा था, बोला—"य...यह सब कैसे हो गया इंस्पेक्टर, संध्या कैसे मर गयी?"
"आपको कहां पता लगा कि यहां क्या हो गया है?"
"ऑफिस से, अपनी रिसेप्शनिस्ट से पता लगा मुझे।" भवर कहता चला गया—"उसने बताया कि यहां से किसी नौकर ने फोन किया था

कि कमरे में संध्या की लाश पड़ी है—कहां है संध्या?"
"उसकी लाश से आप बाद में मिल सकेंगे, पहले मेरे कुछ सवालों का जवाब दीजिये।"
"क...क्या मतलब?" वह बौखला गया।
"फिलहाल सबसे ज्यादा सन्देहास्पद स्थिति में आप हैं।"
"म...मैं?" वह मिमिया उठा—"मैं क्यों?"
"अलका की वजह से।"
"अ...अलका?" भंवर का चेहरा पीला पड़ गया।
"क्या इस नाम की आपकी एक रखैल नहीं है?" अपनी जांघ पर लगातार रूल से वार करते हुए त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"वह" जिसे आपने एक फ्लैट दे रखा है—वह, जिसके पहलू में आपने दिल्ली जाने का बहाना करके पिछली रात गुजारी है—वह, जिसके पास साढ़े दस और साढ़े ग्यारह के दरम्यान आपकी बीवी गयी थी—और वह, जिससे लेकर बाहर से सवा बाहर तक अपनी बीवी से आज आपका झगड़ा हुआ था।"
भंवर को समझते देर नहीं लगी कि त्रिवेन्द्रम को नौकरों से सब मालूम हो गया है अतः बात को संभालता हुआ बोला—"क्या अलका से सम्बन्ध होना और इस 'इशू' पर हुए संध्या से झगड़े का मतलब ये है कि हत्या मैंने की है?"
"आपका झगड़ा क्यों हुआ था?"
"संध्या अलका के फ्लैट पर उससे यह कहने गयी थी कि वह मेरा पीछा छोड़ दे। यह बात मुझे अलका ने ऑफिस में फोन करके बताई—मुझे गुस्सा आ गया। गुस्से में मैं तुरन्त यहां आया और फिर संध्या ने भी कोई ऐसी बात नहीं की जिससे मेरा गुस्सा शान्त होता, उलटे जोर-जोर से चीखने लगी—मैं पागल हो उठा, गुस्से में जाने क्या-क्या अनाप-शनाप कह गया मैं—मगर इसका मतलब यह नहीं है कि..."
"झगड़े के बाद आप कहां गये?"
"अपने ऑफिस।"
"मगर फिर हर रोज की तरह लंच पर नहीं आये।"
"क्या तुम यह कहना चाहते हो इंस्पेक्टर कि लंच-टाइम से कुछ ही देर पहले जिस व्यक्ति का पत्नी से झगड़ा हुआ हो उसका मूड पत्नी के साथ लंच लेने का रह जायेगा?"
"यानी आपका मूड नहीं हुआ?"
"जी हां।"
"फिर भी लंच तो लिया ही होगा। कहां लिया?"
"ओवराय कॉण्टीनेण्टल में।"

"यानी आपका मूड इतना नहीं बिगड़ा था कि लंच न लेते खैर, लंच आपने अकेले लिया था या किसी के साथ?"

"अकेले।"

"आपके साथ अलका नहीं थी?"

"जी नहीं आप वेटर से पूछ सकते हैं, वह मुझे अच्छी तरह जानता है।"

"लंच के बाद आप कहां गए?"

"करीब पौने दो बजे ऑफिस पहुंचा तो मेरी रिसेप्शनिस्ट ने एक मैसेज दिया।"

"कैसा मैसेज?"

बताने के बाद भंवर ने कहा—"अलका का यह मैसेज मिलते ही मैं गांधी-पार्क पहुंचा। सारा गांधी-पार्क छान मारा मगर अलका नहीं मिली—भटकते-भटकते सवा तीन बज गये तब मैंने वहां स्थित बूथ से अपने ऑफिस फोन किया। रिसेप्शनिस्ट से पूछा कि अलका का कोई और मैसेज तो नहीं मिला, तब रिसेप्शनिस्ट ने बताया कि काफी देर पहले उसके पास गांधी-पार्क के बूथ से अलका का फोन आया था जिसमें उसने पूछा था कि क्या मैं अभी तक ऑफिस पहुंचा हूं, जवाब में जब रिसेप्शनिस्ट ने यह कहा कि वह मुझे उसका मैसेज दे चुकी है और मुझे गांधी-पार्क पहुंच जाना चाहिये तो उसने यह कहकर सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया कि वह मुझे गाड़ी पार्क करते देख रही है।"

"ओह, फिर?"

"रिसेप्शनिस्ट से यह सब सुनकर मैं चौंका और जब उसे बताया कि वहां अलका मुझे नहीं मिली है तो उधर रिसेप्शनिस्ट चौंकी, उसने कहा—'मुझे कुछ गड़बड़ मालूम पड़ती है सर!' मैंने पूछा—'कैसी गड़बड़?' तब उसने बताया कि 'अलका के नाम से मैसेज देने वाली आवाज उसे ऐसी लगी थी, जैसे कोई मर्द नारी स्वर में बोलने की चेष्टा कर रहा हो'—सुनकर मेरा दिमाग घूम गया। रिसेप्शनिस्ट से सम्बन्ध-विच्छेद करने के बाद मैंने तुरन्त अलका का नम्बर मिलाया—मेरी आवाज सुनते ही वह भड़क उठी, कहने लगी कि 'मैं उसे नेहरू-पार्क पहुंचने के लिए कहकर कहां गायब हो गया था'?"

"वैरी गुड...इन्ट्रेस्टिंग!" त्रिवेन्द्रम के मुंह से निकला—"मतलब ये कि किसी ने तुम्हें और अलका को विपरीत दिशाओं यानी नेहरू-पार्क और गांधी-पार्क भेज दिया था?"

"मैं अलका की कहानी सुनकर और अलका मेरी कहानी सुनकर चौंक पड़ी—तब उसने कहा कि उसे 'आवाज' पर शक हुआ था किन्तु उसने ज्यादा 'नोटिस' नहीं लिया क्योंकि मैसेज ऐसा था जिसे उसके ख्याल से मेरे अलावा कोई जानता ही नहीं था।"

"फिर क्या हुआ?"

"अलका से बात करने के बाद उलझन और असमंजस में पड़ा मैं गांधी-पार्क से अपने आफिस लौटा, वहां पहुंचते ही संध्या की हत्या की सूचना मिली। बौखलाया हुआ यहां पहुंचा तो आपके सवाल और शक का सामना कर रहा हूं—आप मुझे हत्यारा समझ रहे हैं मगर यकीन मानो इंस्पेक्टर, मैंने संध्या की हत्या नहीं की—ये सारे हालात, सारी परिस्थितियां असल हत्यारे ने मुझे 'फ्रेम' करने के लिए क्रियेट की हैं—वे झूठे फोन गवाह हैं कि कोई मुझे फंसाना चाहता है, जान-बूझकर मुझे-गांधी-पार्क भेजा गया।"

"चलो मान लिया कि हत्यारे ने फंसाने के लिए आपको गांधी-पार्क भेजा, उसकी मंशा यह रही होगी कि आप पुलिस को वारदात के वक्त की 'एलीबी' न दे सकें परन्तु यहां सवाल यह उठता है कि उसने अलका को नेहरू-पार्क क्यों भेजा?"

भंवर कोई जवाब न दे सका, केवल त्रिवेन्द्रम के चेहरे को देखता रह गया वह—हां, उसका अपना चेहरा इस वक्त निश्चय ही नील, टिनोपाल लगे कपड़े जैसा लग रहा था—कुछ देर तक उसकी अवस्था का निरीक्षण करने के बाद त्रिवेन्द्रम ने कहा—"अलका को नेहरू-पार्क भेजने वाली बात पर बाद में विचार करेंगे फिलहाल कुछ देर के लिए मान लेते हैं कि हत्यारे आप नहीं हैं—इसका मतलब ये है कि हत्या की वजह आपके बीच हुआ झगड़ा नहीं बल्कि कुछ और है?"

"जाहिर है।"

"वह वजह क्या हो सकती है?"

"वजह?" कहकर भंवर ने दिमाग पर जोर डाला, फिर कुछ सोचने के बाद बोला—"क्या ऐसा नहीं हो सकता इंस्पेक्टर कि संध्या को किसी ने न मारा हो बल्कि मेरे और अपने झगड़े के बाद वह इतनी उत्तेजित हो गयी हो कि खुद ही..."

"नहीं, ऐसा नहीं है—अगर ऐसा होता तो रिवॉल्वर कहां चला जाता?"

"र...रिवॉल्वर?" भंवर चौंका—"कौन-सा रिवॉल्वर कहां चला जाता?"

"वहीं, जिससे संध्या की हत्या हुई है।"

भंवर उछल पड़ा, बोला—"संध्या की हत्या रिवॉल्वर से हुई है?"

"निःसन्देह।" त्रिवेन्द्रम ने कहा—"मगर आप चौंके क्यों, आपके ख्याल से यह हत्या कौन-से हथियार से होनी चाहिये थी?"

"म...मेरा मतलब यह नहीं था, इसलिए नहीं चौंका कि मुझे हत्या किसी अन्य हथियार से होने की उम्मीद थी बल्कि यह सोचकर चौंका

हूं कि कहीं यह हत्या मेरे ही रिवॉल्वर से तो नहीं हुई?"

"आपका रिवॉल्वर?"

"वह साइलेंसर-युक्त रिवॉल्वर बैड की दराज में रखा रहता है, प्लीज—चैक कीजिये कि है या नहीं?"

"दराज खुली पड़ी है और रिवॉल्वर उसमें से गायब है।"

"ओह, माई गॉड!" भंवर कह उठा—"मतलब ये हुआ कि हत्या मेरे ही रिवॉल्वर से हुई है अब तो शीशे की तरह साफ है इंस्पेक्टर कि कोई मुझे फ्रेम करने की कोशिश कर रहा है।"

"सवाल फिर वही उठता है, हत्या की वजह क्या हो सकती है?"

साफ-साफ नजर आया कि भंवर अपने दिमाग पर जोर डाल रहा है। कुछ देर सोचने के बाद अचानक उसने पूछा—"क्या संध्या के गले में नेकलेस है?"

"हां, है—मगर नेकलेस के बारे में आपने क्यों पूछा?"

"दरअसल वह नेकलेस संध्या की हत्या की वजह हो सकता है क्योंकि..."

"क्योंकि?"

"लोग उसे पचास लाख का समझते हैं, संध्या भी ऐसा ही समझती थी।"

"क्या मतलब?" त्रिवेन्द्रम चौंका।

"मैंने वह नेकलेस संध्या को गोल्डन-नाइट प्रेजेण्ट के रूप में दिया था। उसे बताया था कि वह पचास लाख का है। वह लोगों को उसकी यही कीमत बताती थी और लोग आराम से यकीन भी कर लेते थे शायद इसलिए क्योंकि मेरी हैसियत अपनी बीवी को पचास लाख का नेकलेस पहनाने की है—संध्या या किसी अन्य ने कभी शक नहीं किया कि वह 'डुप्लीकेट डायमंड्स' का बना हो सकता है। यह सच्चाई है इंस्पेक्टर कि सम्पन्न लोग 'कांच' पहनें तो लोग 'हीरा' समझ लेते हैं—लोगों की इसी 'मैन्टिलिटी' के कारण वह पचास लाख का समझा जाता है जबकि भेद खुलने के डर से मैं उसे ज्यादातर लॉकर में रखता था, इस बहाने के साथ कि इतना महंगा नेकलेस हर समय पहने रहना 'रिस्की' है—जब भी कोई विशेष अवसर होता तभी मैं उसे लॉकर से निकालता, कारीगर से पॉलिश कराता और लाकर संध्या को दे देता—यही कारण था कि देखने वालों को वह हमेशा जगमगाता नजर आता।"

"बात कुछ समझ में नहीं आई।" त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"जब आपकी हैसियत पचास लाख का नेकलेस पहनाने की है तो अपनी बीवी को आपने डुप्लीकेट-नेकलेस क्यों पहना रखा था?"

"हैसियत जरूर है इंस्पेक्टर मगर आप भूल रहे हैं। कि मैं एक

बिजनेस-मैन हूं, पचास लाख की नेकलेस जैसी चीज खरीदकर 'डैड' कर देने में मेरा विश्वास नहीं है—मेरा विश्वास पचास लाख को बिजनेस में लगाकर करोड़ों कमाने में है।"

"तब कम-से-कम आपको अपनी पत्नी से झूठ नहीं बोलना चाहिये था।"

"कई झूठ ऐसे होते हैं इंस्पेक्टर जो 'मजाक करने' के लिए बोले जाते हैं मगर उसके बाद हालात कुछ इस तरह चेंज होते हैं कि आदमी 'सच्चाई' नहीं बता सकता, नतीजा यह होता है कि वह झूठ सच बनकर रह जाता है।"

"यानी?"

"सुहागरात को नेकलेस संध्या को देते वक्त मैंने मजाक में उसकी कीमत पचास लाख बताई थी। सुबह को सच्चाई बताने का अवसर ही नहीं मिला—जब सोकर उठा तो पाया कि संध्या बेड पर नहीं बल्कि ड्राइंग-रूम में है और कुछ देर पूर्व आई अपनी मम्मी और कुछ सहेलियों को गर्व के साथ इतरा-इतराकर नेकलेस के बारे में बता रही है—उस दृश्य को देखने के बाद जब भी संध्या को सच्चाई बतानी चाही तभी इस ख्याल ने जीभ में ताला लटका दिया कि संध्या के दिल को चोट पहुंचेगी, उसकी मम्मी और सहेलियों में हमारी खिल्ली उड़ेगी।"

"तो आपके ख्याल से वह नेकलेस संध्या की हत्या की वजह हो सकता है?"

"हो सकता था क्योंकि लोग उसे पचास लाख का समझते हैं मगर जब वह संध्या के गले में है तो बात ही खत्म हो गई, हत्या का कारण वह नहीं हो सकता।"

"और कोई कारण सोचिए।"

"समझ में नहीं आता कि किसी ने संध्या की हत्या क्यों की होगी?"

एकाएक गंदली आंखों वाले इंस्पेक्टर के चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे वह 'पर्दाफाश' करने के मूड में आ गया हो, बोला—"मगर मेरी समझ में सबकुछ आ रहा है मिस्टर भंवर, सबकुछ—यह भी कि आपको 'फ्रेम' करके हत्यारा मुझे कौन-सी लाइन दौड़ाना चाहता है मगर मैं उस पर दौडूंगा, अगर वह ऐसा सोचता है तो 'महामूर्ख' है—उसे मालूम नहीं होगा कि 'त्रिवेन्द्रम' वह नहीं सोचता जो हत्यारा सुचवाना चाहता है बल्कि वह सोचता है, जो हत्यारे ने नहीं सोचा होता।"

"मैं समझा नहीं कि आप क्या कह रहे हैं?"

"सबसे पहले मैं हत्यारे की 'कल्पना' पर यह मानकर 'कुठाराघात' करता हूं कि आप हत्यारे नहीं हैं बल्कि वास्तव में 'फ्रेम' किए गए हैं। अब सवाल उठता है कि 'फ्रेम' किसने किया—जवाब स्पष्ट है, आपको 'फ्रेम' केवल ऐसा व्यक्ति कर सकता है जिसे आपके, अलका और संजय

के बीच चल रहे 'तनाव' या झगड़े की जानकारी हो और कम-से-कम इस वक्त तक मेरी नजर में ऐसा केवल एक ही व्यक्ति है।"

"क...कौन है वह?"

त्रिवेन्द्रम मुस्कराया, बोला—"नाम सुनकर आप चौंक पड़ेंगे, वह सोच भी नहीं सकता कि कुछ देर बाद मैं उसे गिरफ्तार करने वाला हूं।"

"क...कौन है वह, प्लीज बताइए!"

"वह मेल नहीं, 'फीमेल' है।"

"फीमेल?"

"नाम अलका होना चाहिए।"

"अ...अलका?" भंवर के मुंह से सचमुच चीख निकल गयी। मारे हैरत के पागल-सा होता हुआ वह कहता चला गया—"न...नहीं...नहीं इंस्पेक्टर, अलका ने यह हत्या नहीं की हो सकती।"

"वजह!"

"अगर यह काम उसका होता तो भले ही चाहे जिसे 'फ्रेम' करती मगर मुझे नहीं करती।"

"क्यों?"

"आज हालात ये हैं कि वह जो भी मौज-मस्ती ले रही है, वह सब मेरी वजह से है—मेरे फ्लैट में रहती है, मेरा खाती और मेरा पहनती है—अगर मैं न रहा तो वह सड़क पर पहुंच जायेगी।"

"आप यही कहना चाहते हैं ना कि कोई शख्स उस शख्स को फ्रेम क्यों करेगा जिसकी वजह से आज वह आबाद है और उसके न रहने पर बरबाद हो जाएगा?"

"क्या इस तर्क में जान नहीं है?"

"जरूर है और यही तर्क आपको फ्रेम करते वक्त अलका के दिमाग में भी रहा होगा, उसने यह सोचा होगा कि अगर पुलिस का ध्यान उसकी तरफ आता भी है तो यह तर्क उसे बेदाग साबित कर देगा मगर मजे की बात ये है मिस्टर भंवर कि ऊपर से देखने पर इस तर्क में जितनी जान नजर आती है, उतनी वास्तव में है नहीं। यदि हम गहराई तक सोचें तो आपको फ्रेम करके अलका को नुकसान नहीं, फायदा-ही-फायदा है।"

"वह कैसे?"

"कल्पना कीजिए कि मैं आपको हत्यारा मानकर गिरफ्तार कर लेता हूं, कब तक जेल में रहेंगे आप—कल, परसों या ज्यादा-से-ज्यादा हफ्ते-भर में जमानत पर नहीं छूट जायेंगे?"

"जरूर छूट जाऊंगा मगर...

"मगर?"

"संध्या की हत्या का केस तो मुझ पर चलेगा ही?"

"भले ही चलता रहे, केस के फैसले एक-दो साल में नहीं दसियों साल में होते हैं और फिर आपकी हैसियत तो दुनिया की अन्तिम कोर्ट तक जाने की है—यह बात अलका जानती है।"

"कहना क्या चाहते हो?"

"मान लीजिए कि आप जमानत पर छूटकर आते हैं, ज्यादातर परिचित अपनी बीवी का हत्यारा समझकर आपसे कटते हैं, रूखा व्यवहार करते हैं—दुनिया में एकमात्र अलका है, जिससे आपको प्रेम, सहानुभूति और मृदु-व्यवहार आदि वह सबकुछ मिलता है, जिसके आप भूखे हैं। जाहिर है कि आप उसके निकटतम पहुंच जायें—आपको यह लगेगा कि केवल अलका को आपसे सच्ची मुहब्बत है 'बाकी सब' मतलब के यार थे—आप वह कल्पना तक नहीं कर सकते कि आपको फ्रेम करने वाली अलका ही है। नतीजा यह होता कि केस चलने वाले सालों के दरम्यान ही वह आपसे शादी कर लेती—बैठे-बिठाये बन गई करोड़पति की बीवी, अब पहली बात तो ये है कि इस बात को अलका जरूर समझती होगी कि तुम अपनी सम्पन्नता के बूते पर कानूनी लड़ाई जीत लोगे यानी जब भी फैसला होगा बाइज्जत बरी होगे। मान लिया कि नहीं होते—छोटी-मोटी सजा या ज्यादा-से-ज्यादा उम्र-कैद हो ही जाती है।"

"क्या उसने यह नहीं सोचा होगा कि मुझे फांसी भी हो सकती है?"

"फांसी की सजा इतनी आसानी से नहीं होती और मान लिया कि उसने यह भी सोचा हो तब भी जब आप फांसी पर चढ़ते तो वह एक करोड़पति विधवा होती। वह—जो आज सिर्फ एक बाजारू-औरत है।"

"हे भगवान, अलका ने इतनी दूर तक सोचा होगा?"

"योजना बनाकर मर्डर करने वाले इससे भी ज्यादा दूर तक सोच जाते हैं।"

"म...मगर यह सब अलका ने किया किस तरह होगा?"

"एक वही शख्स है जिसके लिए सबकुछ करना आसान था।" त्रिवेन्द्रम कहता चला गया—"अलका पिछले काफी टाइम से इस फिराक में होगी कि कब उसे मौका मिले जब तुम्हारा और संध्या का जबर्दस्त झगड़ा करा सके—ऐसा कराना तुम्हें फ्रेम करने के लिए जरूरी था। आज जब संध्या फ्लैट पर गयी तो उसे मौका मिल गया—तुम्हें चढ़ा दिया उसने, तुम लड़ पड़े—तुम्हारे दूसरे सभी परिचितों की तरह उसे भी मालूम होगा कि डेढ़ से ढाई तक संध्या सोती है, भरा हुआ रिवॉल्वर दराज में रखा रहता है और बैक-लॉन वाली खिड़की खुली रहती है, जानती थी ना?"

भंवर ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

"पौने-दो से पहले उसने तुम्हारे ऑफिस में फोन करके गांधी-पार्क पहुंचने का मैसेज छोड़ा यानी ठीक डेढ़ के आसपास वह हरकत में आयी—यह मैसेज उसने जान-बूझकर माऊथ-पीस पर रूमाल रखकर छोड़ा। रूमाल रखने से आवाज भारी और मोटी हो जाती है, इसी वजह से रिसेप्शनिस्ट को लगा कि कोई मर्द नारी-स्वर में बोलने का प्रयत्न कर रहा था—ऐसा उसने इसलिए किया ताकि बाद में आराम से फोन करने से मुकर सके—रिसेप्शनिस्ट का बयान भी उसे फेवर करे—फोन करने के बाद वह सीधी बैक-लॉन से होकर खिड़की के माध्यम से कमरे में आई और कमरे की स्थिति बात रही है कि संध्या की नींद नहीं उचट पाई, दराज से रिवॉल्वर निकालकर उसने वहां गोली मारी जहां लगने के बाद इंसान को चीखने का तो क्या ठीक से तड़पने तक का अवसर नहीं मिलता फिर भी दस्ताने-युक्त बायें हाथ से उसने संध्या का मुंह भींच लिया था। साइलेंसर के कारण गोली की आवाज किसी ने नहीं सुनी और वह जिस खामोशी के साथ आई थी उसी खामोशी के साथ वापिस लौट गई, तब—यह जांच करने के बाद उसने एक बार पुनः तुम्हारे आफिस फोन किया कि तुम गांधी-पार्क पहुंच गए हो या नहीं—पुष्टि होने पर सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया। जब तुमने उसके फ्लैट पर फोन किया तो अपनी योजना के मुताबिक न सिर्फ तुम्हारे आफिस फोन करने से मुकर गई बल्कि यह कहकर उल्टी तुम पर झड़ गयी कि तुमने उसे नेहरू-पार्क पहुंचने के लिए फोन किया था।"

भंवर की आंखें हैरत से फटी रह गयीं, बोला—"क्या तुम्हारे पास मुकम्मल-प्लान को प्रमाणित करने के लिए कोई सुबूत भी है?"

"दो सुबूत हैं।"

"वे क्या?"

"पहला लॉन की 'नम' घास के बीच बने छोटे-छोटे गोल 'गड्ढे' जो यकीनन ऊंची एड़ी वाली लेडिज सैंडिल की एड़ी से बने हैं। सबसे पहले मुझे उन्हीं 'गड्ढों, ने बताया कि मर्डर 'फीमेल' ने किया है—इसी सैंडिल का निशान खिड़की की चौखट पर भी है।"

"दूसरा सुबूत?"

"वह पल भर में उसके मन में समाये लालच की वजह से छूट गया।" त्रिवेन्द्रम ने बताया—"कत्ल करने के बाद अलका के मन में यह लालच आया कि क्यों ना वह पचास लाख का नेकलेस हथिया ले—इसी लालच के वशीभूत उसने संध्या के गले से नेकलेस निकालकर अपने गले में डाल भी लिया मगर तभी उसे यह ख्याल आया कि अगर लाश के गले से नेकलेस गायब पाया गया तो पुलिस के सामने हत्या की वजह नेकलेस होगा, तुम्हारा और संध्या का झगड़ा नहीं। यानी उस अवस्था में तुम फ्रेम नहीं हुए तो उसकी आगे तक की योजना गड़बड़ा

जायेगी—अलका ने यह सब सोचा, साथ ही यह भी सोचा कि भविष्य में इस नेकलेस सहित जिसकी सम्पूर्ण संम्पत्ति उसकी होने वाली है उसके नेकलेस के लालच में पड़ना बेवकूफी है। सो, नेकलेस उसने वापस संध्या के गले में डाल दिया, मगर इस बात का उसने स्वप्न में भी गुमान नहीं किया होगा कि तुम्हारा डुप्लीकेट नेकलेस इतना करामाती है कि उसे पकड़वा देगा।"

"नेकलेस ने आखिर किया क्या?"

"आओ मेरे साथ।" कहने के बाद वह बेड-रूम की तरफ बढ़ गया।

लाश के नजदीक पहुंचकर त्रिवेन्द्रम ने उससे कहा—"संध्या के गले में पड़े नेकलेस को सूंघो।"

"क्या करूं?" भंवर चकराया।

"सूंघो, तुम्हें सूंघना नहीं आता क्या?"

"आता है।" कहकर वह आगे बढ़ा और ध्यान से नेकलेस को सूंघने लगा, यही क्षण था जब त्रिवेन्द्रम ने कहा—"इसमें से तुम्हें 'परफ्यूम' की खुशबू आ रही होगी, ऐसी खुशबू का 'परफ्यूम' अलका ही यूज करती है ना?'

"नहीं!" भंवर पागलों की तरह चिल्ला उठा—"ऐसा 'परफ्यूम' तो किरन लगाती है।"

□□□

ब्रेकों की तीव्र चरमराहट के साथ पुलिस-जीप संजय की कोठी के पोर्च में रुकी।

इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम का जिस्म उसमें से इस तरह कूदा जैसे किसी ने गोल लोटा उछालकर खिडकी से बाहर फेंका हो—उसने साथ चारों सिपाही भी थे—भंवर भी।

धड़धड़ाते हुए सभी जीप से बाहर निकले।

तब तक लोहे वाले द्वार पर तैनात रहने वाला गोरखा चौकीदार जीप के पीछे दौड़ता उसके नजदीक आ गया था। वह अभी हांफ ही रहा था कि त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"कोई है कोठी में?"

"नहीं शाब।" वह अभी भी हांफ रहा था—"शाब तो कहीं गया है।"

"और मेमसाब?"

"वे अन्दर हैं।"

बस—

इतना सुनते ही त्रिवेन्द्रम मुख्य द्वार की तरफ बढ़ा।

चारों सिपाहियों की तरह भंवर भी उसके पीछे था।

"शाब...शाब, सुनो तो शाब!" उनके पीछे लपकते-से चौकीदार ने कहा परन्तु किसी ने उस पर तवज्जो नहीं दी। उधर इमारत में मची

असामान्य खलबली ने रिसेप्शन में बैठी रूबी का भी ध्यान आकर्षित किया था।
वह बाहर निकली।
पोर्च में खड़ी पुलिस-जीप को देखकर चौंकी और फिर दौड़ने की-सी अवस्था में मुख्य द्वार की तरफ बढ़ी।
कोठी के ड्राइंग-हॉल में—
तब—
जबकि किरन पुलिस के सामने पड़ी।
चेहरा फक्क पड़ गया उसका, मसामों ने ढेर सारा पसीना उगल दिया और यह सच है कि किरन के मुंह से बोल न फूट सका—कभी वह इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम की तरफ देख रही थी, कभी भंवर की तरफ।
वे सब उसी को घूर रहे थे।
ब्लेड की धार-सा जैसा सन्नाटा व्याप्त था।
हॉल में कदम रखती हुई रूबी ने पूछा—"क्या बात है इंस्पेक्टर! आप लोगों का यहां कैसे जाना हुआ?"
त्रिवेन्द्रम ने ही नहीं बल्कि भंवर और चारों सिपाहियों ने भी पलटकर रूबी की तरफ देखा मगर कहा किसी ने कुछ नहीं।
किरन ठगी-सी अवस्था में खड़ी थी।
चौकीदार चकित।
रूबी उनके नजदीक आ गयी तब कहीं जाकर त्रिवेन्द्र ने पूछा—"आपका परिचय?"
"मेरा नाम रूबी है, संजय भारद्वाज की सेक्रेट्री हूं मैं।"
"ओह, बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर।"
"मगर मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया आपने?"
त्रिवेन्द्रम फिर पैनी आंखों से किरन के चेहरे पर उड़ रही हवाइयों को देखता हुआ बोला—"आपके सवाल का जवाब हमसे बेहतर ये दे सकती हैं।"
"म...मैं?" किरन मिमिया उठी—"मैं भला कैसे बता सकती हूं कि आप यहां क्यों आए हैं?"
"क्या आप वाकई नहीं समझीं मिसेज भारद्वाज कि हम लोग यहां क्यों आए हैं?" उसे घूरते हुए त्रिवेन्द्रम ने अपने एक-एक शब्द पर जोर दिया—"मेरे ख्याल से इतनी नासमझ तो नहीं हैं आप?"
किरन का दिल उछलकर उसके हलक में आ फंसा।
बड़ी मुश्किल से, भर्राये स्वर में कह पाई वह—"मैं सचमुच नहीं समझी कि आप लो..."
"मिस्टर भंवर को हमारे साथ देखकर भी नहीं समझीं?" किरन का वाक्य काटकर त्रिवेन्द्रम ने पूछा।

"हां...हां—नहीं समझी।" अचानक किरन भड़क उठी, पागलों की तरह चिल्लाने लगी वह—"पहेलियां क्यों बुझा रहे हो, सीधे-सीधे क्यों नहीं बताते कि क्यों आए हो?"
उसकी चिल्लाहट का त्रिवेन्द्रम ने कोई जवाब नहीं दिया।
लिहाजा—
हॉल में पहले से कई गुना ज्यादा पैना सन्नाटा व्याप्त हो गया।
इस वक्त किरन की जो अवस्था थी उसने रूबी को सोचने पर विवश कर दिया।
पूरी तरह 'एब्नॉर्मल' नजर आ रही थी वह।
रूबी की आंखें सुकड़कर गोल होती चली गयीं। उसे पक्का यकीन हो गया कि किरन पुलिस के यहां आगमन का कारण जानती है और अभी वह किरन के धुआं-धुआं होते चेहरे को देख ही रही थी कि हॉल में छाई खामोशी को त्रिवेन्द्रम के इन शब्दों ने तोड़ा—"मुजरिम चाहे जितनी चालाकी से जुर्म करे मगर ऐसी कोई-न-कोई चूक उससे हो ही जाती है जिसका दामन पकड़कर कानून के हाथ मुजरिम के गिरेबान तक पहुंच जाते हैं।"
किरन पुनः चीखी—"क्या जुर्म किया है मैंने?"
"कमाल है!" त्रिवेन्द्रम ने ठहाका-सा लगाया—"मैंने कब कहा कि आपने कोई जुर्म किया है?"
"तो क्यों आये हो यहां?"
"आपने वह कहावत सुनी होगी मिसेज भारद्वाज कि पानी वहीं भरता है जहां झील हो—मैंने एक आम बात कही थी, मिस रूबी ने नहीं समझा कि मैं उन्हें कह रहा हूं—इस गोरखे ने भी मेरे कथन पर आपत्ति नहीं की, परन्तु आपको लगा कि मैं आपके बारे में कुछ कह रहा हूं, क्या मैं जान सकता हूं कि आपको ऐसा क्यों लगा?"
"क्योंकि यह बकवास आपने मेरे घर की छत के नीचे खड़े होकर की है।"
"वैरी गुड! अच्छा जवाब दे लेती हैं आप!" त्रिवेन्द्रम के भद्दे होंठों पर जहरीली मुस्कान उभरी—"यह बात मैंने आपके घर की छत के नीचे खड़े होकर इसलिए कही मिसेज भारद्वाज क्योंकि यह बात मुझे इसी छत के नीचे खड़े होकर कहनी चाहिए थी।"
"क्या बक रहे हो तुम?"
त्रिवेन्द्रम ने अभी भी शान्त भाव से कहा—"मैं इस कोठी की तलाशी लेना चाहता हूं।'
"त...तलाशी?" किरन चिहुंक उठी—'किसलिये?"
"आपके इस सवाल का जवाब मैं तलाशी के बाद दूंगा।"

किरन गुर्रायी—"और मैं इस सवाल का जवाब लेने से पहले आपको तलाशी नहीं लेने दूंगी।"

"क्या मैं जान सकता हूं कि आपको क्या आपत्ति है?"

"आप बेवजह किसी के घर की तलाशी नहीं ले सकते।"

"बेवजह!" इस बार त्रिवेन्द्रम भी गुर्राया—"मैं बेवजह तलाशी लेने की बात कर रहा हूं?"

"अगर कोई वजह है तो उसे आप बताते क्यों नहीं?"

त्रिवेन्द्रम का काला चेहरा तमतमा उठा, एक-एक लफ्ज को दांतों से पीसता हुआ बोला वह—"हालांकि मुझे उम्मीद नहीं थी मिसेज भारद्वाज कि आप इतनी बेवकूफ निकलेंगी—जिस ढंग से जुर्म हुआ है और जिस होशियारी के साथ मिस्टर भंवर को फ्रेम किया गया है उससे मेरे दिमाग में यह धारणा बनी थी कि मुजरिम बेहद चालाक ही नहीं बल्कि अत्यन्त सुलझे हुए दिमाग का मालिक है मगर अफसोस कि आपसे मिलकर मेरी वह धारणा चूर-चूर हो गयी—अगर आप अपने उतने सुलझे हुए दिमाग की मालिक होतीं जितने कि मैंने कल्पना की थी तो यह नाटक न कर रही होती जो इस वक्त कर रही हैं। बल्कि मुझे मिस्टर भंवर के साथ यहां देखते ही आत्मसमर्पण कर देतीं, समझ जातीं कि आपकी योजना बूरी तरह फ्लाप हो चुकी है—मेरा यहां पहुंचना ही इस बात का सबूत है कि मैं उस रास्ते पर नहीं चला जो जुर्म करते वक्त आपने मेरे लिए बनाया था, अगर आप सुलझे हुए दिमाग की मालिक होतीं तो यह भी समझ जातीं कि अब किसी भी किस्म की ड्रामेबाजी करके आप मेरे शिकंजे से बच नहीं सकतीं।"

"क्या कहना चाहते हो? क्या किया है मैंने?"

"आपने हत्या की है।"

"ह...हत्या?" किरन चिहुंकी—"म...मैंने हत्या की है?"

"संध्या की हत्या।"

"स...संध्या...संध्या मर गयी?"

"यकीन मानिए।" त्रिवेन्द्रम का जहरीला स्वर—"आप अच्छी एक्टिंग नहीं कर पा रही हैं।"

"म...मैं...मैं...भला संध्या की हत्या क्यों करूंगी?"

"उसके गले में पड़े पचास लाख के नेकलेस के लिए।" त्रिवेन्द्रम कहता चला गया—"गहनों के प्रति औरत की आसक्ति कोई नई बात नहीं है मिसेज भारद्वाज—यह आसक्ति आदिकाल से चली आ रही है तब से, जब से गहने बने हैं, मगर आपके रूप में एक औरत ने अपनी इस आसक्ति को पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया—पचास लाख के एक नेकलेस के लिए आपने अपनी उस सहेली की हत्या कर दी जिसे आप

अपनी सबसे प्यारी सहेली कहती थीं—उस सहेली को कत्ल कर दिया आपने जो करोड़पति होने के बावजूद आप जैसी मामूली हैसियत वाली औरत को सचमुच अपनी दोस्त और हमदर्द समझती थी।"

"यह झूठ है।" किरन चीखी—"मैंने उसे नहीं मारा।"

"मैं तो यह सोच रहा हूं कि उस वक्त आप पर क्या गुजरेगी जब आपको संध्या के नेकलेस की हकीकत मालूम होगी।"

"क्या मतलब?"

"मुझे अफसोस के साथ बताना पड़ रहा है मिसेज भारद्वाज कि जिस नेकलेस को आप पचास लाख का समझ रही थीं वह उस नेकलेस से भी कम कीमत का है जिसे आप संध्या के गले में डालकर आई हैं।"

"क...क्या?" किरन का मुंह खुला-का-खुला रह गया।

"मिस्टर भंवर खड़े हैं, आप इनसे पूछ सकती हैं।" त्रिवेन्दम ने कहा—"संध्या का वह नेकलेस खुद डुप्लीकेट था, जिसका डुप्लीकेट आपने तैयार कराया और जिसकी चमक-दमक ने आपको इतनी अंधी कर दिया कि आप संध्या की हत्या तक करने से नहीं हिचकीं—यह बात तो भंवर बाबू अपनी बीवी की लाश देखने से पहले ही स्वीकार कर चुके थे कि इनका नेकलेस नकली था, मगर यह रहस्य लाश देखने के बाद बता पाए कि लाश के गले में पड़ा नेकलेस 'इनका डुप्लीकेट नेकलेस' नहीं है, मैं तुरन्त समझ गया कि हत्यारे ने भंवर बाबू के नेकलेस को असली समझकर 'डुप्लीकेट' तैयार कराया और अपनी समझ में असली से नकली चेंज कर लिया—ऐसा इसलिए किया गया ताकि पुलिस हत्या की वजह भंवर और संध्या के झगड़े को समझे।"

इस बार किरन तुरन्त कुछ नहीं बोली।

ठगी-सी खड़ी थी वह।

दिलो-दिमाग पर मानो बिजली गिरी थी।

मारे हैरत के आंखें फटी पड़ी थीं, चेहरा निस्तेज।

रंग पीला।

हाथों के मानो तोते उड़ गए थे।

ऐसी अवस्था हो गयी उसकी जैसे भरी सभा में निर्वस्त्र कर दी गयी हो।

काफी लम्बी खामोशी के बाद त्रिवेन्द्रम ने पुनः कहा—"मैं आपकी हालत का अन्दाजा लगा सकता हूं मिसेज भारद्वाज, उस शख्स की हालत का अन्दाजा लगाना किसी के लिए भी मुश्किल नहीं है जिसे कुछ ही देर पहले पता लगा हो कि जिसे उसने अमृत समझकर पिया था, वास्तव में वह जहर था।"

"न...नहीं।" किरन हलक फाड़कर चिल्लाई—"तुम बकवास कर रहे हो, मेरा मनोबल गिराना चाहते हो तुम—वह नेकलेस असली नहीं

हो सकता।"

"यह सच है किरन देवी।"

"बको मत।" चिल्लाने के साथ ही इस बार किरन ने अपने पेट और साड़ी के बीच ठुंसा रिवॉल्वर निकालकर त्रिवेन्द्रम की तरफ तान दिया।

सभी सकपकाकर पीछे हट गए।

किरन का चेहरा गुस्से और खीज के संयुक्त भावों से भभक उठा था।

विकृत-सा हो गया।

चेहरे ही से मुजरिम-सी नजर आने लगी वह।

किरन से यह उम्मीद त्रिवेन्द्रम ने भी नहीं की थी।

साड़ी के पल्लू के कारण रिवॉल्वर को पहले कोई भी नहीं देख पाया था।

साइलेंसर भी लगा था उस पर।

भंवर कह उठा—"यह वही रिवॉल्वर है इंस्पेक्टर, मेरा रिवॉल्वर।"

"हां!" किरन दहाड़ी—"यह वही रिवॉल्वर है, वही...जो दराज में रखा रहता था।"

"तुम पर कहां से आया?"

"हूं।" किरन से पहले त्रिवेन्द्रम कह उठा—"क्या अब भी आपको इस सवाल का जवाब चाहिए मिस्टर भंवर, किरन देवी स्वीकार कर चुकी हैं कि संध्या की हत्या उन्होंने ही की है।"

"तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया इंस्पेक्टर, नेकलेस असली है या नकली।"

"नकली।"

"झूठ मत बोलो वरना गोली मार दूंगी।"

"अगर आप मेरे यह कह देने से गोली मारने का इरादा स्थगित कर सकती हैं कि नेकलेस असली है तो कह देता हूं कि असली है।"

"गोल-मोल बात करके मुझे बेवकूफ बनाने की चेष्टा की तो अच्छा नहीं होगा इंस्पेक्टर!" किरन की गुर्राहट किसी भी अच्छे-भले व्यक्ति का रक्त जमा देने में सक्षम थी—"सीधे शब्दों मे केवल सच बताओ मुझे।"

"सच्चाई यही है किरन, कि नेकलेस नकली था।" भंवर कह उठा।

उफ्फ!

किरन के भीतर मानो भूचाल आ गया।

उसके चेहरे पर भूकम्प के लक्षण साफ-साफ देखे जा सकते थे।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि किरन के चेहरे पर इस वक्त वैसे भाव थे जैसे जुए में द्रोपदी को हारने के बाद युधिष्ठिर के चेहरे

पर उभरे होंगे।

निराशा की गहरी खाई में जा गिरी थी वह।

पागल-सी होने को तैयार।

त्रिवेन्द्रम ने शान्त स्वर में कहा—"अपना रिवॉल्वर मुझे दे दीजिए किरन देवी, क्योंकि हम सबको गोली से उड़ा देने के बावजूद अब आप कानून के शिकंजे से नहीं बच पायेंगी—अभी तक आप पर सिर्फ हत्या का इल्जाम है, मुमकिन है कि सजा कम हो, अगर वह बेवकूफी कर दी जो कर रही हो तो दुनिया की कोई ताकत आपको फांसी के फंदे से नहीं बचा सकती।"

"नहीं!" वह ठीक किसी पागल की तरह बड़बड़ाई—"मैं खुद को तुम्हारे हवाले नहीं करूंगी।"

"समझने की कोशिश..."

मगर!

त्रिवेन्द्रम का वाक्य अधूरा रह गया।

किरन ने हरकत ही ऐसी की थी कि सब चौंक पड़े।

अचानक वह पलटी और हाथ में रिवॉल्वर लिये आंधीतूफान की तरह बेडरूम की तरफ भागी।

कुछ देर तक तो त्रिवेन्द्रम, भंवर और रूबी आदि उसकी इस अजीबोगरीब हरकत का मतलब ही न समझ पाये और ठगे-से खड़े रह गये पर फिर—

सबसे पहले त्रिवेन्द्रम उसके पीछे लपका।

परन्तु!

अभी वह बेडरूम के दरवाजे के नजदीक पहुंचा ही था कि—

'भड़ाक!' की जोरदार आवाज के साथ दरवाजा बन्द हो गया।

त्रिवेन्द्रम का चेहरा जोर से किवाड़ पर टकराया, अन्दर से चटकनी बन्द होने की आवाज।

जब उसके पीछे लपकते हुए चारों सिपाही, चौकीदार, भंवर और रूबी वहां पहुंचे तब त्रिवेन्द्रम जोर-जोर से दरवाजे को पीटता हुआ चिल्ला रहा था—"दरवाजा खोलिये मिसेज भारद्वाज जो आप करना चाहती हैं वह बेवकूफी होगी—कानून आप पर रहम करेगा, प्लीज...दरवाजा खोलिये।"

"नहीं...अब ये दरवाजा नहीं खुलेगा इंस्पेक्टर!" अन्दर से किरन की गुर्राहट उभरी—"मैं किसी के रहम की तलबगार नहीं हूं—दुनिया में मेरे लिये अब कुछ नहीं बचा है, मैं नर्क में नहीं रहना चाहती—मुझे मर जाने दो, प्लीज—शांति से मर जाने दो मुझे।"

किरन के इन शब्दों का अर्थ सब समझ चुके थे।

त्रिवेन्द्रम ने चारों सिपाहियों को इशारा किया।

इशारा समझते ही वे दरवाजे पर टूट पड़े, चौकीदार और भंवर भी उनकी मदद करने लगे।

जबकि त्रिवेन्द्रम ने किरन को बातों में उलझाये रखने की मंशा से चीखकर कहा—"आप मेरे जाल में फंस गयीं मिसेज भारद्वाज, मैंने आपके मुंह से आपका जुर्म कुबूल करवाने के लिए झूठ बोला था—वास्तव में नेकलेस असली ही है, पचास लाख का असली नेकलेस।"

"अब मैं तुम्हारे झांसे में नहीं आऊंगी इंस्पेक्टर!" किरन चीखी—"मुझे बचाने की कोशिश व्यर्थ है।"

त्रिवेन्द्रम ने पुनः कुछ कहा।

अन्दर से किरन भी बोली।

दरवाजा ज्यादा मजबूत नहीं था और ऊपर से पुनः उस पर छः व्यक्ति टूट पड़े थे अतः मुश्किल से दो मिनट बाद 'धड़ाम' की जोरदार आवाज के साथ चौखट से अलग होकर दोनों किवाड़ कमरे के फर्श पर जा गिरे।

त्रिवेन्द्रम गोरिल्ले की तरह लपका।

मगर फिर भी।

रिवॉल्वर की साइलेंसरयुक्त नाल को अपनी कनपटी से सटाकर ट्रेगर दबाने से वह किरन को न रोक सका।

ट्रेगर दबने की आवाज उभरी।

मगर सिर्फ ट्रेगर दबने की।

साइलेंसर के बावजूद गोली चलने पर 'पिट्ट' की हल्की आवाज तो उभरनी ही चाहिए थी।

किन्तु नहीं उभरी।

उभरती कैसे, गोली चली ही नहीं थी।

किरन ने चौंककर अपने हाथ में दबे रिवॉल्वर की तरफ देखा। इधर त्रिवेन्द्रम ने महसूस किया कि किरन द्वारा ट्रेगर दबाये जाने के बावजूद गोली नहीं चली है।

सेफ्टी-लॉक ऑफ था।

उधर किरन का अंगूठा उसे 'ऑन' करने के लिए लपका इधर त्रिवेन्द्रम ने उस पर जम्प लगा दी।

इस बार त्रिवेन्द्रम जीता।

सेफ्टी-लॉक के ऑन होने से पहले ही वह किरन के जिस्म को साथ लिए बेडरूम के फर्श पर जा गिरा, तीव्र झटका लगने के कारण रिवॉल्वर किरन के हाथ से निकलकर दूर जा गिरा था।

भवर रिवॉल्वर की तरफ लपका मगर—

"रिवॉल्वर को कोई हाथ न लगाये।" किरन को दबोचे त्रिवेन्द्रम

चिल्लाया।

भंवर ठिठक गया।

किरन त्रिवेन्द्रम की सख्त पकड़ में छटपटाने से ज्यादा कुछ नहीं कर सकती थी।

यह सब उतने ही समय में हो गया था जितनी देर में इंसान एक बार पलक झपकता है—अगर इससे ज्यादा वक्त लगा होता तो शायद त्रिवेन्द्रम किरन को बचा नहीं सकता था।

हां, उसके बन्धन में कैद बुरी तरह छटपटाती किरन चीख अब भी रही थी—"मुझे छोड़ दो, मर जाने दो मुझे, मैं जीना नहीं चाहती।"

हालांकि किरन के बारे में रूबी की धारणा अच्छी तो पहले भी नहीं थी, मगर इतनी 'नीच' भी नहीं समझती थी उसे। इतनी नीच कि गहने के लिए अपनी सबसे प्यारी सहेली का कत्ल तक करने से नहीं चूकी।

किरन की उसे कोई परवाह नहीं थी, बल्कि अगर यह कहा जाये कि किरन उसकी नजर में इस दुनिया की सबसे घृणित औरत थी तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

मगर...संजय की परवाह थी उसे।

विशेष परवाह संजय के भीतर छुपे 'लेखक' की थी।

रूबी जानती थी कि संजय किरन को एक सामान्य पति से ज्यादा मुहब्बत करता है और वह यह सोच-सोचकर हलकान हुई जा रही थी कि जब उस भले आदमी को पता लगेगा कि किरन ने क्या किया है तो क्या हाल हो जायेगा उसका, कहीं संजय पागल न हो जाये।

□□□

चीखते-चीखते किरन बेहोश हो गयी।

त्रिवेन्द्रम ने फर्श पर पड़े रिवॉल्वर पर रूमाल डाला और फिर उसी में लपेटकर जेब में रख लिया। जेब से एक नेकलेस निकालकर उसने रूबी की तरफ बढ़ाते हुए कहा—"इसे सूंघिये मिस रूबी!"

"ज...जी...मैं समझी नहीं!" रूबी चौंकी।

"अभी समझ जायेंगी, प्लीज...सूंघिये इसे।"

असमंजस में फसी रूबी ने उसके आदेश का पालन किया। यही क्षण था जब त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"आपको तीव्र सुगन्ध वाले 'परफ्यूम' की खुशबू आ रही है ना?"

"जी हां।"

"अब जरा बेहोश पड़ी मिसेज भारद्वाज के जिस्म और कपड़ों को सूंघिये।"

"आप यही कहना चाहते हैं ना कि ऐसी ही खुशबू मुझे वहां भी मिलेगी?"

"ओह, तो मिस्टर भंवर की तरह आप भी जानती हैं कि मिसेज

भारद्वाज यही परफ्यूम इस्तेमाल करती हैं।"

"जी हां, जानती हूं।"

"गुड!" त्रिवेन्द्रम के होंठों पर मुस्कान उभर आई—"दरअसल इसी खुशबू ने मुझे यहां तक पहुंचाया। यह नेकलेस मुझे संध्या देवी की लाश के गले में पड़ा मिला था, जब इसे भंवर बाबू को सुंघाया गया तो ये चिल्ला उठे कि ऐसा परफ्यूम किरन यूज करती है।"

"मगर यह सब आप मुझे क्यों बता रहे हैं?"

"आपको कानून की मदद करनी होगी।"

"कानून की मदद?"

"जी हां।" त्रिवेन्द्रम ने कहा—"अदालत में वह सब आपको सच-सच बताना होगा, जो देख रही हैं। कानून तो गवाहों का मोहताज होता है—यह गवाही भंवर बाबू और उनके ढेर सारे नौकर देंगे कि नेकलेस मुझे संध्या की लाश के गले से मिला था। आप यह कहेंगी कि मैंने आपके सामने इसे मिसेज भारद्वाज के जिस्म या कपड़ों से एक पल के लिये भी स्पर्श नहीं कराया मगर फिर भी इसमें उस परफ्यूम की खुशबू थी जिसे किरन देवी 'यूज' करती हैं।"

रूबी चुप रही, चाहकर भी कुछ बोल न सकी वह।

"और तुम भी मेरे गवाह रहोगे मिस्टर गोरखा!" वह चौकीदार की तरफ पलटकर बोला—"तुम्हें वह सब सच-सच अदालत में कहना होगा जो कुछ देख और सुन रहे हो।"

गोरखा हक्का-बक्का खड़ा था।

त्रिवेन्द्रम फोन की तरफ बढ़ा।

नम्बर डायल किया। सम्बन्ध-स्थापित होने पर इस कोठी का एड्रेस बताने के बाद एक लेडी कांस्टेबल को यहां भेजने का निर्देश जारी करके रिसीवर वापस क्रेडिल पर रख दिया।

अब उसने 'ऊंची एड़ी' वाली वे सैण्डिल्स अपने कब्जे में लीं जो इस वक्त कमरे के फर्श पर अलग-अलग पड़ी थीं किन्तु जब भंवर के साथ पुलिस यहां आई थी तब किरन के पैरों में थीं।

नोकीली एड़ियों में मिट्टी लगी हुई थी।

सिपाहियों को तलाशी लेने का हुक्म देकर वह भी कोठी की तलाशी लेने में जुट गया—गोदरेज की अलमारी की चाबी उसे बेड पर पड़ी मिल गयी थी—गोरखा, भंवर और रूबी के देखते-ही-देखते अलमारी के लॉकर से लगभग वैसा ही दिखने वाला एक अन्य नेकलेस बरामद कर लिया। भंवर की तरफ पलटकर बोला—"ये है आपका वह डुप्लीकेट नेकलेस जिसे पचास लाख का समझकर किरन देवी आपकी पत्नी का कत्ल कर बैठी।"

भंवर ने स्वीकार किया कि नेकलेस उसी का है।

तलाशी काफी देर तक चली परन्तु कोई अन्य उल्लेखनीय वस्तु हाथ न लग सकी।

तब, जबकि वहां लेडी कांस्टेबल पहुंची।

त्रिवेन्द्रम ने उसे बेहोश पड़ी किरन की तलाशी लेने का हुक्म दिया और इस तलाशी के बाद किरन के ब्लाउज के अन्दर से एक 'ब्ल्यू' कलर का 'पॉयलेट पैन' और एक कागज बरामद हुआ।

कागज पर लिखा था—

'अब इस दुनिया में मेरे लिए कुछ नहीं बचा है—एक सांस तक लेना दूभर है। नर्क जैसे इस जीवन से तो मौत भली—मेरी मौत के बाद किसी को परेशान न किया जाये, क्योंकि अपनी मौत की जिम्मेदार मैं खुद हूं, मेरे अलावा कोई नहीं!'

यह 'सुसाइड' नोट बरामद पैन से ही लिखा गया था।

किरन के चेहरे पर पानी के छींटे आदि डालकर होश में लाया गया।

होश में आते ही वह पुनः मरने के लिए चीखने-चिल्लाने लगी, परन्तु अब यह काम भी उसके अपने वश में नहीं था।

कोठी को लॉक कर दिया गया।

रूबी और गोरखा सहित त्रिवेन्द्रम सभी को लेकर भंवर के बंगले पर पहुंचा।

संध्या की लाश अभी भी ज्यों-की-त्यों पड़ी थी।

पंचनामा करने के बाद उसने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया और फिर सभी को साथ लिए थाने पहुंचा।

सबकी मौजूदगी में अपने ऑफिस में उसने किरन से कहा—"उम्मीद है कि इतना तो आप समझ ही गई होंगी कि इस बात में हममें से किसी को कतई सन्देह नहीं रह गया है कि आप ही ने संध्या देवी की हत्या की और ऐसे ठोस सबुत भी जुटा लिए गये हैं जिनकी रोशनी में कोई आंख बन्द करके सच्चाई को देख सके, मगर इस सबके बावजूद मुझे आपसे अपने कुछ सवालों का जवाब चाहिए। क्या आप जवाब देने के लिए तैयार हैं?"

कुछ देर किरन आनाकानी करती रही।

परन्तु!

त्रिवेन्द्रम के सामने उसकी यह कोशिश ज्यादा देर तक न चल सकी, त्रिवेन्द्रम ने उसे मानसिक टॉचर दे-देकर तोड़ दिया और जब वह टूट गयी तो त्रिवेन्द्रम ने पहला सवाल किया—"संध्या के नेकलेस को आपने सबसे पहले कब देखा?"

"सध्या और भंवर की पहली 'मैरिज-एनीवर्सरी' की पार्टी में।"

"क्या आपने नेकलेस पर नजर पड़ते ही उसे हासिल करने की योजना बना ली थी?"

"योजना तो नहीं बनाई, मगर हां, नजर पड़ते ही उस पर मेरी 'लार' जरूर टपक पड़ी थी।" किरन ने कहना शुरू किया—"नेकलेस संध्या की मेढक जैसी छोटी और काली गर्दन में उतना अच्छा नहीं लग रहा था जितना मेरी कल्पनाओं के मुताबिक मेरी गर्दन में लगता—पार्टी चल ही रही थी कि मैंने संध्या से उसकी कीमत पूछी। जब उसने पचास लाख बतायी तो मेरे होश उड़ गये—मन-ही-मन हिसाब लगाया और इस नतीजे पर पहुंची कि मेरे पति चाहे जितना अच्छा लिखने लगें, उनके उपन्यास चाहे जितने बिकने लगें मगर मुझे पचास लाख का नेकलेस पहनाने की हैसियत में वे कभी नहीं आ सकते।"

"फिर...?"

"पार्टी से हम रात के करीब दो बजे विदा होकर अपनी कोठी की तरफ चल पड़े—गाड़ी मेरे पति ड्राइव कर रहे थे और उनकी बगल में बैठी मैं नेकलेस के ख्यालों में डूबी हुई थी कि अचानक गाड़ी की सीट के पीछे छुपा हुआ एक नकाबपोश प्रगट हुआ और उसने मेरी कनपटी पर रिवॉल्वर रख दिया। जाने कब से वह हमारी गाड़ी में छुपा हुआ था।"

"उस वारदात का जिक्र आप इस वक्त क्यों कर रही हैं?"

"उस वारदात ने मेरे दिमाग में यह कीड़ा घुसा दिया था इंस्पेक्टर कि किसी से उसके गहने रिवॉल्वर की नोक पर जबरदस्ती भी हासिल किये जा सकते हैं। ठीक उसी तरह जिस तरह लुटेरों ने मेरे सारे गहने लूट लिए थे।" किरन कहती चली गयी—"हालांकि चार दिन बाद गहने मिल गये मगर गहने लूटने और मिल जाने के बीच के दिन मेरे लिए कहर के दिन थे। इन दिनों में जो फैसला मैं कर चुकी थी उसे गहने मिल जाने के बावजूद न बदल सकी।"

"कौन-सा फैसला?"

"संध्या के नेकलेस को हासिल करने का फैसला।" किरन ने कहा—"एक तरफ मुझे अपने जेवर चले जाने का असहनीय दुःख सहना पड़ रहा था, दूसरी तरफ दिमाग पर संध्या के नेकलेस का भूत सवार हो चुका था—मैं फैसला कर चुकी थी कि भले ही चाहे जो करना पड़े मगर संध्या का नेकलेस हासिल करके रहूंगी—अगले दिन दूसरे शुभचिन्तकों की तरह अस्पताल में मुझे देखने भंवर और संध्या भी आये—संध्या के गले में उस वक्त नेकलेस नहीं था। मैंने अकेले में उससे नेकलेस के बारे में पूछा—संध्या ने बताया कि नेकलेस क्योंकि बेहद कीमती है अतः ज्यादातर भंवर उसे अपने बैंक लॉकर में रखता है, वह केवल विशेष अवसरों पर ही उसे पहनती है भंवर विशेष अवसर से एक दिन पहले उसे लॉकर से निकाल लाता है तथा विशेष अवसर के बाद अगले दिन पुनः लॉकर में रख आता है।"

"इसके बाद?" त्रिवेन्द्रम ने पूछा।

"नेकलेस की मैं इतनी दीवानी हो चुकी थी कि संध्या जब भी मिलती मैं उससे सिर्फ नेकलेस के बारे में बातें करती—मेरी इसी बेवकूफी के कारण वह 'ताड़' गयी कि मुझे उसका नेकलेस बहुत अच्छा लगा है और वैसा ही नेकलेस पहनने की मेरी तीव्र इच्छा है—यह ख्याल मुझे बहुत 'देर से' आया कि मैं बेवकूफी कर बैठी हूं—ऐसी बेवकूफी कि और कोई अन्य उसका नेकलेस चुरा ले और पुलिस उससे पूछे कि उसे किस पर शक है तो वह सीधे-सीधे मेरा नाम ले देगी और पुलिस मुझे पकड़ लेगी—अस्पताल में मैं एक हफ्ता रही। स्वस्थ होकर अपने घर पहुंची—मेरा शरीर भले ही स्वस्थ हो गया था, परन्तु दिलो-दिमाग स्वस्थ नहीं था—नेकलेस हासिल करने की धुन दिमाग पर ज्यों-की-त्यों सवार थी—हां, सावधानीवश मैंने संध्या से नेकलेस के सम्बन्ध में बातें करनी छोड़ दी थीं—अन्य विषयों पर बातें करने लगी थी और एक दिन संध्या से 'अलका' के बारे में पता लगा—संध्या भंवर को अलका के भंवरजाल से निकालने के लिए चिन्तित थी—उसने अलका के बारे में सबकुछ बताने के बाद मुझसे कहा कि अगर मुझे भंवर को अलका के जाल से निकालने की कोई तरकीब सूझती हो तो उसे बताऊं—उस वक्त मैंने यह कहकर बात टाल दी कि सोचने की कोशिश करूंगी और सूझेगी तो जरूर बताऊंगी मगर वास्तव में मेरे दिमाग ने यह सोचना शुरू कर दिया था कि मैं इस जानकारी का लाभ कैसे उठा सकती हूं—मैंने अलका को चैक किया, छुपकर भंवर और अलका का पीछा किया—अलका की 'नेचर' इस तरह रीड की कि उसे कुछ पता न लगा सका—मैंने कई बार छुपकर उनकी बातें सुनी और उन्हीं बातों से मुझे पता लगा कि अलका अपने फ्लैट की चाबी कार्पेट के नीचे रखती है—अलका की नेचर के बारे में इतना ही कह सकती हूं कि मेरी रीडिंग के मुताबिक वह एक महाबदतमीज, बददिमाग, अक्खड़ और ऐसे स्वभाव, की औरत है जिसके दिल में मानव संवेदनाओं का नामोनिशान नहीं है।"

किरन के चुप होने पर त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"इसके बाद आपने क्या किया?"

"संध्या के नेकलेस का डुप्लीकेट बनवाने का निश्चय।"

"क्यों?"

"शुरू में केवल यह सोचा था कि अवसर मिलने पर उसे संध्या के 'असली' नेकलेस से बदल दूंगी, मगर आगे चलकर मुझे अपनी इस योजना में कमजोरी नजर आई।"

"कैसी कमजोरी?"

"यह कि भले ही उस वक्त संध्या और भंवर धोखा खा जायें जब

मैं नेकलेस तब्दील करूं मगर वे हमेशा धोखे में फंसे नहीं रह सकते—कभी-न-कभी जरूर पता लगेगा कि नेकलेस बदल चुका है, नकली है—पता लगते ही हंगामा होगा, पुलिस केस बनेगा—पुलिस पूछेगी कि उन्हें किस पर शक है, जवाब में संध्या सबसे पहले मेरा नाम लेगी।"

"ओह!" त्रिवेन्द्रम कह उठा—"शायद यही सब सोचकर आपने यह फैसला किया कि नेकलेस हासिल करने के लिए संध्या देवी को खत्म कर देना जरूरी है, वे जीवित रहीं तो अपने बयान से आपको फंसा देंगी?"

किरन कुछ बोली नहीं, खाली-खाली आंखों से त्रिवेन्द्रम को सिर्फ देखती रही।

"खैर!" कुछ देर की खामोशी के बाद त्रिवेन्द्रम ने पूछा, "डुप्लीकेट नेकलेस तैयार कराने के लिए आपने क्या किया?"

"सबसे पहले अपने पति के साथ भंवर के बंगले पर पहुंची—भंवर उस वक्त ऑफिस में था। हमने 'पार्टी' की वीडियो कैसिट और एलबम देखी—एलबम में मैंने अपना और संध्या का ऐसा सयुंक्त फोटो पसंद कर लिया जिसमें संध्या के गले में पड़ा नेकलेस काफी 'क्लियर' आया था और संध्या से यह कहकर अपने साथ ले आई कि उसे फ्रेम कराकर अपने ड्राइंगरूम में रखूंगी।"

"फिर?"

"अगले दिन उसे लेकर अपनी मम्मी के पास पहुंची और उनसे झूठ बोला कि संजय की मुझे संध्या जैसा नेकलेस पहनाने की तीव्र इच्छा है।"

"मैं उस बातचीत को विस्तार से सुनना चाहता हूं।"

किरन ने यह कहते हुए अपनी मम्मी से हुई वार्ता विस्तारपूर्वक सुना दी कि उसने मम्मी से झूठ बोला था कि संजय की इच्छा है—वास्तव में संजय को इल्म तक नहीं था कि वह क्या कर रही है, सारी वार्ता सुनने के बाद त्रिवेन्द्रम ने सवाल किया—"आपको कैसे मालूम था कि आपकी मम्मी किसी नेकलेस का डुप्लीकेट बनवा सकती है?

"जहांगीर मार्किट में मेरे पापा की साड़ियों की एक बहुत बड़ी दुकान है। तीन साल पहले जब मेरी शादी नहीं हुई थी तब बिजली के शार्ट-सर्किट से एक रात पापा की दुकान में आग लग गयी और सारा माल जलकर राख हो गया। पापा के पास पुनः माल भरने के लिए पैसा नहीं था, वे जहां-तहां से उधार मांगते फिर रहे थे मगर उधार मिल नहीं रहा था—मम्मी के पास अपने पीहर की तरफ से चढ़ी हुई डायमंड की आठ चूड़ियां थीं—वे पापा से कह रही थीं कि उन्हें बेचकर दुकान में माल भर लें, किन्तु पापा इस जिद पर अड़े हुए थे कि वे उन्हें बेचकर

'काम' शुरू नहीं करेंगे क्योंकि उन पर वे अपना कोई अधिकार नहीं समझते—तब, मम्मी ने उनकी भलाई के लिए एक ऐसा कारीगर खोज निकाला जिसका दावा था कि केवल फोटो के आधार पर वह किसी भी जेवर का डुप्लीकेट तैयार कर सकता है—उसका दावा खोखला नहीं था। मम्मी एक दिन के लिए भी हाथों से चूड़ियां नहीं उतार सकती थीं अतः उन्होंने चूड़ियों के फोटो खिंचवाकर कारीगर को दे दिये—कारीगर ने पन्द्रह दिन के अन्दर ऐसी आठ डुप्लीकेट चूड़ियां तैयार करके मम्मी को दे दीं कि पापा कभी न ताड़ सके कि मम्मी के हाथ में डुप्लीकेट चूड़ियां हैं—असली चूड़ियां बेचकर उन्होंने पैसे अपने पिताजी को दे दिये—मेरी तरह मम्मी ने अपने पिताजी यानी मेरे नाना को भी अपना 'राजदार' बना लिया था—नाना ने पापा को वे पैसे यह कहकर दिये कि वे बतौर उधार दे रहे हैं, धीरे-धीरे चुका दें—उन पैसों से पापा ने माल भरा, दुकान पहले की तरह जोर-शोर से चल निकली।"

"यह घटना आपको याद थी इसीलिये संध्या के नेकलेस का डुप्लीकेट बनवाने की बात दिमाग में आई और इस काम के लिए आप अपनी मम्मी के पास पहुंची?"

"जाहिर है।"

"इसके बाद?"

"मेरी योजना के मुताबिक धनतेरस वाले दिन मम्मी संजय के सामने मुझे नेकलेस दे गयीं—संजय ख्वाब में भी नहीं सोच सकता था कि नेकलेस डुप्लीकेट है—संजय से उसी दिन संध्या ने फोन पर बताया कि दीवाली वाले दिन उसके बंगले पर एक पार्टी है और उसमें हमें जरूर आना है—मैं समझ गयी कि संध्या पार्टी में अपना नेकलेस जरूर पहनेगी—यह हिसाब भी मैंने पलक झपकते ही लगा लिया कि नेकलेस छोटी दीवाली वाले दिन बैंक-लॉकर से बाहर निकलेगा और तीन दिन संध्या के गले में रहने के बाद वापस लॉकर में रखा जा सकेगा।"

"वह कैसे?"

"दीवाली की शाम को तो नेकलेस पहना ही जाना था, अगले दिन 'गोवर्धन' था यानी बैंक हॉली-डे और उससे अगले दिन यानी 'आज' सण्डे है ही, कल यानी सोमवार को ही नेकलेस लॉकर में रखा जा सकता था।"

"इससे पहले ही आपने अपना काम कर दिया।"

किरन पुनः चुप रह गयी।

"खैर!" त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"संध्या के फोन के बाद आपने क्या किया?"

"दीवाली वाले दिन संजय के साथ पार्टी में गयी, वहां "मिसेज टंडन

के रूप में अलका को मौजूद देखकर मैं चौंक पड़ी—छुपकर उसकी और भंवर की बातें सुनीं। उन्हें सुनकर जाना कि भंवर अगले दिन दिल्ली जाने के बहाने बंगले से गायब रहकर सारी रात अलका के फ्लैट पर रहेगा।"

"आगे?"

"संध्या और भंवर के दूसरे सभी घनिष्ट परिचितों की तरह मुझे मालूम था कि वह हर हाल में अपने कमरे में डेढ़ से ढाई के बीच आराम-कुर्सी पर सोती है, उस वक्त बैक-लॉन में खुलने वाली खिड़की खुली रहती है—दरवाजा ढुका रहता है—मगर इस एक घण्टे के दरम्यान किसी नौकर की हिम्मत उसके आसपास फटकने की नहीं हो सकती—मुझे यह भी मालूम था कि साइलेंसर-युक्त भरा हुआ रिवॉल्वर बेड की दराज में रखा रहता है—अपनी योजना के मुताबिक मैं कल पौने तीन बजे के करीब संजय को साथ लेकर भंवर के बंगले पर पहुंची—भंवर अपनी और अलका की योजना के मुताबिक संध्या की जानकारी में दिल्ली जा चुका था।"

"फिर?"

"मैंने सारी हकीकत संध्या को बता दी।"

"कौन-सी हकीकत?"

"यह कि भंवर दिल्ली नहीं गया है बल्कि विकास-विहार स्थित 'सौरभ' नामक बिल्डिंग के चौंसठ नम्बर कमरे में अलका के पहलू में गुलछर्रे उड़ा रहा है।"

"सुनकर संध्या पर क्या प्रतिक्रिया हुई?"

"मारे गुस्से के वह आग-बगूला हो उठी। मैंने उसे शान्त किया—समझाया कि गुस्से में कोई कदम उठाने से समस्या सुलझेगी नहीं बल्कि और उग्र रूप धारण कर लेगी। मैंने उसे भंवर को अलका के जाल से निकालने की तरकीब बताई।"

"क्या तरकीब थी वह?"

किरन ने उसी तरकीब का उल्लेख कर दिया जो वास्तव में संध्या को संजय ने बताई थी। सुनने के बाद त्रिवेन्द्रम ने सवाल किया—"आपने संध्या को 'यही' तरकीब क्यों बताई?"

"क्योंकि जानती थी कि जब संध्या इस पर अमल करेगी तो बात बनेगी नहीं बल्कि बिगड़ेगी।"

"ऐसा विश्वास क्यों था आपको?"

"बता चुकी हूं कि अलका की नेचर पहले ही रीड कर चुकी थी—वह एक बदमिजाज अक्खड़ और बदतमीज औरत है—उसकी नजर भंवर की दौलत पर है—ऐसी औरत पर संध्या के पल्ला पसारकर सुहाग की भीख मांगने और गिड़गिड़ाने का रत्तीभर भी असर नहीं होगा, यह बात

मैं अच्छी तरह जानती थी—इतनी ही अच्छी तरह यह भी जानती थी अलका इस घटना को तुरन्त कैश करेगी और कैश करने की एकमात्र तरकीब उसके पास यह होगी कि फौरन किसी भी तरह भंवर को बताये कि संध्या उसके फ्लैट पर आई थी—सुनते ही मारे गुस्से के भंवर का पागल हो उठना स्वाभाविक था, वहीं हुआ—गुस्से में सुलगता भंवर बंगले में कदम रखते ही संध्या पर बरस पड़ा—संध्या अपनी नाकामी पर खुद खीजी हुई थी—सो, जवाब में वह भी बरस पड़ी—"मैं यही चाहती थी, यह कि नौकरों के सामने उनका खूब झगड़ा हो।"

"ऐसा क्यों चाहती थीं आप?"

"ताकि संध्या की लाश मिलते ही इन्वेस्टीगेशन के लिए पहुंचे हुए आपको नौकरों से झगड़े के बारे में पता लगे और आपके सामने संध्या के मर्डर की एक वजह बिल्कुल साफ हो।"

"यानी आपने मिस्टर भंवर को 'फ्रेम' करने का प्रयास किया था?"

"जाहिर है।"

"इसके लिए आपने और क्या-क्या किया?"

"अलका के फ्लैट से मैं उसकी एक सस्ती और पुरानी धोती पहले ही गायब कर चुकी थी—अपने घर में बैठकर उस धोती से अपने लिए मैंने एक चोगा और नकाब तैयार किये।"

"क्या?"

"ताकि अगर कोई मुझे संध्या के कमरे में जाते देख भी ले तो पहचान न सके कि वह मैं हूं।"

"ओह!"

"एक मेडिकल स्टोर से रबर के वे दस्ताने खरीदे जिन्हें पहनकर डॉक्टर ऑपरेशन करता है। यहां यह स्पष्ट कर देना जरूरी है कि दस्ताने मर्दाने खरीदे थे।"

"क्यों?"

"क्योंकि मुझे भंवर को फ्रेम करना था।"

"इन सब चीजों का आपने क्या किया?"

"कल रात आठ बजे मैंने ये सब चीजें एक पोलीथिन के थैले में डालकर भंवर के बंगले के पीछे फैले जंगल में दो पेड़ों के बीच गड्ढा खोदकर दबा दी थीं—आज दोपहर सवा बारह के करीब संध्या ने फोन पर बताया कि मेरी बताई हुई तरकीब से मामला बिगड़ गया है—यह फोन उसने भंवर से हुए झगड़े के बाद किया था। झगड़े के बारे में सुनने के बाद समझ गयी कि वही सब हुआ है जैसा मैं चाहती थी।"

"इसके बाद?"

"साढ़े बारह बजे मैंने जबरदस्ती करके अपने पति को उनके ऑफिस भेज दिया। काम करने का उनका बिल्कुल मूड नहीं था—मैंने अपनी

कसम दे दी अतः लेखन-कक्ष में उन्हें जाना पड़ा—अपनी योजना के मुताबिक मैं गाड़ी लेकर ठीक डेढ़ बजे कोठी से निकली—एक पैंतालिस पर नदी वाले बूथ से अलका को फोन किया। मैंने माउथपीस पर रूमाल डाल दिया ताकि आवाज मोटी और भारी बन जाये, मुंह से भी मर्दानी आवाज निकालने का प्रयास किया। कहने का मतलब यह कि मैंने भंवर बनकर अलका को नेहरू-पार्क पहुंचने के लिये कहा।"

"क्या कहा था आपने?"

किरन ने 'एक्यूरेट' शब्द दोहरा दिये।

सुनने के बाद त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"फिर आपने भंवर के ऑफिस में फोन किया?"

"हां।"

"मगर उस वक्त 'ये' ऑफिस में नहीं थे?"

"ज...जी हां।" किरन थोड़ी बौखला गयी।

"मगर अपने इनकी रिसेप्शनिस्ट को मैसेज दे दिया।"

किरन के मस्तक पर पसीना उभरा आया था। बड़ी मुश्किल से सम्भलकर कह पाई वह—"ज...जी हां, उस वक्त भी माउथपीस पर मैंने रूमाल डाल रखा था, मुंह से मर्दानी आवाज निकाली थी ताकि रिसेप्शनिस्ट को लगे कि 'अलका' के नाम से कोई मर्द बोल रहा था।"

"ऐसा आपने क्यों किया?"

"भंवर को सन्देह के दायरे में बुरी तरह फंसा देने के लिये।"

"इनके लिये रिसेप्शनिस्ट को क्या मैसेज दिया था आपने?"

किरन ने वह मैसेज भी अक्षरशः बता दिया। सुनने के बाद त्रिवेन्द्रम ने भंवर से पूछा—"रिसेप्शनिस्ट ने आपको यही मैसेज दिया था ना?"

"जी हां।"

त्रिवेन्द्रम ने पुनः किरन से पूछा—"आपने यह मैसेज इसीलिए दिया था ना कि मिस्टर भंवर गांधी-पार्क चले जायें और बाद में पुलिस के यह पूछने पर कि ये वारदात के वक्त कहां थे साबित न कर सकें कि गांधी-पार्क में थे?"

"मेरा उद्देश्य यही था।"

"इसीलिये आपने दुबारा इनके ऑफिस में फोन किया।"

"द...दुबारा?" किरन चकराई।

"पहले आपने उम्मीद की होगी कि एक पैंतालिस पर जब आप इनके ऑफिस में फोन करेंगी तो ये नहीं होंगे और आपका मैसेज मिलते ही गांधी-पार्क चले जायेंगे पर इत्तफाक से इस वक्त ये ऑफिस में नहीं थे सो, उस वक्त तो आपने रिसेप्शनिस्ट को ही मैसेज देकर काम चला लिया मगर बाद में सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि किसी वजह से मिस्टर भंवर को मैसज मिले ही नहीं और वे गांधी-पार्क न पहुंचें—यह जानने

के लिए आपने पुनः फोन पर इनकी रिसेप्शनिस्ट से बात की कि भंवर बाबू को उसने आपका मैसेज दे दिया है या नहीं और जब दूसरी तरफ से रिसेप्शनिस्ट ने कहा कि मैसेज भंवर बाबू को मिल गया है, सुनते ही वे गांधी-पार्क की तरफ चले गये थे और अब तक तो पहुंच जाने चाहिये तब आपने यह कहकर सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया कि भंवर बाबू गांधी-पार्क पहुंच गए हैं, बूथ में से आप उन्हें गाड़ी पार्क करते देख रही हैं।"

"ज...जी हां...हां।' किरन ने जल्दी से कहा—"मैंने ऐसा ही किया था।"

"यह दुबारा फोन आपने कहां से किया था?"

"व...वहीं से।" बौखलाई हुई किरन ने जवाब दिया—"नदी वाले बूथ से।"

त्रिवेन्द्रम ने कहा—"यह फोन आपने संध्या की हत्या करने के बाद किया होगा?"

"ज...जी हां।" वह फिर बौखला गयी।

"ठीक है, आपके द्वारा भंवर बाबू को फोन करने वाली बात तो समझ में आई, लेकिन यह बात समझ में नहीं आई कि अलका को फोन करके नेहरू पार्क क्यों भेजा?"

"मेरी पूरी योजना सुनने के बाद आपकी समझ में सब आ जायेगा।"

"सुनाइये।"

"फोन करने के बाद मैं डिफेंस कॉलोनी पहुंची—गाड़ी लॉक करके भंवर के बंगले से काफी पहले ही फुट-पाथ पर खड़ी कर दी थी—पैदल बंगले के पीछे उन दोनों पेड़ों के बीच पहुंची जहां पोलीथिन का थैला छुपा रखा था—जिस्म पर चोगा, चेहरे पर नकाब डाली, हाथों में दस्ताने पहनकर बैक-लॉन से होती हुई संध्या के बेड-रूम की खिड़की पर—वह हमेशा की तरह आरामकुर्सी पर सोई पड़ी थी, बिना जरा-सी आवाज उत्पन्न किये मैं खिड़की के माध्यम से कमरे में पहुंची—संध्या इतनी गहरी नींद में थी कि वह जाग न सकी, बिना खास आहट उत्पन्न किये दराज से रिवॉल्वर निकाला और संध्या को जागने का अवसर दिये बिना चेयर के नजदीक पहुंचकर उसकी कनपटी पर गोली मार दी!"

"संध्या को गोली मारने के बाद आपने क्या किया?"

"उसके खून से मेरे जिस्म पर मौजूद चोगे का एक हिस्सा और उसके गले में पड़े नेकलेस का एक हिस्सा भी सन गये थे। मैंने अपने गले में पड़ा डुप्लीकेट नेकलेस का वह हिस्सा खून में डुबा लिया जो संध्या के नेकलेस का सना था और फिर नेकलेस बदल दिये—बिना समय गंवाये वापस बंगले के पीछे पेड़ों के बीच पहुंची—चोगा, नकाब, दस्ताने और नेकलेस पोलीथिन के थैले में डाले और गाड़ी पर आ गयी।"

"फिर?"

"मेरे दिमाग में यह डर था कि कहीं संजय बीच में ही लेखन-कक्ष से निकलकर रेजिडेंस में न आ जाये—उस अवस्था में मुझे कोठी से गायब पाकर वह बखेड़ा खड़ा कर सकता था और मेरे लिये मुसीबत पैदा हो सकती थी अतः सबसे पहले कोठी पर पहुंची।"

"नदी वाले बूथ से भंवर के ऑफिस में दुबारा फोन करती हुई!" त्रिवेन्द्रम ने संशोधन किया।

"हां।"

"कोठी पर पहुंचकर आपने क्या किया?"

"बाथ-रूम में जाकर सबसे पहले नेकलेस को धोया, धोने के बाद सीट को इस कदर साफ किया कि लाख प्रयास के बाद भी कोई यह साबित नहीं कर सके कि मैंने वहां कुछ धोया है—अभी मुझे अपनी योजना का अन्तिम काम भी निपटाना था।"

"वह क्या?"

"पोलिथिन के थैले में बन्द नकाब, चोगा और दस्ताने अलका के फ्लैट में प्लांट करने थे।"

"ओह, तो इसलिए आपने अलका को नेहरू-पार्क भेजा था?"

"जी हां।"

"पोलीथिन के थैले को वहां प्लांट करने के पीछे आपका क्या मकसद था?"

"मुझे पूरी उम्मीद थी कि नौकरों के बयान सुनने के बाद और भंवर द्वारा वारदात के वक्त की ठोस 'एलीबी' न दी जाने के कारण आपका शक भंवर पर होगा—आप अलका के 'इशू' पर हुए झगड़े को ही संध्या के कत्ल की वजह मानेंगे, नेकलेस पर तो ध्यान तक नहीं जायेगा आपका और मान लो कि भंवर का गया भी तो संदिग्ध होने के कारण आप उसकी बात पर खास तवज्जो नहीं देंगे, यहीं मानेंगे कि मुजरिम खुद को बचाने के लिये बेवजह नकली नेकलेस का झमेला डाल रहा है जबकि खुद उसी ने अपनी बीवी को नकली नेकलेस पहना रखा होगा।"

"ऐसा, भला में किस आधार पर सोच सकता था?"

"क्योंकि संध्या ने मुझे बताया था कि वे नेकलेस के अभाव में चाहकर भी साबित नहीं कर सकते कि उनके पास पचास लाख का असली नेकलेस था।"

"ऐसा क्यों?"

"संध्या ने मुझे बताया था कि नेकलेस भंवर ने दो नम्बर की रकम से खरीदा है, अतः उसके पास उनकी पर्ची आदि कुछ नहीं है।"

त्रिवेन्द्रम ने भंवर से पूछा—"क्या आपने संध्या को यही पट्टी पढ़ा रखी थी?"

"जी हां।"

"खैर, आगे?" वह पुनः किरन से मुखातिब हुआ।

"मुझे पूरा विश्वास था कि आप अलका के फ्लैट की तलाशी भी लेंगे—चोगा, नकाब और दस्ताने बरामद होने के बाद भंवर को कोई नहीं बचा सकेगा—उस अवस्था में आपके दिमाग में क्या कहानी बनती वह आप भी समझ ही रहे होंगे और मैं तो सोच ही चुकी थी।"

"यह बात तो मैं लाश का निरीक्षण करने और नौकरों के बयान के बाद ही समझ चुका था कि हत्यारा मुझसे क्या सुचवाना चाहता है, बताइये कि अपनी कोठी पर पहुंचने के बाद आपने क्या किया?"

"नेकलेस को अलमारी में रखने के बाद ऑफिस पहुंची, मैं जानती थी कि रूबी संजय की शुभचिन्तक है, सख्ती के साथ अपनी ड्यूटी का निर्वाह करने वाली है—मैं यह भी जानती थी कि भले ही मैं संजय की बीवी हूं मगर यदि वह लिखने में मशगूल हुआ तो रूबी किसी भी हालत में मुझे लेखन-कक्ष में नहीं जाने देगी—मैंने यह जांचने के लिए कि संजय काम में कितनी देर मशगूल रहने वाला है, रूबी से कहा कि मुझे संजय से जरूरी काम है—रूबी का जवाब वही था, जिसकी मुझे उम्मीद थी। मैंने उसे धमकाया—रूबी के जवाब से उसे पता लगा कि संजय आपने उपन्यास की कहानी में 'रम' चुका है—रूबी के इस जवाब से मैं समझ गयी कि वह जल्दी लेखन-कक्ष से बाहर आने वाला नहीं है, फिर भी कुछ देर तक नाटक करती रही और अंत में ऐसा प्रदर्शित करके लौट गयी जैसे मैंने बेहद बुरा माना हो।"

त्रिवेन्द्रम ने रूबी ने पूछा—"क्या ऐसा हुआ था मिस रूबी?"

रूबी ने कहा—"ये संजय बाबू से मेरी शिकायत करने की धमकी देकर वहां से गयी थीं।"

"इसके बाद आपने क्या किया?" त्रिवेन्द्रम ने पुनः किरन से पूछा।

"मुझे यह डर सताने लगा था कि कहीं अलका नेहरूपार्क से अपने फ्लैट पर न पहुंच जाये—उस अवस्था में मैं नकाब, चोगा और दस्ताने वहां प्लांट नहीं कर सकती थी अतः मेरी योजना अधूरी रह जाती—इस वजह से बहुत तेज गाड़ी चलाती हुई विकास-विहार पहुंची, शुक्र था कि तब तक अलका नहीं पहुंची थी और कार्पेट के नीचे से चाबी लेकर मैंने फ्लैट में अलमारी के नीचे पोलीथिन का थैला ठूंस दिया।"

"यानी कि वे चीजें इस वक्त भी वहीं होनी चाहिए?"

"हण्डरेड परसेंट।"

"मेरे साथ चलिए!" त्रिवेन्द्रम एक झटके से खड़ा होता हुआ बोला—"सबसे पहले उन तीनों चीजों को बरामद करते हैं।"

रूबी, भंवर और गोरखा भी खड़े हो गए थे।

□□□

उन सबकी मौजूदगी में त्रिवेन्द्रम ने अलका के फ्लैट से पोलीथिन के थैले में बन्द चोगा, नकाब और दस्ताने बरामद किये—उस वक्त अलका अवाक् रह गयी जब अलमारी के नीचे ठुंसी पोलीथिन की थैली खुद किरन ने निकालकर त्रिवेन्द्रम को सौंपी।

संक्षेप में जब अलका को सारा किस्सा बताया गया तो वह भौंचक्की रह गयी।

इसके बाद—

त्रिवेन्द्रम उन सबको लिए पुनः संजय की कोठी पर पहुंचा।

'मशीन वाले डिब्बे' से वह 'पेच' बरामद की जिसके धागे से बड़े-बड़े टांके लगाकर नकाब और चोगा तैयार किये गये थे—भंवर के बंगले के पीछे, दोनों पेड़ों के बीच खुदे छोटे से गड्ढे को त्रिवेन्द्रम ने चेक ही नहीं किया बल्कि एक फोटो भी खिंचवाया।

जब वह किरन को लेकर उसके मम्मी-पापा के घर पहुंचा और किरन की सारी करतूत उन्हें बताई तो उनके पापा अवाक् रह गए। शकुन्तला देवी चीख पड़ी—"नहीं, मेरी बेटी ऐसा नहीं कर सकती—इसने मुझसे कहा था कि संजय इसे संध्या जैसा नेकलेस पहनाने के लिए पागल हुआ जा रहा है, इसने उसी के कहने पर डुप्लीकेट तैयार कराया था और यह हत्या संजय ने की होगी—अब यह उसे बचाने के लिए झूठ बोल रही है।"

परन्तु।

त्रिवेन्द्रम की ही नहीं बल्कि भंवर, रूबी और यहां तक कि किरन के पापा तक की निगाह में शकुन्तला देवी का हर शब्द सिर्फ-और-सिर्फ बेटी को प्यार करने वाली एक मां का प्रलाप था।

शकुन्तला देवी के जरिये त्रिवेन्द्रम उस कारीगर तक भी पहुंच गया जिसने डुप्लीकेट तैयार किया था।

सबकुछ साफ था।

फाइव स्टार के स्वीमिंग-पूल में भरे पानी की तरह साफ।

किरन के बयान की पुष्टि करने वाले मुकम्मल सबूत जूटाने के बाद जब त्रिवेन्द्रम वापस थाने पहुंचा तो वहां मौजूद ढेर सारे अखबार वालों ने उसे घेर लिया।

फ्लैश चमकने लगे।

विशेष रूप से किरन और त्रिवेन्द्रम के फोटो लिए जा रहे थे।

संवाददाताओं में इस बात की जबरदस्त चर्चा थी कि एक बार फिर त्रिवेन्द्रम ने चमत्कार करके दिखा दिया है। लाश के पोस्टमार्टम से पहले ही उसका हत्यारा लॉकअप में पहुंच चुका है।

त्रिवेन्द्रम अखबार वालों के सवालों के जवाब दे रहा था।

□□□

संजय ने 'बीच कैंडी' का ही नहीं बल्कि बम्बई के हर बड़े अस्पताल का चप्पा-चप्पा छान मारा मगर किरन, उसके मम्मी-पापा और डॉक्टर चड्ढा की परछाई तक नजर नहीं आई।

नजर तो तब आती जब होती।

संजय हैरान!

परेशान!

रात के नौ बज गये थे।

उस वक्त वह एक प्राइवेट नर्सिंग होम का लोहे वाला द्वार पार करके फुटपाथ पर पहुंचा वह सोच रहा था कि आखिर वे लोग कहां होंगे जब एक हॉकर हलक फाड़-फाड़कर यह चिल्लाता हुआ उसके सामने से गुजरा—प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार की बीवी ने पचास लाख के नेकलेस के चक्कर में अपनी सहेली की हत्या की—आज की ताजा खबर—उपन्यासकार की बीवी गिरफ्तार—राजनगर में जबरदस्त हत्याकांड—इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम ने लाश का पोस्टमार्टम होने से पहले ही हत्यारी को गिरफ्तार किया—सारे षड्यन्त्र का पर्दाफाश, आज की ताजा खबर।"

उसके शब्दों ने संजय को जड़ करके रख दिया।

हॉकर लगातार उक्त शब्द चीखे जा रहा था।

उसके बायें हाथ में ढेर सारे 'सान्ध्य दैनिक' थे। एक अखबार को चिल्लाने के साथ ही वह हवा में लहरा रहा था।

एक व्यक्ति ने अखबार खरीदने के लिए उसे रोका।

चिल्लाना बन्द कर दिया उसने।

परन्तु—

संजय के कानों में अभी भी उसके शब्द गूंज रहे थे।

यूं खड़ा रह गया वह जैसे अचानक किसी के शाप से पत्थर के बुत में तब्दील हो गया हो या समूचे जिस्म को लकवा मार गया हो बल्कि जिस्म को ही क्यों, लकवा उसके दिलो-दिमाग पर भी गिरा था।

बुद्धि काफूर हो गयी।

धड़कना बन्द करके दिल जाने जिस्म के कौन-से कोने में जा छुपा?

वह जोर से चिल्लाकर हॉकर को आवाज देना चाहता था मगर नहीं दे पा रहा था। यह सच है कि उस वक्त संजय की अपनी कोई भी इन्द्रिय आने कब्जे में नहीं लग रही थी।

हॉकर पुनः चीखने लगा।

संजय दहाड़-सा उठा—"अखबार वाले।"

जाने उस दहाड़ में कैसी वहशियत थी कि हॉकर ही नहीं बल्कि इर्द-गिर्द मौजूद हर व्यक्ति अचम्भे से उसकी तरफ देखने लगा—उसकी

तरफ जो इस वक्त देखने मात्र से वहशी जानवर-सा लग रहा था।
हॉकर ठिठक गया।
संजय पागलों की तरह उसकी तरफ दौड़ा।
उसके दायें हाथ में मौजूद अखबार को संजय ने इस तरह छीना जैसे भूखा रोटी छीनता है।
"पैसे!" हॉकर ने कहा।
परन्तु—
संजय ने उसके शब्द मानो सुने ही नहीं।
उसकी आंखें फ्रन्ट पर छपे किरन और त्रिवेन्द्रम के फोटो पर चिपक गयी थीं।
हैडिंग पर चिपक गयी थीं।
मोटे-मोटे हर्फो में लिखा था—
'प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार संजय भारद्वाज की बीवी हत्या के जुर्म में गिरफ्तार!'
हैडिंग के मुकाबले कुछ छोटे लफ्जों में लिखा था—
'पचास लाख के नेकलेस के लालच में किरन ने संध्या का खून कर दिया।'
इसके बाद जुर्म का विवरण था। पागलों की तरह वहीं खड़ा-खड़ा संजय पढ़ता चला गया—विवरण को पढ़ने के अनुपात में उसका चेहरा पीला पड़ता चला जा रहा था।
अभी-अभी बने कोरे कागज-सा निस्तेज।
आंखों में वीरानगी।
संजय की टांगें ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जिस्म इस तरह कांप रहा था मानो अचानक उस पर पूरी ताकत से जूडी के बुखार ने हमला कर दिया हो—उसकी ऐसी अवस्था देखकर चारों तरफ बहुत से लोग इकट्ठा हो गये।
हॉकर की हिम्मत दुबारा पैसे मांगने की न पड़ी।
संजय को कुछ नहीं पता था कि वहा कहां खड़ा है, किस अवस्था में है, चारों तरफ कितने लोग जमा हो चुके हैं?"
होश ही नहीं था उसे।
सम्पूर्ण विवरण पढ़ने के बाद अपनी सूनी आंखें अखबार से हटाईं, जिस्म पर मौजूद असंख्य मसामों मे मानो शर्त लग गयी थी कि सबसे ज्यादा पसीना कौन उगले?
मूर्खों की तरह संजय ने अपने चारों तरफ देखा।
हर वस्तु फिरकनी की मानिन्द तेजी से घूमती नजर आ रही थी।
सारी दुनिया, सम्पूर्ण बह्माण्ड।
तभी, एक व्यक्ति ने उसके कंधे पर हाथ रखकर सहानुभूति-भरे

स्वर में पूछा—"क्या बात हैं भाई साहब?"
"न...नहीं!" वह हिस्टीरिया के मरीज की तरह चिल्ला उठा—"ऐसा नहीं हो सकता।"
उस व्यक्ति ने पूछा—"कैसा नहीं हो सकता?"
परन्तु—
जवाब देने से पहले संजय का जिस्म कमजोर बूढ़े की तरह लड़खड़ाया और धड़ाम से फुटपाथ पर गिर गया।
इर्द-गिर्द खड़े लोग झुके, वह बेहोश हो चुका था।
□□□
रात के दो बजे थे।
नाइट ड्यूटी पर तैनात सब-इंस्पेक्टर चाय की चुस्कियां ले रहा था कि एक शख्स आंधी-तूफान की तरह भागता हुआ ऑफिस में दाखिल हुआ।
उसकी अवस्था पागलों जैसी थी।
सब-इंस्पेक्टर अभी ठीक से चौंक भी नहीं पाया था कि आगन्तुक ने चीखते हुए पूछा—"कहां है वह?"
"कौन?"
"इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम और...और किरन, मेरी बीवी।"
"ओह!" सब-इंस्पेक्टर ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा बोला—"तो आप संजय भारद्वाज है?"
"हां।" उसने जल्दी से कहा—"म...मगर किरन कहां है, इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम कहां है?"
"आपकी बीवी हवालात में है, इंस्पेक्टर साहब अपने घर हैं, सो रहे होंगे।"
"म...मैं किरन से मिलना चाहता हूं।"
"सॉरी, आप नहीं मिल सकते।"
संजय भेड़िये की तरह गुर्राया—"क्यों?"
"इंस्पेक्टर साहब के ऐसे ही आदेश हैं।"
"कहां है त्रिवेन्द्रम—मैं उससे मिलना चाहता हूं, इसी वक्त।"
"किसलिए मिलना चाहते हो?"
"वह अंधा है, बेवकूफ है और उससे बड़े बेवकूफ वे पत्रकार हैं, जिन्होंने अखबार में उसकी प्रशंसा के पुल बांधे हैं—मैं उसकी आंखें खोलना चाहता हूं कि धेले की अक्ल नहीं है उसे।"
सब-इंस्पेक्टर गुर्राया—"इंस्पेक्टर साहब के बारे में तमीज से बात कीजिए मिस्टर संजय!"
"मै तुम्हारे मुंह नहीं लगना चाहता, त्रिवेन्द्रम को बुलाओ।"
"इस वक्त वे नहीं आ सकते।" सब-इंस्पेक्टर ने सख्त स्वर में

कहा—"ड्यूटी पर मैं हूं, अगर कुछ कहना है तो आपको मेरे ही मुंह लगना पड़ेगा।"

"म...मगर मेरी बात तुम्हारी समझ में नहीं आयेगी।"

"तो मेहरबानी करके सुबह आइये।"

"नहीं, मैं सुबह तक इंतजार नहीं कर सकता।"

संजय के इन शब्दों को सुनने के बाद सब-इंस्पेक्टर का चेहरा कठोर हो गया। कम-से-कम आधे मिनट की खामोशी के बाद गुर्राया वह —"जिस अन्दाज में और जो बातें आपने इंस्पेक्टर साहब के बारे में कहीं हैं अगर वे किसी अन्य ने कही होतीं तो मैं उसे अब तक थाने में घुसकर की गयी बदतमीजी का ऐसा सबक सिखा चुका होता कि भविष्य में किसी जानवर से भी तमीज से बात करना सीख जाता। आपके साथ ऐसा केवल इसलिए नहीं हुआ क्योंकि मैं आपका 'रीडर' हूं और दिल में आपके लिए सम्मान है।"

"प्लीज...प्लीज, बुरा मत मानो।" संजय गिड़गिड़ा उठा—"तुम नहीं समझ सकते कि मैं इस वक्त किस मानसिक अवस्था में हूं—इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम से मेरा फौरन मिलना जरूरी है—संध्या की हत्या के जुर्म में किरन को गिरफ्तार करके उसने बहुत बड़ी गलती की है। किरन ने संध्या की हत्या नहीं की।"

"आप यह बात इतने विश्वासपूर्वक कैसे कह सकते हैं?"

"क्योंकि मैं...उफ्फ...तुम नहीं समझोगे।" झुंझलाहट-भरे स्वर में संजय ने कहा—"अच्छा एक काम करो, तुम मुझे त्रिवेन्द्रम के घर का पता बताओ, मैं खुद वहां जाकर बात कर लूंगा।"

□□□

कॉलबेल की आवाज ने त्रिवेन्द्रम को लगभग उछाल दिया।

"राजनगर में वह अकेला ही रहता था। बीवी-बच्चे अभी वहीं थे, जहां उसकी पहली पोस्टिंग थी—बच्चों की पढ़ाई का मौजूदा सत्र समाप्त होने पर उसने 'फैमिली' को राजनगर लाने का प्रोग्राम बना रखा था।

कॉलबेल पुनः चीखी।

त्रिवेन्द्रम इतनी जल्दी पुनः कॉलबेल बजाने से समझ गया कि आगन्तुक उससे मिलने के लिए बुरी तरह बेचैन है। लाइट ऑन करने के बाद रिस्टवॉच पर नजर डाली।

ढाई बज रहा था।

तकिये के नीचे से सर्विस-रिवॉल्वर निकाला और ड्राइंगरूम पार करके जब तक मुख्य द्वार के नजदीक पहुंचा तब तक कॉलबेल तीसरी बार चीख चुकी थी।

"कौन है?" ऊंची आवाज में पूछते हुए उसने एक ऐसा स्विच ऑन कर दिया जिसके परिणामस्वरूप बन्द दरवाजे के पार गैलरी में प्रकाश

हो गया।

"मैं संजय हूं इंस्पेक्टर!" उसके सवाल का जवाब तुरन्त मिला था—"प्लीज" दरवाजा खोलो—मैं इसी वक्त तुमसे मिलना चाहता हूं।"

त्रिवेन्द्रम ने दरवाजे में लगे गोल शीशे से आंख सटाकर बाहर खड़े संजय को देखा।

पहचाना—

और दरवाजा खोलने से पहले वह रिवॉल्वर जेब में रख चुका था।

दरवाजा खुलते ही वे आमने-सामने थे।

कई पल तक खामोशी छाई रही—किसी के मुंह से बोल न फूटा। अन्त में हल्की-सी मुस्कान के साथ त्रिवेन्द्रम को ही कहना पड़ा—"लगता है कि आप सीधे बम्बई से भागे चले आ रहे हैं?"

"प...पहले थाने गया था, तुम वहां नहीं मिले तो यहां आया हूं मगर..."

"मगर?"

"तुम्हें कैसे मालूम कि मैं बम्बई में था?"

"किरन ने बताया था, तुम्हारी बीवी ने।"

संजय ने उत्तेजित स्वर में पूछा—"क्या कहा था उसने?"

"वह जानती थी कि कुछ देर बाद सारे राजनगर में संध्या के कत्ल की हवा उड़ने वाली है, अगर तुम राजनगर में हुए तो सुनते ही भंवर के बंगले पर पहुंचोगे, ऐसा वह नहीं चाहती थी।"

"क्यों?"

"क्योंकि वह जानती थी कि उस अवस्था में तुम संध्या की लाश को जरूर देखोगे। उसके गले में पड़े नेकलेस को देखते ही जान जाओगे कि हत्या किसने की है और ऐसा वह नहीं होने दे सकती थी इसीलिये तुम्हें फोन करके अपने पापा के हार्ट-अटैक के बहाने उसने, तुम्हें राजनगर से बाहर यानी बम्बई भेज दिया।"

"न...नहीं।" संजय हलक फाड़कर चीख पड़ा—"यह झूठ है, किरन सरासर झूठ बोल रही है इंस्पेक्टर!"

"क्या मतलब, क्या उसने तुम्हें फोन नहीं किया था?"

"किया था और बातें भी वहीं की थीं जो तुम्हें बताई हैं।"

"फिर?"

"मगर फोन की वजह हरगिज वह नहीं थी जो वह बता रही है।"

"आपके ख्याल से क्या वजह थी?"

"व...वजह!" कुछ कहता-कहता रुक गया संजय, फिर बोला—"मैं तुम्हें यह बताने आया हूं इंस्पेक्टर कि संध्या की हत्या किरन ने नहीं की, उसे गिरफ्तार करके बहुत बड़ी भूल की है तुमने।"

"आओ, अन्दर आ जाओ।" त्रिवेन्द्रम दरवाजे के बीच से हटता

हुआ बोला—"आराम से बैठकर बातें करना ज्यादा मुनासिब होगा।"

संजय हवा के झोंके की तरह अन्दर प्रविष्ट हुआ।

त्रिवेन्द्रम ने दरवाजा पूर्ववत् बन्द किया। बाहर की लाइट ऑफ की और एक मिनट बाद ड्राइंगरूम में वे आमने-सामने सोफे पर बैठे थे। त्रिवेन्द्रम बोला—"क्या कहा था तुमने, हत्या किरन ने नहीं की?"

"यह बात उसी तरह सच है जैसे सूरज का पूर्व से निकलना।"

त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"सबसे पहले यह बताओ कि तुम्हें यह सब पता कब और कैसे लगा?"

संजय ने अखबार वाली घटना बताने के बाद कहा— "होश में आने पर मैंने खुद को पुलिस कस्टडी में एक अस्पताल के बेड पर पाया। उन्होंने मुझसे बेहोश होने का कारण पूछा—मेरा परिचय और कारण जानने के बाद बम्बई पुलिस ने यह सोचकर मुझे छोड़ दिया कि बीवी की गिरफ्तारी से मुझे शॉक लगा है—इससे ज्यादा मेरे बेहोश होने के पीछे और कुछ नहीं है। उसके बाद टैक्सी पकड़कर मैं सीधा राजनगर आया हूं।"

"यानी अखबार पढ़ चुके हो?"

"हां।"

"उसे पढ़ने के बावजूद कह रहे हो कि हत्या किरन ने नहीं की?"

"हा-हां।" संजय अजीब उत्तेजित स्वर में कह उठा—"मैं उस सारी बकवास को पढ़ने के बाद ऐसा कह रहा हूं।"

त्रिवेन्द्रम ने ध्यान से संजय की अवस्था का निरीक्षण किया। कुछ देर खामोश रहने के बाद बोला—"मैं महसूस कर रहा हूं मिस्टर संजय कि इस वक्त आप भावनाओं के भंवर मे फंसे हुए हैं। विवेक से कम और दिल से ज्यादा काम ले रहे हैं।"

"क...क्या मतलब?"

"हालांकि मैं समझता हूं कि आप अपनी बीवी को कितना प्यार करते हैं और अगर आप जैसे किसी पति की पत्नी इस तरह हत्या करके फंस जाये तो एक प्यार करने वाले पति का भावुक हो उठना स्वाभाविक है, मगर फिर भी, मैं यह सलाह दूंगा कि आपको अपने दिल से नहीं विवेक से काम लेना चाहिए।"

"कहना क्या चाहते हो तुम?"

"किरन को मैंने ऐसे ही गिरफ्तार नहीं कर लिया। उसके खिलाफ एक नहीं अनेक ठोस सुबूत हैं और उन सभी सुबूतों का जिक्र अखबार वालों ने भी किया है—अखबार पढ़ने के बावजूद आप जो कुछ कह रहे हैं वह बात विवेक से कही गई बिल्कुल नहीं समझी जा सकती, हां—एक भावुक पति द्वारा कही गयी जरूर समझी जा सकती है।"

"वे सारे सुबूत, वह सारी कहानी झूठी है।" संजय चीख-सा

पड़ा—"सरासर झूठी।"

"किरन ने खुद कुबूल किया है कि उसने संध्या की हत्या की है।"

संजय गुर्रा उठा—"झूठ बोल रही है वह।"

"क्यों?"

"म...मुझे बचाने के लिए।" एक झटके से संजय ने कह दिया।

त्रिवेन्द्रम उछल पड़ा इस बार हकला गया वह—"क...क्या मतलब?"

"संध्या की हत्या मैंने की है इंस्पेक्टर!" सजय चीखा—"म...मैंने।"

"अ...आपने?"

"हां, मैंने।" जोश में कहते हुए उसने अपने दोनों हाथ फैला दिए—"मैंने खुद अपने इन हाथों से कत्ल किया है उसे—इन हाथों से, ऐसी योजना के साथ कि तुम सात जन्म भी नहीं जान सकते थे कि हत्यारा मैं हूं मगर...मगर किसी ने सच कहा है इंस्पेक्टर, मैंने सुना जरूर था कि ऊपर वाले की लाठी बे-आवाज होती है—उसकी चोट से इंसान तिलमिला उठता है मगर उस लाठी की चोट का कभी एहसास नहीं किया था, आज कर रहा हूं—उसने घटना-चक्र ऐसा घुमा दिया जिसकी मैंने ख्वाब में भी कल्पना नहीं की थी—मैंने भंवर को फ्रेम किया था मगर फंस गयी किरन। वह...जिसके लिए मैंने संध्या की हत्या की—यही वजह है कि अपने जुर्म का भेद मुझे खुद खोलना पड़ रहा है।"

त्रिवेन्द्रम ने उसे ध्यान से, बहुत ध्यान से देखा—अपनी गंदली आंखों से उसके चेहरे पर मौजूद उत्तेजना के एक-एक भाव की गहराई रीड करने के बाद बोला—"आपको याद होगा, उस दिन अस्पताल में आपने चीख-चीखकर कहा था—आओ इंस्पेक्टर, मेरे और किरन के परिचितों से पूछो कि किरन और संजय के सम्बन्ध कैसे हैं? मेरा दावा है कि हर परिचित से तुम्हें एक ही जवाब मिलेगा—यह कि संजय किरन से मुहब्बत नहीं करता बल्कि उसके नशे में रहता है। संजय पर बीवी का नशा चढ़ा है, यही सब कहा था ना आपने?"

"बेशक यही कहा था।"

"उस दिन आपकी बात पर मुझे यकीन नहीं हुआ था मगर आज पूरा विश्वास हो गया है।"

"क्या मतलब?"

"बीवी के नशे में हैं आप?"

"मैं समझा नहीं इंस्पेक्टर कि तुम क्या बकवास कर रहे हो?"

"अगर किसी प्यार करने वाले पति की पत्नी किरन की तरह हत्या करके फंस जाये तो निश्चय ही पति उसे निर्दोष कहेगा। कानून से उसे बचाने के लिए अपनी जी-जान लगा देगा मगर यह हरगिज नहीं करेगा जो आप कर रहे हैं। ऐसा तो वही कर सकता है जिस पर सचमुच बीवी

का नशा सवार हो।"

"क...क्या कर रहा हूं मैं?"

"पत्नी द्वारा किये गये जुर्म को अपने मत्थे मढ़ने की कोशिश कह रहे हैं आप।"

"म...नहीं-नहीं!" संजय चीख पड़ा—"तुम सरासर उल्टी लाईन पर सोच रहे हो इंस्पेक्टर, मैं किरन द्वारा किये गये जुर्म को अपने मत्थे मढ़ने की नहीं बल्कि मेरे द्वारा किये गये जुर्म को किरन अपने मत्थे मढ़ने की कोशिश कर रही है।"

त्रिवेन्द्रम अजीब-सी मुस्कान के साथ बोला—"क्या आप यह समझते हैं मिस्टर संजय कि मैं आपके यह कहते ही आपको गिरफ्तार कर लूंगा कि संध्या के हत्यारे आप हैं?"

"क्यों नहीं कर लोगे?"

"आप एक पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं मिस्टर भारद्वाज। समझदार हैं, लेखक हैं—कम-से-कम आपसे मुझे ऐसी बेवकूफी-भरी और बचकानी बात की उम्मीद नहीं थी।"

"क...क्या मतलब?" संजय बौखला गया।

"आप डिटेक्टिव नॉविल्स लिखते हैं, इतना तो जानते ही होंगे कि पुलिस जब किसी को हत्या के जुर्म में गिरफ्तार करती है तो ऐसे ही नहीं कर लेती बल्कि गिरफ्तार किये गये व्यक्ति के खिलाफ इतने गवाह और सुबूत जुटाने पड़ते हैं जिनके बूते पर अदालत में उसे हत्यारा साबित किया जा सके, जानते हैं ना?"

"जी हां, जानता हूं।"

"तो फिर आपको यह भी जानना चाहिए कि यह बात सिर्फ उपन्यास में चल सकती है कि जो जुर्म 'ए' ने किया है उसमें खुद को 'बी' फंसा लेता है—वास्तविक जीवन में यह बात नहीं चल सकती क्योंकि कानून किसी के यह कहने मात्र से उसे मुजरिम नहीं मान लेता कि मैं मुजरिम हूं बल्कि सुबूत मांगता है, गवाह मांगता है—साफ-साफ यह कहता है कि साबित कीजिए कि आप मुजरिम हैं—और 'बी' उस जुर्म को अपने द्वारा किया गया साबित नहीं कर सकता जिसे वास्तव में 'ए' ने किया है क्योंकि गवाह भले ही झूठ बोल सकते हों मगर सुबूत झूठ नहीं बोल सकते, वे सिर्फ-और-सिर्फ उसी की तरफ इशारा करेंगे जिसने वास्तव में जुर्म किया होगा—कहने का मतलब ये कि न तो आप अपनी बीवी द्वारा किए गए जुर्म में खुद को फंसाने में सफल हो सकते हैं और न ही आपकी बीवी आपके द्वारा किए गए जुर्म में खुद को फंसाने में—फंसेगा वही, जिसने वास्तव में जुर्म किया होगा, अतः संध्या की हत्या के जुर्म में आप द्वारा की जा रही खुद को फंसाने की यह कोशिश बचकानी ही नहीं बल्कि हास्यास्पद भी है। इसे आप द्वारा अपनी बीवी

को बचाए जाने की बेंवकूफाना कोशिश से ज्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता। किरन से मैंने खुद सात व्यक्तियों की मौजूदगी में वह रिवॉल्वर बरामद किया है जिससे संध्या की हत्या की गई।"

"हत्या उस रिवॉल्वर से नहीं हुई है।"

त्रिवेन्द्र की आंखें सिकुड़ गयीं, उसने सवाल किया—"फिर किससे हुई?"

"ठीक वैसे ही दूसरे रिवॉल्वर से—वह मुझे अपनी गाड़ी की पिछली सीट पर पड़ा मिला था।"

"क्या मतलब?"

जवाब में संजय ने रिवॉल्वर मिलने की सारी कहानी सुना दी। सुनने के बाद त्रिवेन्द्रम बोला—"थाने पहुंचने पर तो तुमने मुझे रिवॉल्वर के बारे में कुछ नहीं बताया?"

"न बताने की वजह मेरे दिल में आई बदनीयती थी।"

"मतलब?"

"पार्टी में संध्या के नेकलेस पर मेरी नजर टिक गई थी, मैं उस नेकलेस को किरन की गोरी एवं सुराहीदार गर्दन तक पहुंचाने के लिए दीवाना हो चुका था। उधर तुम बता ही चुके थे कि चारों लुटेरे मारे जा चुके हैं, मेरे दिमाग में यह विचार कौंध गया कि संध्या का नेकलेस हासिल करने के मिशन में—मुझे रिवॉल्वर की जरूरत पड़ सकती है और फिर वह रिवॉल्वर तो था भी ऐसा कि जिसके बारे में मेरे अलावा कोई नहीं जानता था, जो जानते थे वे मर चुके थे—रिवॉल्वर की दूसरी क्वालिटी यह थी कि वह ठीक वैसा ही था, जैसा संध्या भंवर के बैड की दराज में रखा रहता था यानी प्वाइंट फाइव कैलीवर?"

"रिवॉल्वर भरा हुआ था?"

"छहों गोलियां थीं उसमें।"

"और तुमने उस रिवॉल्वर से संध्या की हत्या की?"

"बेशक!"

"अगर यह सच है तो पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आने के बाद साबित हो जाएगा कि तुम झूठ बोल रहे हो या सच?"

"कैसे?"

"गोली के पीछे नम्बर पड़े होते हैं, जब कोई लाइसेंसधारी गोलियां खरीदता है तो दुकानदार एक रजिस्टर में यह दर्ज करता है कि उसने कौन से नम्बर की गोली किस लाइसेंसधारी को बेची—संध्या के जिस्म से बरामद होने वाली गोली बता देगी कि वह भंवर द्वारा खरीदी गई थी या किसी और के द्वारा?"

"मैं यह बात जानता हूं।"

"तब तो बहस की जरूरत ही नहीं है, गोली बता देगी कि आप झूठ

बोल रहे हैं या किरन?"

"वह मुझे झूठा साबित करेगी।"

"क्यों?"

"मैंने भंवर के रिवॉल्वर की गोली 'नम्बर सेविन' के रिवॉल्वर से संध्या की कनपटी पर मारी थी।"

त्रिवेन्द्रम दंग रह गया, उसने सवाल किया—"ऐसा क्यों किया था आपने?"

"क्योंकि मेरी योजना ही यह थी कि तुम कत्ल भंवर के ही रिवॉल्वर से हुआ समझो।"

"म...मगर गोली तो उस रिवॉल्वर से भी चली है, मैंने नाल सूंधकर देखी थी।"

"बेशक चली है मगर वह गोली नम्बर सेविन के रिवॉल्वर की थी, उसे भी मैंने ही चलाया था।"

"किस पर?"

"रुई के बड़े काले बण्डल पर।"

"रुई के बण्डल पर?"

"हां, ये सारी बातें तुम्हारी समझ में तब आ सकती हैं जब तुम्हें सबकुछ बताऊं, वह सबकुछ जो मैंने किया—यह भी बताना पड़ेगा कि मैंने क्या सेचकर क्या किया था?" संजय कहता चला गया—"मैंने अपने चारों तरफ ऐसा सुरक्षा-कवच तैयार किया था जिसे भेदकर तुम मुझ तक कभी न पहुंच सको।"

"सबसे पहले मैं यह जानना चाहूंगा कि इस वक्त 'नम्बर सेविन' वाला रिवॉल्वर कहां है?"

"उसे मैं समुद्र में डाल चका हूं।"

"स...समुद्र में?"

"हां!" संजय ने कहा—"और यह सच्चाई है कि अब उसे मैं भी बरामद नहीं कर सकता।"

त्रिवेन्द्रम चुप रह गया, वह संजय के चेहरे की तरफ देख रहा था।

बहुत ध्यान से।

जैसे जानने की कोशिश कर रहा हो कि वह झूठ बोल रहा है या सच?

काफी देर तक भी जब त्रिवेन्द्रम कुछ नहीं बोला तो संजय ने पूछा—"क्या मेरी बात पर विश्वास नहीं आ रहा इंसेक्टर?"

"विश्वास करने की कोई वजह हो तो करूं भी।"

"क्या मतलब?"

"तुम सिर्फ कह रहे हो कि संध्या की हत्या तुमने की है—जो कह रहे हो उसे साबित नहीं कर सकते, ऐसा कोई गवाह भी नहीं है तुम्हारे

पास जो कह सके कि तुम्हें अपनी गाड़ी की सीट से वास्तव में रिवॉल्वर मिला था।"

"यही तो वह सुरक्षा-कवच था जिसके अन्दर मैंने खुद को सुरक्षित किया था।"

"मैं समझा नहीं?"

"मैं फिर कह रहा हूं, केवल तब समझ सकते हो जबकि मैं तुम्हें वह अक्षरशः बताऊं जो किया है।"

"ठीक है बताओ!" त्रिवेन्द्रम ने कहा—"मैं सुनने के लिए तैयार हूं।"

तब—

संजय ने पूरी योजना ही नहीं बल्कि उस पर अमल का पूरा विवरण भी बता दिया। त्रिवेन्द्रम ध्यान से सुनता रहा—कई स्थानों पर वह चौंका, बीच-बीच में दिमाग में अनेक सवाल भी उठे मगर संजय को टोका नहीं उसने, सुनता रहा और अन्त संजय ने इन शब्दों के साथ किया—"अखबार में लिखा था कि संध्या का नेकलेस डुप्लीकेट था, इन शब्दों को पढ़कर मुझे शॉक तो लगा मगर वह उस शॉक के पासंग भी नहीं था जो यह जानकर लगा कि संध्या की हत्या के जुर्म में किरन पकड़ी गई है, इस खबर ने मेरे होश उड़ा दिए और एकमात्र यही वजह है इंस्पेक्टर कि इस वक्त मैं यहां बैठा तुम्हें अपनी सारी करतूत बता रहा हूं।"

कुछ देर चुप रहने के बाद त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"अगर तुम्हारे बयान पर यकीन कर लिया जाए तो बड़े से मुझे अलका का हेयर-बैण्ड और संध्या की लाश के दायें हाथ में फंसा भंवर का रिवॉल्वर मिलना चाहिए था?"

"जाहिर है।"

"मगर ऐसा नहीं हुआ!" त्रिवेन्द्रम ने कहा—"रिवॉल्वर मुझे किरन के पास से मिला, हेयर-बेण्ड तो मिला ही नहीं और मैं गारण्टी के साथ कह सकता हूं कि वह बैड पर नहीं था—तुम्हारे बयान के मुताबिक जब तुमने संध्या की हत्या की तब वहां एक गिलास टूटा हुआ था जबकि मुझे कांच का एक किरचा भी नजर नहीं आया।"

"यह सब गड़बड़ किरन ने की होगी।"

"क्या मतलब?"

"जब वहां पहुंचने पर उसने संध्या की लाश देखी होगी तो नेकलेस को पहनानते ही समझ गई होगी कि हत्या किसने की है, यह सोचकर वह बौखला उठी होगी कि मैं पकड़ा जाऊंगा—किरन ने उसी वक्त मुझे बचाने के लिए खुद को फंसाने का फैसला कर लिया होगा—इसीलिए उसने हेयर-बैण्ड गायब कर दिया, फर्श पर पड़ा कांच साफ किया और

रिवॉल्वर लिये चुपचाप निकल गयी—उसे गिरफ्तार होती देखकर मैं कोई बखेड़ा न कर सकूं इसलिये उसने झूठा फोन करके मुझे बम्बई भेज दिया।"

"सबसे पहला सवाल यह है कि किरन वहां पहुंची कैसे?"

"संध्या से मिलने गयी होगी, उसके भंवर से झगड़े की बात सुनकर वह परेशान तो थी ही।"

"बैक-लॉन से होकर, खिड़की के रास्ते से?"

संजय पर जवाब नहीं बना।

जबकि त्रिवेन्द्रम कहता चला गया—"वह भी उस टाइम जो कि संध्या के सोने का टाइम था?"

संजय पूरी तरह निरुत्तर हो चुका था।

"हालांकि तो वह शख्स बैक-लॉन से होकर खिड़की के रास्ते से किसी के कमरे में जायेगा ही नहीं जिसके दिलोदिमाग में किसी किस्म की बदनीयती न हो फिर भी थोड़ी देर के लिए मान लेते हैं कि किरन किसी तरह वहां पहुँच गयी और वहां की स्थिति देखकर उसने वही किया जिसकी कल्पना आप कर रहे हैं, तब ढेर सारे सवाल उठते हैं।"

"वे क्या?"

"अपने बयान के मुताबिक जो कुछ आपने किया वह सिर्फ और सिर्फ आपको मालूम था, फिर उसे कैसे मालूम हो गया कि अलका के फ्लैट की चाबी कार्पेट के नीचे रखी रहती है? भंवर और अलका के सम्बन्ध कितने प्रगाढ़ हैं, अलका की नजर क्या है, अलका और भंवर के ऑफिस में आपने क्या मैसेज दिये? अगर यह सब आपने किया था तो किरन को कैसे पता चला कि चोगा, नकाब और दस्ताने अलका के फ्लैट में अलमारी के नीचे छुपे हैं? वह हमें दोनों पेड़ों के बीच बने गड्ढे तक कैसे ले गयी और अपने मशीन वाले डिब्बे से वह पेचक कैसे बरामद करा दी जिससे नकाब और चोगा तैयार किये गए थे?"

संजय का दिमाग चकराकर रह गया। काफी देर की खामोशी के बाद बोला—"इसका मतलब तो ये है कि किरन को मेरी पूरी योजना की जानकारी थी।"

"सवाल उठता है कैसे?"

"उसने मेरे ऑफिस की दराज में रखे वे कागज पढ़ लिए होंगे जिनमें पूरा प्लान था।"

"कब?"

"क्या मतलब?"

"तुमने खुद स्वीकार किया कि प्लान तुमने कल रात दस से बारह तक टाइप किया उसके बाद खाना खाकर किरन सो गयी मगर तुम्हारी आंखों में नींद नहीं थी— वैसे भी तुम कह चुके हो कि वह आफिस

की तरफ नहीं जाती थी अतः उसे ख्वाब नहीं चमका होगा कि तुमने प्लान टाइप किया है, उसे पढ़कर आये—दिन में तीन बजे के आसपास वह पहली बार आफिस में गई थी तब भी रूबी ने उसे लेखन-कक्ष में नहीं जाने दिया।"

"म...मगर फिर भी, कोई-न-कोई गड़बड़ जरूर हुई है—किरन के बयान से जाहिर है कि वह मेरा पूरा प्लान जानती थी—उसने मुझे झूठा फोन करके बम्बई भेजा, जाहिर है कि वह खुद को फंसाने का मन बना चुकी थी।"

"यह बात आप भले ही कहते रहें मगर मैं नहीं मान सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि मेरे ख्याल से उसने आपको बम्बई इसलिए नहीं भेजा कि वह खुद को गिरफ्तार कराना चाहती थी बल्कि इसलिए भेजा ताकि आप संध्या के गले में पड़े नेकलेस को देखकर यह न ताड़ सकें कि हत्या किरन ने की है।"

"य...यानी आप अब भी किरन को सच्ची मान रहे हैं?"

"जाहिर है।"

संजय ने हैरतअंगेज स्वर में पूछा—"मेरे द्वारा सारी हकीकत बताये जाने के बावजूद?"

"आपका बयान 'हकीकत' आपकी नजरों में होगा, मेरे दिमाग से हकीकत किरन का बयान है।" त्रिवेन्द्रम ने स्पष्ट कहा—"आपका बयान मेरे लिए किसी काल्पनिक उपन्यास की कहानी से ज्यादा महत्व नहीं रखता।"

"क...क्यों?" संजय चिहुंक उठा।

"क्योंकि आपने सिर्फ एक कहानी सुनाई है, ऐसी कहानी जिसे साबित करने के लिए अभी तक कोई सबूत नहीं दिया, कोई गवाह पेश नहीं किया—दूसरी तरफ किरन है, मैंने उसके खिलाफ गवाह भी जुटाये हैं—सबूत भी, कोर्ट में कहानियां नहीं चलतीं सबूत और गवाह चलते हैं—मैं बड़े साफ़ शब्दों में कह रहा हूं मिस्टर संजय कि जो कुछ आपने सुनाया—सुबूत और गवाहों के अभाव में वह मेरे और कानून के लिए एक कहानी से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं...।"

"म...मगर यह कहानी मैंने सुना कैसे दी?" एक बार पुनः संजय उत्तेजित हो उठा था—"यह भी तो सोचो इंस्पेक्टर कि मुझे कैसे मालूम कि किरन ने अलका और भंवर को फोन पर क्या मैसेज दिये? मुझे कैसे पता कि चोगा, नकाब और दस्ताने अलका के फ्लैट में कहां छुपे थे, मुझे कैसे पता कि...।"

"यह सब अखबार में छपा है।" त्रिवेन्द्रम ने उसकी बात काटकर कहा—"किरन का मुकम्मल बयान।"

संजय अवाक् रह गया।
आंखें त्रिवेन्द्रम के चेहरे पर चिपकी रह गयीं।
कानों में सांय-सांय-सी हो रही थी, जवाब नहीं सूझा उसे।
जुबान तालू से चिपक गयी थी।
त्रिवेन्द्रम ने कहा—"उपन्यासकार आप हैं ही, कहानी 'गढ़' लेना आपके लिये चुटकियों का काम है—आपने अखबार पढ़ा और थोड़ी-सी रद्दोबदल करके ऐसी कहानी गढ़ ली जिससे खुद को हत्यारा कह सकें—सिर्फ कह सकें, साबित नहीं कर सकते क्योंकि कहानियों से केवल उपन्यास के पात्र मुजरिम साबित हो जाते हैं, वास्तविक दुनिया में नहीं—आप खुद को हत्यारा कह सकते हैं साबित नहीं कर सकते क्योंकि साबित सबूतों से होता है और सबूत कहानियों की तरह गढ़े नहीं जा सकते मिस्टर संजय!"
"य...यकीन मानो, म...मेरा यकीन मानो इंसपेक्टर।" संजय गिड़गिड़ा उठा—"मैंने कोई कहानी नहीं गढ़ी।"
"जरूर यकीन मान लूंगा—कोई सबूत पेश कीजिये, कोई गवाह लाइये।"
"उफ्फ!" संजय झुंझला उठा, कसमसाकर दांत पीसता हुआ बोला वह—"कहां से लाऊं गवाह? मैंने किसी को अपने प्लान की भनक लगने दी हो तो पेश भी कर दूं—सारे सबूत, एक-एक सबूत मैंने अपने इन हाथों से समुद्र के गर्भ में गर्त कर दिया है, अलका के फ्लैट के बाथरूम में जलाकर राख किया है—वह भी इस ढंग से कि लाख कोशिशों के बावजूद नहीं जाना जा सकता कि वहां कुछ जलाया गया है, मैंने वाश-बेसिन में नेकलेस को धोया था मगर उफ्फ...वाश-बेसिन को खुर्दबीन से देखने पर भी मेरी बात सच साबित नहीं होगी, मैं क्या करूं? तुम्हीं बताओ इंस्पेक्टर कि क्या करूं, कहां से पैदा करूं उन सबूतों को जिन्हें मैंने खुद नष्ट किया है, जब मैंने किसी को अपना 'हमराज' बनाया ही नहीं तो कहां से लाऊं गवाह?"
"रुई के बण्डल, एयर-बैग और दस्ताने आपने कहां से खरीदे थे?" त्रिवेन्द्रम ने पूछा—"अगर आप किसी दुकानदार से यह कहलवा दें कि आपने उससे ये चीजें खरीदी थीं तो में आपकी कहानी पर सोच सकता हूं।"
"वे मैंने नहीं खरीदीं।"
"फिर?"
"एक चॉबी वाले को पैसे दिये थे, ये चीजें उसी ने खरीदी थीं।"
"चॉबी वाले ने?"
"हां, उसी से मैंने लेखन-कक्ष के गैलरी में खुलने वाले उस दरवाजे की चाबी बनवाई थी जिसकी चाबी कोठी के मालिक से हमने कभी ली

ही नहीं।"
"आप उस चाबी वाले को पेश कर सकते हैं, वह बयान दे सकता है कि आपने उससे रुई के बण्डल, एयर-बैग और दस्ताने खरीदवाये, लेखन-कक्ष की चाबी बनवाई?"
"नहीं...मैं उसे पेश नहीं कर सकता।"
"क्यों?"
"उसका कोई 'ठीया' नहीं है—गली-गली, मोहल्ले-मोहल्ले घूमकर वह चाबी बनाने का काम करता है—मुझे किसी ऐसे ही चाबी वाले की तलाश थी क्योंकि नहीं चाहता था कल कोई इन्वेस्टीगेटर किसी 'ठीये' वाले कारीगर की मदद से मुझ तक पहुंच जाये—मैं तो नाम तक नहीं जानता उसका, पूछने की जरूरत ही नहीं समझी—अब कहां ढूंढूं उसे, कहां से पेश करूं?"
"अगर आप पेश भी कर दें तब भी नतीजा कुछ नहीं निकलेगा।"
"क्यों?"
"ऐसी कोई गवाही कानून की नजर में कभी ठोस नहीं हो सकती क्योंकि किसी भी गरीब आदमी को हजार-पांच सौ रुपये देकर कोर्ट में कहलवाया जा सकता है कि उसने दस्ताने, एयर-बैग और रुई के बण्डल खरीदकर आपको दिये थे, आपके लिये चाबी भी बनाई थी—सवाल फिर वही उठता है, कह देने मात्र से कोई यकीन नहीं करेगा बल्कि उसे साबित करना पड़ेगा कि उसने आपके लिए सचमुच चाबी बनाई थी।"
"वह कैसे सबित करेगा?"
"यह उसकी हैडेक होगी, कोर्ट की नहीं।"
संजय त्रिवेन्द्रम को चेहरा देखता रहा गया—कहने के लिये कुछ सूझ नहीं रहा था उसे। काफी सोचने के बाद उसने थोड़े उत्साहित स्वर में पूछा—"हालांकि वह कम्बख्त ध्यान तो नहीं देता मगर फिर भी मान लो कि बोट किराये पर देने वाला कह दे कि उसने मुझे किस वक्त से किस वक्त के लिए बोट दी थी तो?"
"स्थिति वही रहेगी, कोर्ट की नजर में ऐसा बयान पैसे देकर किसी से भी दिलाया जा सकता है—कानून ठोस गवाही का तलबगार होता है मिस्टर संजय! उसे अकाट्य सबूत चाहिए।"
एक बार पुनः हक्का-बक्का-सा संजय त्रिवेन्द्रम का चेहरा देखता रह गया जबकि त्रिवेन्द्रम ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा "वैसे ही अकाट्य सुबूत जैसे किरन के खिलाफ हैं।"
कहने के लिए संजय को कुछ सूझा नहीं।
दिमाग 'ठस्स' होकर रह गया था। ऐसा महसूस हो रहा था जैसे दिमाग की समूची नसें पूरी तरह एक-दूसरे से उलझकर गोला-सा बन गयी हों और उस गोले को किसी फौलादी शिकंजे ने कसकर अपनी

मुट्ठी में भींच रखा हो। यह वह क्षण था जब त्रिवेन्द्रम ने शान्त भाव से कहा—"म...मेरी एक सलाह मानेंगे मिस्टर संजय?"

"ब...बोलो!" वह उत्साहित हो उठा।

"आप खुद को मुजरिम साबित करने की यह बचकाना और बेवकूफाना कोशिश करनी छोड़ दीजिये—जो मुजरिम नहीं है वह कभी खुद को मुजरिम साबित नहीं कर सकता—केवल यह सोचिये कि पत्नी के रूप में जो औरत आपके चमचमाते कैरियर को ग्रहण लगाने आई थी उसका भेद बहुत जल्दी खुल गया—वह गहनों की लालची थी, इतनी ज्यादा कि अपनी सबसे प्यारी सहेली की हत्या तक करने से नहीं हिचकी।"

"बकवास बन्द करो इंस्पेक्टर!" हलक फाड़कर दहाड़ता हुआ संजय एक झटके से खड़ा हो गया—"अगर तुमने किरन को एक भी अपशब्द कहने की कोशिश की तो मैं तुम्हारे परखच्चे उड़ा दूंगा, टुकड़े-टुकड़े करके चील-कव्वों के सामने डाल दूंगा—त...तुम क्या जानोगे कि किरन क्या है? वह देवी है...अवतार है—मुझे बचाने के लिए खुद को होम कर रही है वह। किरन से महान तो सावित्री भी नहीं हो सकती।"

"प...प्लीज—प्लीज मिस्टर संजय!" त्रिवेन्द्रम उससे विनती-सी कर उठा—"होश में आइये, विवेक से काम लीजिये—बीवी के इस नशे से खुद को मुक्त कीजिये, आप मुल्क की सम्पत्ति हैं।"

"नहीं, मैं नशे में नहीं हूं—नशे में था, तब था जब संध्या का नेकलेस हासिल करने का निश्चय किया मगर...आज वह नशा टूट चुका है इंस्पेक्टर—आज में नशे मैं नहीं हूं, यकीन मानो—अपना बयान मैंने पूरे होशो-हवास में विवेक से दिया है...बीवी के नशे में गिरफ्तार होकर नहीं!"

मगर—

त्रिवेन्द्रम पर उसके किसी शब्द का कोई असर नहीं हुआ।

□□□

"विश्वास करो रूबी, तुम्हारी कसम—मैं किरन की कसम खाकर कहता हूं कि यह सब सच है, संध्या की हत्या मैंने की है।" संजय पागल-सा हुआ जा रहा था, कहता चला गया वह—"यकीन मानो, उस वक्त मैं लेखन-कक्ष में नहीं था—अंदर टेप बज रहा था, मैं अपने 'मनहूस प्लान' पर अमल करने गया हुआ था—यह सब मैंने तुम्हें धोखे में डालने के लिए किया था, इसलिए किया ताकि जब मेरे किले की सारी दीवारें टूट जायें—त्रिवेन्द्रम मुझ तक पहुंच जाये तब तुम अदालत के कटघरे में खड़ी होकर मेरा बचाव करो—ठोस गवाही दो, कहो कि सवा बजे से सवा तीन तक मैं अपने लेखन-कक्ष में था, लिख रहा था।"

रूबी ही नहीं बल्कि उसके मां-बाप और एक छोटा भाई भी विस्फारित नेत्रों से संजय को देख रहे थे—उनकी दीवानगी ने सबको हैरत में डाल दिया था।

सुबह के साढ़े-पांच बजे थे।

वह पांच बजे रूबी के घर पहुंचा था।

रूबी के मां-बाप और छोटे भाई के सामने संजय ने रूबी को वह सारी कहानी सुनाई जो त्रिवेन्द्रम को सुना चुका था। इस वक्त वे ऐसी अवस्था में थे कि किसी के मुंह से बोल न फूट सका।

और—

अधीर होकर संजय ने रूबी के दोनों कंधे पकड़े, उसे झंझोड़ता-सा चीखा वह—"बोलो रूबी—कुछ तो बोलो, चुप क्यों हो तुम?"

"क...क्या बोलूं?" वह बड़ी मुश्किल से कह पाई—"म...मुझसे क्या चाहते हैं आप?"

"तुम्हें अदालत में कहना होगा कि सवा बजे से तीन के बीच मैं लेखन-कक्ष में नहीं था। तुम्हें धोखा देने के लिए मैंने वहां टेप चला रखा था—यह बात तुम्हें इसलिए पता है क्योंकि तुम इस बीच में किसी काम से लेखन-कक्ष में गयी थी।"

"यानी आप मुझे झूठ बोलने के लिए कह रहे हैं?"

"नहीं, यह झूठ नहीं है रूबी।" संजय चीख पड़ा—"सच्चाई यही है।"

"मेरे लिए सच्चाई ये है कि मैं उस दरम्यान लेखन-कक्ष में नहीं गयी, मेरी मुकम्मल समझ में आप वहीं थे और अगर आप इस सच्चाई को भगवान की अदालत में भी कहने को कहें तो मैं सीना ठोककर कहूंगी—हां, अगर मैं लेखन-कक्ष में गई होती, अगर मैंने आपको वहां से गायब पाया होता तो यकीन मानिये, आपके लाख रोकने से नहीं रुकती मैं—खुद कोर्ट में जाकर अदालत को बताती कि आप झूठ बोल रहे हैं, आप लेखन-कक्ष में नहीं थे।"

संजय अवाक् रह गया।

रूबी का चेहरा देखते रहने के अलावा उसे कुछ सूझा नहीं। रूबी कहती चली गयी—"जब इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम किरन भाभी को गिरफ्तार कर रहा था तब मैं उनके नहीं बल्कि आपके बारे में सोच रही थी—यह कि इस सबकी आप पर क्या प्रतिक्रिया होगी और विश्वास कीजिये सर, मेरी कल्पना कुछ ऐसी ही थी जैसा हो रहा है।"

"क...क्या हो रहा है?"

"उन्हें बचाने के लिए आप खुद को फंसाने का प्रयास कर रहे हैं।"

"यह झूठ है!" संजय भड़क उठा—"यह झूठ है रूबी, वहम है

तुम्हारा—हकीकत ये है कि मेरे द्वारा किये गये जुर्म में किरन ने खुद को फंसा लिया है। उस बेवकूफ ने मेरी योजना के परखच्चे उड़ा दिये।"

"आप इस प्रयास में कभी कामयाब नहीं होंगे।" रूबी ने कहा—"मैंने वह सारा ड्रामा अपनी आंखें से देखा है जो गिरफ्तार होते वक्त किरन भाभी ने किया—उन्हें बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि त्रिवेन्द्रम उन्हें गिरफ्तार करने वहां पहुंच जायेगा। वे बौखला गयीं जबकि आप कहते हैं कि वह गिरफ्तार होने के लिये तैयार थीं, इसीलिए उन्होंने आपको बम्बई भेजा—नहीं सर, आपकी यह बात नहीं जंचती—उस वक्त तो उनकी हालत देखने लायक थी जब यह पता लगा कि संध्या का नेकलेस नकली था। ठीक वैसी ही हालत थी उनकी जैसी अपनी सभी आशाओं पर तुषारापात होने पर मुजरिम की होती है।"

"किरन ने एक्टिंग की होगी रूबी! शानदार एक्टिंग के लिए उसे कॉलिज लाइफ में कई अवॉर्ड मिले हैं—अभिनय करने में उसे महारत हासिल है। तुम उसकी उसी आर्ट का शिकार हो गई हो।"

"आपको कोई नहीं समझा सकता।"

"अच्छा, याद करो रूबी, मेरे उस नये उपन्यास की कहानी याद करो जिसे मैं आजकल लिख रहा हूं।"

"क्या याद करूं?"

"क्या उसकी कहानी मेरे साथ घटे वर्तमान किस्से से मिलती-जुलती नहीं है?" संजय कहता चला गया—"मैं एक ऐसे किरदार की कहानी लिख रहा हूं जो बेटे के प्यार की खातिर अपने दोस्त की अंगूठी हासिल करना चाहता है—मुख्य किरदार की जगह मुझे रखो, बेटे की जगह किरन को, अंगूठी की जगह नेकलेस, अंगूठी के मालिक की जगह संध्या, उसकी पत्नी की जगह भंवर और पत्नी के प्रेमी के स्थान पर अलका को रखकर सोचो रूबी!"

रूबी की आंखें सुकुड़कर गोल हो गयीं, बोली—"कहना क्या चाहते हैं आप?"

"यह कि मैं अपनी ही कहानी लिख रहा था। हकीकत यही है कि उस दिन मैंने अपने नये उपन्यास की कहानी की आड़ में तुमसे अपना प्लान डिस्कस किया था—मैंने यह भी कहा था ना कि मुख्य किरदार के पास ठीक वैसा ही एक रिवॉल्वर है जैसा अंगूठी वाले दोस्त के पास हैं याद करो रूबी...प्लीज याद करो—यह बात तुम्हारे कंठ से नीचे नहीं उतर रही थी कि अंगूठी के लिए मुख्य किरदार अपने दोस्त की हत्या कर डाले—मैं भावुक हो उठा था, याद करो रूबी कि इतना सेन्टीमैण्टल हो उठा था मैं कि तुम्हें यह कहना पड़ा कि पहले तुमने मुझे कभी किसी कहानी पर इतना सेन्टीमैण्टल होते नहीं देखा—जरा सोचो, इतना

सेन्टीमैण्टल क्यों हो उठा था मैं?"

रूबी के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी थीं।

उत्साहित संजय उत्तेजना के वशीभूत कहता चला गया—"मैंने तुमसे कहा था कि मुख्य किरदार दिल से अपने दोस्त की हत्या करना नहीं चाहता। अगर तुम कोई ऐसी तरकीब बता दो जिससे वह अंगूठी वाले दोस्त की हत्या किए बगैर अंगूठी हासिल करके कानून से बचा रह सके तो मैं तुम्हारा 'शुक्रगुजार' होऊंगा—दिमाग पर जोर डालो रूबी, जरा सोचो कि अगर मैं सिर्फ उपन्यास की कहानी पर डिस्कस कर रहा था तो शुक्रगुजार वाली क्या बात थी—ऐसा शब्द तो आदमी तभी बोल सकता है जब मामले में वह खुद इन्वॉल्व हो?"

रूबी के मस्तिष्क में मानो तेज अंधड़ चल रहा था।

संजय कहता-कहता चला गया—"मेरा उस वक्त का एक-एक शब्द याद करो रूबी, तुम्हें साफ-साफ लगेगा कि मैं संध्या के नेकलेस के चक्कर में था—मैंने तुमसे कहा था कि मुख्य किरदार सारा काम एक ऐसे प्लान पर अमल करके करेगा जिसे दुनिया का कोई इन्वेस्टीगेटर नहीं भेद सकता—मैंने ऐसा ही किया। मैंने सचमुच ऐसा ही किया रूबी और इसीलिए इस वक्त मैं अपने जाल में खुद उलझकर रह गया हूं—खुद मेरे लिए यह साबित करना मुश्किल हो गया कि संध्या की हत्या मैंने की है—काश...काश मैंने कोई भूल कर दी होती तो आज...आज मैं खुद अपने द्वारा तैयार किये गये 'अभेद्य' और सुदृढ़ किले में छटपटा न रहा होता। उस गलती को पकड़कर त्रिवेन्द्रम के सामने साबित कर देता कि देखो फलां प्वाइंट चीख-चीखकर कह रहा है कि संध्या की हत्या मैंने की है।"

रूबी की आंखें फट पड़ीं। उसके चेहरे पर हैरत का सागर उमड़ा जा रहा था—ऐसे भाव थे उसके चेहरे पर जैसे संजय से भयभीत हो उठी हो । वह एक कदम पीछे हटी। बड़बड़ाई—"हे भगवान, क्या यह सच है, क्या सचमुच एक लेखक ने खुद अपनी हत्या कर ली है?"

"त...तुम्हें यकीन आ गया ना रूबी कि हत्यारा मैं ही हूं?" उत्साहित संजय ने लगभग चीखते हुए पूछा—"मैंने ही संध्या की हत्या की है, एक अभेद्य प्लान पर अमल किया है।"

"अ...आप सचमुच हत्यारे हैं सर!" रूबी पागलों की तरह चीख पड़ी—"आप इन्सान नहीं बहशी जानवर हैं, दरिन्दे हैं—उफ्फ—अपनी बीवी की गोरी और सुराहीदार गर्दन को पचास लाख के नेकलेस से नवाजने की खातिर आपने संध्या की गर्दन रेत डाली—उफ्फ—मुझे नफरत हो गयी है आपसे—दुनिया में आपसे ज्यादा घृणित आदमी दूसरा नहीं हो सकता।"

"थ...थैंक्स—थैंक्स गॉड!" संजय ने ऐसी सांस भरकर कहा जैसे किला फतह किया हो। सोफे पर इस तरह ढेर हो गया वह जैसे बुरी तरह थककर चूर हो गया हो, बोला—"कम-से-कम तुम्हें तो कन्विन्स कर सका मैं।"

रूबी के मां-बाप और छोटा भाई मारे हैरत के पागल-से हुए जा रहे थे। रूबी के भभकते चेहरे को देख रहे थे वे और रूबी अभी तक हिस्टीरियाई अन्दाज में चीखे जा रही थी—"आज मेरी समझ में आया कि कल जब मैंने आपसे यह कहा कि किरन भाभी आयी थीं मगर मैंने उन्हें लेखन-कक्ष में नहीं जाने दिया तो आप भड़क क्यों नहीं उठे थे—उस वक्त मुझे हैरानी हुई थी कि चौबीस घण्टे बीवी के नशे में टुन्न रहने वाला शख्स यह कैसे कह गया कि मैंने किरन को लेखन-कक्ष में जाने से रोककर ठीक किया—उस वक्त मैंने यह सोचकर खुद को समझा लिया कि आप उपन्यास की कहानी में रम गये होंगे मगर अब समझ में आ रहा है कि उस वक्त आप भड़के क्यों नहीं थे?"

"तुम यह सब त्रिवेन्द्रम के सामने और अदालत में कहोगी ना?"

"चीख-चीखकर!"

"थैंक्यू रूबी, थैंक्यू वेरी मच।"

रूबी उसे देखती रह गयी।

उसे—

जो हत्या के जुर्म में फंसने पर उतना ही खुश था जितना एक निर्धन खजाना मिलने पर होता है।

बड़ी मुश्किल से वह खुद पर काबू पा सकी, बोली—"म...मगर क्या मात्र मेरी गवाही पर त्रिवेन्द्रम किरन भाभी को छोड़कर आपको गिरफ्तार कर लेगा—क्या मेरे यह कहने मात्र से अदालत आपको संध्या का हत्यारा मान लेगी कि आपने मुझसे एक 'प्लॉट' डिस्कस किया था?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"क्योंकि त्रिवेन्द्रम और अदालत यह मानकर चलेगी कि तुम झूठ बोल रही हो। पैसे से या मेरे दबाव में वह कह रही हो जो मैं कहलवाना चाहता हूं। तुम्हें साबित करना होगा रूबी कि मैंने सचमुच तुमसे प्लॉट की आड़ में प्लान डिस्कस किया था।"

"यह मैं कैसे साबित कर सकूंगी?"

"मेरे नये उपन्यास की स्क्रिप्ट साबित करेगी।"

"स्क्रिप्ट?"

"हां।"

"मगर उसमें कहानी अभी तक मुख्य किरदार के प्लान तक तो पहुंची ही नहीं थी यानी वह प्लान तो आपने लिखा ही नहीं है जिस पर

अमल करके संध्या की हत्या की है फिर वह स्क्रिप्ट यह कैसे साबित कर सकेगी कि उसमें वही लिखा जाना था जो आपने किया है?"

"कहां तक कहानी लिख चुका हूं मैं?"

"यह दिखा चुके हैं कि मुख्य किरदार अपने दोस्त की हत्या करके अंगूठी हासिल करने का दृढ़ निश्चय कर चुका है। यह भी लिख चुके हैं कि अंगूठी ज्यादातर बैंक-लॉकर में रखी रहती है और उसे विशेष अवसर पर ही पहनने के लिए निकालकर लाता है। यह भी दिखा चुके हैं कि मुख्य किरदार के पास ठीक अपने दोस्त जैसा रिवॉल्वर है। यह भी कि दोस्त की बीवी किसी अन्य से प्यार करती है और दोस्त उसे उस मर्द के चक्कर से निकालने के लिए प्रयत्नशील है।"

"इतना मसाला काफी है।" संजय ने कहा—"उस स्क्रिप्ट को पढ़ने के बाद त्रिवेन्द्रम ठीक उसी तरह सच्चाई तक पहुंच जायेगा जिस तरह तुम पहुंच गयीं—कोर्ट में बड़ी आसानी से यह साबित हो जायेगा कि वह स्क्रिप्ट मैंने संध्या का कत्ल होने से पहले लिखी थी। लगभग सारे हालात मैंने सेम दिखाये हैं अतः कोर्ट को यह समझने में जरा भी देर नहीं लगेगी कि जिस योजना को संध्या अपनी बता रही है वह वास्तव में मेरी थी।"

"तो चलें सर?"

"कहां??"

"आपकी स्क्रिप्ट को त्रिवेन्द्रम के सामने पेश करने।"

संजय मुस्करा उठा, सोफे से खड़ा होता हुआ बोला वह—"तुम वाकई ग्रेट हो रूबी!"

□□□

टेबल और उसकी दराजें ही नहीं बल्कि दोनों ने मिलकर सारा लेखन-कक्ष खंगाल डाला मगर संजय के नये उपन्यास की स्क्रिप्ट कहीं न मिली।

गधे के सींग की तरह गायब थी वह।

अकेला संजय ही नहीं बल्कि रूबी भी सारे कमरे में पगलाई-सी घूम रही थी।

सबकुछ अस्त-व्यस्त हो चुका था।

अलमारियों में रखी किताबें, मेज पर रखा सामान और दराज में रखी-सामग्री।

एक-एक स्थान पर कई-कई बार देखने पर भी स्क्रिप्ट न मिली तो दोनों के होश उड़ गये।

चेहरे फक्क पड़ गये थे।

कुछ वैसी ही अवस्था हो गयी उनकी जैसे अपने सम्पूर्ण जीवन में

कमाई गयी दौलत के गुम हो जाने पर किसी निर्धन बूढ़े की हो जाती है, संजय ने उत्तेजित स्वर में पूछा—"तुम्हें अच्छी तरह याद है ना कि स्क्रिप्ट पढ़ने के बाद तुमने यहीं—मेज पर रखी थी?"

"य...यस सर!" रूबी की आवाज कांप रही थी—"मुझे अच्छी तरह याद है, बल्कि..."

"बल्कि?"

"यह भी याद है कि कुल-मिलाकर आपने पचपन पेज टाइप किये थे, उन सबको बाकायदा सीरियल से लगाकर मैंने यहां, ठीक यहां—टाईपराटरर के बराबर में रखा था।"

"फिर कहां गये?" लगभग चीख पड़ा संजय।

"म...मैं क्या बता सकती हूं सर!"

"तुमने कागजात यहां कितने बजे रखे थे?"

"करीब साढ़े तीन बजे।"

"त्रिवेन्द्रम कोठी पर कितने बजे पहुंचा?"

"साढ़े चार के आसपास।"

"इस एक घण्टे के दरम्यान तुम कहां गयी थी?"

"केवल बीस मिनट के लिये गयी थी, समीप वाली कैन्टीन में चाय पीने।"

"उफ्फ...ये तुमने क्या किया रूबी, बीस मिनट तो किरन के लिये बहुत थे—उसने उसी समय स्क्रिप्ट गायब की होगी। अब यह आखिरी सुबूत भी हमारी पकड़ से बाहर निकल चुका है।"

"म...मुझे क्या मालूम था सर कि किरन भाभी..."

"तुमने बताया था कि जब इंस्पेक्टर ने किरन को गिरफ्तार किया तो तुम्हें और चौकीदार को भी साथ ले गया। उस वक्त कोठी लॉक कर दी गयी थी, ऑफिस भी लॉक था ना?"

"जी हां।"

"उसके बाद उसने सारी चाबियां चौकीदार को सौंप दी थीं, वह यहां आकर अपनी कोठरी में सो गया?"

"वह सब तो गोरखा खुद आपको बता चुका है।"

संजय चुप रह गया। उसका दिमाग बड़ी तेजी से कुछ सोचने में तल्लीन था और काफी देर तक सोचता रहने के बाद बड़बड़ाया—"नहीं, यह काम किरन के अलावा और किसी का नहीं हो सकता—किसी अन्य को स्क्रिप्ट गायब करने की भला जरूरत ही क्या थी?"

"कुछ भी हो जाये सर!" रुबी कठोर स्वर में कह उठी—"अब, जबकि मुझे यह पता लग चुका है कि संध्या के असल हत्यारे आप हैं तो किसी भी कीमत पर मैं आपको बख्श नहीं सकती—इस मुल्क का एक टेलेन्टिड लेखक खत्म होता है तो हो जाये, मैं आपको फांसी के

फंदे तक पहुंचाने के लिए धरती-आकाश एक कर दूंगी।"

"मुझे खुशी होगी रूबी, फांसी पर चढ़ते वक्त मेरा सीना फख्र से तना हुआ होगा—यह सोचकर कि मैं फांसी के फंदे तक उसके प्रयासों से पहुंचा हूं जिसने मुझे सबसे ज्यादा चाहा—म...मगर—मगर सोचने वाली बात ये है कि ऐसा होगा कैसे—आखिरी सुबूत भी गायब हो चुका है तुम्हारी सूखी गवाही न त्रिवेन्द्रम के गले से उतरेगी न ही कोर्ट के—वे सबूत मांगेंगे हमें सबूत चाहिए—ऐसा सबूत जिसे देखते ही अदालत मुझे फांसी का हुक्म सुना दे, ऐसा सबूत हम कहां से लायें?"

रूबी का दिमाग कुन्द होकर रह गया, कुछ सूझ नहीं रहा था उसे।

□□□

सुबह के आठ बजे।

थाने में।

इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम के सामने खड़ी रूबी चीख-चीखकर संजय को हत्यारा कह रही थी। बता रही थी कि संजय ने उससे क्या प्लॉट डिस्कस किया था—यह भी बताया कि संजय अपने उपन्यास की एक-चौथाई स्क्रिप्ट लिख चुका था।

त्रिवेन्द्रम ने सबकुछ सुना।

परन्तु गम्भीर नहीं हो पाया वह। कभी संजय और कभी रूबी की तरफ देख-देखकर धीमे-धीमे मुस्कराता रहा—जब रूबी चुप हुई तो उसने संजय से मुखातिब होकर कहा—"आप ये बचपना नहीं छोड़ेंगे?"

"ब...बचपना?" वह हकलाया।

"यह बचपना नहीं तो और क्या है, अपनी सैक्रेट्री के रूप में यह नया शगूफा लेकर हाजिर हुए हैं आप—भगवान ही जाने कि इसको यह बयान देने के लिए आपने कैसे तैयार किया है मगर बात फिर वहीं आकर ठहर जाती है। ये भी आपकी तरह एक कहानी सुना रही हैं—सिर्फ कहानी, कोई सबूत पेश नहीं कर रहीं—मैंने पहले ही कहा था कि कानून का पेट कोरे गवाह से नहीं भरेगा उसे इस बात का सबूत चाहिए कि गवाही सच्ची है।"

"सबूत भी था इंस्पेक्टर, यकीन मानें मैंने एक-चौथाई स्क्रिप्ट लिख रखी थी मगर वह गायब है।"

"वह तो गायब होनी ही थी।"

"क्या मतलब?"

"मिलती तो तभी ना जब ऐसी कोई स्क्रिप्ट होती?"

रुबी कह उठी—"स्क्रिप्ट थी इंस्पेक्टर, यकीन मानो स्क्रिप्ट थी—जरा यह तो सोचो कि मैं भला झूठ क्यों बोलूंगी—इन्हें बीवी का नशा हो सकता है, मुझे किस चीज का नशा है?"

"दौलत का नशा हो सकता है।"

"इ...इंस्पेक्टर!" रूबी चीख पड़ी—"आप मेरा अपमान कर रहे हैं।"

"मैं अपमान नहीं कर रहा मिस रूबी बल्कि वह बता रहा हूं जो कोर्ट में सरकारी वकील के मुंह से आपको सुनने को मिलेगा।" हल्की मुस्कान के साथ त्रिवेन्द्रम कहता चला गया—"सबूतों के अभाव में मुझे आपके बयान में ऐसी कोई बात नजर नहीं आती जिसके बूते पर किरन को छोड़कर, संध्या की हत्या के जुर्म में मिस्टर संजय को गिरफ्तार कर लूं—अगर मैंने ऐसी बेवकूफी की तो कोर्ट में इन्हें हत्यारा साबित करना मेरे लिए नामुमकिन हो जायेगा और फिर किरन के खिलाफ जो केस मैंने बनाया है उसमें गवाह तो आप हैं ही यानी कटहरे में खड़ी होकर आप जो चाहें वह कहने का पूरा मौका मिलेगा। यह सब भी कह सकती हैं जो इस वक्त कह रही हैं मगर मेरी राय के मुताबिक उससे कोई लाभ नहीं होगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि सरकारी वकील के सामने आप टिक नहीं सकेंगी।" त्रिवेन्द्रम ने कहा—"वह आपस पूछेगा कि जिस वक्त मिसेज भारद्वाज ने गिरफ्तार होने के बाद सारी कहानी सुनाई थी उस वक्त आपको मिस्टर संजय द्वारा डिस्कस किया गया प्लॉट और इनके कथित एक-चौथाई लिखे जा चुके उपन्यास की कहानी सेम होते हुए भी याद क्यों नहीं आई, तब आप क्या जवाब देंगी?"

"मेरा ध्यान ही उपन्यास की कहानी और डिस्कस पर नहीं गया।"

"उसके कुछ घण्टों बाद तुरन्त चला गया जब मैंने मिस्टर संजय को यह कहकर अपने घर से विदा किया कि जाइये, जो बकवास आप कर रहे हैं उसके हक में सबूत और गवाह लेकर आइये।"

"मुझे खुद संजय जी ने डिस्कस और उपन्यास की कहानी याद दिलाई थी।"

"खुद सोचिये मिस रूबी कि आपकी यह दलील कितनी खोखली है कि वह 'सेम' कहानी जो मिसेज भारद्वाज सुना रही थीं आप कुछ ही देर पहले पढ़कर चुकी थीं मगर आपको याद नहीं आई।"

बड़े ही दयनीय भाव से रूबी ने संजय की तरफ देखा।

त्रिवेन्द्रम कहता चला गया—"जो कुछ जिस ढंग से हुआ है उसकी रोशनी में अदालत इस नतीजे के अलावा किसी दूसरे नतीजे पर पहुंच ही नहीं सकती कि तुम्हारे और संजय भारद्वाज के बीच डिस्कस या किसी स्क्रिप्ट का कभी कोई अस्तित्व नहीं था, होता तो तुम उसी वक्त स्पष्ट करतीं जब किरन ने सारी कहानी सुनाई थी, तब न सुनाकर अब सुनाने का सीधा-सा अर्थ है कि सारा बयान बनावटी और झूठा है, यह तब अस्तित्व में आया जब मैंने मिस्टर संजय से गवाह की मांग की।"

त्रिवेन्द्रम के इन शब्दों के बाद उसके ऑफिस में सन्नाटा छा गया।

रूबी या संजय में से किसी के मुंह से बोल न फूटा—एक बार पुनः उन्हें अपने चारों तरफ अंधेरा-ही-अंधेरा नजर आ रहा था—कहीं रोशनी की कोई किरन नहीं, अचानक संजय ने कहा—"मैं किरन से मिलना चाहता हूं इंस्पेक्टर।"

"क्यों?" त्रिवेन्द्रम मुस्कराया—"क्या उस पर भी कुछ वैसा ही जादू चलाने का इरादा है जैसा मिस रूबी पर चलाकर इन्हें यहां लाये हैं?"

"मुझे उससे कुछ बातें करनी हैं।"

त्रिवेन्द्रम ने कंधे उचकाकर कहा—"मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है।"

□□□

कमरा लगभग पूरी तरह खाली था।

बीचों-बीच केवल दो कुर्सियां पड़ी थीं और देखने मात्र से ही इल्म होता था कि उन्हें कुछ ही देर पहले यहां डाला गया हो, एक दरवाजे के अलावा कमरे में कोई खिड़की या रोशनदान तक नहीं था।

फर्श और लैंटर की तरह सपाट दीवारें।

किरन को यहां छोड़कर जाने वाले हवलदार ने दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया था।

वह जानती थी कि इस कमरे का दरवाजा एक अन्य ऐसे ही खाली पड़े कमरे में खुलता है, उसमें कुर्सियां तक नहीं थी और उस कमरे का दरवाजा थाने के बरामदे में खुलता था।

बाहर वाले कमरे का दरवाजा बन्द होने की आवाज भी किरन ने सुनी।

वह समझ न सकी कि हवालात से निकलकर उसे अचानक यूं दूसरे दरवाजे के पीछे क्यों रखा गया है?

मगर।

कुछ बोली नहीं वह।

हवलदार से भी कुछ नहीं पूछा।

अपना बयान देने के बाद उसने पूरी तरह से खामोशी अख्तियार कर रखी थी।

एक कुर्सी पर बैठी अभी वह खुद को यहां कैद किये जाने का सबब सोच ही रही थी कि बाहर वाला दरवाजा खुलने की आवाज कानों में पहुंची।

वह एक झटके से उठकर खड़ी हो गयी।

बाहरी कमरे में पदचाप गूंजी, कोई इस कमरे के दरवाजे की तरफ बढ़ रहा था।

किरन का दिल असामान्य गति से धड़कने लगा। पदचाप उसे कुछ

परिचित-सी लगी थी और अभी वह ठीक से पदचाप के बारे में कुछ समझ नहीं पाई थी कि इस कमरे का दरवाजा भी खुला।

किरन की नजर बरबस ही उस तरफ उठ गयी।

और ।

दिल धक्क से रह गया।

उछलकर ठीक इस तरह कंठ में आ फंसा जैसे रबर की गेंद को किसी ने जोर से जमीन पर पटका हो।

अगले ही पल वह पलट गयी।

दरवाजे पर खड़े संजय की तरफ अपनी पीठ कर ली उसने।

दिल यूं गद्दे खाने लगा था मानो एक बार ऊंची उछलने के बाद गेंद अब जमीन पर लोटकर छोटे-छोटे गद्दे खा रही हो जबकि आगे बढ़ते हुए संजय ने भावुक स्वर में कहा, "य...ये क्या मजाक है किरन—क्या हिमाकत है ये, मेरे द्वारा किये गये जुर्म को अपनी आत्मा पर क्यों लाद लिया है तुमने?"

संजय उसके पीछे पहुंचा, बेहद नजदीक।

अपने दोनों हाथ उसने किरन के कंधे पर रखे ही थे कि किरन ने अपने कंधों को जोरदार झटका दिया, ऐसा कि संजय को यूं लगा जैसे उसके हाथ करेंटशुदा नंगे तारों पर रखे थे।

किरन उससे दो कदम दूर हट गयी, गुर्रायी—"मुझे छूने की कोशिश मत करो।"

"क...क्यों?" संजय का दिलो-दिमाग हाहाकार कर उठा।

"मैं तुम्हारे लायक नहीं रह गयी हूं।" एक-एक लफ्ज को चबाती हुई किरन ने कहा—"मैं हत्यारी हूं, अपनी सबसे प्यारी सहेली की हत्यारी—लालची और गहनों की दीवानी।"

"न...नहीं!" संजय चीख पड़ा—"क...कम-से-कम मेरे सामने तुम ऐसा नहीं कह सकती।"

"क्यों?" अचानक वह एक झटके से संजय की तरफ पलटी और मुखड़े पर मुकम्मल कठोरता लिए बोली—"जो सारी दुनिया को मालूम हो चुका है उसे तुम्हारे सामने क्यों नहीं कह सकती मैं?"

"हम सारी दुनिया को धोखा दे सकते हैं मगर एक-दूसरे को नहीं, यह बात जितनी अच्छी तरह मैं जानता हूं कि संध्या कि हत्या किसने की है उतनी ही अच्छी तरह तुम भी जानती हों।"

"संध्या की हत्या मैंने की है, मैंने।" किरन गुर्रायी—"उसे तुम अपने मत्थे मंढ़ने की कोशिश मत करो।"

"ऐसा तुम इसलिए कह रही हो किरन क्योंकि तुम्हारे मन में यह वहम है कि हमारी इन बातें को कोई तीसरा व्यक्ति सुन रहा होगा और अगर ऐसा हो गया तो तुम्हारे सारे बलिदान, सारी कुर्बानी पर एक ही

झटके में पानी फिर जायेगा मगर वास्तव में यह तुम्हारा वहम है—यहां हमारे बीच होने वाली बातों को कोई नहीं सुन सकता हवालात से तुम्हें यहां मेरी ही मांग पर लाया गया है—मैं तुमसे खुलकर बात करने का तलबगार था—जानता था कि ऐसे किसी भी स्थान पर तुम मुझसे खुलकर बात नहीं करोगी जहां तुम्हें यह वहम हो कि हमारी बातें कोई सुन सकता है मगर यकीन मानो, यह ऐसा स्थान नहीं है—तुम खुद जांच कर सकती हो, चाहकर भी इस कमरे में होने वाली बातें कोई नहीं सुन सकता—हम भीतरी कमरे में हैं, बाहर वाले कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द है। तुम खुद चेक कर सकती हो कि मेरे साथ अन्य कोई नहीं आया—बाहर वाले कमरे में कोई नहीं हैं, खुद देख सकती हो—उसके बाद हम इस कमरे का दरवाजा भी अन्दर से बन्द कर लेंगे—जाहिर है कि कमरे के दरवाजे से कान सटाकर उस स्थिति में हमारी बात कोई नहीं सुन सकता, किसी किस्म की खिड़की या रोशनदान तक कमरे में नहीं है।"

किरन अजीब-सी नजरों से उसकी तरफ देखती भर रही।

संजय कहता चला गया—"एक अन्य डर तुम्हें यह हो सकता है कि कहीं तुम्हारे मुंह से निकलने वाले लफ्ज टेप न कर लिये जायें। सो, यह डर भी दिल से निकाल दो क्योंकि पहली बात तो ये कि यहां कोई टेप नहीं है, दूसरे मेरी पत्नी होने के नाते तुम जरूर जानती होगी कि अदालत में टेप की कोई वैल्यू नहीं होती।"

किरन के चेहरे पर मौजूद भाव बता रहे थे कि बात उसके दिमाग में ठुक गयी है।

तब—

जबकि बाहरी कमरा चैक करने के बाद किरन ने स्वयं अन्दर वाले दरवाजे को बन्द करके चटकनी चढ़ाई, संजय ने कहा—"तुम जानती हो किरन कि संध्या की हत्या मैंने की है, नेकलेस का लालच तुम्हें नहीं मुझे था—मुझे मेरे किये की सजा भोग लेने दो, ये जो ड्रामा तुमने मुझे मेरे लिये—मेरी बेहतरी और हिफाजत के लिए शुरू किया है इसे खत्म कर दो—मैं तुम्हारे इस महान बलिदान के काबिल नहीं हूं किरन, मैं तुम्हारी कुर्बानी का हकदार नहीं हूं—जुर्म मैंने किया है, सजा भी मुझे ही मिलनी चाहिए।"

किरन पलटी।

उफ्फ...ठीक यूं लगा जैसे जख्मी नागिन ने झुंझलाकर अपने फन को लहराया हो।

उसका सम्पूर्ण चेहरा तमतमा रहा था।

खूबसूरत मुखड़े पर गुस्से और घृणा की आग सुलग रही थी।

चमकदार आंखों से लोहे को भी भस्म कर देने वाली चिंगारियां बरसाती किरन ठीक किसी नागिन की मानिन्द फुफकारी—"तो तुम इस खुशफहमी के शिकार हो कि किरन तुम्हें बचाने के लिए, तुम्हारी हिफाजत और बेहतरी के लिए अपना बलिदान दे रही है, खुद को कुर्बान कर रही है?"

थोड़ा चौंकते हुए संजय ने कहा—"मेरे द्वारा किये गये जुर्म में खुद को फंसाने के पीछे और क्या हो सकता है?"

"नहीं...तुम नहीं समझ सकते, तुम इसलिए नहीं समझ सकते संजय क्योंकि तुम इंसान नहीं हो—तुम जानवर हो, वहशी हो, दरिन्दे और नरपिशाच हो—संध्या की हत्या करके साबित कर चुके हो कि तुम्हारे सीने में दिल नहीं है—तुम इंसानी जज्बातों को नहीं समझ सकते, इंसानी संवेदनाओं का दूर-दूर तक तुमसे कोई वास्ता नहीं है—यही वजह है कि जो मैं कर रही हूं उसकी असली वजह तुम नहीं समझ सके।"

"क...कहना क्या चाहती हो किरन?"

"अगर मैं हकीकत खोल दूं तो कानून तुम्हें ज्यादा-से-ज्यादा क्या सजा देगा?"

"फांसी।"

"और तुम मर जाओगे, किस्सा खत्म।" किरन ने जहर उगला—"मगर नहीं, मैं तुम्हें इतनी आसानी से नहीं मरने दूंगी मेरे सुहाग—तुमने संध्या की हत्या की है, उस संध्या की जो मेरी सबसे पक्की सहेली ही नहीं बहन जैसी थी—अगर मैंने तुम्हें संध्या की हत्या के जुर्म में फांसी पर चढ़ जाने दिया तो तुम फट्ट से मर जाओगे, नहीं—वह तुम्हारी मुकम्मल सजा नहीं होगी—अगर मैंने तुम्हें इतनी आसानी से मर जाने दिया मेरे देवता तो संध्या की आत्मा मुझे कभी माफ नहीं करेगी वह चीख-चीखकर कहेगी कि उसके हत्यारे को इतनी कम सजा मैंने इसलिए होने दी क्योंकि हत्यारा मेरा पति था—वह मेरा गिरेबान पकड़ लेगी संजय और मुझे झंझोड़-झंझोड़कर चिल्लायेगी कि मैंने उसकी हत्या का बदला इसलिए नहीं लिया क्योंकि हत्यारा वह था जिसके लिए मैं अपनी मांग सजाया करती थी—मैं यह सब नहीं सुन सकती, मैं तुम्हें मुकम्मल सजा दिलाकर रहूंगी, ऐसी सजा जो तुम्हें पागल कर देगी।"

संजय देखता रह गया उसे।

उसे—

जो इस वक्त अपने नाग के हत्यारे से जूझ रही नागिन-सी लग रही थी।

मारे हैरत के संजय का बुरा हाल हो गया। सचमुच ऐसी कल्पना

वह नहीं कर पाया था कि संध्या की हत्या की प्रतिक्रिया में उसे किरन का यह रूप देखने को मिलेगा, और—"फांसी से बड़ी इस दुनिया में और क्या सजा है किरन?"

किरन ने पुनः जहर उगला—"सजा है मेरे राजा, तुम अभी समझ नहीं पा रहे हो।"

"वह कौन-सी सजा है किरन, प्लीज—मुझे बताओ अगर तुम्हारी ऐसी ही मर्जी है तो मैं उसी को भुगतने के लिए तैयार हूं।"

किरन ने अपना चेहरा ऊपर उठाकर गर्दन आगे की बोली—"यही वह गोरी और सुराहीदार गर्दन है ना जिसे तुम संध्या के नेकलेस से नवाजना चाहते थे। वह गर्दन यही है ना संजय जिसमें पचास लाख का नेकलेस देखने के लिए तुम दीवाने हो उठे थे, पागल हो गये थे, मरे जा रहे थे?"

"हा...हां किरन!"

"अब तुम्हें इस गर्दन में फांसी का फंदा देखना होगा।"

"न...नहीं—नहीं किरन!" दो कदम पीछे हटकर संजय हिस्टीरियाई अन्दाज में चीख पड़ा—"ऐसा मत कहो प्लीज—ऐसा मत कहो, मैं उस दृश्य को नहीं देख सकता।"

किरन यूं मुस्कराई जैसे नागिन अपने नाग के हत्यारे की अन्तिम चीखों पर मुस्कराती है, बोली—"जब मुझसे पूछा जायेगा कि मरने से पहले मेरी अन्तिम इच्छा क्या है तो मैं यह कहूंगी कि मेरा पति, मेरा सुहाग और मेरा देवता मेरी आंखें के सामने होना चाहिये।"

"न...नहीं—नहीं किरन!" संजय ठीक यूं छटपटा उठा जैसे मछली को गर्म रेत पर डाल दिया गया हो, बड़े मर्मान्तक लहजे में चीखकर गिड़गिड़ाया वह—"तुम ऐसा नहीं कर सकती, तुम ऐसा नहीं कर सकती किरन।"

"मैं ऐसा ही करूंगी मेरी चूड़ियों के सरताज।" किरन जहर उगलती चली गयी—"संध्या की आत्मा की शान्ति के लिए मुझे ऐसा करना होगा—तुम्हारी मुकम्मल सजा यही है, यह कि उस गर्दन में अपनी आंखों से फांसी का फंदा देखो जिसमें पचास लाख का नेकलेस देखने की ललक के वशीभूत संध्या की हत्या कर डाली—शायद तुम भूल गये संजय, मैंने कहा था कि अपनी चादर से बाहर पैर फैलाने वाले इंसान का अंजाम हमेशा बुरा ही नहीं बल्कि घृणित होता है।"

इस बार संजय के मुंह से बोल न फूटा।

अवाक्।

आंखें फट पड़ी थीं, मुंह खुला-का-खुला रह गया।

चेहरे पर हैरत का समुद्र ठहाके लगा रहा था।

ऐसी अवस्था हो गयी उसकी जैसे दिलो-दिमाग और जिस्म को लकवा मार गया हो। 'अहिल्या' की तरह पत्थर की शिला में तब्दील हो गया था मानो।

उसकी अवस्था का मजा लूटती हुई किरन कहती चली गयी—"मुझे उसी वक्त लगा था कि तुम्हारी नजर संध्या के नेकलेस पर 'टिक' चुकी है जिस वक्त उसकी मैरिज एनीवर्सरी की पार्टी से लौट रहे थे—उस वक्त जिस किस्म की बातें तुम कर रहे थे उनसे मुझे इल्म हो गया कि तुम्हारे दिमाग पर वैसा ही नेकलेस मुझे पहनाने का फितूर या सनक सवार हो चुकी है और फिर एक दिन तुमने ऐसी एक्टिंग की जैसे सचमुच तुम्हारे दिमाग से संध्या के नेकलेस का भूत उतर गया हो—तुमने मुझसे कहा कि मैं अपनी मम्मी की मदद से उसी कारीगर द्वारा संध्या के नेकलेस का डुप्लीकेट बनवा लूं जिससे मम्मी ने एक बार चूड़ियां बनवाई थीं—तुमने उस दिन यह कहा था कि मेरे गले में संध्या के नेकलेस का डुप्लीकेट देखकर ही सुकून हासिल कर लोगे—मैंने यह सोचकर तुम्हारी बात मान ली कि अगर इंकार करूंगी तो यह समझोगे कि मेरी ख्वाहिश असली नेकलेस की है—मैं तुम्हारे जाल में फंस गयी, नहीं समझ सकी कि तुम्हारी असली मंशा कितनी भयानक है—संध्या को वह बेहूदा सलाह तुमने मेरे सामने दी, मेरे ही साथ जाकर गोलियां चेंज कीं, साइलेंसर चुराया मगर उस वक्त मैं बेवकूफ न समझ सकी कि तुम कितना खतरनाक खेल खेल रहे हो—मैं तो स्वप्न में भी नहीं सोच सकती थी कि तुम इतने नीचे गिर जाओगे, इतने ज्यादा कि अपनी जरा-सी इच्छा पूरी करने के लिए हत्या जैसा जघन्य जुर्म कर बैठोगे?"

"त...तुम्हें कब और कैसे पता लगा कि मैंने संध्या की हत्या की है?"

जवाब में किरन के होंठों पर जहरीली मुस्कान उभरी, बोली—"तुम्हारी बातों के जाल में फंस जाने वाली बेवकूफ मैं जब थी, तब थी—अब नहीं हूं। अब मैं अच्छी तरह समझ चुकी हूं कि तुम्हारे कौन-से सवाल का जवाब देना है और कौन-से का नहीं?"

"क...क्या मतलब?"

"कम-से-कम मुझसे तुम अपने ऐसे किसी भी सवाल का जवाब नहीं पा सकते जिससे तुम्हें खुद को गुनहगार और मुझे बेगुनाह साबित करने में किसी किस्म की मदद मिल सके।"

एक बार पुनः संजय अवाक् मुद्रा में किरन को देखता रह गया। कुछ देर की खामोशी के बाद बोला—"यानी तुम नहीं बताओगी कि तुम्हें मेरे प्लान के बारे में कब और कैसे पता लगा?"

"किसी भी कीमत पर नहीं।" किरन ने कहा—"इसलिए नहीं क्योंकि मुझे तुमसे अपनी सहेली की मौत का बदला लेना है—मुकम्मल

प्रतिशोध—लाख कोशिशों के बावजूद तुम मुझे बचा नहीं सकोगे संजय, मुकम्मल सजा मिलकर रहेगी तुम्हें—अपनी बीवी की इस गोरी और सुराहीदार गर्दन में फांसी का फंदा तुम्हें देखना ही होगा।"

"न...नहीं!" संजय गुर्रा उठा—अचानक उसका चेहरा भभकने लगा था, गुर्राता चला गया—"ऐसा हरगिज नहीं होने दूंगा, किसी भी कीमत पर ऐसा नहीं हो सकता—दुनिया की कोई अदालत तुम्हें फांसी की तो क्या, एक पल की भी सजा नहीं सुना सकती।"

किरन प्रतिद्वन्द्वितापूर्वक मुस्कराई, बोली—"अदालत को कैसे रोकोगे?"

"इस दिमाग से!" उसने उंगली से अपनी कनपटी को ठकठकाया—"इस दिमाग से मैं सारे पासे पलट दूंगा किरन, अदालत में साबित कर दूंगा कि मुजरिम तुम नहीं मैं हूं।"

"और मैं ऐसा साबित नहीं होने दूंगी।" किरन की मुस्कान कुछ और ज्यादा जहरीली हो उठी।

"त...तुम—तुम पागलपन में मेरे दिमाग से टकरा रही हो—उस दिमाग से जिसने एक ऐसा प्लान तैयार करके संध्या की हत्या की कि मेरे खुद बार-बार कहने के बावजूद त्रिवेन्द्रम जैसा खुर्राट पुलिसिया यह मानने को तैयार नहीं है कि हत्या मैंने की है—जो दिमाग ऐसी स्कीम बना सकता है वह तुम्हारे खिलाफ मौजूद एक-एक सबूत और गवाह की 'धज्जियां' भी उड़ा सकता है किरन—जिसने संध्या के कत्ल की इतनी सुदृढ़ योजना बनाई वह किसी भी सूरत में तुम्हें फांसी के फन्दे तक नहीं पहुंचने देगा।"

"बड़ा भरोसा है अपने दिमाग पर?"

"दिमाग ही तो मेरी ताकत है।"

"तो जाओ, वह साबित करने की कोशिश करो जो चाहते हो और मैं वह साबित करने की कोशिश करूंगी जो मैं चाहती हूं।" चैलेंज देने के-से स्वर में किरन कहती चली गयी—"मेरा मकसद तुम्हें संध्या की हत्या के जुर्म में वह सजा देना है जो तुम्हें पागल कर देगी और तुम्हारा मकसद इस सजा से बचना है—तुम्हारी आंखों के सामने, खुद को फांसी के फंदे पर झुलाने के लिए मैं धरती-आकाश एक कर दूंगी, तुम मुझे रोक सकते हो तो रोको—मेरा दावा है संजय कि मेरी और अपनी इस जंग में तुम्हें शर्मनाक शिकस्त का मुंह देखना पड़ेगा।"

किरन का एक-एक शब्द सुनने के बाद संजय के मस्तिष्क में चींटियां सी रेंगने लगी थीं।

□□□

त्रिवेन्द्रम से कोई बात किये बिना संजय रूबी को साथ लेकर थाने

से बाहर निकल गया।

अजीब उत्तेजना से इस वक्त उसका चेहरा तमतमा रहा था, आंखें आग उगल रही थीं—अपनी फियेट को ड्राइव करता उस वक्त वह थाने से काफी दूर निकल आया था जब अगली सीट के बायें कोने में बैठी रूबी ने सवाल किया—"क्या आप किरन भाभी से हुई बातें त्रिवेन्द्रम की तरह मुझे भी नहीं बतायेंगे सर?"

"मेरे और किरन के बीच एक जंग छिड़ चुकी है रूबी!"

"ज...जंग?"

"हां, बड़ी अनोखी जंग है यह!"

रूबी ने माथे पर बल डालकर कहा—"मैं समझी नहीं।"

"उसका लक्ष्य मेरी आंखों के सामने उस गर्दन में फांसी का फंदा डालना है जिसमें मैंने पचास लाख का नेकलेस देखने की नाजायज ख्वाहिश की थी और मेरा लक्ष्य फांसी के उस फंदे को किरन की गोरी और सुराहीदार गर्दन से दूर हटाना है। देखना यह है रूबी कि इस जंग में फतह का बिगुल कौन बजाता है?"

"म...मैं अब भी कुछ नहीं समझी सर!"

"संध्या की हत्या के जुर्म में किरन मुझे ऐसी सजा देना चाहती है जिसे मैं हरगिज सहन नहीं कर सकता। नहीं रूबी—किरन द्वारा दी जाने वाली यह सजा मुझे कुबूल नहीं है। अगर वह कामयाब हो गई तो...तो वह ठीक कहती है—मैं सचमुच पागल हो जाऊंगा, अपने और लोगों के कपड़े फाड़ने लगूंगा—नहीं, मुझे किरन को कामयाब नहीं होने देना है रूबी। हर हाल में मुझे उसे नाकाम करना होगा—उसके इरादे बड़े भयानक हैं—जरूरत से ज्यादा खतरनाक हैं।"

"म...मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है, प्लीज...प्लीज सर—उनसे हुई सारी बातें मुझे क्रमवार, विस्तारपूर्वक बताइए।" रूबी गिड़गिड़ा-सी उठी।

और तब—

संजय ने उसे किरन से हुई बातें बताईं।

सुनकर दंग रह गई रूबी, बरबस ही कह उठी वह—"व...वाकई सर, किरन भाभी ग्रेट हैं!"

"क...क्या मतलब?" संजय गुर्रा उठा।

"मैंने भी वही सोचा था जो आप सोच रहे थे। यह कि उन्होंने आपको बचाने के लिए खुद को संध्या की हत्या के जुर्म में फंसा लिया है मगर नहीं, ऐसा नहीं है—उनके इस साहसिक कदम के पीछे एक ऐसी भावना है जिसकी मैं कल्पना तक नहीं कर सकी थी—एक आम इन्सान के दिल में इतनी पवित्र 'भावना' पनप ही नहीं सकती—किरन

भाभी ग्रेट हैं सर, वे कोई बलिदान नहीं कर रहीं—कोई कुरबानी नहीं दे रहीं—वे आपसे इन्तकाम ले रही हैं। अपनी सबसे प्यारी सहेली की हत्या का इन्तकाम और सजा...वाकई, जो सजा उन्होंने आपके लिए चुनी है वह पूरी तरह माकूल है—इससे कम सजा के हकदार नहीं हैं आप—फांसी आपके लिए सचमुच बहुत छोटी सजा है, ऐसी कि जिसे भुगतने के लिए आप खुद लालायित हो उठे हैं, भागे-भागे फिर रहे हैं—वह सजा भी कोई सजा होती है जिसे भुगतने के लिए इंसान पगलाया हुआ घूम रहा हो—नहीं, वह सजा नहीं कहलाती, सजा तो वह होती है जिससे इंसान बचता फिरे, जिसकी कल्पना तक से खौफ खाए और किरन भाभी ने आपके लिए ऐसी ही सजा तजवीज की है—मैं दुआ करूंगी कि ईश्वर उन्हें कामयाबी दे, इस जंग में फतह उन्हीं की हो!"

"र...रूबी!" संजय गुर्राया—"तुम पागल हो गई हो क्या?"

"यकीनन आपको इस वक्त वह हर शख्स पागल नजर आएगा जो उस सजा की हिमायत लेगा जिसकी कल्पना-मात्र से आपका कलेजा कांप रहा है, मारे खौफ के हलकान हुए जा रहे हैं आप!"

"तुम केवल मेरे बारे में सोच रही हो रूबी, किरन के बारे में नहीं सोच रही।"

"उनके बारे में क्या सोचूं?"

"उसे कौन-से गुनाह की सजा मिलेगी?"

"क्या मतलब?"

"संध्या की हत्या मैंने की है और फांसी पर वह चढ़ जाए, कहां का इंसाफ है यह—किरन ने क्या किया है जो कानून उसे फांसी पर चढ़ा दे और हम हकीकत जानने के बावजूद ऐसा हा जाने दें—क्या किसी भी बेगुनाह को फांसी पर चढ़ते देखकर हम या कोई भी व्यक्ति चुप रह सकता है? क्या हमें चुप रहना चाहिए—क्या हम कुछ चुपचाप देखते रहना हमारे द्वारा किया गया एक और अपराध नहीं होगा रूबी—कौन-सा तर्क, कौन-सी बुद्धि कहती है कि बेगुनाह को सजा होनी चाहिए?"

रूबी निरुतर हो गई, दिमाग चकराकर रह गया उसका।

□□□

"आप राजनगर के ही नहीं बल्कि पूरे मुल्क के विख्यात जासूस हैं मिस्टर चन्दोला।" संजय एक शानदार ड्राइंगरूम में बैठा, अधेड़ आयु के आकर्षक व्यक्ति से कह रहा था—"मुल्क का बच्चा-बच्चा जानता है कि आप जटिल-से-जटिल केस को चुटकी बजाते ही सिर्फ 'हल' नहीं बल्कि तार-तार कर देते हैं—आपके बारे में यह बात कहावत की तरह

प्रसिद्ध है कि जिस केस की इन्वेस्टीगेशन पर आप जुट गए उसका मुजरिम चौबीस घंटे से ज्यादा जेल की सलाखों के बाहर नहीं रह सकता—आमतौर पर यह कहा जाता है कि किसी भी व्यक्ति को देखते ही यह भांप लेने का आर्ट आपको देशभक्ति के रूप में मिला है कि वह व्यक्ति मुजरिम है या नहीं?"

अधेड़ आयु का व्यक्ति मुस्कराया।

बड़ी ही आकर्षक मुस्कराहट थी उसकी—नजरें संजय के चेहरे पर गड़ाकर बोला—"तुम लेखक हो, शब्दों का चुनाव अच्छा कर लेते हो।"

"क्या आपके ख्याल से कोई शख्स, कोई ऐसी योजना बनाकर किसी का कत्ल कर सकता है कि वह कभी पकड़ा ही न जा सके—यहां तक कि खुद चिल्ला-चिल्लाकर कहता रहे कि मैं मुजरिम हूं तब भी कोई न माने?"

"ऐसा हरगिज नहीं हो सकता।"

"मजे की बात यह है मिस्टर चन्दोला कि ऐसा हो रहा है।"

"कहां हो रहा है?"

"आपके इसी शहर में।" भावावेश में संजय कहता चला गया—"मैं आपको एक ऐसे शख्स का किस्सा शुरू से आखिर तक सुना सकता हूं—उस किस्से को सुनकर आपको यह बताना है कि मुजरिम ने कहां कौन-सी भूल-चूक या गलती की—ऐसा 'प्वाइंट' खोज निकालना है आपको जिसके बूते पर मुजरिम को कोर्ट में मुजरिम साबित किया जा सके।"

इस बार चन्दोला जोर से हंसा, बोला—"आप अपने नए नॉविल का प्लॉट डिस्कस करने आए हैं क्या?"

"नहीं वह नॉविल का प्लॉट नहीं।"

"खैर।" चन्दोला गम्भीर हो गया—"किस्सा बयान कीजिए।"

"एक बाप अपने बेटे को बेहद प्यार करता है, वह उसे डॉक्टर बनाना चाहता है।" कहने से शुरू होकर संजय ठीक उसी प्रकार चन्दोला को सबकुछ बताता चला गया जिस तरह रूबी से प्लॉट डिस्कस किया था—वह सब बताने के बाद अपनी मुकम्मल प्लानिंग बताई।

यह भी कि उसने सारा काम किस तरह अंजाम दिया?

चन्द्रोला ध्यानपूर्वक सुन रहा था।

संजय एक-एक प्वाइंट बताता चला गया और पूरा किस्सा बयान करने के बाद बोला—"अब स्थिति यह है कि असल मुजरिम आपके सामने बैठा है, अपने मुंह से बता रहा है कि उसने 'स्टैप-बाई-स्टैप' किस तरह जुर्म किया और आपको यह चुनौती दे रहा है कि साबित कीजिए कि मैंने जुर्म किया है—अगर इतने सबके बावजूद आप साबित नहीं

कर पाए तो आपके जासूस होने पर लानत है चन्द्रोला साहब—या आपको यह मानना पड़ेगा कि मुजरिम द्वारा 'भूल' वाला सिद्धान्त बकवास है और वे सब किंवदंतियां भी 'बोगस' हैं जो आपके लिए सारे मुल्क में प्रसिद्ध हैं अथवा मुझे फांसी के फंदे पर पहुंचाना होगा, साबित करना होगा कि मुजरिम मैं हूं।"

"यानी अगर मैं तुम्हें फांसी कराने में कामयाब नहीं हुआ तो मुझमें कोई टेलेन्ट नहीं है?"

"यकीनन।"

हल्की मुस्कान के साथ कहा चन्दोला ने—"यही मान लो।"

"क...क्या मतलब?" संजय उछल पड़ा।

"तुम मुझे मूर्ख नहीं बना सकते।"

"मैं समझा नहीं?"

"तुम्हारे कई परिचित मेरे भी परिचित हैं, उनसे सुना जरूर था कि शादी के बाद संजय भारद्वाज नाम का लेखक 'बीवी के नशे' में गुम हो गया है मगर यकीन नहीं आया था—आज, यकीन भी हो गया है—उसी नशे में टुन्न होकर तुम अपनी बीवी को बचाने के लिए खुद को बलि का बकरा बनाने की कोशिश कर रहे हो मगर ऐसी बेवकूफाना कोशिश कभी कामयाब नहीं हुआ करती मेरे बच्चे—तुम मुझे, इतने बड़े जासूस को बेवकूफ बनाने चले आये—लेखक होने के नाते अखबारों में छपे अपनी बीवी के बयान के आधार पर कहानी तुमने जबरदस्त गढ़ी है और भारी-भारी शब्दों के साथ पहले तुमने मेरा स्तुतिगान गया—उसके बाद मेरे टेलेन्ट को चुनौती देते हुए एक ऐसा काम सौंपा जो जड़ से गलत है, तुमने यह सोचा था संजय कि चन्दोला तुम्हारी चुनौती को सुनकर चढ़ जाएगा और तुम्हारी कहानी को साबित करने वाला कोई-न-कोई उलटा-सीधा प्वाइंट ढूंढ़ निकालेगा मगर तुम्हारा ख्याल गलत था बच्चे, चन्दोला जैसे जासूस इस ताव में नहीं आया करते और अगर आ भी जाए तो लाख सिर पटकने के बावजूद कोई सबूत या प्वाइंट पैदा नहीं कर पाएगा क्योंकि जासूस का काम प्वाइंट या सबूत पैदा करना नहीं बल्कि खोजना होता है और प्वाइंट रीयल वारदात में से खोजे जाते हैं, किसी लेखक की काल्पनिक कहानी में से नहीं।"

"न...नहीं।" रूबी कह उठी—"मैं गवाह हूं चन्दोला साहब कि इनकी कहानी काल्पनिक नहीं है, सचमुच ये हत्यारे हैं—अजीब चक्रव्यूह में फंस गए हैं ये—इन्हें आप जैसे किसी जासूस की मदद की जरूरत है।"

"सॉरी।" चन्दोला ने कहा—"मैं आपको और इन्हें अलग नहीं समझता।"

संजय ने भमकते स्वर में पूछा—"यानी आपको हन्डरेड परसेंट यकीन है कि मैंने आपको काल्पनिक कहानी सुनाई है?"

"बेशक!"

"और यह भी कि मैंने संध्या की हत्या नहीं की?"

"हत्या निर्विवाद रूप से किरन ने की है।"

"चलो रूबी!" कहने के साथ वह एक झटके के साथ खड़ा हो गया और ड्राइंगरूम से बाहर निकलने के लिए तैयार होकर चीखा—"हम गलत जगह आ गए, आपके जासूस होने पर लानत है चन्दोला साहब, मेरी सलाह है कि आज के बाद आप लोगों से खुद को इन्वेस्टीगेटर नहीं बल्कि घसियारा कहलवाया करें—जब आप उस शख्स को मुजरिम साबित नहीं कर सकते जो खुद अपने मुंह से बता रहा है कि उसने किस तरह जुर्म किया तो उसे क्या साबित करेंगे जिसका हर प्रयास कानून को धोखा देना रहता है—जो सामने नहीं आता, खुद को हमेशा पर्दे में रखता है।"

चन्दोला इस तरह मुस्कराकर रह गया जैसे लोग शराबी के चीखने-चिल्लाने पर मुस्कराते हैं।

□□□

संजय चन्दोला के ही नहीं बल्कि हर उस शख्स के पास गया जो उसकी नजर में इस किस्म के काम में मददगार साबित हो सकता था।

शहर के उस वकील से मिला 'फौजदारी' के मामलों का जिसे टॉप वकील माना जाता था।

न्यायाधीशों से मिला।

पत्रकारों और पुलिस कमिश्नर से बात की।

मगर नतीजा?

ढाक के तीन पात।

सबको अक्षरशः बताया कि संध्या की हत्या उसने कैसे की थी और कैसे उस जुर्म में किरन फंस गई परन्तु किसी ने यकीन नहीं किया। शायद इसलिए क्योंकि उन्हें संजय के अभेद्य किले में छेद करने के लिए कोई सुराख नहीं मिल रहा था—संजय का ख्याल था जितने लोगों से भी वह मिला है, सारा किस्सा सुनने के बाद उन्होंने खुद को किसी भी प्रकार की मदद करने में असमर्थ पाया।

और।

अपनी नाकामी को वे यह कहकर छुपा लेते थे कि उन्हें उनके किस्से पर यकीन ही नहीं आया है।

विदा होते वक्त झुंझलाहट और गुस्से में भरे संजय ने लगभग हरेक को वे ही शब्द कहे जो चन्दोला को कहे थे—यह बात अलग है कि खुद उसकी समझ में वह प्वाइंट नहीं आ रहा था जिसके बूते पर कोर्ट में दूध-का-दूध और पानी का-पानी किया जा सके।

□□□

संजय हर तरफ से निराश होने के बाद मेरे पास आया था।

इस वक्त हम जिन्दलपुरम् से केवल बीस किलोमीटर इधर थे और यह दूरी भी मेरी सफेद मारुति की तेज रफ्तार के कारण कम होती जा रही थी—जाने क्यों मुझे पूरा विश्वास था कि विभा जिन्दल इस सारे मामले की धज्जियां उड़ाकर रख देगी।

मेरे प्रिय पाठको, अब सारी कहानी मेरे, रूबी, त्रिवेन्द्रम और चन्दोला आदि की तरह आपके सामने भी है—आप विस्तारपूर्वक जान चुके हैं कि संजय ने किस योजना के साथ, किस तरह संध्या की हत्या की और फिर किस तरह उसकी हत्या के जुर्म में किरन पकड़ी गई—इस खबर को पढ़कर क्या आप जान सकते हैं कि वह प्वाइंट कौन-सा है जिसके आधार पर कोर्ट में साबित किया जा सके कि हत्या किरन ने नहीं संजय ने की है?

अगर आप जान सके हैं तो मेरी तरफ से बधाई स्वीकार करें।

नहीं जान सके हैं तो दस-पन्द्रह मिनट के लिए किताब को बन्द कर दें—सोचने का प्रयत्न करें—शुरू से अन्त तक की कहानी को एक बार पुनः अपने जहन से गुजारें और जो भी प्वाइंट सूझे उसे एक कागज पर लिख लें।

इसके बाद—

कहानी को अगले चैप्टर से पढ़ना शुरू करें।

आपके सामने शीघ्र ही वह प्वाइंट उजागर होगा।

'ला' की पढ़ाई पूरी करने के बाद मेरी और विभा की मुलाकात वर्षों बाद तब हुई जब मैं और मधु घूमने के उद्देश्य से इत्तफाक से जिन्दलपुरम् पहुंच गए थे—विभा अपने पति यानी अनूप जिन्दल के साथ हमें एक होटल में मिली।

तब...मुझे लगा कि विभा 'जिन्दल परिवार' की बहू बन चुकी है।

उस जिन्दल परिवार की जिसने जिन्दलपुरम् नामक औद्योगिक शहर की स्थापना की—जिन्दलपुरम् में रहने वाले लोगों में से अस्सी प्रतिशत लोग जिन्दल परिवार की किसी-न-किसी फैक्ट्री या मिल के वर्कर हैं।

अतः जिन्दलपुरम् के नागरिकों में जिन्दल परिवार की वह हैसियत है जो रियासतों के राज्य परिवार की होती थी—सारा जिन्दलपुरम् विभा को बहूरानी कहता है।

विभा नाम नहीं चाहती, प्रचार नहीं चाहती।

इसीलिए उसने मुझसे पूरी सख्ती के साथ कहा था कि जो कुछ मैंने जिंदलपुरम में देखा है उस पर कोई उपन्यास न लिखूं, मगर अपने अन्दर बैठे 'लेखक' के हाथों मैं मजबूर हो गया।

विभा की सख्त हिदायत के बावजूद साढ़े तीन घण्टे लिख डाला।

अब—

यह सोच-सोचकर मेरा दिल कांप रहा था कि साढ़े तीन घण्टे लिखने के अपराध में विभा मुझे क्या सजा देगी, उसके गुस्से की कल्पना करके भीतर-ही-भीतर थरथरा रहा था मैं।

□□□

किले जैसे द्वार के मस्तक पर लिखा था—'मन्दिर'।

वह इमारत किसी भी रूप में ताजमहल से कम खूबसूरत नहीं थी। ऊंची और संगमरमरी बाउंड्री-वाल ने कम-से-कम दो हजार गज के भू-भाग को घेर रखा था, बाउंड्री-वाल से घिरे भू-भाग के बीचों-बीच खालिस सफेद रंग के संगमरमरी सफेद पत्थरों से बनी पांच मंजिली इमारत सीना ताने खड़ी थी।

इमारत के चारों तरफ लॉन था। लॉन में जामुन, अशोक, देवदार, इलायची और शहतूत आदि के अनेक वृक्ष। घास ऐसी थी जैसे हरे रंग का मखमली कालीन बिछा हो—क्यारियों में सैकड़ों फूल वातावरण को महकाए हुए थे—हमारी गाड़ी पोर्च में रुकी और उसके रुकते ही बगुले की सी सफेद वर्दी पहने एक सेवक ने संजय की तरफ वाला दरवाजा खोला।

गाड़ी को लॉक करने के बाद मैंने उसे अपना कार्ड दिया।

वह कार्ड लेकर अन्दर चला गया।

वैसी ही वर्दी पहने एक अन्य सेवक हमें 'वेटिंग हॉल' की तरफ ले गया।

इमारत की दीवारों, थम्बों, गेलरियों और छातों में जड़े पत्थरों पर लिखी रामायण की चौपाइयों को संजय भौंचक्का-सा देखता जा रहा था, बोला—"इमारत पर सम्पूर्ण रामायण लिखी गई है ना वेद?"

"हां।" मैंने कहा।

"वाकई, साढ़े तीन घण्टे में तुमने इस इमारत के जर्रे जर्रे का एक्यूरेट चित्रण किया था।"

मैं केवल मुस्कराकर रह गया।

उस वक्त वेटिंग-हॉल में बैठे हमें मुश्किल से दस मिनट गुजरे थे कि गैलरी की तरफ से कई व्यक्तियों की पदचाप सुनकर नजरें उस तरफ उठ गयीं और जब एक बार नजरें उठीं तो फिर वहीं चिपककर रह गयीं। वहां विभा प्रकट हुई थी।

दूध से गोरे और पूर्णिमा के चांद से गोल मुखड़े वाली विभा।

इन्द्र के दरबार की मेनका-सी।

गुलाब की पंखुड़ियों से होंठ, सुतवां नाक, कंठ ऐसा जैसे कांच का बना हो—घने, काले और लम्बे बालों को अपने चौड़े मस्तक के आस-पास से पूरी सख्ती के साथ खींचकर एक जूड़ा बनाया हुआ था उसने मगर इसके बावजूद बालों की एक मोटी लट उसके दायें कपोल

पर अठखेलियां कर रही थी।

कमान-सी भवों के नीचे उसकी आंखें थीं।

मृगयनयनी।

उन आंखों में चमक थी, ऐसी दिव्य चमक कि अगर वह एकटक आपकी तरफ देखने लगे तो मेरी गारन्टी है कि दो सैकिण्ड से ज्यादा आप उससे आंखें न मिला पायेंगे। अपनी पलकें झुकानी पड़ेंगी आपको।

दिल में घबराहट-सी होने लगेगी।

भगवान ही जाने कि विभा के व्यक्तित्व में उसने ऐसा क्या जादू भरा था कि उसकी तरफ देखने वाले प्रत्येक व्यक्ति की आंखों में सिर्फ-और-सिर्फ श्रद्धा का भाव उभरता है।

अगाध श्रद्धा का।

उसके सुगठित शरीर पर इस वक्त सफेद साड़ी थी।

रेशमी।

हंस के जिस्म जैसी बेदाग।

उसी से मैच करता गोल गले का ब्लाउज।

ब्लाउज हाफ बाजू का था, गोरी और गोल कलाइयों में कोहनियों से ऊपर कसा हुआ था।

हम मंत्र-मुग्ध से उस तरफ देखते रह गये।

मैं ही नहीं, संजय भी।

अभी हम उसके जादू-भरे व्यक्तिव से बाहर नहीं निकल पाये थे कि हॉल में मन्दिर की घण्टियों की-सी पवित्रता और खनखनाहट लिए एक आवाज गूंजी—"हैलो वेद।"

"ह..हैलो!" मैं सकपकाया, हलक सूख चुका था।

वह हमारी तरफ बढ़ी।

श्रीकान्त, अमित और वीणा बॉडी-गार्ड की तरह उसके साथ थे।

मैं जानता हूं कि ये तीनों विभा के सहयोगी हैं—'साढ़े तीन घण्टे' में विभा द्वारा सौंपे गये छोटे-मोटे कामों को इन्होंने बड़ी खूबसूरती से अंजाम दिया था।

मेरे बेहद नजदीक पहुंचकर विभा ने पूछा—"कैसे हो वेद ?"

"ठ...ठीक हूं विभा, तुम सुनाओ।" मैं बड़ी मुश्किल से कह पाया।

"एकदम फाइन!" वह चहकी।

विभा हमेशा मुझसे इसी तरह बेतकल्लुफी के साथ मिलती है परन्तु मैं जाने क्यों हड़बड़ाने लगता हूं और अपनी इसी हड़बड़ाहट को छुपाने के लिए जल्दी से बोला—"इ..इनसे मिलो विभा, ये मेरे दोस्त हैं...."

"स...संजय—संजय भारद्वाज!" विभा ने मेरा वाक्य पूरा होने से पहले कहा।

और मेरे साथ-साथ संजय भी चौंक पड़ा, बोला—"अ...आप मेरा

नाम..."

"मैं तो यह भी जानती हूं कि तुम काम क्या करते हो?"

"क...क्या मतलब?"

"लेखक हो, वेद के हमपेशा दोस्त!"

संजय ने चकित स्वर में कहा—"क...कमाल है, हमारे बिना बताये आप मेरे बारे में इतना सब कैसे जान गयीं?"

जवाब में विभा हंसी, बड़ी ही मोहक हंसी थी वह—जैसे कलियां चटकी हों, बोली—"मेरे ख्याल से इसमें चकित रह जाने जैसी कोई बात नहीं है—फेमस नॉवलिस्ट हो तुम, प्रत्येक उपन्यास की बैक पर फोटो होता है।"

"ओह!" संजय का तरद्दुद दूर हुआ।

मैं बोला—"हम तुम्हारे पास एक बेहद उलझी हुई गुत्थी लेकर आये हैं विभा!"

"जरूर लाये होंगे!" विभा ने आत्मीयता के साथ कहा—"मगर काम की बात पर आने की कोशिश इतनी जल्दी मत करो—अभी आये हो, नहा-धोकर सफर की थकान दूर करो—डिनर लो, उसके बाद काम की बातें होंगी।"

मैं कहना चाहता था कि टाइम कम है मगर कह नहीं पाया—इस उम्मीद में संजय की तरफ देखा कि शायद वही इस बात को कहे परन्तु उसने भी नहीं कहा। हम दोनों में से कोई भी वह बात नहीं कह पाया जो कहना चाहते थे—इसकी वजह विभा के व्यक्तित्व के जादू के अलावा क्या हो सकती थी?

□□□

फ्रेश होने के बाद जब हम डिनर हॉल में पहुंचे तो दीवार पर करीब एक वर्ष की आयु के बच्चे का बहुत बड़ा फोटो देखकर चौंक पड़ा—फोटो सोने के फ्रेम में जड़ा हुआ था। अनायास मैंने पूछा—"यह फोटो किसका है विभा?"

"जूनियर अनूप है यह।"

"ज...जूनियर अनूप?" मैं उछल पड़ा। मस्तिष्क में एक विस्फोट-सा हुआ और इस विस्फोट के साथ याद कि अनूप की मौत के वक्त विभा प्रेग्नेंट थी, मुंह से निकला—"ओह, कहां है ये?"

"एक गुप्त स्थान पर इसकी परवरिश हो रही है।"

"ग...गुप्त स्थान पर क्यों?"

"इसके दादा यानी मेरे ससुर साहब की इच्छा के मुताबिक!" विभा ने बताया—"उनका कहना है कि मुल्क के अन्य बड़े घराने जिन्दल परिवार से ईर्ष्या करते हैं—शायद इसलिए कि बहुत कम समय में हमने

बिजनेस के मैदान में उन्हें मात दे दी है—आज बाजार में उनके प्रोडक्ट्स को जिन्दल प्रोडक्ट्स के सामने कोई हाथ तक लगाना पसन्द नहीं करता—पापा का कहना है कि वे बिजनेस के मैदान में पिटने की खुन्नस किसी दूसरी तरफ निकालने का प्रयास कर सकते हैं—ऐसे किसी नापाक इरादे में वे कामयाब न हो पायें इसीलिए विराट को गुप्त स्थान पर रखा गया है।"

"व...विराट....विराट नाम रखा है इसका?"

"हां।" विभा ने कहा—"पापा(ससुर) का कहना है कि विराट जिन्दल परिवार का ऐसा आखिरी चिराग है जिसे यदि कुछ हो गया तो जिन्दल परिवार का अन्त हो जायेगा इसीलिए इसकी हिफाजत के सख्त इन्तजामात हैं।"

इस प्रकार—

डिनर के दरम्यान काफी देर तक हम लोगों का विषय विराट रहा।

तब, जबकि हम उस कमरे में जाकर बैठे जिसे विभा का ऑफिस कहा जा सकता है, चमचमाती विशाल मेज के उस तरफ रिवॉल्विंग चेयर पर बैठी विभा ने कहा—"तुम लोग मेरे पास संध्या मर्डर केस के सिलसिले में आये हो ना?"

मैं चौंक पड़ा बोला—"त...तुम्हें कैसे मालूम?"

"अखबार में पढ़ चुकी हूं उस हत्या के जुर्म में पकड़ी जाने वाली संजय की पत्नी है।"

"ओह!" हम दोनों के मुंह से एक साथ निकला।

विभा कहती चली गयी—"उस केस के तुरन्त बाद तुम्हारे साथ संजय के यहां आने और तुम्हारे यह कहने मात्र से ही 'एक बेहद उलझी हुई गुत्थी लेकर आये हो' मैं समझ सकती हूं कि संजय को इस बात में शक है कि संध्या की हत्या इसकी बीवी ने की है।"

"सिर्फ शक नहीं विभा। संजय अच्छी तरह जानता है कि हत्या किरन ने नहीं की।"

"कैसे?"

मैंने विभा के इस सवाल का जवाब तुरन्त नहीं दिया बल्कि एक या दो पल चुप रहने के बाद बोला—"तुम्हारे इस सवाल का जवाब देने से पहले मैं कुछ और बातें कहना चाहता हूं।"

"बोलो।"

"अनूप की मौत के बाद आज तक तुम्हारे पास कितने केस आये होंगे?"

"आठ सौ से कुछ ज्यादा।"

"वे सभी तुमने हल कर लिए होंगे?"

"यकीनन।"

"क्या मतलब?"

"मैं जानना चाहता हूं कि उन आठ सौ केसों में तुमने क्या किया?"

"इसके अलावा और क्या कर सकती थी इन्वेस्टीगेशन करके। अपने दिमाग से प्रत्येक केस के मुजरिम को खोजा, उसे कानून के हवाले किया और जरूरत पड़ी तो खुद कोर्ट में उसने खिलाफ मुकदमा लड़कर सजा कराई।"

"यानी हर केस में तुम मुजरिम को तलाश करती रहीं?"

"जाहिर है।"

"मैंने भी अभी तक के हर उपन्यास में यही दिखाया है कि इन्वेस्टीगेटर किस तरह इन्वेस्टीगेशन करता हुआ मुजरिम तक पहुंचने की कोशिश कर रहा है—मेरे संजय जैसे साथी भी यही सब लिखते हैं। मैंने ऐसा कोई कथानक नहीं पढ़ा जिसमें इन्वेस्टीगेटर मुजरिम को खोजने के अलावा कोई दूसरा काम कर रहा हो—इसका मतलब यह है कि किसी भी लेखक की कल्पना तक किसी ऐसे कथानक का निर्माण न कर सकी जिसमें इन्वेस्टीगेटर मुजरिम की खोज करने के अलावा कुछ और कर रहा हो।"

"इन्वेस्टीगेटर के करने के लिए और होता ही क्या है?"

"मैं तुम्हारे पास एक ऐसा अद्भुत केस लेकर आया हूं विभा जिसमें तुम्हें वह करना होगा जो दुनिया के किसी इन्वेस्टीगेटर ने कभी नहीं किया—इस केस में तुम्हें मुजरिम को खोजने के लिए इन्वेस्टीगेशन नहीं करनी है क्योंकि मुजरिम तुम्हारे सामने होगा खुद अपने मुंह से बतायेगा कि उसने किस तरह हत्या की?"

"तो फिर केस में मेरे करने के लिए बचता ही क्या है?"

"बहुत कुछ बचता है विभा!" मैं कहता चला गया—"कोर्ट किसी के यह कहने मात्र से उसे हत्यारा नहीं मान लेता कि वह हत्यारा है, कानून सबूत मांगता है और इस बात का कोई सबूत खुद हत्यारे के पास भी नहीं है कि हत्या उसी ने की है।"

"क्या बात कर रहे हो वेद?" विभा जैसी शख्सियत उछल पड़ी।

मैं मुस्कराया, बोला—"हत्यारे का दावा है कि उसने कोई ऐसा सबूत छोड़ा ही नहीं है जिसके बूते पर कोर्ट में उसे हत्यारा साबित किया जा सके—हत्यारा तुम्हारे पास खुद आया है विभा, इस चैलेंज के साथ अगर तुममें टेलेन्ट हैं तो उसे कोर्ट में हत्यारा साबित करो।"

विभा ने सवाल किया—"कहीं तुम संजय को तो हत्यारा नहीं कह रहे हो?"

"बेशक!" मैंने एक नजर बगल में बैठे संजय पर डालने के बाद कहा—"संजय हत्यारा है।"

"ओह!" इस एकमात्र शब्द के साथ विभा के मुखड़े पर बड़ी तेजी

से सैकड़ों भावों का आवागमन हुआ और फिर पूर्णिमा का चांद किसी संगमरमरी स्टैचू की मानिन्द कठोर हो उठा—चमकदार आंखें संजय के चेहरे पर जम गयीं, नफरतयुक्त स्वर में एक-एक लफ्ज को चढ़ाती हुई वह बोली—"तो तुम हो संध्या के हत्यारे?"

मैं और संजय उछल पड़े।

विभा की तरफ कुछ इस तरह देखने लगे थे हम जैसे वह इस दुनिया की सबसे आश्चर्यजनक वस्तु हो। हैरत में डूबे स्वर में मैंने पूछा—"तुमने यह कैसे जान लिया कि संजय ने संध्या की हत्या की है?"

"मैंने अखबार पढ़ा था, किरन के गिरफ्तार होने का मुकम्मल विवरण था उसमें और उस विवरण को पढ़ते ही मैं समझ गयी कि वह बेगुनाह पकड़ी गई है, संध्या की हत्या उसने नहीं की।"

"अ...आप समझ गई थीं?" संजय के हलक से खुशी और हैरत में डूबी चीख निकल पड़ी।

"यकीनन!" विभा ने कहा—"बस यहीं अटक रही थी कि किरन ने जुर्म का इकबाल क्यों किया, सो—वह बात भी अब मेरी समझ में आ रही है—जुर्म का इकबाल उसने इसलिए किया क्योंकि हत्यारे तुम हो—उसके पति।"

"म...मगर अखबार में ऐसा क्या था जिसे पढ़कर आप समझ गयीं कि किरन बेगुनाह है?"

"एक नहीं, कई लूज प्वाइंट थे उसमें!"

"क...क्या प्वाइंट थे?" संजय चीख पड़ा, उतावला हो उठा था वह—मारे खुशी के पागल-सा होने को तैयार था, गिड़गिड़ा उठा—"प...प्लीज...प्लीज विभाजी, मुझे बताइये कि वे क्या प्वाइंट थे?"

"सबसे पहला प्वाइंट तो यह कि अखबार में दिये गये विवरण को पढ़ने मात्र से यह इल्म हो जाता है संध्या का हत्यारा बेहद चालाक और उलझे हुए दिमाग का मालिक है—छोटे-मोटे दिमाग का मालिक भंवर को फ्रेम करने की वह साजिश सोच ही नहीं सकता जिसका विवरण अखबार में है उस साजिश का विवरण पढ़ने मात्र से जाहिर है कि हत्यारा कोई ऐसा शख्स होना चाहिए जो एक्सट्रा इन्टेलीजेन्ट हो और दूसरी तरफ इसी विवरण में ऐसी बहुत सी बातें हैं जो किरन को एक्सट्रा-इन्टेलीजेन्ट तो क्या इन्टेलीजेन्ट भी शो नहीं करती बल्कि मूर्ख और बेवकूफ दर्शाती है।"

मैं मुंह-बाये विभा की तरफ देख रहा था।

जबकि मारे खुशी के पागल-से हुए जा रहे संजय ने पूछा—"व...वे कौन-सी बातें हैं विभाजी?"

"अखबार के मुताबिक इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम को लॉन में मौजूद छोटे-छोटे गड्ढों को देखकर पहली बार इल्म हुआ कि हत्या किसी

फीमेल ने की है वे गड्ढे लेडीज सैंडिल्स की एड़ियों से बने थे—इसी सैंडिल का धुंधला-सा निशान खिड़की की चौखट पर भी था और बाद में वे सैंडिल्स किरन के पैरों में पाई गयीं, यही सब किस्सा था ना?"

"हां।" संजय ने जल्दी से कहा।

"अजीब मजाक है।" विभा कह उठी—"वह शख्स जो कत्ल की योजना बनाने और उसमें भंवर को फंसाने के मामले में एक्स्ट्रा इन्टेलीजेन्ट नजर आता है वही क़त्ल करने ऊंची एड़ी की ऐसी सैंडिल्स पहनकर जाता है जिनसे लॉन में गड्ढे बन जाते हैं—ऐसी सैंडिल्स की एड़ियां ठोस लकड़ी की होती हैं, उन्हें पहनकर चलने मात्र से ठक-ठक की आवाज होती है—किरन को यह भी मालूम था कि जिस कमरे में उसे जाना है उसमें वह सो रही होगी जिसे कत्ल करना चाहती है और हल्की-सी आहट पर वह जाग भी सकती है—कत्ल करने से पहले उसे दराज से रिवॉल्वर निकालना था मगर फिर भी वह वे सैंडिल्स पहनकर गयी—यह मजाक नहीं तो और क्या है और उस अवस्था में तो यह मजाक दुनिया का सबसे बड़ा मजाक बन जाता है जब कोई यह भी कहे कि भंवर को फ्रेम करने की साजिश इसी किरन ने रची थी—इस किरन ने जिसे इतना भी नहीं मालूम कि उस कमरे में उसे क्रेपसोल के जूते पहनकर जाना चाहिए था ताकि जरा भी आवाज उत्पन्न न हो, संध्या की नींद उचट न पाये।"

"म...मार्वलस, यह एक मार्वलस प्वाइंट है विभा।" जोश में भरा मैं चीख पड़ा।

"नहीं!" विभा ने शान्त भाव से कहा—"कम-से-कम मेरे हिसाब से यह इतना मार्वलस प्वाइंट नहीं है जो किसी अन्य के दिमाग में आ ही न सके—अखबार पढ़कर मुझे इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम की बुद्धि पर तरस आया था, जी चाहा कि अगर वह सामने हो तो पूछूं कि इस बात पर उसने यकीन कैसे कर लिया कि संध्या की हत्या का सुदृढ़ प्लान और उसमें भंवर को फ्रेम करने की नायाब योजना वह किरन बना सकती है जिसे इतनी तमीज भी नहीं है कि ऊंची एड़ी की ऐसी सैंडिल्स पहनकर उस कमरे में कभी नहीं जाना चाहिए जिसमें वह शख्स सो रहा है जिसे आपको कत्ल करना है—नहीं वेद, मैं कभी नहीं मान सकती—अखबार पढ़ने के तुरन्त बाद मैंने त्रिवेन्द्रम से कहा था कि किरन हत्यारी नहीं है—संध्या की हत्या का प्लान बनाने और उसमें भंवर को फ्रेम करने वाला कोई और है, किरन किसी कीमत पर नहीं हो सकती।"

हम उसका चेहरा देखते रह गये।

"और एकमात्र यही प्वाइंट नहीं था।" विभा कहती चली गयी—"ऐसे और भी कई प्वाइंट्स थे जिनसे साफ-साफ नजर आता है

कि संध्या की हत्या किरन नहीं की बल्कि वह जानबूझकर खुद को फंसा रही है।"

"और कौन-से प्वाइंट्स हैं?" संजय उत्साहित होकर चीखा—"बताइये विभाजी प्लीज—उनकी तरफ हमारा ध्यान आकर्षित कीजिये।"

विभा ने जवाब नहीं दिया, चुपचाप संजय को घूरती रही वह जबकि मैं फख के साथ बोला—"मैंने तुमसे कहा था ना संजय कि विभा बेहद ब्रिलियेन्ट है—इस सारे मामले की धज्जियां उड़ाकर रख देगी यह जिसमें हमें कोई छेद ही नजर नहीं आ रहा था—देख लो यह धारणा तो विभा को केवल अखबार पढ़ने के बाद थी—अगर यही प्वाइंट त्रिवेन्द्रम के सामने रखा जाये तो वह हकला जायेगा, जवाब नहीं सूझेगा उसे जबकि विभा का कहना है कि ऐसे-ऐसे और कई प्वाइंट उसके दिमाग में हैं, वाकई—तुम जीनियस हो विभा।"

विभा अब भी कुछ नहीं बोली, केवल खूंखार नजरों से संजय को देखती भर रही जबकि संजय ने कहा—"आप चुप क्यों हैं विभाजी, बोलती क्यों नहीं—प्लीज, बताइये कि किरन और किन-किन प्वाइंट्स से बेगुनाह साबित हो सकती है?"

विभा ने मुझसे कहा—"वाकई वेद, तुम एक अजीब केस लेकर मेरे पास आये हो—इस खुशी में मैं तुम्हारी खता माफ करती हूं।"

"क...कौन-सी खता?"

"तुमने मेरे मना करने के बावजूद 'साढ़े तीन घण्टे' लिखा।"

"स...सॉरी विभा! मैं अपने अन्दर बैठे लेखक के हाथों मजबूर...।"

"कोई सफाई देने की जरूरत नहीं है, खता माफ हो चुकी है।" कहने के बाद उसने संजय की तरफ देखा, बोली—"तुम्हें यह गुमान है ना संजय कि तुमने एक परफैक्ट क्राइम किया है, इतना परफैक्ट कि कोई भी इन्वेस्टीगेटर तुम तक पहुंच नहीं सकता—तुमने कोई भूल-चूक या गलती नहीं की है?"

"हां।"

"यह तुम्हारा मुगालता है।"

"क्यों?"

"हालांकि मैंने अभी तक तुम्हारे मुंह से नहीं सुना कि तुमने क्या-क्या किस तरह किया मगर जितने तथ्य अभी तक मेरी नॉलिज में आये हैं उनके आधार पर दावे के साथ कह सकती हूं कि तुमने कोई-न-कोई ऐसी जबरदस्त भूल जरूर की है जिसका दामन पकड़कर बेवकूफ-से-बेवकूफ इन्वेस्टीगेटर भी तुम तक पहुंच सकता था।"

"आप ऐसा किस आधार पर कह सकती हैं?"

"क्योंकि पूरी तरह बेगुनाह होने के बावजूद किरन तुम्हारे द्वारा किये गए जुर्म में खुद को इस हद तक फंसाने में कामयाब हो गयी कि तुमने उसे खुद को बेगुनाह साबित करने में असमर्थ पाया।"

"मैं समझा नहीं?"

"किसी अन्य के द्वारा किए गये जुर्म में कोई अन्य व्यक्ति खुद को इस हद तक केवल एक ही कण्डीशन में फंसा सकता है और वह एकमात्र कण्डीशन यह होगी कि वह पूरी तरह जान गया हो कि हत्यारे ने किसी योजना के साथ, किंस तरह हत्या की है यानी किस माध्यम से किरन तुम्हारा पूरा प्लॉन जान गयी थी।"

"यह तो जाहिर ही है।" संजय ने कहा—"अगर वह मेरा प्लान न जानी होती तो कैसे जान सकती थी कि अलका के फ्लैट की चाबी कहां रखी रहती है—नकाब, चोगा और दस्ताने मैंने कहां प्लांट किये हैं, वह त्रिवेन्द्रम को कैसे बता सकती थी कि अलका और भवर को फोन पर....."

"यानी मानते हो कि किरन 'किसी तरह' तुम्हारा मुकम्मल-प्लान जान गयी थी?"

"यकीनन।"

"अगर तुमने कोई भूल-चूक या गलती न की होती तो वह तुम्हारा प्लान कैसे जान सकती थी?" विभा ने अपने एक-एक शब्द पर जोर दिया—"वह जान गयी, इसी से जाहिर है कि तुमसे कोई-न-कोई जबरदस्त भूल जरूर हुई थी, उसी भूल के कारण किरन को सबकुछ पता लगा।"

मैं और संजय विभा के मुखड़े को देखते रह गये। कई पलों तक हमारे मुंह से बोल न फूट पाया। बड़ी मुश्किल से मैंने सवाल किया—"आखिर संजय की वह जबरदस्त भूल क्या थी?"

"इस सवाल का जवाब मैं तुम्हारा पूरा प्लान सुनने के बाद दे सकती हूं।"

"म...मैं आपको सब कुछ बताने के लिए तैयार हूं।"

"जी तो चाहता है कि तुमसे कुछ न सुनूं और ठीक उसी तरह इन्वेस्टीगेशन पर निकल पड़ूं जैसे मुझे मालूम ही ना हो कि संध्या का हत्यारा कौन है और अन्त में वह सब मैं तुम्हें सुनाकर तुम्हारा यह वहम दूर करूं कि तुमने एक परफैक्ट क्राइम किया था जो तुम मुझे सुनाना चाहते हो मगर अफसोस कि अब वह सब नहीं हो सकता क्योंकि तुम बता चुके हो कि हत्यारे तुम हो—अतः विस्तारपूर्वक अपनी करतूत बयान करो।"

इजाजत मिलते ही संजय शुरू हो गया।

एक बार फिर वह सारा किस्सा अक्षरशः बयान करता चला गया

जो त्रिवेन्द्रम, रूबी, चन्दोला, मेरे और न्यायाधीश व पुलिस कमिश्नर आदि के सामने बयान कर चुका था।

विभा ध्यानपूर्वक सुनती रही।

सुनने के बाद उसके होंठों पर बड़ी अजीब मुस्कान उभरी, बोली—"हालांकि पूरा किस्सा सुनने के बाद तुम्हारे दिमाग का लोहा मानना पड़ता है मगर इसके बावजूद तुमने एक नहीं बल्कि एक से ज्यादा भूलें कीं।"

"म...मैं उन भूलों के बारे में जानना चाहता हूं।"

"जरूर बताऊंगी।" विभा ने टालने वाले अन्दाज में कहा और फिर मेरी तरफ देखती हुई बोली—"तुम्हें यह जानकर खुशी होगी वेद कि मैं तुम्हारे लाए हुए इस केस को अपने ऑफिस की इसी कुर्सी पर बैठी-बैठी, बिना कहीं गए लगभग हल कर चुकी हूं।"

"ह...हल कर चुकी हैं?" संजय उछल पड़ा।

मैं बोला—"मैं किसी ऐसे ही करिश्मे या चमत्कार की उम्मीद लेकर यहां आया था और मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इसको हल कर चुकी होगी मगर फिर भी, मैं नहीं समझ पाया कि हल क्या है—अतः जानना चाहता हूं कि तुम कोर्ट में कैसे साबित करोगी कि हत्या किरन ने नहीं संजय ने की है?"

"मेरा दिमाग अधिकांश सवालों के जवाब पा चुका है मगर अभी कुछ सवाल ऐसे हैं जो खुद मेरे जहन में सवालिया निशान बनकर अटक गए हैं—ऐसा लग रहा है कि उन सवालों के जवाब मुझे और तुम्हें ही नहीं बल्कि संजय को भी हैरान कर देंगे।"

"आखिर कौन-से सवाल हैं वे?"

"उनका जवाब पाने मुझे राजनगर चला होगा—त्रिवेन्द्रम, किरन और रूबी से बात करनी होगी।"

"मैं समझ गया कि जब तक विभा अपने दिमाग में अटके एक-एक सवाल का जवाब न पा ले तब तक मेरे या संजय के किसी भी सवाल का जवाब देने के मूड में नहीं है अतः बोला—"ठीक है, राजनगर चलो।"

"सुबह चलेंगे।" कहने के बाद वह उठकर खड़ी हो गई।

□□□

संजय खुश था।

शायद इसलिए क्योंकि मेरी तरह उसे भी विश्वास हो चला था कि विभा इस सारे मामले की बखिया उधेड़कर रख देगी—यह अहसास उसे रोमांचित किए दे रहा था कि विभा की वजह से किरन और उसके बीच छिड़ी जंग में उसकी फतह निश्चित हो चुकी है।

कैसा अजीब वाकया था?

एक मुजरिम खुद को मुजरिम साबित करने के लिए पगलाया जा रहा था।

अगले दिन—

राजनगर पहुंचते ही विभा सबसे पहले रूबी से मिली—उससे किरन की गिरफ्तारी, किरन के बयान और उसके द्वारा चोगा, दस्ताने, नकाब और पेचक आदि बरामद कराए जाने का पूरा किस्सा विवरण सहित सुना।

सुनकर गुलाब की पंखुड़ियों पर नृत्य करती मुस्कान कुछ और गहरी हो गई।

इसके बाद वह मुझे, संजय और रूबी को साथ लिए थाने पहुंची। त्रिवेन्द्रम के पास।

संजय ने उसे मेरा और विभा का परिचय दिया।

कम-से-कम दोनों के नाम से त्रिवेन्द्रम पहले ही परिचित था और विभा से तो इस हद तक कि सुनते ही एक झटके के साथ कुर्सी से खड़ा हो गया। थोड़ा हड़बड़ाता हुआ सम्मानपूर्वक बोला—"स...सॉरी, मैं आपको पहचान नहीं पाया बहूरानी—आप खड़ी क्यों हैं, बैठिए ना?"

हम चारों मेज के इस तरफ पड़ी कुर्सियों पर बैठ गए।

त्रिवेन्द्रम ने चाय का ऑर्डर दिया और कुछ देर की खामोशी के बाद बोला—"आपको संजय के साथ देखकर मैं समझ सकता हूं कि इन्होंने आपको भी वही सब कहानी सुनाई होगी जो सारी दुनिया को सुनाते फिर रहे हैं।"

"बेशक।"

"अब आप ही समझाइये इन्हें कि बिना किसी सबूत के इनकी कहानी पर कैसे यकीन कर लिया जाए?"

विभा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मुझे मुकम्मल यकीन आ चुका है कि संजय द्वारा कहा गया एक-एक लफ्ज सच है और सच के अलावा कुछ नहीं है।"

"क...क्या मतलब?" त्रिवेन्द्रम उछल पड़ा।

"क्या तुम मुझे यह बताने का कष्ट करोगे इंस्पेक्टर कि संजय यह सब क्यों कह रहा है?"

"अपनी बीवी को बचाने के लिए, उसके नशे में टुन्न है ये।"

"शायद इसी पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर तुमने मिस्टर संजय के बयान पर गौर नहीं किया।"

"माफ कीजिए बहूरानी, खूब गौर किया है मैंने।" त्रिवेन्द्रम थोड़ा उत्तेजित-सा नजर आने लगा था—"मिस्टर संजय द्वारा सुनाई गई कहानी सिर्फ कहानी है—तथ्य की उसमें कोई बात नहीं है—मुझे इनकी कहानी में ऐसा एक भी सबूत, एक भी प्वाइंट नहीं मिला जिससे यह

इल्म होता कि ये सच बोल रहे हैं।"

"और इनकी वही कहानी सुनने के बाद हमें कोई ऐसी वजह नजर नहीं आई जिसके कारण इन्हें झूठा मान लिया जाये।" विभा कहती चली गयी—"जगह-जगह ऐसे प्वाइंट बिखरे पड़े हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि इनके द्वारा कहा गया एक-एक लफ्ज सच है।"

त्रिवेन्द्रम ने हैरतअंगेज स्वर में पूछा—"ऐसे कौन से प्वाइंट नजर आ रहे हैं आपको?"

"तुम्हारे ख्याल से संजय ने अपनी सारी कहानी अखबार में पढ़ने के बाद गढ़ी है ना?"

"जी हां।"

"क्या अखबार में किसी हेयर-बैण्ड की बरामदगी का जिक्र था?"

"जब बरामद हुआ ही नहीं तो जिक्र कहां से होता?"

"यानी नहीं था।" विभा अपने एक-एक शब्द पर जोर दे रही थी—"अखबार में यह जिक्र भी नहीं था कि रिवॉल्वर लाश के हाथों में से बरामद हुआ, बल्कि यह जिक्र था कि वह किरन के पास से मिला।"

"अखबार में वही सब था बहूरानी जैसा वास्तव में हुआ था।"

"यानी कि संध्या के बैडरूम से तुम्हें किसी टूटे हुए गिलास के टकड़े भी नहीं मिले?"

"कांच का एक किरचा भी नहीं था वहां।"

"फिर मिस्टर संजय किस आधार पर कह रहे हैं कि ये तीनों चीजें संध्या के बेडरूम से मिलनी चाहिये थीं?"

"भगवान ही जाने किस आधार पर कह रहे हैं?" त्रिवेन्द्रम थोड़ी ऊबी हुई-सी अवस्था में कहता चला गया—"मेरा ख्याल तो यह है कि अपने बयान से ये व्यर्थ ही पुलिस और आप जैसे लोगों को भ्रमित करना चाहते हैं।"

"तुम एक ही सांस में दो विपरीत बातें कह रहे हो इंस्पेक्टर, जरा गौर करो—एक तरफ तुम यह मानकर चल रहे हो कि अखबार पढ़ने के बाद संजय ने किरण को बचाने और खुद को फंसाने के लिए कहानी गढ़ी दूसरी तरफ यह कह रहे हो कि ये इन्वेस्टीगेटर्स को भ्रमित करने का प्रयास कर रहे हैं—गौर से सोचो, अगर ये खुद को फंसाना चाहते हैं तो तुम्हें भ्रमित करने का प्रयास क्यों कर रहे हैं? तुम्हें भ्रमित करके तो ये फंसने से रहे?"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा बहूरानी कि आप क्या कह रही हैं?"

"बड़ी मोटी-सी बात कहना चाहती हूं मैं, यह कि खुद को झूठ-मूठ फंसाने का प्रयत्न करने वाला शख्स जो कहानी गढ़ेगा वह ऐसी होगी जिसे सुनते ही सामने वाला उस पर यकीन कर ले और उसके लिए यह

जरूरी है कि वह अपनी कहानी उन तथ्यों और सबूतों को एक धागे में पिरोता हुआ गढ़े जो उसकी नॉलिज में पुलिस को मिले हैं—उन चीजों का तो वह जिक्र भी नहीं कर सकता जो घटनास्थल से पुलिस को नहीं मिली हैं क्योंकि पहले ही सोच लेगा कि यदि उसने ऐसा कहा तो पुलिस इस आधार पर उसके बयान को बोगस करार दे देगी कि ये सब चीजें घटनास्थल पर मिली ही नहीं जिनका वह जिक्र कर भी नहीं कर रहा है यानी एक झूठा शख्स किसी भी हालत में उन एक्सस्ट्रा चीजों का जिक्र नहीं कर सकता जो पुलिस को नहीं मिली हैं—एक्स्ट्रा चीजों का जिक्र एक सच्चा व्यक्ति ही कर सकता हैं इंस्पेक्टर,...जो मन-ही-मन यह सोचकर चौंक पड़ा हो कि वे चीजें घटनास्थल से पुलिस को क्यों नहीं मिलीं जिन्हें वह खासतौर पर छोड़कर आये था—संजय द्वारा एक्स्ट्रा चीजों का जिक्र ही इस बात का द्योतक है कि ये कहीं-न-कहीं सच बोल रहे हैं।"

त्रिवेन्द्रम के चेहरे पर मौजूद भाव तब्दील होने लगे थे। होते क्यों नहीं—विभा की बात की गहराई जब मेरी रूबी और संजय की समझ में आ रही थी तो त्रिवेन्द्रम की समझ में क्या नहीं आ रही होगी?"

हैरानगी के साथ मुंह फाड़े वह विभा को देख रहा था, ऐसी मुद्रा थी उसकी जैसे दुनिया के सबसे बड़े आश्चर्य को देख रहा हो जबकि विभा कहती चली गयी—"यह एक प्वाइंट था जिससे नजर आता है कि मिस्टर संजय सच बोल रहे हैं—हालांकि इस प्वाइंट को प्रभावित करने के लिए मैं शायद एक सबूत भी पेश कर सकती हूं मगर उस पर बाद में चर्चा करेंगे पहले संजय की कहानी में छुपे दूसरे प्वाइंट पर आते हैं।"

"द...दूसरे प्वाइंट पर?" त्रिवेन्द्रम हकला गया था।

"रूबी का कहना है कि संध्या की हत्या से पहले मिस्टर संजय ने इससे ठीक ऐसा ही एक प्लॉट डिस्कस..."

"यह बक रही है बहूरानी!" त्रिवेन्द्रम चीख पड़ा।

"क्यों बक रही है?"

"भगवान जाने, यह गवाही मिस्टर संजय ने तब पैदा की जब मैंने इनसे सबूत या गवाह मांगे—यह मिस्टर संजय की सैक्रेट्री है, मिस्टर संजय इससे मनचाही गवाही दिला सकते हैं—ऐसा मिस्टर संजय पैसे के बल पर कर सकते हैं या मुमकिन है कि मिस रूबी संजय की हमदर्द और शुभचिन्तक हों?"

"क्या तुम्हारा कोई हमदर्द या शुभचिन्तक तुम्हारे कहने से पुलिस के सामने या कोर्ट में यह कह सकता है कि तुमने फलां आदमी की हत्या की है?"

"क...क्या मतलब?" त्रिवेन्द्रम सकपका गया।

विभा मुस्करायी, बोली—"मेरे ख्याल से नहीं कहेगा और अगर कहेगा तो वह तुम्हारा हमदर्द और शुभचिन्तक नहीं बल्कि दुश्मन होगा—हमदर्द और शुभचिन्तक तुम्हारे कहने से यह बयान तो दे सकते हैं कि तुमने हत्या नहीं की, भले ही वे जाने हो कि तुम हत्यारे हो मगर यह बयान नहीं दे सकते कि तुम हत्यारे हो और वह भी उस स्थिति में जबकि वे जानते हों कि तुम हत्यारे नहीं हो।"

"ऐसा बयान रूबी पैसे के लिये तो दे सकती है ना?"

"रूबी के बारे में ऐसी कल्पना तुम कर सकते हो, मैं नहीं!" विभा ने कहा—"पिछले दस साल से संजय की सैक्रेटी है और दस साल यदि आदमी किसी जानवर के सम्पर्क में भी रह जाये तो इतना प्यार तो उससे हो ही जाता है कि उसकी मौत पर आंखें नम हो उठें—मैं यह तो मान सकती थी कि हमदर्दी या पैसे के लिए रूबी पुलिस के समक्ष अपने बॉस के फेवर का बयान देने के लिए तैयार हो गयी मगर यह नहीं मान सकती कि पैसे के लिए अपने बॉस को फांसी कराने के लिए तैयार हो गयी।"

"मुझे इस बात का ठोस सुबूत चाहिए बहूरानी कि मिस्टर संजय का बयान सच है।"

"ठोस सबूत अलका दे सकती है।"

"अ...अलका?" त्रिवेन्द्रम चौंका।

"फोन करके उसे यहां बुला लीजिये।"

"म...मगर—वह भला क्या प्रमाण दे पायेगी?"

"जो देगी, आपके सामने देगी—बुला लीजिए उसे।"

त्रिवेन्द्रम ने अलका को फोन किया।

मैं, रूबी और संजय खुद चकित थे—समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर अलका के पास ऐसा क्या सुबूत हो सकता है जिससे संजय का बयान सच हो जाये—अलका से बात करने के बाद त्रिवेन्द्रम ने रिसीवर रखते हुए कहा—"वह तुरन्त तैयार होकर यहां पहुंच रही है।"

"तब तक मैं इस बात पर विचार कर लेते हैं कि किरन की स्वीकारोक्ति में कितना दम है?" विभा बोली।

"क्या मतलब?" त्रिवेन्द्रम एक बार पुनः चौंका।

विभा ने सैंडिल वाले प्वाइंट को स्पष्ट करते हुए पूछा—"तुमने यकीन कैसे कर लिए कि किरन भंवर को फ्रेम करने वाली नायाब प्लानिंग की रचयिता हो सकती है?"

जवाब नहीं सूझा उसे और अभी किंकर्त्तव्यविमूढ़ अवस्था में ही था कि विभा ने दूसरा प्वाइंट उठा दिया—"जिन्दलपुरम् में मिस्टर संजय के मुंह से मुझे यह पता लगा था कि किरन ने अपने गुनाह की

स्वीकारोक्ति किस तरह की—वह सारी घटना इसे रूबी से पता लगी थी अतः यहां पहुंचने के बाद खुद रूबी से सारा वृत्तांत मैंने विस्तारपूर्वक सुना—वह वृत्तांत याद करो इंस्पेक्टर जब किरन यह बता रही थी कि उसने अलका और भंवर की रिसेप्शनिस्ट से कितनी बार और क्या बातें कीं—रूबी ने मुझे बताया कि यह बात किरन ने नहीं कहीं थी कि जिस वक्त उसने भंवर के ऑफिस में फोन किया उस वक्त भंवर ऑफिस में नहीं था।"

"और किसने कही थी?"

"तुमने!" विभा बोली—"याद करो, यह बात तुमने कही थी—शायद इसलिए क्योंकि भंवर के बयान से तुम पहले ही जान चुके थे कि फोन आने के वक्त भंवर अपने ऑफिस में नहीं था और तुम्हारे यह कहने पर थोड़ी सकपकाती हुई किरन ने स्वीकार किया था कि हां, भंवर उस वक्त ऑफिस में नहीं था—ऐसा ही हुआ था ना?"

दिमाग पर जोर डालने के बाद त्रिवेन्द्रम ने कहा—"हां, ऐसा ही हुआ था।"

"इसके बाद किरन तब सकपकाई जब तुमने यह कहा कि उसने यह पुष्टि करने के लिए भंवर के ऑफिस में दूसरी बार फोन किया था कि भंवर को उसने द्वारा अलका के नाम से छोड़ा गया मैसेज मिल गया है या नहीं—किरन ने पुनः सकपकाकर कहा कि हां उसने दुबारा भी फोन किया था—याद कीजिये, जब वह बता रही थी कि संध्या का कत्ल करने के बाद डिफैंस कॉलोनी से सीधी अपनी कोठी पहुंची तो तुमने उस बीच में टोका था, कहा था कि आप भंवर के ऑफिस में फोन करती हुई अपनी कोठी पर पहुंची—सकपकाकर उसने पुनः हां कही—जरा सोचो इंस्पेक्टर, इस वृत्तान्त में वह जगह-जगह सकपका क्यों रही थी? उसने खुद क्यों नहीं कहा कि अपनी कोठी पर पहुँचने से पहले उसने भंवर के ऑफिस में यह जानने के लिए दुबारा फोन किया था कि मैसेज उसे मिला है या नहीं?"

"कहना क्या चाहती हैं, आप?"

"साफ जाहिर है कि उसे नहीं मालूम था कि जब भंवर के ऑफिस में पहली बार फोन किया गया तो वह ऑफ़िस में नहीं था। उसे इस बात का भी पता नहीं था कि भंवर के ऑफिस में दुबारा फोन किया गया—जब तुमने कहा तो सकपकाकर हां-में-हां मिला दी।"

"मगर मैसेज के बारे में जानती थी वह।"

"यही तो मैं कहना चाहती हूं इंस्पेक्टर समझने की कोशिश करो—किरन को केवल वह मालूम था जो संजय ने अपने प्लान वाले कागजों में लिख रखा था—यह उम्मीद उसे भी नहीं थी कि जब यह

एक चालीस पर भंवर के ऑफिस में फोन करेगा तो वह वहां नहीं होगा अतः यह सब कागजों में नहीं लिखा था—दुबारा फोन करने का विचार संजय के दिमाग में तत्काल आया था इसलिए किरन यह नहीं जानती थी कि भंवर के ऑफिस में दुबारा फोन किया गया।"

"आप यह कहना चाहती हैं कि किरन को सिर्फ वह मालूम था जो मिस्टर संजय ने अपने कथित कागजों में लिख रखा था?"

"उक्त घटना से यह स्पष्ट है।"

"मैं एक बार फिर यही सवाल करूंगा कि वे कागजात किरन ने कब, और कैसे पढ़ लिये?"

"हालांकि इस सवाल का अनुमानित जवाब मैं अभी दे सकती हूं और गारन्टी से यह भी कह सकती हूं कि मेरा अनुमान एकदम दुरुस्त है मगर दूंगी नहीं क्योंकि अनुमानित जवाब से तुम सन्तुष्ट नहीं होगे—तुम तब सन्तुष्ट होगे जब इस सवाल का जवाब खुद किरन देगी, मैं उसे इस बात का जवाब देने के लिए मजबूर कर दूंगी।"

जवाब में त्रिवेन्द्रम के कुछ कहने से पहले ही वहां अलका पहुंच गयी।

परिचय आदि के बाद उसे एक कुर्सी पर बैठाया गया। चेहरे पर उलझन के भाव थे—शायद अलका यह सोच-सोचकर परेशान थी कि उसे क्यों बुलाया गया है, उसके बालों में लगे हेयर-बैण्ड पर नजर टिकाती हुई विभा ने कहा—"लगता है मिस अलका कि आपको बालों में यह विशेष किस्म का हेयर-बैण्ड लगाने की आदत है?"

"ज...जी हां।" असमंजस में फंसी अलका ने जवाब दिया।

"आपका यह हेयर-बैण्ड जो इस वक्त आपने लगा रखा है, आपके जिस्म पर मौजूद कपड़ों से पूरी तरह मैच कर रहा है।" विभा ने पूछा—"क्या अपा हमेशा मैचिंग वाला हेयर-बैण्ड पहनती हैं?"

"जी हां, मेरे पास अपने हर कपड़े से मैच करता हेयर-बैण्ड है।"

"तब तो आपने पास पिंक-कलर के फूल वाला हेयर-बैण्ड भी होगा?"

"जी हां, था।"

"था से क्या मतलब?"

"जाने कहां गुम हो गया वह, अपनी याद में मैंने उसे ड्रेसिंग-टेबल पर रखा था।"

"दैट्स ऑल!" कहने के बाद होंठों पर विजयी मुस्कान लिए विभा ने त्रिवेन्द्रम की तरफ देखा उस त्रिवेन्द्रम की तरफ जिसके चेहरे पर अलका के हर जवाब के बाद पसीने की मात्रा बढ़ती जा रही थी।

हक्का-बक्का रह गया था वह।

मैं खुश था, संजय तो बल्लियों उछल रहा था।

अलका बेचारी अब तक उलझन में थी। वह नहीं जान सकी कि विभा के साधारण सवालों के जवाब में वह कितनी बड़ी गुत्थी सुलझाने में सहायक सिद्ध हुई है। विभा ने अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा—"मेरा ख्याल है इंस्पेक्टर कि अब तुम संजय को झूठा नहीं मानेगे—अलका द्वारा कहा गया एक-एक लफ्ज इस बात का गवाह है कि इसके पास पिंक-कलर के फूल वाला एक हेयर-बैण्ड था, वह हेयर-बैण्ड गायब है—अब शायद तुम नहीं कह सकते कि संजय की कहानी नितांत काल्पनिक है क्योंकि साबित हो चुका है कि जिस हेयर-बैण्ड का जिक्र इसने किया था, उसका अस्तित्व था।"

काफी देर तक सोचने के बाद त्रिवेन्द्रम ने कहा—"आप खुद समझ सकती हैं बहूरानी कि इन बातें से कोर्ट कन्विन्स नहीं होगी—वहां हमें मिस्टर संजय के खिलाफ ठोस सबूत चाहिये। वह ठोस सबूत अभी तक आप भी पेश नहीं कर पाई हैं।"

"इस वक्त मैं कोर्ट को नहीं तुम्हें कन्विन्स कर रही हूं इंस्पेक्टर।"

"मेरे कन्विन्स होने से क्या होगा?"

"बहुत कुछ होगा इंस्पेक्टर, फिलहाल केवल मेरे इस सवाल का जवाब दो कि तुम कन्विन्स हुए या नहीं?"

त्रिवेन्द्रम के मुंह से बोल न फूटा—विभा की तरफ देखता रह गया था वह, मगर अगले ही पल नजरें झुका लेनी पड़ीं क्योंकि अपनी चमकदार आंखों से वह एकटक त्रिवेन्द्रम की आंखों में झांक रही थी, बोला—"आपने दो प्वाइंट ऐसे उठाए हैं जिनसे किरन झूठी साबित होती है और दो प्वाइंट ऐसे उठाये हैं जिनसे मिस्टर संजय सच्चे साबित होते हैं—मिस अलका का बयान इनमें से एक प्वाइंट को बेहद सशक्त बना देता है—इन सबकी रोशनी में मैं पूरी तरह से आपसे सहमत नहीं हूं मगर यह भी नहीं कह सकता कि असहमत हूं क्योंकि आपके द्वारा उठाये गये किसी प्वाइंट की कोई सशक्त काट मेरे पास नहीं है।"

"यानी आंशिक कन्विन्स हो पाये हो?"

"कुछ ऐसा ही समझ लीजिये।"

विभा ने अजीब सवाल किया—"पूरे कन्विन्स होने के मूड में हो या नहीं?"

"क..क्या मतलब?"

"केवल यह कि अगर तुम पूरे कन्विन्स होने के मूड में हो तो चन्द काम मेरे निर्देश पर करो। उन कामों का उद्देश्य दूध-का-दूध और पानी-का-पानी करना होगा। वैसे भी कानून के एक प्रहरी होने के नाते तुम खुद यह नहीं चाहोगे कि किसी बेगुनाह को सजा हो।"

"जाहिर है।"

"पहले जहां तुम्हें संजय के बयान पर बाल बराबर भी यकीन नहीं

था वहां अब आंशिक यकीन तो हुआ ही है, यानी मेरे द्वारा उठाये गये प्वाइंट्स और अलका के छोटे से बयान के बाद दिमाग के किसी कोने में यह शंका जरूर उठी होगी कि सच्चाई वह भी हो सकती हे जो संजय कह रहा है, उठी है ना?"

"यकीनन!"

"तो क्यों ना हम ऐसी छानबीन कर लें जिससे इस शंका का समाधान हो सके?"

"अदालत के सामने सच्चाई लाने हेतु मैं आपके निर्देशों पर काम करने के लिए तैयार हूं।"

"वैरी गुड!" कहने के बाद विभा के होंठों पर ऐसी मुस्कान उभरी जैसे किसी महत्वपूर्ण काम में सफलता मिली हो और फिर अचानक वह अलका से बोली—"अब आप जा सकती हैं मिस अलका, मैं आपका धन्यवाद अदा करती हूं क्योंकि आपके बयान से मुझे इंस्पेक्टर को कन्विन्स करने में काफी मदद मिली।"

"म...मगर मेरी समझ में अभी तक कुछ नहीं आया है, क्या मदद मिली आप लोगों को?"

"वह सब समझने की आपको जरूरत भी नहीं है।" कहकर विभा ने बात काट दी और वहां से जाते वक्त भी अलका असमंजस की ही शिकार रही। उसके जाने के बाद विभा ने संजय से पूछा—"क्या तुम्हें नम्बर सेविन वाले प्वाइंट फाइव कैलीवर की गोलियों के नम्बर याद हैं संजय?"

"सबके तो याद नहीं हैं।"

"एक गोली का नम्बर जरूर याद होगा।" विभा ने कहा—"उस गोली का जो तुमने भंवर के रिवॉल्वर से उसकी एक गोली उड़ाने के बाद उनमें अपनी गोली मिलाई थी—उस गोली का नम्बर तुमने स्पेशली याद किया होगा क्योंकि अपने प्लान के मुताबिक तुम्हें यह गोली भंवर के रिवॉल्वर से रुई के बण्डल में चलानी थी।"

"हां, उस गोली का नम्बर था—पी.के. ८६२६६५।"

विभा ने तुरन्त पलटकर त्रिवेन्द्रम से कहा—"गोली का यह नम्बर अपनी डायरी में नोट करो इंस्पेक्टर और यह भी नोट करो कि यह नम्बर संजय ने बताया है।"

"इससे होगा क्या?"

"संजय के खिलाफ हमें बेहद पुख्ता सुबूत मिलेगा।"

"वह कैसे?"

"पहले यह बताओ कि वे नकाबपोश लुटेरे कौन थे जिन्होंने किरन के जेवर लूटे थे?"

"उनकी मौत के बाद जब चेहरों से नकाब उतारे गए और तलाशी

ली गई तो परिचय-पत्र आदि से पता लगा कि वे चारों स्टूडेंट थे—स्मैक के चस्की हो चुके थे और स्मैक हासिल करने की खातिर ही लूट-पाट करते थे—आपको यह जानकर हैरत होगी कि चारों का ताल्लुक अच्छे घरानों से था—उनके द्वारा लूटा गया सारा माल उनके घरों से, उनके पर्सनल कमरों से मिला।"

"विशेष रूप से उस लड़के के घर की हालत कैसी थी जिसे बॉस नम्बर सेविन कहता था?"

"जहां तक मुझे याद है एक आई०टी०ओ० का लड़का था वह—बेटे की करतूत सुनने के बाद बेचारा बेहोश हो गया था—शायद उसे स्वप्न में भी गुमान नहीं था कि बेटा इतना आगे विकल चुका है।"

"तुम्हें एक बार पुनः उस आई०टी० ओ के घर जाना होगा।"

"क्यों?"

"उससे यह पूछने कि यह उसके पास प्वाइंट फाइव कैलीवर था?"

"इससे क्या होगा?"

"मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हें उससे जवाब मिलेगा कि हां उसके पास लाइसेंसशुदा प्वाइंट फाइव कैलीवर था मगर बेटे की मौत के दिन से ही गायब है।"

त्रिवेन्द्रम समझ चुका था कि विभा क्या बोल रही है?

क्या कहना चाहती है?

और—

उसका आशय समझने के बाद त्रिवेन्द्रम दंग रह गया जबकि बेहद मजेदार मुस्कराहट के साथ विभा कहती चली गई—"अगर वह वही कहता है जिसकी आशा मैं व्यक्त कर रही हूं तो शायद उसके बाद तुम्हें और कोर्ट को भी संजय के खिलाफ किसी अन्य ठोस सबूत की जरूरत नहीं रह जाएगी—साबित हो जाएगा कि संजय झूठ नहीं बोल रहा है। वास्तव में नम्बर सेविन का रिवॉल्वर इसके हाथ लग गया था—नहीं लगा होता तो यह उसके रिवॉल्वर की एक गोली का नम्बर कैसे बता रहा है, तुम आई०टी०ओ० से पूछ सकते हो कि अपने रिवॉल्वर के लिए वह कौन-सी दुकान से गोलियां खरीदता था—उस दुकान का रजिस्टर बता देगा कि अन्य गोलियों के साथ इस नम्बर की गोली भी उसने आई०टी०ओ० को बेची थी या नहीं?"

हम सभी के दिमागों की नसें इस तरह खुलती चली गईं जैसे जादू हो गया हो—यह सोच-सोचकर हमें अपने दिमागों पर तरस आ रहा था कि संजय को मुजरिम साबित करने का यह रास्ता हमारे दिमागों में क्यों नहीं आया?

हालांकि अब त्रिवेन्द्रम विभा से बुरी तरह प्रभावित नजर आ रहा था मगर फिर भी उसने सावल किया—"अगर खोजबीन के बाद यह

पता लगा कि आई०टी०ओ के पास भी कोई प्वाइंट फाइव कैलीवर नहीं था तो?"

"तो तुम्हारी मेहनत थोड़ी बढ़ जायेगी।"

"क्या मतलब?"

"उस अवस्था में तुम्हें शहर-भर की शस्त्रों की दुकानों के रजिस्टर चैक करके यह जानना होगा कि संजय द्वारा बताये नम्बर की गोली कौन-से दुकानदार ने किस कस्टमर को बेची—दो बातें बिल्कुल पक्की हैं, पहली यह कि उस कस्टमर का कोई-न-कोई लिंक नम्बर सेविन से जरूर निकलेगा और दूसरी यह कि उस कस्टमर के पास अपना रिवॉल्वर नहीं होगा यानी घूम-फिरकर साबित फिर भी यही होगा कि उस कस्टमर की रिवॉल्वर गायब है जिसे संजय द्वारा बताए गए नम्बर की गोली बेची गई है—वैसे, मुझे नब्बे प्रतिशत उम्मीद यह है कि रिवॉल्वर आई०टी०ओ० का ही होगा क्योंकि आमतौर पर इस किस्म के लड़के इस किस्म के कामों में घर की चीज ही इस्तेमाल करते हैं।"

"ठीक है, मैं जांच करूंगा मगर..."

"मिस्टर संजय के खिलाफ कम-से-कम एक गवाह भी चाहियेगा, उतना ही पुख्ता गवाह जितना पुख्ता आपने यह सबूत जुटाया है।"

"किरन से ज्यादा पुख्ता गवाह की जरूरत तो नहीं पड़ेगी तुम्हें?"

"क्या मतलब?" त्रिवेन्द्रम उछल पड़ा।

"मेरे हिसाब से किरन को संजय के मुकम्मल प्लान की जानकारी है। जब वह कटघरे में खड़ी होकर इसके खिलाफ जहर उगलेगी तब इसके सम्पूर्ण प्लान के रेशे-रेशे बिखेर देगी और इस तर्क के बाद कोर्ट को उसे सच्ची मानना पड़ेगा कि अगर उसे सारी प्लॉन की जानकारी न होती तो खुद को इतने पुख्ता ढंग से फंसा कैसे सकती थी?"

"म...मगर।" संजय बोला—"वह मेरे खिलाफ गवाही क्यों देगी?"

"उसे देनी पड़ेगी।"

"कैसे?" त्रिवेन्द्रम ने पूछा।

"उसकी तरकीब बाद में समझाऊंगी।" विभा ने कहा—"फिलहाल तुम्हारे मुंह से विस्तारपूर्वक उस वक्त का वृत्तांत सुनना चाहती हूं जब तुम पहली बार भंवर के बंगले पर गये, जानना चाहती हूं कि लाश तुम्हें किस पोजीशन में मिली, वहां तुमने क्या-क्या किया, किसने क्या बयान दिये और इस नतीजे पर कैसे पहुंचे कि हत्या किरन ने की है?"

"यह सब तो अखबार में छप चुका है।"

"अखबार मैंने भी पढ़ा है।" विभा ने कहा—"मगर मैं वह सबकुछ तुम्हारे मुंह से सुनना चाहती हूं।"

इस बार त्रिवेन्द्रम बिना किसी हील-हुज्जत के शुरू हो गया और विभा सारा वृत्तांत बहुत ध्यान से सुनती रही—मुझे लगा कि कई स्थानों

पर वह चौंकी है—मगर जान न सका कि क्यों—पूरा वत्तांत के बाद विभा के होठों पर वह मुस्कान उभरी थी जिसे मैं भेदभरी मुस्कान कह सकता हूं, कम-से-कम इस वक्त उस मुस्कान का अर्थ भगवान ही समझ सकता था, जाने उस वृत्तांत में से दिमाग की उस 'पुतली' ने क्या निकाल लिया था?

□□□

मैं मारुति की ड्राइविंग सीट पर था, विभा बराबर वाली सीट पर।

संजय और रूबी पीछे।

उस वक्त हम थाने से संजय की कोठी की तरफ जा रहे थे कि अचानक विभा ने मुझसे गाड़ी रोकने के लिए कहा। कुछ न समझ पाने की स्थिति में भी मैंने फुटपाथ से सटाकर गाड़ी रोक दी। विभा पीछे पलटती हुई संजय से बोली—"तुम्हारे पास अपना कार्ड होगा?"

"क...कार्ड?"

"विजिटिंग कार्ड!"

"हां, है।"

"एक कार्ड मुझे दो।"

यंत्र-चलित से— संजय ने जेब से पर्स निकालकर उसे कार्ड दिया और अभी हममें से कोई कुछ समझ भी नहीं पाया था कि अपनी तरफ का दरवाजा खोलने के बाद वह बाहर निकली, दरवाजा वापस बन्द करने के बाद खिड़की पर झुकती हुई मुझसे बोली—"तुम लोग जाओ, मैं कुछ देर बाद संजय की कोठी पर पहुंच जाऊंगी।"

"म...मगर!" मैं हकला गया—"तुम जा कहां रही हो?"

"लौटकर बताऊंगी।"

मैं बोला—"अगर तुम्हें गाड़ी की जरूरत हो तो हम लोग टैक्सी से?..."

"समय बरबाद मत करो वेद।" इस बार उसके मुंह से गुर्राहट निकली थी—"तुम जाओ!"

और...कुछ ऐसा जादू था उसके लहजे में कि मेरे हाथ-पैर स्वतः हरकत में आ गये।

गाड़ी आगे बढ़ गयी।

हम तीनों के दिल जाने क्यों बहुत जोर-जोर से धड़क रहे थे—बैक-व्यू मिरर के जरिये मैं तब तक विभा को देखता रहा जब तक कि वह नजर आती रही-वह अन्त तक मुझे वहीं खड़ी नजर आई जो खड़ी थी और देख भी गाड़ी की तरफ ही रही थी—मैं समझ गया कि यह समझ गयी होगी कि मैं बैक-व्यू मिरर के जरिये उसे देख रहा हूं—रूबी और संजय भी पलट-पलटकर उसे देख रहे थे, जब वह चमकनी बन्द हो गयी तो संजय ने कहा—"अचानक आखिर विभाजी

को हुआ क्या?"

"उसके अलावा कोई नहीं समझ सकता।" मैं बड़बड़ाया।

और यह सच था।

हममें से किसी की समझ में कुछ नहीं आया।

हम सस्पैंस में फंसे संजय की कोठी पर पहुंच गये और फिर शुरू हुआ विभा का इन्तजार। यह इन्तजार बेहद लम्बा साबित हुआ यानी रात के दस बजे विभा कोठी में पहुंची—इस वक्त उसके चेहरे पर अजीब-सी ताजगी थी। होंठों पर आकर्षक मुस्कान, हिम्मत करके मैंने पूछा—"तुम गाड़ी से क्यों उतर गयी थीं विभा?"

"मझे सड़क पर संध्या नजर आई थी।"

"स...संध्या ?" हम तीनों के हलक से एकसाथ चीखें निकल गयीं।

जवाब में विभा ठहाका लगाकर हंस पड़ी, बोली—"कुछ दूर तक उसका पीछा करने के बाद पता लगा कि मेरा वहम था। वहां से पैदल चली आ रही हूं।"

□□□

ऊंची आवाज और प्रभावशाली स्वर में बहुत-कुछ कहने के बाद सरकारी वकील सांस लेने के लिए रुका था—कक्ष में ऐसी खामोशी थी कि सुई गिरने की आवाज भी सब स्पष्ट सुन सकें—लकड़ी के कटहरे में खड़ी किरन की तरफ अंगुली उठाकर सरकारी वकील ने सांस लेने के बाद कहा—"अगर पचास लाख के नेकलेस के लालच में इस स्वार्थी मुजरिमा ने सिर्फ अपनी सहेली की हत्या ही की होती योर-ऑनर तो मुमकिन है कि उम्र-कैद या उससे कम सजा भी उसके लिए जायज होती मगर हत्या ही नहीं की बल्कि हत्या करने के बाद कानून को धोखा देने का प्रयास भी किया। मकतूल के पति को उसकी हत्या के जुर्म में फंसाने की साजिश भी रची—यानी कानून के हाथों एक बेगुनाह का कत्ल कराने की साजिश भी रची है इसने—इतनी चालाक और खतरनाक मुजरिमा फांसी से कम सजा की हकदार नहीं हो सकती योर-आनर, अदालत से मेरी दरख्वास्त है कि इसे फांसी से कम की सजा न दी जाये ताकि भविष्य में कभी कोई औरत गहनों के लालच में किसी दूसरी औरत का खून करके किसी बेगुनाह को फंसाने की हिम्मत न कर सके।"

कहने के बाद उसने एक नजर अदालत-कक्ष में मौजूद भीड़ पर डाली—न्यायाधीश की तरफ देखता हुआ सम्मान में थोड़ा-सा झुका और कटहरे में खड़ी किरन की तरफ कटु मुस्कान उछालता हुआ अपनी कुर्सी की तरफ बढ़ गया।

कटहरे में खड़ी किरन के चेहरे पर कोई भाव नहीं था।

संगमरमर की मूर्ति के मानिन्द सपाट चेहरा।

कक्ष में उसके माता-पिता, रूबी, संजय, त्रिवेन्द्रम, भंवर, अलका और

विभा के साथ मैं भी मौजूद था।

विभा ने हम सबको हिदायत दी थी कि कोर्ट में किसी से उसका वास्तविक परिचय न कराया जाये अतः वह भी एक सामान्य दर्शक की भांति वहां बैठी थी।

सरकारी वकील के जवाब में कुछ कहने के लिए अभी वह वकील अपनी कुर्सी से खड़ा होना ही चाहता था जिसे संजय ने किरन के बचाव हेतु नियुक्त किया था कि त्रिवेन्द्रम उससे पहले उठा।

उसके हाथ में एक दरख्वास्त थी।

वह दरख्वास्त पेशकार को देते हुए उसने कहा—"पुलिस की यह गुजारिश अदालत को पढ़कर सुनाने की कृपा करे।" पेशकार ने इजाजत के लिए न्यायाधीश की तरफ देखा और इजाजत मिलने पर दरख्वास्त में लिखे अक्षरों को ऊंची आवाज में पढ़ना शुरू किया—"मैं यानी पुलिस इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम माफीनामे के साथ कोर्ट में यह दरख्वास्त पेश करता हूं—संध्या मर्डर केस के सिलसिले में मेरे हाथ कुछ ऐसे तथ्य लगे हैं जिनसे साफ-साफ पता लगता है कि संध्या की हत्या उस मुल्जिमा ने नहीं की जिसे गिरफ्तार करके अदालत में पेश किया है यानी किरन पूरी तरह बेगुनाह है—अपनी इस भूल के लिए खेद प्रकट करता हुआ मैं फिलहाल इस मुकदमे को वापिस लेने की गुजारिश इस वादे के साथ करता हूं कि शीघ्र ही वास्तविक मुल्जिम को गिरफ्तार करके कोट में पेश करूंगा, माननीय न्यायाधीश से मेरा अनुरोध यह है कि इस प्रार्थना-पत्र को तत्काल स्वीकार करें, किरन को इसी वक्त मुक्त कर दें क्योंकि पहले ही मेरी भूल के कारण वह काफी शारीरिक और मानसिक यातनायें भुगत चुकी हैं— मेरी ताजा खोजबीन के मुताबिक किरन देवी संध्या की हत्यारी नहीं हैं अतः निर्दोष हैं और यह पता लगने के बाद अदालत को उन्हें और प्रताड़ित करने का कोई हक नहीं पहुंचता।"

"न...नहीं...नहीं!" किरन चीख पड़ी—"यह झूठ है, बकवास है—मुझे बचाने की कोशिश कर रहे मेरे पति की चाल है यह—मुझे लगता है कि इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम बिक गया है, संध्या की हत्या मैंने ही की है—उसे मैंने मारा है, इन हाथों से—बिका हुआ यह इंस्पेक्टर कानून को धोखा देने की कोशिश कर रहा है।"

इसी तरह के जाने कितने शब्द चीखती चली गई वह।

चौंके सभी थे, न्यायाधीश भी।

कक्ष में अजीब-सी गहमा-गहमी का वातावरण बन गया था।

और वह—

जो इस सारे ड्रामे की सूत्रधार थी। मेरे बराबर वाली कुर्सी पर बैठी धीमे-धीमे मुस्करा रही थी।

उसने पर्दे के पीछे रहकर इस ड्रामे को जन्म दिया था। ठीक किसी

कुशल डायरेक्टर की तरह।

न्यायाधीश ने ऑर्डर-ऑर्डर कहने के साथ मेज पर दो बार हथौड़ी मारकर कोर्ट में शान्ति स्थापित की—किरन से कहा कि वह सिर्फ तब बोले जब कोर्ट उसे बोलने की इजाजत दे।

किरन के चेहरे पर भूकम्प और बेचैनी के भाव थे।

अदालत के आदेश पर त्रिवेन्द्रम कटहरे में पहुंचा। न्यायाधीश ने उससे पूछा—"ऐसे कौन-से तथ्य मिले हैं तुम्हें जिनसे स्पष्ट होता है कि संध्या की हत्या पेश की गई मुल्जिमा ने नहीं बल्कि किसी अन्य ने की है?"

"उन तथ्यों पर अभी से रोशनी डालने से मेरी आगे की जांच प्रभावित हो सकती है सर! वास्तविक मुजरिम सतर्क हो सकता है अतः नये तथ्यों का जिक्र करने के लिए मुझे विवश न किया जाए—मैं एक जिम्मेदार पुलिस अफसर हूं और इस यकीन के साथ मेरी दरख्वास्त स्वीकार की जाए कि मैं जो कुछ करूंगा उसका उद्देश्य अदालत और कानून का मान बढ़ाना ही होगा।"

थोड़ी बहस के बाद—

अदालत ने त्रिवेन्द्रम को चेतावनी दी कि भविष्य में वह अच्छी तरह छानबीन करने के बाद ही केस को कोर्ट में पेश करें। इस चेतावनी के साथ उसकी दरख्वास्त स्वीकार कर ली गई।

शिकस्त के अहसास से किरन का चेहरा पीला पड़ गया था।

□□□

कोर्ट से बाहर निकलने पर संजय ने किरन से अपने साथ चलने के लिए बहुत अनुरोध किया—मगर यह लिखा जाए तो गलत न होगा कि उसके पैरों में पड़कर गिड़गिड़ा उठा वह, परन्तु किरन पर रत्तीभर भी असर नहीं हुआ। अपने चेहरे पर असीम घृणा के भाव लिए वह दांत भींचर गुर्राई—"तुम गन्दी नाली में रेंगते कीड़े हो संजय, अपनी फतह पर इतना गुरूर मत करो—संध्या की आत्मा की कसम, मैं तुम्हें जीतने नहीं दूंगी।"

संजय अवाक् रह गया।

वह अपने पिता और शकुन्तला देवी के साथ चली गई।

'री-इन्वेस्टीगेशन' के लिए अदालत ने इस केस की फाइल त्रिवेन्द्रम को सौंप दी थी-फाइल बगल में दबाए वह मेरे, रूबी, संजय और विभा के साथ ही था—एकाएक विभा ने थोड़े आगे जा रहे भंवर को रोका।

असमंजस में फंसा वह रुक गया।

नजदीक पहुंचकर उसने कहा—"मैं आपसे एक छोटे से सवाल का जवाब चाहती हूं मिस्टर भंवर।"

"जरूर पूछिए।"

"क्या आपके बेड-रूम में कोई कांच का गिलास रहता था?"
भंवर ने त्रिवेन्द्रम की तरफ देखा, बोला—"मैं इस सवाल का मतलब नहीं समझा।"
"कुछ देर पूर्व अदालत में हुई कार्यवाही आपने देखी भी है और सुनी भी है, सो—समझ ही गए होंगे कि आपकी पत्नी की हत्या किरन ने नहीं बल्कि नई इन्वेस्टीगेशन के अनुसार किसी अन्य ने..."
विभा की बात बीच ही में काटकर भंवर ने त्रिवेन्द्रम से कहा—"मैं इस बारे में तुमसे बात करना चाहता था इंस्पेक्टर, यहां इसलिए नहीं टोका क्योंकि तुम इन लोगों के साथ थे—तुम्हारे पीछे-पीछे मैं थाने पहुंचने वाला था।"
"क्या बात करना चाहते थे?" त्रिवेन्द्रम ने पूछा।
"आज कोर्ट में तुम्हारे द्वारा पेश की गई एप्लीकेशन ने मेरा दिमाग घुमाकर रख दिया है, आखिर क्या मजाक है यह—उन ढेर सारे सुबूतों का क्या होगा जो चीख-चीखकर किरन की ओर इशारा कर रहे हैं?"
बड़े गर्वीले ढंग से मुस्कराते के बाद बोला त्रिवेन्द्रम—"मैं उन सभी सुबूतों का जवाब दाखिल करूंगा।"
"क्या मतलब?"
विभा ने कहा—"आपको यह जानकर हैरत होगी कि संध्या की हत्या मिस्टर संजय ने की है।"
"क...क्या?" भंवर का मुह भाड़ के मुंह की तरह खुला-का-खुला रह गया। चेहरे पर अचम्भे के असीमित भाव लिए वह मेरे बराबर में खड़े संजय को देखता रह गया—शायद उसका आश्चर्य उस वक्त पराकाष्ठा पर पहुंच गया था जब उसने संजय के होंठों पर वह मुस्कान थिरकते देखी जो किसी विजेता के चेहरे पर होती है।
"यह सच है मिस्टर भंवर।" विभा ने कहा—"वैसे तो कहानी लम्बी है मगर संक्षेप में आप इसे यूं समझ सकते हैं कि संध्या का नेकलेस अपनी बीवी की गर्दन में देखने की ललक में फंसकर मिस्टर संजय ने आपको फ्रेम करते हुए संध्या की हत्या की और वे सारे सुबूत अपने हाथ से मिटा दिए जो इन्हें हत्यारा साबित कर सकते थे—कुदरत की मार देखो, उस हत्या के जुर्म में उलटी किरन फंस गई, वह—जिसके लिए इन्होंने यह सब किया था और परिणाम यह हुआ कि अपनी बीवी को बचाने के लिए त्रिवेन्द्रम के पास पहुंचकर इन्होंने सारी हकीकत बयान कर दी—पहले तो त्रिवेन्द्रम ने इनके बयान पर यकीन ही नहीं किया क्योंकि अपनी करतूत को प्रमाणित करने का इनके पास कोई प्रमाण नहीं था मगर फिर अपने ही विरुद्ध इन्होंने कुछ ऐसे प्रमाण पेश किए जिनकी रोशनी में त्रिवेन्द्रम को मानना पड़ा कि हत्यारे यही हैं और

उसी का फल आज आपने कोर्ट में देखा—इस सबके बावजूद मिस्टर संजय के खिलाफ अभी तक इतने सुबूत नहीं जुटाये जा सके हैं कि इन्हें कोर्ट में हत्यारा साबित किया जा सके मगर पूरी उम्मीद है कि सबूत जुट जायेंगे क्योंकि अपने खिलाफ सबूत जुटाने में मिस्टर संजय खुद हमारी मदद कर रहे हैं।"
"ख...खुद मुजरिम आपकी मदद कर रहा है?" मारे हैरत के भंवर का बुरा हाल हो गया।
उसके आश्चर्य का सबब समझती हुई विभा मुस्कराई, बोली—"ऐसा मिस्टर संजय अपनी बीवी को बचाने के लिए कर रहे हैं।"
"क...कमाल की बात है।" वह बड़बड़ा उठा।
"मिस्टर संजय का कहना है कि आपके बेडरूम में पहुंचकर जब इन्होंने संध्या को गोली मारी तब सेन्टर-टेबल पर रखा एक कांच का गिलास फर्श पर गिरकर टूट गया था मगर जैसा कि आप भी जानते हैं, इन्वेस्टीगेशन के टाइम पर इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम को वहां से कांच का एक किरचा तक नहीं मिला—मैंने इसी दुविधा को हल करने के लिए यह सवाल पूछा है कि क्या आपके कमरे में कांच का गिलास रहता था?"
"जी हां, रहता तो था मगर..."
"मगर?"
"सैन्टर-टेबल पर नहीं बल्कि बेड की पुश्त पर रखा रहता था।"
"क्यों?"
"संध्या को बहुत प्यास लगती थी इस सवाल का जवाब तो आपको मेरी कोठी का कोई भी नौकर दे सकता है—बेड की पुश्त पर पानी से भरा कांच का एक जग और गिलास रखा रहता था ताकि बार-बार प्यास लगने पर संध्या को नौकरों को आवाज न देनी पड़े।"
"कया वहां सिर्फ एक ही गिलास रहता था?"
"जी हां।"
"याद करके बताइए, क्या संध्या की मौत के बाद गिलास यथास्थान पर मिला था?"
"नहीं मिला।"
विभा ने इन शब्दों को दोहराया—"नहीं मिला?"
"संध्या की मौत के तीन-चार दिन तक तो मुझे या किसी नौकर को इस बात का ख्याल ही नहीं था कि कमरे में कौन-सी चीज यथास्थान मौजदू है कौन-सी नहीं—हां, पाचवें दिन जब नौकर कमरे की सफाई कर रहा था तो उसने बेड की पुश्त से गिलास गायब पाया। जग यथास्थान था—उसने इस बात का जिक्र मुझसे किया भी मगर मैंने तवज्जो नहीं दी—कम-से-कम उस वक्त तो मैं स्वप्न में भी गुमान नहीं

कर सकता था कि गिलास के गायब होने का सम्बन्ध संध्या के मर्डर से है—अगर होता तो तुरन्त त्रिवेन्द्रम को सूचना देता।"

"इसका मतलब यह है कि मिस्टर संजय ठीक कह रहे हैं?"

"इस बारे में मैं क्या कह सकता हूं!"

"अगर मिस्टर संजय पर चलने वाले मुकदमे के दरम्यान जरूरत पड़ी तो आप यह बयान अदालत में देंगे ना?"

"कोर्ट में कोई भी सच्ची बात कहने से भला मैं कैसे इन्कार कर सकता हूं?"

"थैक्यू।" कहने के बाद विभा तेजी से आगे बढ़ गयी।

त्रिवेन्द्रम सहित हम सभी उसके पीछे लपके जबकि हक्का-बक्का रह गया भंवर कई पल तक ज्यों-का-त्यों खड़ा रहा। गाड़ी में विभा ने त्रिवेन्द्रम से पूछा—"मेरे ख्याल से अब तुम सन्तुष्ट होंगे इंस्पेक्टर। संजय के खिलाफ सबूत जुट चुके हैं जिनके बूते पर कोर्ट में इसे संध्या का हत्यारा साबित किया जा सके—तुम जांच कर चुके हो, आई० टी० ओ० ने न सिर्फ माना है कि उसके पास प्वाइंट फाइव कैलीवर था बल्कि अपना लाइसेंस दिखाने के साथ अपने इलाके के थाने में लिखाई गई रिवॉल्वर चोरी हो जाने की रपट की कॉपी भी दिखाई है यह रपट उसने बेटे की मौत के अगले दिन अपनी सेफ से रिवॉल्वर गायब पाने पर लिखवाई थी, उधर दुकानदार का रजिस्टर भी तुम चैक कर चुके हो—अन्य गोलियों के साथ उस नम्बर की गोली भी उसने आई०टी० ओ० को बेची थी जिसका नम्बर संजय ने लिखवाया था, अतः प्रमाणित है कि यह रिवॉल्वर संजय के हाथ लग गया था—इधर, भंवर और अलका के बयान, गिलास और हेयर-बैण्ड के अस्तित्व को स्वीकारते ही कहते हैं।"

"वह सब तो ठीक है बहूरानी, मगर..."

"मगर?"

"आपने कहा था कि संजय के खिलाफ किरन खुद गवाही देगी?"

"उसका इन्तजाम आज रात हो जाएगा।" कहने के वाद विभा ने चुप्पी साधी ली।

□□□

विभा के निर्देश पर मैं किरन के मायके वाले घर की निगरानी कर रहा था।

रात के ग्यारह बज रहे थे।

उपन्यास में मैं झट से लिख दिया करता हूं कि फलां कैरेक्टर फलां मकान पर नजर रखे हुए था मगर जब यही काम खुद किया तो पता लगा कि कितना कठिन काम होता है यह?

अपनी गाड़ी सहित मैं वहां नौ बजे पहुंच गया था।

गाड़ी सड़क के इस पार एक अन्य इमारत के मुख्य द्वार के नजदीक खड़ी की और ड्राइविंग सीट पर बैठकर किरन के मायके वाले घर की इमारत पर टकटकी लगा दी—इलाके का चौकीदार सड़क पर लाठी पटकाता सारे इलाके में घूम रहा था। पहले तो उसने मेरी तरफ खास ध्यान नहीं दियां मगर दस बजते-बजते मैंने महसूस किया कि मेरी वहां मौजूदगी उसे खटकने लगी—दायें-बायें जाता गाड़ी को इस तरह घूरता जैसे वह कोई अवांछनीय वस्तु थी।

मैं बेचैन-सा होने लगा।

अन्दर की लाइट मैंने ऑफ कर रखी थी—साढ़े-दस बजे लाठी पटकाता वह गाड़ी के नजदीक ही जो पहुंच गया बोला—"इतनी देर से यहां किस फिराक में हो शाब?"

एक पल को मैं हड़बड़ाया, फिर सम्भलकर बोला—"मैं शाब नहीं हूं।"

"फिर?"

"शाब का ड्राइवर हूं—शाब सामने वाली बिल्डिंग में अपनी शाली के पास गए हैं, मैं उन्हीं का इन्तजार कर रहा हूं।"

"कौन-शी बिल्डिंग में?" उसने पूछा।

मैंने उसी की तरफ इशारा कर दिया जिसके सामने गाड़ी खड़ी थी—उसने एक नजर बिल्डिंग पर डाली और पुनः लाठी पटकाता दूर चला गया—तब से अब तक आधा घण्टा गुजर चुका था।

मेरे दिमाग में खलबली-सी मचने लगी।

यह ख्याल मुझे हलकान किये दे रहा था कि जो बहाना चौकीदार से किया है उसके बूते पर मैं यहां कितनी देर खड़ा रह सकता हूं—विभा का निर्देश था कि अगर मुझे सारी रात भी निगरानी करनी पड़े तो करूं—हालांकि उसने गारन्टी प्रस्तुत की थी कि मुझे सारी रात निगरानी नहीं करनी पड़ेगी—चौकीदार प्रत्येक चक्कर पर गाड़ी को घूरता था।

अब उसकी नजर में मैं शायद संदिग्ध हो उठा था।

ये विचार मुझे बेचैन किये दे रहे थे कि अगर चौकीदार मेरे तन पर मौजूद शानदार सूट को देख ले या सामने वाली बिल्डिंग में जाकर मालूम करे कि उसमें रहने वाली महिला का जीजा आया है या नहीं तो क्या हो?

मैं समझ नहीं पा रहा था कि सारी रात निंगरानी करनी पड़ी तो चौकीदार की मौजूदगी में किस तरह कर पाऊंगा—तभी ऊपर वाले ने मेरी मदद की—उस वक्त साढ़े ग्यारह बजे थे जब किरन के मायके वाले घर से एक एम्बेसेडर बाहर निकली।

ड्राइविंग सीट पर किरन थी।

मैंने तुरन्त गाड़ी स्टार्ट करके उसके पीछे लगा दी।

इत्तफाक से उस वक्त चौकीदार नजदीक ही था—पट्ठा सोच तो जरूर रहा होगा कि मैं अचानक ही अपने साहब को लिये बिना कहां चल दिया मगर अब मुझे उसके कुछ भी सोचने की कोई परवाह नहीं थी।

विभा का अनुमान अक्षरशः सही उतरा था।

किरन सीधी संजय की कोठी पर पहुंची।

□□□

"क...किरन तुम?" संजय ने चौंकने का खूबसूरत अभिनय किया—"तुम इस वक्त?"

"हां, इस वक्त!" नफरतयुक्त स्वर में किरन ने कहा—"जो बातें मुझे तुमसे करनी हैं उनके लिए यही वक्त मुनासिब था।"

"ऐसी कौन-सी बातें..?"

"अन्दर चलो, यहां होने वाली बातों को दरवाजे पर खड़ा चौकीदार सुन सकता है।"

"आओ!" कहकर वह एक तरफ को हट गया।

किरन अंदर दाखिल हो गयी, संजय ने दरवाजे की चटकनी पुनः अंदर से बन्द कर ली।

संजय उसे ड्राइंगहॉल में ले गया, बोला—"बैठो।"

किरन नागिन की तरफ पलटकर फुंफकारी—"मैं यहां बैठने नहीं आई हूं।"

"क...किरन!"

"तुम्हें यह बताने आयी हूं जलील आदमी कि तुम मुझसे जीत नहीं सकते।"

"ये हार-जीत की बात तुम्हारे दिमाग में है किरन, मेरे दिमाग में नहीं है।"

"झूठ मत बोलो, बकवास कर रहे हो तुम।" किरन दांत भींचकर गुर्रायी—"तुमने खुद कहा था कि मैं तुम्हारे उस दिमाग से टकरा रही हूं जिसने संध्या के कत्ल और उसमें भंवर को फंसाने की ऐसी नायाब योजना बनाई कि खुद तुम्हारे कहने के बावजूद कोई यकीन नहीं कर रहा है कि हत्या तुमने की है—तुमने यह भी कहा था संजय कि अपने इसी दिमाग का इस्तेमाल करके तुम मुझे फांसी के फंदे से दूर खींच ले जाओ—अपनी समझ में तुमने ऐसा कर तो लिया है मगर मुझे यकीन है, यह सब तुम अपने उस दिमाग के बूते पर नहीं कर पाए होगे जिस पर तुम्हें नाज था—यह खेल तुमने अपने पैसे के बल पर खेला है, इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम को खरीद लिया है तुमने।"

"नहीं किरन, सरासर गलत सोच रही हो तुम।" संजय ने

कहा—"हकीकत यह है कि मैं ऐसे सबूत जुटाने में कामयाब हो गया जिनकी रोशनी में त्रिवेन्द्रम को मानना पड़ा कि हत्यारा मैं हूं।"

"जरा मैं भी तो सुनूं, ऐसे कौन-से सबूत हैं वे?"

त्रिवेन्द्रम के पूछने पर अलका ने बताया कि उसका पिंक कलर के फूलवाला हेयर-बैण्ड गायब है। भंवर ने बताया कि उसके बेडरूम में कांच का एक गिलास होता था जो संध्या की मौत के बाद से नहीं है—इन दोनों रहस्योद्‌घाटनों ने मेरे बयान को सच साबित किया और फिर रुई के बण्डल में चलाई गयी गोली का नम्बर बताकर मैंने यह भी साबित कर दिया कि कत्ल नम्बर सेविन के रिवॉल्वर से हुआ था—खोजबीन करके त्रिवेन्द्रम जान चुका है कि वह रिवॉल्वर नम्बर सेविन के बाप का था।

सुनने के बाद किरन आवाक् रह गयी।

एकटक संजय को देखती रह गयी थी वह।

संजय ने कहा—"जीत-हार की बात अपने दिमाग से निकाल दो किरन, प्लीज—छोड़ दो ये पागलपन—उसे सजा होने दो जिसने जुर्म किया है—मैं पश्चाताप की अग्नि में सुलग रहा हूं—पागलपन में संध्या का कत्ल कर बैठा, उसे अपने सिर मढ़कर तुम मुझे इतनी सख्त सजा मत दो कि मेरी हर सांस मेरे लिए जहर की बूंद बन जाये—शांति और खामोशी के साथ मर जाने दो मुझे।"

"नहीं, तुम्हारा गुनाह इतना हल्का नहीं है कि मैं तुम्हें सुकून से मर जाने दूं।" भभकते स्वर में किरन कहती चली गयी—"तुमने मेरी सहेली की हत्या की है, उस सहेली की जो मुझे अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करती थी—उसके कत्ल की सजा इतनी हल्की नहीं हो सकती संजय—इस गुनाह की मैं तुम्हें ऐसी सजा दूंगी जिसे देखकर तुम पागल हो उठोगे, अपनी समझ में तुम इस जंग को जीत चुके हो मगर नहीं...यह तुम्हारी भूल है संजय, यह जंग मैं तुम्हें किसी हालत में नहीं जीतने दूंगी—उस फांसी के फंदे से तो तुम मुझे बचा लाये जिसे इन्सान की गर्दन में कानून डालता है मगर सोचो, अपने इस नायाब दिमाग पर जोर डालकर सोचो मेरे देवता कि फांसी के उस फंदे से तुम मुझे कैसें बचाओगे जिसे में खुद अपनी गर्दन में डालूंगी?"

"न...नहीं।" संजय हलक फाड़कर चीखा—"तुम ऐसा नहीं कर सकती किरन।"

"मैं ऐसा ही करूंगी प्राणेश्वर!" होंठों पर जहरीली मुस्कान और आंखों में हिंसक चमक लिये एक-एक लफ्ज को चबाती हुई किरन कहती चली गयी—"देखती हूं कि ऐसा करने से तुम मुझे कैसे रोकते हो—तुम मुझसे जीत नहीं सकते, इस जंग में फतह मेरी होगी स्वामी—इस

सुराहीदार गर्दन में फांसी का फंदा तुम्हें अपनी आंखों से देखना ही होगा जिसमें संध्या का नेकलेस देखने की खातिर उसका कत्ल कर डाला।"

"नहीं...नहीं किरन, इस तरह मत सताओ मुझे।" वह सचमुच किरन के कदमों में गिर गया। फफक-फफककर रो पड़ा वह, साथ ही कहता चला गया— 'मुझ पर इतना जुर्म मत करो मेरी देवी—तुम्हारी मुहब्बत में अंधा हो गया था मैं—मैं हार गया किरन, सचमुच मैं तुम्हें नहीं रोक सकता—इस जंग में हर तरह मेरी शिकस्त-ही-शिकस्त है, जीत तो किसी भी तरह नहीं सकता—अगर तुम आत्महत्या पर ही आमादा हो गयी तो मैं भला कैसे रोक सकता हूं तुम्हें मगर प्लीज...रहम करो मुझ पर, तरस खाओ किरन—इतनी कड़ी सजा मत दो, मैं वादा करता हूं—अगर फिर कभी किसी जन्म में तुम्हारा पति बनने का सौभाग्य मिला तो अपनी हैसियत से बाहर की चीज को आंख उठाकर नहीं देखूंगा।"

"हुंह!" जहरीली हुंकार के साथ उससे दूर हटती हुई किरन गुर्रायी—"तो तुम फिर किसी जन्म में मेरे पति बनने का ख्वाब देख रहे हो, लानत है तुम पर—कौन पत्नी होगी जो तुम जैसे जानवर के लिये अपनी मांग सजाना स्वीकार करे—नहीं संजय, तुम किसी के सुहाग कहलाने लायक नहीं हो—एक अच्छा पति पाने के बाद पत्नियां यह मन्नत मांगा करती हैं कि हर जन्म में मुझे पति के रूप में तुम ही मिलो मगर मैं...मैं ऐसी अभागिन पत्नी हूं जो दिल की गहराइयों से यह मन्नत मांगती है कि किसी भी जन्म में, किसी भी रूप में मुझे तुम्हारा ये मनहूस चेहरा देखने को न मिले—ऐसी कोई अभागिन लड़की न हो जिसे तुम्हारे नाम की चूड़ियां पहननी पड़ें।"

संजय फूट-फूटकर रो रहा था।

कुछ बोल नहीं पाया वह, केवल रोता रहा और यह सच है कि उसके इस तरह रोने का किरन पर लेशमात्र भी फर्क नहीं पड़ा, दरवाजे की तरफ बढ़ती हुई बोली —"अब इस किस्म का कोई भी ड्रामा करके तुम उस सजा से बच नहीं सकते संजय जो मैंने तुम्हारे लिये चुनी है, कल सुबह के सूरज के साथ तुम्हें मेरी गर्दन में फांसी का फंदा देखना होगा।"

तभी, वहां एक नारी स्वर गूंजा—"ठहरो किरन।"

दरवाजे की तरफ बढ़ती किरन पूरी तरह चौंकी।

पलटी।

एक थम्ब के पीछे से प्रकट होती हुई विभा को देखकर किरन के पैरों तले से जमीन खिसक गयी।

□□□

वहां विभा ही नहीं त्रिवेन्द्रम भी था।

जब यह प्रकट हुआ तो विस्फारित नेत्रों से किरन उसे देखती रह

गयी।

वह विभा से परिचित नहीं थी किन्तु त्रिवेन्द्रम को अच्छी तरह जानती थी—उसे और एक अजनबी महिला को वहां देखकर दंग रह गयी जहां उसकी कल्पनाओं के मुताबिक संजय अकेला होना चाहिये था।

उक्त सारा वृत्तांत मुझे बाद में पता लगा था।

विभा ने त्रिवेन्द्रम को भेजकर मुझे कोठी में बुलवाया—संजय उस वक्त भी हॉल के फर्श पर बैठा, हाथ और घुटनों में चेहरा छुपाए रो रहा था जब मैं वहां पहुंचा।

कम-से-कम उस वक्त मैं। नहीं समझ सका कि वह इस तरह क्यों रो रहा है?

सब-कुछ पूर्वनिर्धारित था।

विभा ने गारन्टी व्यक्त की थी कि किरन रात के किसी वक्त संजय से मिलने जरूर पहुंचेगी—संजय उसे देखकर चौंकने का अभिनय करेगा—उसे हॉल में लायेगा और ऐसी बातें करेगा जिनके जवाब में किरन अपने मुंह से यह स्वीकार करे कि वह निर्दोष है और संध्या की हत्या संजय ने की थी।

इस सारे ड्रामे की वीडियो फिल्म बनाने का काम त्रिवेन्द्रम के जिम्मे था।

उस वक्त मैं यह सोचकर परेशान था कि अभिनय करता-करता संजय वास्तव में इस कदर क्यों रो पड़ा—बाद में पता लगा कि किरन ने कुछ ऐसी बातें कही थीं जिन्हें सुनकर संजय पागल-सा हो उठा—भूल गया कि वह अभिनय कर रहा है, उसे यकीन हो चला था कि किरन उसे कभी माफ नहीं करेगी।

फांसी लगाकर आत्महत्या कर लेगी।

उसके इस कदर टूट जाने की यही वजह थी।

त्रिवेन्द्रम ने किरन को मेरा और विभा का परिचय दिया, कहा कि हमारे ही प्रयासों से संजय के खिलाफ सुबूत जुटाये जा सके हैं। जिनसे संजय को अदालत में हत्यारा साबित किया जा सके—जब उसे यह पता लगा कि उनी सुबूतों की श्रृंखला में कुछ देर पूर्व हॉल में घटी धटना की वीडियो-कैसेट बना ली गयी है तो वह इस तरह खड़ी रह गयी जैसे भीड़-भरे चौराहे पर उसे किसी ने ठग लिया हो।

"रोना बन्द करो संजय!" विभा ने कहा—"हम किरन को वह नहीं करने देंगे जो यह कह रही थी।"

"नहीं।" किरन गुर्रा उठी—"मैं अपनी मर्जी की मालिक हूं। आत्महत्या करने से मुझे कोई नहीं रोक सकता।"

"होश की बात करो किरन!"—विभा उससे कहीं ज्यादा खूंखार स्वर में गुर्रा उठी—"तुम्हें मालूम होना चाहिये कि कानून किसी को अपनी

जान लेने का हक नहीं देता और यह बेवकूफाना बात तुमने एक पुलिस इंस्पेक्टर के सामने कही है, तुम्हें गिरफ्तार करके जेल के अन्दर ऐसी कोठरी में रखा जा सकता है जहां आत्महत्या भी नहीं कर पाओगी।"

"तुम सबने मुझे ठगा है, जाल में फंसाया है।"

"बेशक फंसाया है मगर किसी दुर्भावना से नहीं। यह सबकुछ हमने इन्साफ के लिये किया है—कानून को सिर्फ उस शख्स को सजा देने का हक है जो गुनहगार हो—बेगुनाह को फांसी पर लटकाकर कानून अपनी विश्वसनीयता को धूल में नहीं मिला सकता—संजय ने हत्या की है, कानून का शिकार है यह—कानून इसे ही सजा दे सकता है।"

"मैं इसकी पत्नी हूं, क्या यह मेरी सजा का हकदार नहीं?"

"पत्नी होने के नाते तुम इसे सामाजिक-स्तर पर जो चाहे सजा दे सकती हो मगर वह सजा ऐसी नहीं होनी चाहिये जिससे इस देश का कोई कानून टूटता हो—इस बात की इजाजत कानून तुम्हें नहीं देगा।"

किरन अवाक् अवस्था में विभा की तरफ देखती रह गयी। भावनाओं के भंवर से बाहर निकल चुकी थी वह।

अब—

विभा उसे समझाने वाले लहजे में बोली—"संजय को जो सजा तुम देना चाहती थी वह नहीं दी जा सकती किरन, कानून तुम्हें उसकी इजाजत नहीं देगा और इस अवस्था में यह तुम्हें मानना होगा कि संजय फांसी और सिर्फ फांसी का हकदार है— इससे कम सजा संध्या के हत्यारे के लिये बहुत कम होगी, मानती हो ना?"

किरन ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

विभा के हिसाब से वह उस लाइन पर आ रही थी जिस पर लाना चाहती थी, बोली—"हालांकि वीडियो कैसेट सहित वे सारे सुबूत जुट चुके हैं जिनसे कोर्ट में तुम्हें बेगुनाह और संजय को कातिल साबित किया जा सकता है मगर जैसा कि तुम जानती होगी अदालत आम मर्डर केस में हत्यारे को फांसी की सजा नहीं देता—उम्र-कैद या उससे भी कम सजा देकर काम चला लेता है। फांसी की सजा केवल तभी दी जाती है जब यह साबित हो जाये कि हत्यारे ने पूरे 'पोशेन्स' के साथ योजना बनाकर हत्या की है, यह बात तुम जानती हो ना किरन?"

"ज...जानती हूं।"

"दुर्भाग्य से हमारे पास जो सुबूत हैं उनके बूते पर संजय को कोर्ट से फांसी की सजा नहीं दिलाई जा सकती।"

"क्यों नहीं दिलाई जा सकती?" किरन एक बार पुनः भड़क उठी—"संजय नाम के इस जानवर ने पूरे होशोहवास में, पूरे पेशेन्स के साथ इतनी खतरनाक योजना बनाकर मेरी सहेली की हत्या की है कि उतनी खतरनाक योजना कोई दूसरा नहीं बना सकता है।"

"यह सब हम जानते तो हैं मगर तुम्हारे सहयोग के बिना साबित नहीं कर सकते।"

"म...मेरे सहयोग से क्या मतलब?"

"अपने बयान से तुम और सिर्फ तुम ही साबित कर सकती हो कि मिस्टर संजय ने पूरे पेशेन्स के साथ योजना बनाकर संध्या की हत्या की। क्या तुम मिस्टर संजय को फांसी दिलाने में हमें यह सहयोग दोगी?"

"स...सहयोग?" एक-एक लफ्ज को चबाती हुई वह कह उठी—"आप सहयोग की बात करती हैं, मैं भरी अदालत में इस जानवर का मुंह नोच लूंगी—इसकी एक-एक करतूत सारी दुनिया को बता दूंगी।"

"सहयोग का आश्वासन देने के लिए धन्यवाद किरन।" विभा ने कहा—"अदालत सबसे पहला सवाल यह करेगी कि संजय की करतूत के बारे में तुम्हें किस वक्त और कैसे पता लगा तो तुम क्या जवाब दोगी?"

"संध्या की लाश और उसके गले में पड़े नेकलेस को देखकर मुझे सबसे पहले पता लगा कि संजय ने कितना घिनौना काम कर दिया है?"

"तुमने लाश कितने बजे देखी?"

"करीब सवा दो बजे।"

"सवा दो बजे?" विभा ने चौंकने की एक्टिंग की—"सवा दो बजे आप वहां क्यों गयीं थीं? आपको तो मालूम था ना कि डेढ़ से ढाई तक संध्या सोती है?"

"पौने दो के करीब संध्या ने मुझे फोन किया था।"

"फोन?"

"मेरी नॉलिज में संजय उस वक्त अपने ऑफिस में था। गर्मी काफी थी अतः नहाने के लिए मैं बाथरूम में घुस चुकी थी जब टेलीफोन की घण्टी बजी—मैंने बाथरूम से बाहर निकलकर रिसीवर उठाया, दूसरी तरफ से संध्या की आवाज सुनते ही चौंक पड़ी—पूछा कि क्या आज वह सोई नहीं है, जवाब में उसने कहा कि नींद तो बहुत जोर से आ रही है मगर आज वह सोना नहीं चाहती।"

"आपने जरूर पूछा होगा कि क्यों सोना नहीं चाहतीं?"

"हां, मैंने यही पूछा था।" किरन कहती चली गयी—"उसने कहा कि जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है कि अगर मैं आज सोई तो हमेशा के लिए सोती रह जाऊंगी—मैंने चौंककर पूछा कि ऐसा क्यों लग रहा है—जवाब में उसने कहा कि वजह मैं खुद नहीं जानती। कुछ देर पहले मेरे साथ एक ऐसी घटना घटी है जिसने मेरे दिमाग की जड़ों को हिलाकर रख दिया है—शायद उसी घटना की वज़ह से मैं सोना नहीं चाहती।

आंखें बन्द हुई जा रही हैं किरन—मुझे बहुत जोर से नींद आ रही है, मगर सोऊंगी नहीं—मुझे उस घटना पर तुमसे कुछ डिस्कस करना है अतः जितनी जल्दी-से-जल्दी आ सको, यहां आओ—मैंने पूछा कि आखिर उसके साथ ऐसी क्या घटना घटी है जवाब में संध्या ने कहा कि वह फोन पर कुछ नहीं बात सकती—मैं वहां पहुंच जाऊं और यह कहने के बाद मैं रिसीवर रखने ही वाली थी कि पहुचूं रही हूं कि उसने मुझसे कहा कि मैं खुद को सबकी नजरों से बचाकर बैकलॉन से होती हुई खिड़की के माध्यम से उसके पास पहुंचूं—चौंककर मैंने पूछा कि वह ऐसा क्यों चाहती है जवाब में केवल यही बोली कि वजह मेरे वहां पहुंचने पर ही बतायेगी।"

"फिर?" विभा ने पूछा।

"फोन डिस्कनेक्ट करने से पूर्व संध्या ने मुझे पुनः हिदायत दी कि उसके कमरे तक पहुंचते मुझे कोई न देख सके उसकी बातों ने मुझे अजीब शशोपंज में डाल दिया—मैं जल्दी-से-जल्दी संध्या के पास पहुंच जाना चाहती थी मगर फिर भी आधे घण्टे बाद यानी सवा दो बजे पहुंच पाई क्योंकि जब उसका फोन आया था तब मैं अपने बालों में मुल्तानी लगा चुकी थी—उसे धोने और तैयार होने में इतना टाइम लग गया।"

"वहां पहुंचने पर तुमने क्या देखा?"

"फट्टेदार कुर्सी पर पड़ी अपनी सहेली की खून से लथपथ लाश, उसके दायें हाथ में रिवॉल्वर झूल रहा था—फर्श पर एक गिलास टूटा पड़ा था, पहली नजर में मुझे ऐसा लगा जैसे संध्या ने आत्महत्या कर ली हो—मेरे हलक से चीख तक न निकल सकी—घिग्घी बंध गयी, फटी-फटी आंखों से मैं लाश को देख रही थी और देखते-ही-देखते मेरी नजर नेकलेस पर पड़ी—नेकलेस संध्या का नहीं था, वह मेरा था—"डुप्लीकेट नेकलेस—मैं देखते ही उसे पहचान गयी और पहचानते ही दिमाग में एक विस्फोट-सा हुआ। इस विस्फोट के साथ ही मैं इस कठोर और घिनौनी हकीकत को समझ गयी कि वह सारी करतूत संजय की है—नेकलेस के प्रति इसकी दीवानगी, मुझे मम्मी के पास भेजकर डुप्लीकेट नेकलेस बनवाने की जिद, संध्या को इसके द्वारा दी गयी वह सलाह जिसने मामले को और बिगाड़ दिया था तथा संजय की अन्य ढेर सारी संदिग्ध हरकतों की फिल्म-सी मेरे मस्तिष्क के पर्दे पर दौड़ती चली गयी—यह फिल्म और संध्या के गले में पड़ा नेकलेस मुझसे चीख-चीखकर कह रहे थे कि संध्या की हत्या संजय ने की है। संजय के प्रति मेरा दिल असीम घृणा से भर गया और इसी घृणा से प्रेरित होकर मैंने उसी क्षण यह फैसला किया कि मैं इसी रिवॉल्वर से अपना सुहाग उजाड़ दूंगी। इस रिवॉल्वर की सारी गोलियां संजय के जिस्म में

उतार दूंगी जिसकी एक गोली से उसने संध्या को खत्म किया है—मैंने फैसला कर लिया था कि रिवॉल्वर में भरी समूची आग संजय के जिस्म में भरकर दुनिया को बता दूंगी कि पत्नी पति को प्यार जरूर करती है, उसे अपना देवता, आराध्य, प्राणेश्वर और परमेश्वर जरूर मानती है मगर इतनी अंधी या इतनी मतवाली नहीं होती कि अपनी सहेली के हत्यारे की लम्बी आयु के लिये अपनी मांग सजाती रहे—इस फैसले के साथ मैंने रिवॉल्वर सम्भाला, अपनी साड़ी और पेट के बीच ठूंसकर पल्ला डाल लिया—जिस खामोशी के साथ वहां पहुंची थी उसी खामोशी के साथ लौट गयी—"कोठी पर पहुंची, सीधी ऑफिस में—मैं संजय से मिलना चाहती थी, उसे यह बताने के बाद शूट करना चाहती थी कि मैं वैसा क्यों कर रही हूं मगर रूबी ने मुझे लेखन-कक्ष में नहीं जाने दिया—अन्दर से खट्-खट् की आवाज आ रही थी। जाहिर था कि संजय वहीं है—मैं समझ गयी कि वह जालिम संध्या की हत्या करने के बाद पुनः लेखन-कक्ष में पहुंचकर रूबी को दिखाने के लिए बहाना कर रहा है मगर सोचते-सोचते चौंक पड़ी—दिमाग में यह सवाल उठा कि रूबी को धोखा देकर वह लेखन-कक्ष से कैसे गया और आया होगा, यह हकीकत मेरे सामने थी कि वह गया और आया है—सोचते-सोचते लेखन-कक्ष के गैलरी की तरफ खुलने वालो दरवाजे का ख्याल आया—कोठी किराये पर लेने से पहले जब हम इसे देखने आये थे तब हमने वहीं खड़े होकर फैसला किया था कि वह लेखन कक्ष बन सकता है—उस दरवाजे का ख्याल आते ही मैं समझ गयी कि हो-न-हो, संजय ने रूबी को धोखा देने के लिए उसी दरवाजे का इस्तेमाल किया है अतः प्रत्यक्ष में रूबी से नाराजगी प्रकट करके वहां से चली गयी मगर वास्तव में खुद को रूबी और चौकीदार की नजरों से छुपाकर गैलरी में पहुंची, वहां पहुंचते ही दंग रह गयी मैं।"

"सुना तुमने?" एकएक संजय की तरफ पलटकर विभा ने कहा—"तुम्हारी वह जबरदस्त भूल लेखन-कक्ष में गैलरी वाले दरवाजे को खुला छोड़ जाना थी—हालांकि अगर तुम उसे लॉक कर जाते तो तुम्हारी योजना पर कहीं भी, किंचित मात्र भी फर्क नहीं पड़ता, मगर इस बात का तुम्हें ख्याल नहीं आया—ऐसा होता है संजय, मुजरिम के साथ हमेशा ऐसा ही होता है, उससे वहां चूक होती है जहां लापरवाह होता है—उम्मीद है कि भविष्य में तुम उन लोगों को चैलेंज नहीं दोगे जिनका यह दावा है कि मुजरिम से कहीं-न-कहीं भूल-चूक या गलती जरूर होती है।"

संजय के मुंह पर ताला लटक गया था।

विभा ने किरन से कहा—"हां तो वहां पहुंचने पर तुम दंग क्यों रह

गयी किरन?"

'लोहे की जालियों वाले किवाड़ खुले पड़े थे—संजय वहां नहीं था, टाइपराइटर जैसी खट्-खट् की आवाज टेप रिकॉडर से निकल रही थी—उस दृश्य को देखकर में दंग रह गई, स्पष्ट था कि संध्या का कत्ल करने के बाद संजय अभी तक वहां नहीं पहुंचा है—दिमाग में यह सवाल अटककर रह गया कि इस वक्त वह कहां होगा—रूबी को धोखा देने वाली संजय की इस चालबाजी को समझकर उसके प्रति मेरे दिल में घृणा का सैलाब उमड़ पड़ा—यह सोचकर रूबी से अजीब-सी सहानुभूति हुई कि वह बेचारी यह सोच रही है कि उसके बॉस नए उपन्यास की कहानी में रम गए हैं और खुद को भूलकर काम में मशगूल हैं—अनजानी प्रेरणावश मैंने मेज की दराजें खोलकर देखनी शुरू की—मेरी पूरी कोशिश थी कि रूबी के कानों तक पहुंचने वाली कोई आवाज उत्पन्न न हो सके—टेप-रिकॉर्डर से निकलने वाली आवाज ने मेरी मुकम्मल मदद की और एक दराज में मुझे वे कागज मिल गए जिसमें संजय का पूरा प्लान था। वहीं खड़ी-खड़ी मैं उन कागजों को पढ़ती चली गई।"

"यानी पूरा प्लान जान गई?"

"सबकुछ मेरे सामने शीशे की तरह साफ हो चुका था—यह भी जान चुकी थी कि अभी तक संजय अपने लेखन-कक्ष में क्यों नहीं पहुंचा है, स्पष्ट था कि वह अलका के फ्लैट में चौगा, दस्ताने और नकाब प्लान्ट कर रहा होगा—उन कागजों को पढ़ने के बाद संजय को गोली से उड़ा देने का मेरा इरादा बदल गया—मेरे दिमाग ने इसके लिए एक दूसरी सजा चुनी—ऐसी सजा जो इसे पागल करके रख दे।"

"यानी तुमने फैसला कर लिया कि संध्या की हत्या के जुर्म में खुद को फंसा लोगी?"

"जाहिर है।" किरन कहती चली गई—"कागजों को पढ़कर मैं समझ चुकी थी कि सारे सुबूतों को अपने हाथ से नष्ट करने के बाद यदि संजय भी चाहे तो साबित नहीं कर सकता कि वह हत्यारा है मगर सारे सुबूतों को वह नष्ट तभी करेगा जब उसे यह विश्वास होगा कि उसका प्लान पूरी तरह सक्सेस रहा है कहीं किसी किस्म की कोई गड़बड़ नहीं हुई है और यही स्थापित करने के लिए मैंने प्लान वाले कागज ज्यों-के-त्यों दराज में रखे तथा अपने वहां पहुंचने के सारे निशानात मिटाती हुई खामोशी के साथ बेडरूम में आ गई—सोच चुकी थी कि मुझे किस तरह खुद को किरन की हत्या के जुर्म में फंसाना है अतः बेडरूम में पहुंचकर अपने जिस्म और कपड़ों पर वह परफ्यूम उंडेला जिसका मैं इस्तेमाल करती थी— गुस्से और उत्तेजना में भरी गाड़ी को

बेहद तेज रफ्तार से चलाती हुई डिफेंस कॉलोनी पहुंची—मैंने अपने साथ पोलीथिन का थैला ले लिया था—गाड़ी भंवर के बंगले से दस्ताने खरीदे और उन्हें पहनकर एक बार पुनः संध्या के बैडरूम में पहुंच गयी—इस बार में जान-बूझकर लॉन में अपनी सैंडिल्स के निशान छोड़ आई थी—लाश के गले में पड़े नेकलेस में परफ्यूम की खुशबू छोड़ी—बेड पर पड़ा अलका का हेयर-बैण्ड उठाया—फर्श पर टूटे पड़े कांच को इस हद तक समेटते हुए पोलीथिन की थैली में भर लिया कि फर्श पर उसका एक किरचा भी न बचे, मेरी नजर ठीक उस वक्त संध्या के वक्षस्थल पर पड़ी..."

"कहने का मतलब यह कि तुमने घटनास्थल की सारी 'सिचुएशन बदल दी।" जाने क्यों किरन की बात काटने के बाद विभा कहती चली गई—"ऐसे सुबूत छोड़े कि पुलिस तुम तक आसानी से पहुंच जाए?"

"हां!"

"वहां से निकलने के बाद तुम कहां गई?"

"हेयर-बेण्ड और कांच के टुकड़ों को एक नाले में डालने के बाद पोलीथिन की थैली सहित विकास-विहार पहुंची—अलका के फ्लैट की चाबी कार्पेट के नीचे से निकालकर अन्दर—अलमारी के नीचे ठुंसे चोगा नकाब और दस्ताने को पोलीथिन की थैली में रखकर पुनः पहले की तरह ठूंस दिया।"

"तुमने उन तीनों चीजों को पोलीथिन की थैली में क्यों रखा?"

"यह सोचकर कि अगर किसी परिस्थितिवश मैं और संजय आमने-सामने पड़ जायें तो पुलिस के समक्ष सच्ची मैं ही साबित होऊं—संजय तो यही बयान देता ना कि ये तीनों चीजें पोलीथिन के थैले में नहीं थीं?"

"अपने द्वारा खरीदे गए दस्ताने तुमने कहां डाले?"

"विकास-विहार से अपनी कोठी की तरफ लौटते वक्त नदी के पुल से नदी में।" किरन ने बताया—"और नदी के पुल वाले बूथ से ही मैंने अपनी कोठी पर फोन करके संजय को बम्बई भेज दिया ताकि मेरी गिरफ्तारी में वह किसी किस्म का अड़ंगा न डाल सके और हकीकत उस पर खुलने से पहले ही मैं त्रिवेन्द्रम को न सिर्फ अपनी सारी करतूत सुना सकूं बल्कि सारे सबूत बरामद भी करा सकूं।"

किरन के चुप होते ही विभा ने पूछा—"अभी एक सवाल रह जाता है।"

"वह क्या?"

"त्रिवेन्द्रम के सामने तुमने ऐसा ड्रामा क्यों किया जैसे आत्महत्या करना चाहती हो?"

"उसकी वजह..."

विभा पुनः उसकी बात काटकर बोली—"उसकी वजह मैं जानती हूं।"

"अ...आप जानती है?" किरन चौंकी—"कैसे?"

विभा त्रिवेन्द्रम की तरफ पलटती हुई बोली—"किरन को गिरफ्तार करने वक्त तुमसे एक बहुत बड़ी चूक हुई थी इंस्पेक्टर।"

"चू...चूक—म...मुझसे?" त्रिवेन्द्रम हकला गया—"क्या चूक हुई थी?"

"तुमने यह नहीं सोचा कि किरन ने सुसाइड-नोट कब लिख दिया?"

"क...क्या मतलब?"

"जबकि यह प्वाइंट भी दूसरे कई प्वाइंट्स की तरह मेरे दिमाग में तभी से खटक रहा था जब से अखबार में संध्या हत्याकाण्ड और किरन की गिरफ्तारी का विवरण पढ़ा था—जब तुम किरन को गिरफ्तार करने यहां आए जब किरन ने ऐसा अभिनय किया जैसे इसे तुम्हारे वहां पहुंचने की स्वप्न में भी उम्मीद नहीं थी—फिर यह ऐसी एक्टिंग करके बैडरूम में घुस गई जैसे आत्महत्या करना चाहती हो—भंवर, गोरखा और तुम्हारे सहयोगी जिस वक्त दरवाजा तोड़ने की कोशिश कर रहे थे उस वक्त तुम्हारी कोशिश कमरे में बंद किरन को बातों में उलझाए रखने की थी और अखबार के मुताबिक तुम इसमें सफल भी थे, किरन अन्दर से तुम्हारे हर सवाल का जवाब दे रही थी, दे रही थी ना?"

"जी हां।"

"फिर इसने वह सुसाइट-नोट कब लिख लिया जो लेडी-पुलिस की तलाशी में इसकी जेब से मिला था?"

त्रिवेन्द्रम बगलें झांकने लगा।

विभा कहती चली गई—"ऐसा कभी नहीं हो सकता कि एक शख्स उत्तेजनात्मक क्षणों में तुम्हारी सारी बातों का जवाब भी देता रहे और सूसाइड नोट भी लिख ले—यह सब तुम्हें सोचना चाहिए था तुम्हें यह भी सोचना चाहिए था इंस्पेक्टर कि इस हबड़तबड़ में किरन ने पैन और कागज इतनी जल्दी से मुहैया कर लिए मगर तुमने यह सब नहीं सोचा, यही तुम्हारी चूक थी—अगर सोच लेते तो उसी वक्त उतना सबकुछ जान लेते जितना मैं अखबार पढ़कर जान गई थी।"

"क...क्या जान गई थीं आप?"

"यह कि वह सुसाइड-नोट किरन का नहीं किसी अन्य का लिखा हुआ था।"

"अ...अन्य का किसका?"

"उस वक्त नहीं समझी थी मगर अब जानती हूं कि वह संध्या ने लिखा था।"

"स...संध्या ने?" त्रिवेन्द्रम के साथ ही मेरे और संजय के मुंह से भी

चीख-सी निकल गयी।

हैरत अंगेज स्वर में किरन ने पूछा—"आप यह कैसे जान गयीं कि वह संध्या का लिखा हुआ था?"

"इसके अलावा मुझमें कोई खूबी नहीं है किरन कि मैं बहुत-सी छोटी-मोटी बातों को जोड़कर एक बड़ी बात जान लेती हूं।" विभा ने बताया—"मैंने कई बार अखबार पढ़ा, जिन्दलपुरम् में ध्यान से संजय का बयान सुना—यहां आने के बाद उससे भी ज्यादा ध्यान से रूबी के मुंह से तुम्हारी गिरफ्तारी का विवरण सुना, मगर एक बार भी मुझे वह स्पॉट नहीं मिल पाया जहां तुम्हें सुसाइड-नोट लिखने का अवसर मिला हो—अलमारी में हिसाब की एक कॉपी रखी है, उसमें तुम महीने भर के खर्च का ब्यौरा लिखती थीं—उसकी राइटिंग का मिलान मैंने अदालत की फाइल में मौजूद सुसाइड-नोट से किया—मेरी शंका खरी उतरी कि सुसाइड नोट किसका लिखा हुआ हो सकता है? तुम्हारे हाथ कहां से लगा होगा, तुमने इसे अपना साबित करने के लिए ड्रामेबाजी क्यों की और लास्ट तक तुमने इस बात का खण्डन क्यों नहीं किया कि नोट तुम्हारा नहीं है—इन सब सवालों के जवाब में बार-बार एक ही बात मेरे दिमाग में आती थी, वह यह कि रिवॉल्वर की तरह यह नोट भी तुम्हें संध्या बेडरूम से ही मिला होगा—सो, शंका का निवारण करने के आज दोपहर छुपकर भंवर के बंगले में घुसी और वहां रखी मैरिज एनीवरसरी की कैसेट ने साबित कर दिया कि वह नोट संध्या का लिखा हुआ है।"

"क...कैसेट ने कैसे साबित कर दिया?"

"उस पर शादी की प्रथम वर्षगांठ लिखकर संध्या ने अपने साइन कर रखे हैं।"

"ओह!"

"जब तुम संध्या के बेडरूम से कांच आदि साफ करने का वृत्तांत सुना रही थी और जैसे ही यह कहा कि तुम्हारी नजर संध्या के वक्षस्थल पर पड़ी तो मैं समझ गयी कि तुम पैन और सुसाइड-नोट के बारे में बताने जा रही हो अतः मैंने जानबूझकर तुम्हारी बात काट दी।"

"क्यों?"

"अगर उस वक्त कहने देती तो संजय और त्रिवेन्द्रम चौंक पड़ते, सैकड़ों सवाल करते—नतीजा यह होता कि जो तुम बता रही थी उसमें विघ्न पड़ता जबकि मैं पैन और नोट पर अलग से चर्चा करना चाहती थी—उस वक्त तुम यह बताने जा रही थी कि तुम्हारी नजर संध्या के वक्षस्थल पर पड़ी, तुम्हें लगा कि वहां कुछ है और चैक करने पर एक पैन और नोट मिला तथा उसे भी साथ ले आयी।"

"हां मैं यही कहने वाली थी।"

"म...मगर!" संजय चौंककर बोला—"संध्या के सुसाइड-नोट का मतलब तो यह है कि उसने आत्महत्या की?"

"ओ!" किरन जहरीले स्वर में कह उठी—"तो इसका मतलब यह है कि तुम अभी भी लोगों को धोखा देने की फिराक में हो?"

"क...क्या मतलब?"

"घटना-स्थल पर जो स्थिति तुमने छोड़ी थी उसका मकसद ही यह था कि पहली नजर में त्रिवेन्द्रम उसे आत्महत्या का मामला समझे और अपने इसी प्लान के तहत तुमने वह नोट वहां छोड़ा था।"

"न...नहीं!" संजय चीख पड़ा—"यह झूठ है, मैंने वहां कोई नोट नहीं छोड़ा।"

उसके जवाब में किरन भी अभी चीखना ही चाहती थी कि विभा ने दोनों हाथ उठाकर उसे शान्त रहने का संकेत किया और संजय की तरफ पलटकर बोली—"तुम बिल्कुल चुप रहोगे संजय, जरा भी उत्तेजित नहीं होगे—मैं इस वक्त हर गुत्थी, हर सवाल का जवाब देने के मूड में हूं।"

संजय कसमसाकर रह गया।

इस उम्मीद में मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा कि यह सारा मामला एक ऐसी करवट लेने जा रहा है जिसकी शायद विभा के अलावा किसी ने कल्पना न की थी। सुसाइड-नोट मेरे दिमाग में इस वक्त एक पहेली बनकर लटका हुआ था—विभा पुनः किरन की तरफ पलटकर बोली—"तो तुमने पैन और नोट यह सोचकर अपने कब्जे में कर लिए कि यह करतूत भी संजय की ही होगी।"

"हां।"

"ऐसा तुमने कैसे सोच लिया किरन, तुम तो संजय का पूरा प्लान पढ़ चुकी थी—उसमें संजय ने कहीं नहीं लिखा था कि वह स्पॉट पर पैन और संध्या के हाथ का लिखा नोट भी छोड़ेगा?"

"मैंने सोचा कि प्लान बनाते वक्त संजय ने पैन और नोट छोड़ने का निश्चय नहीं किया होगा मगर स्पॉट पर पहुंचकर उसने अपने प्लान को और मजबूत बनाने के लिए यह तब्दीली कर ली होगी।"

"तुम संध्या की राइटिंग पहचाती थी ना?"

किरन ने बताया—"स्टूडेंट लाइफ से ही।"

"यानी देखते ही समझ गयी होगी कि नोट संध्या ने ही लिखा है?"

"फौरन समझ गयी थी।"

"फिर यह कैसे सोच बैठी कि उसे संजय ने ही वहां छोड़ा है?"

"संजय का प्लान पढ़ने के बाद कोई भी जान सकता था कि यह कितने धूर्त दिमाग का मालिक है। उस वक्त मुझे यही लगा कि संजय ने कत्ल करने से पहले किसी ट्रिक से संध्या के हाथ से नोट लिखवा

मैं दावे के साथ कह सकता था कि वह सबकुछ जान चुकी है मगर भगवान ही जाने कि वह क्या जान चुकी थी। धड़कते दिल से बुरी तरह बेचैन होकर मैंने पूछा—"तुम बोलती क्यों नहीं विभा—इस बारे में तुम्हारी अपनी राय क्या है? यह सुसाइड-नोट आखिर कह क्या रहा है?"

"ये नोट कुछ ऐसा कह रहा है वेद जिसे सुनकर तुम्हारे छक्के छूट जायेंगे।" कहने के बाद उसने एक नजर किरन पर डाली।

"त...तो छुड़ा दो ना छक्के।" मैं चीख-सा पड़ा—"बताओ विभा, प्लीज—बताओ।"

"आज नहीं।" कहकर वह मुस्करा दी।

□□□

अगले दिन—

हर अखबार में छपा था कि संध्या की हत्या के अपराध में प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार संजय भारद्वाज गिरफ्तार।

सारा मिशन विस्तारपूर्वक छपा था।

मगर विभा का नाम कहीं नहीं था—हर जगह त्रिवेन्द्रम का ही नाम था और ऐसा विभा द्वारा त्रिवेन्द्रम को दिये गये निर्देश के मुताबिक हुआ था—यह भी छपा था कि अपने खिलाफ सुबूत जुटाने में खुद संजय ने भी पुलिस की मदद की—अपने किस्म का अनोखा ही केस था यह।

इसलिये—

जगह-जगह इस केस की चर्चा थी—लोग एक-दूसरे को यह बताकर हैरान कर रहे थे कि किस तरह एक हत्यारे ने बीवी के नशे में डूबकर बीवी की सहेली की हत्या की और फिर इस हत्या के जुर्म में उसकी बीवी ही पकड़ी गयी तो उसने किस तरह खुद आपने खिलाफ सबूत जूटाकर साबित किया कि हत्यारा वह है?

आश्चर्य में डूबे लोग चटखारे ले-लेकर संजय का इन्टरव्यू पढ़ रहे थे।

□□□

अदालत-कक्ष उस दिन खचाखच भरा हुआ था जिस दिन इंसेक्टर त्रिवेन्द्रम संजय भारद्वाज को कोर्ट में पेश करने वाला था—आलम यह हो गया कि भीड़ को व्यवस्थित करने के लिए कचहरी में अतिरिक्त फोर्स की व्यवस्था करनी पड़ी ।

हर शख्स उसी अदालत की तरफ लपका चला जा रहा था जिसमें संजय को पेश होना था ।

मगर उसके आसपास कहीं भीड़ में फंस जाता, कक्ष तक न पहुंच पाता ।

लोग एक बार संजय की शक्ल देखने के लिए पगलाये फिर रहे थे

—उसके बयान सुनना चाहते थे—कक्ष में इतनी भीड़ हो चुकी थी कि 'तिल रखने' को जगह न थी अतः ढेर सारी पुलिस इस उद्देश्य के साथ दरवाजे पर तैनात हो गयी कि अब एक भी व्यक्ति कक्ष के अन्दर न जा सके ।

परन्तु—

पुलिस-कमिश्नर को भला कौन रोक सकता था ?

वे कक्ष की तरफ लपके चले जा रहे थे । पुलिस वाले स्वयं भीड़ को चीरते हुए उनके लिए रास्ता बना रहे थे और पुलिस-कमिश्नर के साथ थी एक औरत।

पर्दानशीं, बुर्कापोश ।

भीड़ पुलिस-कमिश्नर से ज्यादा उत्सुकता के साथ उसे देख रही थी।

उसे ! जो नख से शिख तक काले बुर्के में छुपी थी ।

अदालत की कार्यवाही ठीक दस बजे शुरू हो चुकी थी—संजय मुल्जिम वाले कटहरे में खड़ा था और त्रिवेन्द्रम उसके खिलाफ चार्जशीट पेश करनी ही चाहता था कि—

बुर्कापोश कोर्ट-रूम के द्वार पर पहुंच गयी ।

एक झटके के साथ अपने चेहरे से नकाब उलटती हुई चीखी — "ठहरिये इंस्पेक्टर साहब !"

अकेले त्रिवेन्द्रम ने नहीं बल्कि न्यायाधीश सहित कोर्ट-रूम में मौजूद बच्चे-बच्चे ने पलटकर आवाज की दिशा में देखा और ऐसे बहुत-से लोग थे जिनके हलक से चीखें निकल गयीं ।

आश्चर्यमिश्रित चीखें ।

मैं भी उन्हीं में से एक था ।

संध्या की लाश के फोटोग्राफ्स मैंने देखे थे और इस वक्त उसी चेहरे को मैं दरवाजे पर देख रहा था ।

पुलिस-कमिश्नर के साथ ।

मैंने पलटकर अपनी बगल में बैठी विभा की तरफ देखा, उसके होंठों पर 'भेदभरी' मुस्कान थी ।

संध्या बोली — "तुम एक बार फिर गलती करने जा रहे थे इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम ।"

बेचारा त्रिवेन्द्रम —

बोलता तो तब, जब बोलने की अवस्था में होता ।

मुंह बाये, दरवाजे की तरफ इस तरह देख रहा था वह जैसे खड़ा-खड़ा सो गया हो अथवा जागृत-अवस्था में ताजमहल को चहलकदमी करते देख रहा हो और उसी की क्यों ?

ऐसी अवस्था तो बहुत-से लोगों की थी ।

शायद विभा के अलावा सबकी ।

मेरी, रूबी की, किरन की, संजय की, अलका और भंवर की, उनके नौकरों की—कहने का मतलब यह कि हर उस शख्स की अवस्था त्रिवेन्द्रम जैसी थी जो संध्या को पहले से जानता था ।

काफी देर के सन्नाटे के बाद न्यायाधीश ने पूछा —"कौन हैं आप?"

"वह !" संध्या ने ऊंची आवाज में कहा—"जिसकी हत्या का मुकदमा इस अदालत में शुरू होने जा रहा है ।"

"क....क्या मतलब ?" न्यायाधीश महोदय तक हकला उठे।

दर्दयुक्त मुस्कान के साथ बोली वह—"जी हां, मेरा नाम संध्या है मीलॉर्ड—अगर आप इजाजत दें तो मैं इस अदालत को बताना चाहती हूं कि मुझे इतने दिन गायब रहने की जरूरत क्यों पड़ी ?"

कदाचित न्यायाधीश महोदय खुद को नियंत्रित कर चुके थे । धीरे-गम्भीर स्वर में बोले—"आपको जो कहना है, अदालत के नियमानुसार कटहरे में आकर कहिये ।"

अब—

वह आगे बढ़ी, पुलिस कमिश्नर दरवाजे ही पर खड़े रहे ।

विभा के होंठों पर नृत्य करती मुस्कान गहराती जा रही थी ।

हर निगाह सिर्फ-और-सिर्फ संध्या पर स्थिर थी । प्रत्येक चेहरे पर अचम्भे का सागर गर्ज रहा था और देखते-ही-देखते कटहरे में पहुंचकर संध्या ने कहना शुरू किया—"शायद यह कहने की जरूरत तो रह नहीं गयी है मगर फिर भी कह रही हूं कि संजय बेगुनाह है, इसने अपनी समझ में मेरी हत्या करने के बावजूद हत्या नहीं की और किरन तो बेगुनाह थी ही—इस केस में अगर कोई गुनहगार है तो वो 'वह' है ।"

कहने के साथ संध्या ने एक झटके से अंगुली भंवर की तरफ तान दी ।

"न...नहीं-नहीं ।" खड़ा होकर भंवर पागलों की मानिन्द चीख पड़ा — "तुम जिन्दा नहीं हो सकतीं, यह धोखा है—तुम किसी कीमत पर जिन्दा नहीं हो सकतीं संध्या ।"

"क्यों ?" उसके होंठों पर जहरीली मुस्कराहट उभरी—"क्यों जिन्दा नहीं हो सकती मैं ? यह बात इतनी गारण्टी के साथ तुम कैसे कह सकते हो ? इसीलिए ना क्योंकि तुमने जहर देकर मुझे मार दिया था ?"

इतना सुनने के बाद भंवर ने उसका प्रतिरोध जुबान से नहीं किया बल्कि कक्ष से भाग खड़े होने जैसी बेवकूफी से भरी कोशिश की—द्वार पर पुलिस कमिश्नर शायद उसी के इन्तजार में खड़े थे किन्तु उन्हें हाथ हिलाने की जरूरत न पड़ी क्योंकि भंवर के आसपास मौजूद पब्लिक ने ही उसे दबोच लिया था ।

अलका तक आंखों में हैरत लिए भंवर को देख रही थी ।

संध्या ने हुक्म-सा दिया—"इन्हें इस कटहरे में खड़ा कर दिया जाये जिसमें संजय खड़ा है और अगर आपकी इजाजत हो मीलॉर्ड तो संजय मुजरिम वाले उस कटहरे से हट जाये ?"

पांच मिनट बाद—

दृश्य पूरी तरह परिवर्तित था ।

भंवर के स्थान पर संजय बैठा था और संजय के स्थान पर खड़ा था भंवर !

आंखों में खौफ, चेहरे पर पीलापन लिये ।

ऐसी अवस्था थी उसकी जैसे उन सब लोगों के बीच उसे नग्न कर दिया गया हो, जिनसे वह सम्मान पाने का हकदार था—एक-एक शब्द को चबाती हुई संध्या ने कहा—"नजरें झुकाये क्यों खड़े हो पति-परमेश्वर—चेहरा ऊपर उठाओ और जवाब दो कि अदालत को अपनी करतूत खुद बता रहे हो या मैं तकलीफ फरमाऊं ?"

भंवर कुछ नहीं बोला, चेहरा झुकाये खड़ा रहा वह ।

"तुम नहीं बोलोगे नाथ, मुंह में जुबान ही नहीं है तो बोलोगे कहां से ?" संध्या एक-एक शब्द को चबाती हुई कह रही थी—"यह शख्स मेरा हत्यारा है मीलॉर्ड, इसने मुझे पूरे विश्वास में लेकर मेरी हत्या की —सात अक्तूबर के दिन करीब बारह बजे 'अलका' को लेकर मेरे और इसके बीच झगड़ा हुआ— झगड़ने के बाद यह बंगले से बाहर चला गया मैं रोती-सिसकती अपने बेडरूम में—नियम के मुताबिक यह एक बजे के आसपास लंच के लिये बंगले पर आता था मगर उस दिन नहीं आया, एक बजकर दस मिनट पर एक नौकर मुझसे खाने के लिये पूछने कमरे में आया—गुस्से और झुंझलाहट के कारण मैंने उसे बुरी तरह डांटकर भगा दिया—ठीक एक बजकर पन्द्रह मिनट पर मेरे कानों में 'दस्तक' की आवाज पड़ी—मैं चौंकी—पहली बार मैं समझ नहीं पाई थी कि 'दस्तक' की आवाज किस तरफ से आई है मगर जब 'दस्तक' पुनः उभरी तो जान गयी कि कोई गेस्ट-रूम के उस दरवाजे पर है जो 'कम्बाइन्ड-टॉयलेट' में खुलता था—हमारे बेडरूम से अटैच्ड टॉयलेट दरअसल गेस्ट-रूम से भी अटैच्ड है यानी दो कमरों के बीच एक टॉयलेट—असमंजस में पड़ी मैं बेड-रूम का दरवाजा खोलकर टॉयलेट में पहुंची—टॉयलेट और गेस्ट-रूम का दरवाजा टॉयलेट की तरफ से बन्द था अतः पुनः दस्तक भरी—मैं समझ नहीं पायी कि इस तरह चोरी से मेरे पास कौन आना चाहता है, धड़कते दिल जब मैंने पूछा कि कौन है ? तो मेरे परमेश्वर की फुसफुसाती आवाज उभरी—'मैं भवंर हूं अलका, प्लीज—दरवाजा खोलो, मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं, माफी

मांगनी चाहता हूं तुमसे'—मैंने पूछा — 'चोरों की तरह आकर ?' जवाब मिला कि मेरे हर सवाल का जवाब देंगे अतः दरवाजा खोलूं—काश, उस वक्त मुझे इल्म हो जाता कि मेरे पति-परमेश्वर दिल में मेरे कत्ल का इरादा लेकर इस तरह आये हैं मगर ऐसा ख्याल पत्नियों को स्वप्न में भी नहीं आता इसलिये मैंने दरवाजा खोल दिया—टॉयलेट से गुजरकर यह मुझे साथ लिये कमरे में आ गये और कमरे में पहुचते ही इन्होंने अपनी जेब से निकालकर जो सबसे पहली चीज मुझे दी वह इनके हाथ का लिखा खत था—उसमें लिखा था कि खत लिखने की जरूरत इन्हें इसलिए पड़ी क्योंकि मुंह से माफी मांगने की हिम्मत नहीं जुटा पाये थे—उस खत में 'अलका' को लेकर नौकरों के सामने हुए झगड़े के लिये इन्होंने इतनी लच्छेदार और मार्मिक भाषा-शैली में मुझसे माफी मांगी थी कि मैं पिघल उठी । आंखों से आंसू बह निकले—खत में चोरों की तरह आने की वजह इन्होंने यह लिखी थी कि खुलेआम आकर यह नौकरों की नजरों में जलील नहीं होना चाहते थे—खत में इन्होंने मुझसे यह 'रिक्वेस्ट ' की थी कि शाम को मैं नौकरों के सामने यह कहूं कि दुनिया में अलका नाम की ऐसी कोई औरत नहीं है जिससे इनके सम्बन्ध हों और बदले में इन्होंने अलका से मुकम्मल सम्बन्ध तोड़ लेने का वादा किया था—मेरी उस वक्त की अवस्था को केवल वे पत्नियां समझ सकती हैं जिनके पति झगड़े के बाद इतनी जल्दी क्षमा मांग लेते हैं, वे समझ सकती हैं—उन क्षणों में दोनों के बीच मुहब्बत का ऐसा सैलाब उमड़ता है जैसा सामान्य अवस्था में नहीं उमड़ता और यही हालत मेरी हो गयी, मैं इनसे लिपटकर रो पड़ी—इतनी 'खो' गयी कि सोई भी नहीं—कहने का मतलब यह कि इन्होंने अपनी जेब से एक पैन भी निकालकर वहां डाल दिया—उस वक्त मुझे इनकी 'एक्टीविटीज' पर ध्यान देने का होश कहां था, मजे की बात तो यह है कि मुझे बांहों में भरे ये भी रो रहे थे—रह-रहकर झगड़े में अपने द्वारा बोले गये शब्दों के लिये माफी मांग रहे थे—मुझे प्यास लगी, आराम-कुर्सी से उठकर बेड की पुश्त से पानी लिया और गिलास हाथ में लिये सैन्टर टेबल के पास पहुंची ही थी कि इन्होंने अपने आंसू पोंछने के लिये मुझसे टॉवल की रिक्वेस्ट की—टॉवल अलमारी में था सो पानी से भरा गिलास सैन्टर-टेबल पर रखकर अलमारी की तरफ बढ़ गयी—इन्हें टॉवल देने के बाद पानी पिया—हालांकि पानी का स्वाद मुझे उसी वक्त हल्का कसैला-सा लगा था मगर खास ध्यान नहीं दिया—कुछ देर ये और उसी तरह प्यार-मुहब्बत-भरी बातें करते रहे और फिर ऑफिस से जल्दी आने के लिए कहकर पौने-दो से कुछ पहले उसी रास्ते चले गये जिससे आये थे—मैंने तह हुआ इनका खत और पैन ब्लाउज में ठूंसे, टॉवल बाक्स

अलमारी में रखा मगर तब तक मेरा सिर चकराने लगा था—शुरू में यह सोचकर रह गयी कि ऐसा नींद के कारण हो रहा है मगर मुश्किल से एक या दो पल बाद यकीन हो गया कि बात कुछ और है । मुझ पर बेहोशी काबिज होने का प्रयत्न कर रही थी—'रैयर-केसिज' में पहले भी कई बार डेढ़ से ढाई के बीच मुझे जागना पड़ा था—उस अवस्था में मुझे 'आलस्य' सा तो जरूर आता था मगर आंखों के आगे रह-रहकर अंधेरा नहीं छाता था या ऐसा नहीं लगता था कि बेहोश होने वाली हूं जबकि उस वक्त ऐसा ही लग रहा था—शायद इसी वजह से अचानक मुझे भंवर का वहां चोरों की तरह आना संदिग्ध-सा लगने लगा और सन्देह की इसी अवस्था में मैंने किरन को फोन किया—मेरी मंशा भंवर के वहां आने और उसके द्वारा कही गयी बातें पर अपनी अंतरंग सहेली से 'डिस्कस' करने की थी—रिसीवर रखते वक्त मुझे अपनी हालत और ज्यादा बिगड़ गयी-सी लगी—तभी, पानी के कसैलेपन का ख्याल आया—लड़खड़ाती हुई मैं बड़ी मुश्किल से आराम-कुर्सी पर ढेर हो गयी—जाने किस भावना से प्रेरित होकर अपने ब्लाउज से भंवर का पत्र निकाला—खोलकर मिचमिचाती आंखों से उसे पढ़ने का प्रयत्न किया तो चकराकर रह गयी—पत्र भंवर का नहीं, मेरे हाथ का लिखा था—वह, जिसे भंवर ने एक दिन मुझसे अपने हाथ में लगी चोट का बहाना करके उपन्यास के अंश के रूप में लिखवाया था—उसे पढ़ते ही मेरे दिमाग में बड़ी तेजी से यह ख्याल कौंधा कि मैं आत्महत्या कर रही हूं—पलक झपकते ही भंवर की सारी साजिश दिमाग में स्पष्ट हो गयी—उसने उस वक्त मेज से अपना खत उठाकर 'यह' कागज डाल दिया होगा जब उसकी तरफ पीठ किये मैं बेड के पास खड़ी गिलास में पानी डाल रही थी । मुझे टॉवल के बहाने अलमारी की तरफ भेजकर पानी से भरे गिलास में कुछ मिला दिया होगा । ये सारी बातें मेरे दिमाग में कौंध गयीं—बोलो भंवर, तुमने ऐसा ही किया था ना ?"

भंवर ने कोई जवाब नहीं दिया, गर्दन झुकाये खामोश खड़ा रहा ।

इतनी भीड़ के बावजूद कक्ष में ऐसा सन्नाटा व्याप्त हो चुका था जैसा ब्लेड की धार पर होता है और सन्नाटे को पुनः संध्या की ही आवाज ने तोड़ा । उसने न्यायाधीश महोदय से सम्बोधित होकर उच्च स्वर में कहा था —"इससे सवाल कीजिये मीलॉर्ड, जवाब लीजिये इससे — पूछिये कि इसने मुझे इसी तरह विश्वास में लेकर जहर दिया था या नहीं ?"

"जवाब दीजिये मिस्टर भंवर !" न्यायाधीश महोदय ने कहा—"अदालत तुम्हें किसी भी जवाब के लिये बाध्य नहीं करती—'हां' या

'नहीं'—आप दोनों जवाब देने के लिये स्वतन्त्र हैं ।"

भंवर ने धीरे-धीरे चेहरा ऊपर उठाया, शायद समझ चुका था कि 'इन्कार' करने से भी अब वह बच नहीं सकता अतः बोला—"संध्या का एक-एक लफ्ज सच है लेकिन मुझे हैरत है कि यह जीवित खड़ी है ।"

संध्या चीख पड़ी , "जब तुमने अपना गुनाह कुबूल कर ही लिया है भंवर तो इस भरी अदालत में मैं तुमसे एक सवाल और पूछना चाहूंगी —क्या तुम उसका जवाब दोगे ?"

"प... पूछो !"

"मेरी हत्या करने का फैसला तुमने कब लिया था ?"

"जब से तुम्हें अलका के बारे में पता लगा था और उसे लेकर आये दिन मुझसे 'चख-चख' शुरू की थी—मैं अलका को नहीं छोड़ सकता था बल्कि अगर यह कहा जाये तो गलत न होगा कि अलका को अपनी पत्नी बनाने का निश्चय कर चुका था मैं—मैंने यह सोचा था कि तुम्हारा मर्डर ऐसे हालात में करूंगा कि पुलिस उसे आत्महत्या समझे और पुलिस तुम्हारी हत्या को आत्महत्या सबसे सशक्त ढंग से तब समझ सकती थी जबकि पुलिस को तुम्हारे हाथ का लिखा 'सुसाइड-नोट' भी मिले मगर लाख दिमाग लड़ाने के बावजूद मैं यह नहीं सोच पा रहा था कि तुमसे 'सुसाइड-नोट' किस तरह लिखवाया जा सकता है—एक दिन जब मैं संजय से मिला तो बात करते-करते एकदम से यह बात 'क्लिक' कर गयी कि एक उपन्यासकार अपने किसी प्रियजन से बड़ी आसानी के साथ 'सुसाइड-नोट' लिखवा सकता है और उसी दिन से एक उपन्यास लिखने का प्रचार शुरू करके उलटी-सीधी जो कहानी दिमाग में आई लिखनी शुरू कर दी—फिर मौका ताड़कर एक दिन मैंने अपने हाथ पर पट्टी बांध ली । तुमसे बहाना किया कि हाथ में चोट लग गयी है—उसी रात तुमसे कहा कि मेरे उपन्यास की कहानी का उससे आगे का मैटर दिमाग में उथल-पुथल कर रहा है, जितना लिख चुका हूं मगर हाथ में चोट के कारण लिख नहीं सकता—तुमने हंसते हुए मजाक में कहा था कि 'तुम बोल दो, मैं लिख देती हूं,' और मैंने बात पकड़ ली—मैं बोलने लगा, तुम लिखने लगी—अन्य काफी सारे मैटर के साथ मैंने 'सुसाइड-नोट' भी लिखवा लिया—तुम्हें बिल्कुल शक नहीं हुआ कि मैंने अपना कितना बड़ा उल्लू सीधा कर लिया है—तुम यही समझती रही कि 'सुसाइड-नोट' मेरे उपन्यास की किरदार का है—हां, तुमने यह जरूर पूछा था कि 'उपन्यास की किरदार आत्महत्या करने से पहले सुसाइड-नोट के नीचे अपना नाम क्यों नहीं लिखती'—मैंने यह कहकर बात टाल दी थी कि यह सस्पैंस उपन्यास के अंतिम पृष्ठों में खुलेगा कि आत्महत्या

करने से पहले इस किरदार ने सुसाइड-नोट के नीचे अपना नाम क्यों नहीं लिखा था—तुम सन्तुष्ट हो गयी—मैंने तुम्हारे हाथ के लिखे सूसाइड-नोट को कागज पर लिखे अन्य मैटर से इस तरह अलग कर लिया कि किसी को 'इल्म' तक नहीं हो सकता था कि उससे आगे पीछे भी कुछ लिखा गया था—अब मैं उस अवसर की तलाश में लग गया कि जिन परिस्थितियों में तुम्हारी हत्या करके 'सुसाइड-नोट' को प्लान्ट कर सकूं और सात अक्तूबर वाले रोज वे परिस्थितियां तुमने खुद क्रियेट कर दीं ।"

"आपने सुना मीलॉर्ड ?" संध्या चिल्लाई—"आपने अपने कानों से सुना कि एक पति ने अपनी पत्नी को किस कदर विश्वास में लेकर जहर दिया—क्या ऐसे दरिन्दे को आप कोई छोटी-मोटी सजा देकर कानून का पेट भर लेंगे—नहीं जज साहब, भंवर फांसी से कम सजा का हकदार नहीं है—मैं अदालत से दरख्वास्त करती हूं कि ताजिराते हिन्द दफा तीन सौ दो के तहत यह अदालत भंवर को फांसी देने का ऐलान करे ।"

"किसी भी व्यक्ति को फांसी की सजा केवल दो ही जुर्मों में दी जा सकती है मिसेज संध्या !" न्यायाधीश महोदय ने धीर-गम्भीर स्वर में कहा—"या तो वह राष्ट्रद्रोही साबित हो या उसने किसी की हत्या की हो ।"

"क्या भंवर ने मेरी हत्या नहीं की ?"

"आप जीवित खड़ी हैं ।"

"मगर अपनी तरफ से भंवर ने मेरा कत्ल कर दिया था ।"

"भले ही कर दिया हो किन्तु चूंकि आप जीवित हैं, इसलिये मिस्टर भंवर पर दफा तीन सौ दो नहीं बल्कि तीन सौ सात के तहत मुकदमा चलेगा यानी इन्होंने हत्या का प्रयास किया और कानूनन तीन सौ सात के मुजरिम को फांसी की सजा नहीं दी जा सकती ।"

"यानी आपका कानून यह कहता है कि वह किसी दरिन्दे को तब फांसी पर चढ़ायेगा जबकि वह कम-से-कम एक व्यक्ति को मौत के घाट उतार चुका हो ।"

"बेशक .....कानून यही कहता है ।"

"अगर आपका कानून यही कहता है मीलॉर्ड तो मैं ये शर्त भी पूरी करूंगी — इस अदालत को भंवर के लिए फांसी का ऐलान करना होगा। अगर इसे फांसी से कम सजा मिली तो मुझे सन्तुष्टि नहीं होगी।"

"क्या मतलब ?"

"कानून की शर्त पूरी हो चुकी है मीलॉर्ड !" कहती हुई संध्या ने अपने चेहरे से एक फेसमास्क नोंचा और चीखी—"संध्या मर चुकी है, वह अभागी अब इस दुनिया में नहीं है ।"

और इस बार फिर अदालत में लोगों की चीखें गूंजीं ।

सबसे जोरदार चीख मेरे हलक से निकली थी क्योंकि वह विभा थी जिसके हाथ में संध्या का फेसमास्क झूल रहा था । मैंने बुरी तरह चौंककर अपनी बगल में बैठी विभा की तरफ देखा ।

मेरी तरफ देखकर वह मुस्कराई ही नहीं बल्कि आंख भी मारी। छक्के छूट गये मेरे, दिमाग अंतरिक्ष में परवाज कर रहा था ।

□□□

भंवर का चेहरा कोल्हू के दो पाटों के बीच से निकले गन्ने जैसा हो गया था ।

कक्ष में छाये शोर-शराबे और गहमा-गहमी पर काफी देर बाद काबू पाया जा सका ।

जब अदालत पुनः सामान्य अवस्था में आई तो कटहरे में खड़ी विभा ने कहा—"भौंचक्के तो सभी रह गये हैं मगर सबसे ज्यादा भौंचक्का रह गया है मेरा दोस्त, फेमस नॉवलिस्ट वेद प्रकाश शर्मा—क्योंकि मैं ठीक उसकी बराबर वाली कुर्सी पर बैठी हूं, खड़ी हो जाओ वीणा—चेहरे से फेसमास्क उतार लो ।"

आदेश मिलते ही मेरी बगल में बैठी विभा खड़ी हो गयी, फेस मास्क नोंच लिया ।

वह वीणा ही थी, विभा जिन्दल की सहयोगिनी ।

न्यायाधीश महोदय ने विभा से पूछा कि वह कौन है ? जवाब में संक्षेप में अपना पूरा परिचय देने के बाद वह कटहरे से निकली, अपना 'वकालतनामा' कोर्ट में दाखिल करने के बाद बोली—"मैं मिस्टर भंवर के खिलाफ केस लड़ना चाहती हूं योर ऑनर—जिस किस्म का ड्रामा कुछ देर पहले अदालत में मैंने किया है वैसे ड्रामे कोर्ट में मैं किया नहीं करती मगर इस केस में करना पड़ा । कुछ मजबूरियां थीं ।"

"कैसी मजबूरियां ?"

अपने जिस गुनाह को मिस्टर भंवर ने संध्या को जीवित जानकर भरी अदालत में स्वीकार कर लिया है उसे ये तब तक किसी कीमत पर स्वीकार नहीं करते जब तक कि इन्हें विश्वास होता कि संध्या इस दुनिया में नहीं है—ऐसा इसलिए होता योर ऑनर क्योंकि इनकी समझ के मुताबिक इनकी करतूत के बारे में किसी अन्य को पता न था , सब कुछ संध्या को बताते देखकर ही ये पस्त हुए ।"

"मगर वह सबकुछ तुम्हें कैसे मालूम था ?"

"गहरी इन्वेस्टीगेशन करके जाना था मैंने ।"

"अदालत सुनना चाहती है ।"

"हालांकि विस्तारपूर्वक तो सारा किस्सा मैं इस मुकदमे की अगली तारीखों पर बयान करूंगी मगर मौजूद लोगों का तरद्दुद दूर करने के

लिए जरूरी बातें बता देती हूं ।" विभा ने कहना शुरू किया— "जब इंस्पेक्टर त्रिवेन्द्रम ने मुझे अपनी इन्वेस्टीगेशन और भंवर तथा उसके नौकरों द्वारा दिये गये बयानों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया तो सबसे पहले मेरे दिमाग में संध्या के बेडरूम का टॉयलेट में खुलने वाला दरवाजा खटका, त्रिवेन्द्रम ने बताया था कि वह कमरे की तरफ से बन्द नहीं था उधर टॉयलेट में खुलने वाला गेस्ट-रूम का दरवाजा टॉयलेट की तरफ से नहीं बल्कि गेस्ट रूम की तरफ से बन्द था। कुल मिलाकर वह सारी 'सिचुएशन' खटकने वाली थी।"

"क्यों ?" न्यायाधीश ने पूछा ।

"आमतौर पर 'ज्वाइंट' टॉयलेट में जब एक कमरे से कोई व्यक्ति जाता है तो वह दूसरे कमरे के दरवाजे की चटकनी टॉयलेट की तरफ से चढ़ा देता है ताकि दूसरे कमरे से अन्जाने में कोई टॉयलेट में न आ सके—गेस्टरूम अक्सर खाली पड़ा रहता था अतः स्वाभाविक बात यह थी कि उसके और टॉयलेट के बीच वाले दरवाजे की चटकनी टॉयलेट की तरफ से लगी हुई रहे मगर ऐसा नहीं था । इधर संध्या के बेडरूम का दरवाजा भी बेडरूम की तरफ से बन्द नहीं था यानी स्थिति यह थी कि कोई भी व्यक्ति निर्विघ्न गेस्टरूम से टॉयलेट में होता हुआ संध्या के बेडरूम में आ-जा सकता था । यह स्थिति मुझे 'खटकी' ।"

"गुड !" न्यायाधीश महोदय कह उठे ।

"जब त्रिवेन्द्रम ने बताया कि उससे बातचीत के दरम्यान भंवर ने यह सम्भावना व्यक्त की थी कि संध्या ने आत्महत्या की हो सकती है और यह सुनकर 'वह' बुरी तरह चौंका भी था कि संध्या की हत्या रिवॉल्वर से हुई है, हालांकि भंवर ने तुरन्त ही सम्भलकर बात बदल दी थी और यह हकीकत है कि त्रिवेन्द्रम उसे पकड़ नहीं पाया था मगर त्रिवेन्द्रम के मुंह से वह सारा वृतांत सुनकर मैं चौंक पड़ी, भंवर मेरे सन्देह के दायरे में फंस गया ।"

"भंवर पर आपको किस तरह का शक हुआ क्योंकि कातिल तो सामने ही था अतः आपके द्वारा यह सोचे जाने का तो सवाल ही नहीं उठता कि संध्या का कातिल भंवर हो सकता है ?"

"सारा 'सैटअप' मुझे तभी से नहीं जंच रहा था योर ऑनर जब से मैंने अखबार पढ़ा था—मुझे लग ही नहीं रहा था कि किरन से बरामद 'सुसाइड-नोट' किरन ही का है । इसी तरह की कुछ और शंकाएं और थीं—कहने का मतलब यह कि मुझे लग रहा था कि मामला उतना सीधा-सादा नहीं है जितना नजर आ रहा है, इसीलिये भंवर पर संदेह हुआ ।"

"फिर ?"

"त्रिवेन्द्रम से बात करने के बाद गाड़ी द्वारा मैं, रूबी संजय और

वेद, संजय की कोठी की तरफ जा रहे थे कि अचानक मैंने महसूस किया कि लाल रंग की एक 'कॉन्टेसा' हमें फॉलो कर रही है—मैं खुश हो उठी, मुजरिम की ऐसी भूलों से इन्वेस्टीगेटर बड़ी तेजी से फायदा उठा सकता है—सबसे पहली बात तो दिमाग में यह कौंधी कि जब उस केस का मुजरिम यानी संजय मेरे साथ है, जिस पर मैं काम कर रही हूं तो ये पीछा करने वाले कौन हैं और किस उद्देश्य से हमें फॉलो कर रहे हैं, जानने के लिए मैं व्यग्र हो उठी—पहले चुपचाप यह जांचा कि कॉन्टेसा सचमुच हमें फॉलो कर रही है अथवा मेरा वहम है—जब बात पक्की हो गयी तो गाड़ी रुकवाकर मैं उतर पड़ी और वेद से गाड़ी लेकर सीधे संजय की कोठी पर जाने के लिये कहा—उधर एक गुण्डा -सा नजर आने वाला व्यक्ति कॉन्टेसा से उतरा—कॉन्टेसा वेद की मारुति की पीछे चली गयी और उससे उतरा गुण्डा मुझे फॉलो करने लगा—कुछ देर तक मैंने उसे निरुद्देश्य सड़कों पर घुमाया और फिर मौका मिलते ही इस तरह उसकी नजरों से ओझल हो गयी कि वह मेरी नजरों से ओझल न हो सके—बौखलायी हुई अवस्था में कुछ देर तक वह मुझे इधर-उधर ढूंढ़ता रहा मगर बेचारे को सुकून तो तब मिलता जब मैं नजर आती—थक-हारकर, परेशानी के आलम में उसने एक टैक्सी पकड़ी—मैं दूसरी टैक्सी में सवार हो गयी—अब गंगा उलटी बह रही थी यानी मैं उसे फॉलो कर रही थी—उस बेचारे ने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि उसी का पीछा किया जा रहा है, नतीजा यह कि मेरे देखते-ही-देखते वह टैक्सी से उतरकर एक बिल्डिंग में समा गया—मैं तुरन्त बिल्डिंग के अन्दर नहीं गयी बल्कि काफी देर बाद मौका ताड़कर पीछे की तरफ से चोरों की तरह बिल्डिंग में दाखिल हुई—वहां के किस्से को कोर्ट में विस्तारपूर्वक सुनाने की कोई तुक नहीं है अतः लब्बो-लुबाव यह कि गुण्डों में से किसी की भी नजरों में आये बिना मैं एक ऐसे शख्स के पास पहुंच गयी जिसे इन गुण्डों ने बिल्डिंग के एक कमरे में कैद कर रखा था । वह पंद्रह साल का एक लड़का था उसे मालूम नहीं था कि गुण्डों ने उसे यहां क्यों कैद कर रखा है—मैंने उससे उसके माता-पिता का नाम और एड्रेस पूछा तथा उससे वादा करके पूरी खामोशी के साथ बिल्डिंग से बाहर निकल गयी कि बहुत जल्द मैं उसे गुण्डों की इस कैद से मुक्त करा लूंगी ।"

"आपने उस बच्चे को आजाद क्यों नहीं करा लिया ?"

"अपनी इन्वेस्टीगेशन के दरम्यान मुझे ऐसी कोई भूल करने की आदत नहीं है योर ऑनर जिससे दुश्मन सतर्क हो जाये बल्कि मेरी नीति उस वक्त तक दुश्मन को पूरी तरह इस धोखे में रखने की है कि उसका हर काम निर्विघ्न चल रहा है जब तक कि वह पूरी तरह मेरे

जाल में न फंस जाये—बच्चे को उनकी कैद से आजाद करा लाने का मतलब यह था कि मैं दुश्मन को यह बात बता देती कि 'गड़बड़ हो चुकी है'—बेवजह दुश्मन को ऐसे संकेत देना मेरी नजर में बेवकूफी होती है और फिर अभी तो मैं ठीक से यह भी नहीं जान पाई थी कि दुश्मन है कौन—अपने काम की जानकारी मैं लड़के से ले ही चुकी थी वैसे भी लड़के ने बताया था कि वह पिछले दस-ग्यारह दिन से गुण्डों की कैद में है । मैं समझ गयी कि कम-से-कम लड़के की जान को कोई खतरा नहीं है, होता तो दस ग्यारह दिन से वे उसे कैद में न रखे होते —मैंने लड़के को समझा दिया था कि वह मेरे बारे में किसी से जिक्र न करे—यदि उसने ऐसा किया तो मैं कभी उसे कैद से निकालने नहीं पहुंच सकूंगी । लड़का समझदार था—सो, संक्षेप ही में समझ गया—वहां से मैं लड़के के दिये हुए एड्रेस पर पहुंची—वह एक बड़े सरकारी डॉक्टर का बंगला था । नाम था डॉक्टर चंद्रेशगुप्ता—मैं गुप्ता जी से मिली, जब उनसे यह कहा कि मैं जानती हूं कि कुछ गुण्डों ने उनके बेटे को अगुवा किया हुआ है तो वे चौंक पड़े—मेरे यह बताने पर वे अधीर हो उठे कि मैं उनके बेटे से मिलकर आ रही हूं , बार-बार पूछने लगे कि उनका बेटा कहां है और मैंने गर्म लोहे पर चोट करके यह जान लिया कि उनके बेटे को क्यों और किस ने अगुवा कर रखा है ?"

"क्या पता लगा आपको ?"

"डॉक्टर गुप्ता ने बताया कि बेटे के अगुवा होने के एक घण्टे बाद ही उनसे भंवर मिला था और उसने धमकी दी थी कि अगर उन्होंने पोस्टमार्टम रिपोर्ट में यह लिखा कि संध्या की मौत जहर से हुई है तो उनके बेटे को खत्म कर दिया जायेगा—भंवर की तरफ से उन्हें यह हुक्म मिला कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में संध्या की मौत का कारण उसकी कनपटी पर गोली दिखायी जानी चाहिये और मजबूर डॉक्टर गुप्ता को ऐसा ही करना पड़ा—डॉक्टर गुप्ता ने बताया कि वे भंवर की मनचाही रिपोर्ट दे चुके हैं और बार-बार आश्वासन दे रहे हैं कि वे जुबान नहीं खोलेंगे मगर भंवर उनके बेटे को नहीं छोड़ रहा है—मैंने उन्हें समझाया कि अगर उन्होंने भंवर से मेरा जिक्र किया तो अपने बेटे से हाथ धो बैठोगे और ज्यादा कुछ भी बताये बगैर वहां से लौट आयी—भंवर को इल्म तक नहीं हुआ था और मैं बहुत कुछ जान चुकी थी—अब मेरे लिए यह कल्पना कर लेना दो में दो जोड़ने जितना आसान था कि संध्या को जहर देकर भंवर पहले ही मार चुका था । संजय ने तो सोती समझकर सिर्फ लाश को गोली मारी—यहां मैं तुम्हारा यह भ्रम दूर कर देना चाहती हूं मिस्टर संजय कि इंसान की मृत्यु के तत्काल बाद उसके

जिस्म का सारा खून पानी में तब्दील हो जाता है—यह सच्चाई नहीं है, मृत्यु के बाद खून धीरे-धीरे पानी में तब्दील होता है और उस वक्त संध्या को मरे ज्यादा वक्त नहीं गुजरा था जब तुमने उसे गोली मारी—इसी वजह से जिस्म से खून उबल पड़ा, यह तुम्हारा भ्रम है कि गोली लगते ही संध्या पल-भर के लिए छटपटाई थी—ऐसा भ्रम तुम्हें आराम-कुर्सी के फट्टों पर झूलने और गिलास टूटने पर छाई हड़बड़ाहट के कारण हुआ था—खैर, डॉक्टर गुप्ता से मिलने के बाद मैं डिफेंस कॉलोनी स्थित भंवर के बंगले के पीछे पहुची, वहां से चोरों की तरह संध्या के बेडरूम में—उस वक्त रात के आठ बजे थे । मैंने इत्मीनान से कमरे की तलाशी ली—इस तलाशी में मेरे हाथ एक डायरी लगी, संध्या की पर्सनल डायरी थी वह—डायरी में साफ-साफ लिखा था कि उसकी डायरी लिखने वाली आदत से भंवर भी अनजान है—इस डायरी से अन्य बहुत-सी बातों के अलावा मुझे सात अक्तूबर वाली घटना का भी ब्यौरा मिला जिनमें अपनी और दूसरे स्रोतों से मिली जानकारी 'मिक्स' करके संध्या बनी मैंने कुछ देर पूर्व भंवर को कोर्ट में पस्त किया है ।"

"कौन-सी जानकारियां डायरी में थीं, कौन-सी काल्पनिक और कौन-सी अन्य स्रोतों से मिली हुई ?"

"डायरी में संध्या ने यह लिखा था कि भंवर किस तरह उसके पास आया—खत के द्वारा किस तरह उसे विश्वास में लिया—किरन को किये गये फोन के बारे में भी लिखा था उसने—अन्त इस शंका के साथ था कि मुझे धोखे में डालकर भंवर ने शायद पानी में 'पॉयजन' मिला दिया था ।"

"यानि डायरी में यह नहीं लिखा था कि संध्या ने मरने से पहले 'सुसाइड-नोट' पढ़ लिया था?"

"नही!" विभा ने जवाब दिया—"यह बात तो मैंने भंवर को तोड़ने के लिए इस आधार पर कही थी क्योंकि किरन की कहानी सुनकर जान चुकी थी कि संध्या के वक्षस्थल में उसे सुसाइड-नोट मिला था—यह मेरी कल्पना थी कि यह 'नोट' भंवर ने संध्या से उपन्यास का अंश लिखवाने वाले दिन लिखवाया होगा—पानी में जहर मिलाने और खत बदलने के टाइम मैंने अपने अनुमान से फिट कर लिए थे ।"

"खैर!" न्यायाधीश महोदय ने कहा—"इसका मतलब यह है कि आप स्पष्ट तौर पर उसी दिन यह रहस्य जान गई थीं कि संध्या का हत्यारा भंवर है, जिस दिन राजनगर आईं?"

"यह सच है योर ऑनर!"

"फिर आपने इतने दिन क्यों गंवाये, सच्चाई को तुरन्त कानून के

सामने क्यों नहीं ले आई और त्रिवेन्द्रम के साथ मिलकर किरन को निर्दोष तथा संजय को कातिल साबित करने के झमेले में क्यों पड़ी रही?"

"इतना समय भंवर के खिलाफ मुकम्मल सबूत जुटाने और उस जाल को बुनकर तैयार करने में लगा जिसमें फंसने के बाद भंवर खुद अपना गुनाह कुबूल कर ले।" विभा कहती चली गयी—"किरन और संजय के झमेले में जहां मैं इसलिये पड़ी रही क्योंकि यह राज जानना चाहती थी कि किरन को संजय का पूरा प्लान कैसे पता लगा, वहीं दूसरी वजह भंवर को इस 'भ्रमजाल' में फंसाये रखना भी थी कि मैं केवल किरन और संजय में ही उलझी हुई हूं, उसकी करतूत का तो इल्म तक नहीं है।"

"क्या मतलब?"

"संध्या की डायरी हाथ लगते ही मैंने निश्चित कर लिया था कि भंवर को फंसाने के लिए कब, कहां और किस किस्म का जाल बिछाना है अतः संजय की कोठी पर पहुंचने से पहले ही मैं 'ताज होटल' में ठहरे श्रीकान्त के पास पहुंची।"

न्यायाधीश ने पूछा—"कौन श्रीकान्त?"

"वीणा की तरह मेरा एक सहायक है।"

"क्या वह जिन्दलपुरम् से आपके साथ आया था?"

"साथ नहीं आया बल्कि मेरे निर्देश पर एक दिन पहले राजनगर आकर 'ताज' के एक निर्धारित 'सूइट' में ठहर गया था—उसकी जानकारी वेद या संजय को भी नहीं थी। इस किस्म के इन्तजाम कर लेना मेरी कार्य-प्रणाली का हिस्सा है। अपने सहयोगियों की मदद मैं ऐसी ही 'इमरजेंसी' पड़ने पर लेती हूं—जैसी पड़ी थी। संध्या की डायरी से मुझे उसका एक फोटो भी मिला था। श्रीकान्त को निर्देश दिये कि जल्दी-से-जल्दी वीणा, मेरे फेस मास्क और संध्या के फेस मास्क सहित जिन्दलपुरम् से लोटे—सूइट बुक रहने दे ताकि मैं हर रोज फोन करके मालूम करती रहूं कि वह लौटा है या नहीं?"

"इसके बाद आपने क्या किया?"

"ताज से सीधी संजय की कोठी पर पहुंची—वहां वेद ने पूछा कि मैं गाड़ी से क्यों उतर गयी थी? उस वक्त इतने अच्छे मूड में थी मैं कि मजाक में कुछ ऐसा कहा कि वेद मेरी शक्ल देखता रह गया—वह समझ गया कि मैं असलियत बताने के मूड में नहीं हूं—रात को जब बिस्तर पर लेटी तो दिन-भर में घटी घटनाओं और बरामद जानकारियों पर मनन किया—यह कल्पना करने में मुझे किसी किस्म की दिक्कत पेश नहीं आयी कि अपनी जानकारी में भंवर संध्या को ऐसा जहर पिलाकर जा चुका था जिसके परिणाम स्वरूप कुछ देर बाद संध्या मर

जाने वाली थी—इसकी प्लानिंग के मुताबिक पुलिस इसी नतीजे पर पहुंचनी थी कि संध्या ने आत्महत्या की है—वहां से भंवर सीधा अपने ऑफिस पहुंचा होगा, वहां उसे अलका ने नाम से छोड़ा गया संजय का मैसेज मिला—सबसे पहले भंवर की खोपड़ी उस वक्त चकराई होगी जब उसने गांधी-पार्क से फोन पर अपनी रिसेप्शनिस्ट और अलका से बात की—बंगले पर पहुंचने पर उस वक्त तो इसके होश ही उड़ गये होंगे जब संध्या की लाश को अपनी कल्पनाओं और प्लानिंग से ठीक विपरीत अवस्था में पाया—सारे हालात पता लगने पर जहां अन्दर-ही-अन्दर यह हलकान हो उठा होगा वहीं यह सोचकर खुश भी होगा कि इसके द्वारा दिये गये जहर का तो कहीं जिक्र ही नहीं है—सब यही सोचे रहे हैं कि हत्या गोली से हुई है। किरन पकड़ी भी गयी—वह स्वीकार भी कर चुकी है हत्या उसी ने की है। ढेर सारे सुबूत भी बरामद कराये—उसके देखते-ही-देखते संध्या के सुसाइड-नोट को भी किरन का समझ लिया गया—कहने का मतलब यह कि स्वयं ही उसके लिये एक आदर्श स्थिति बन गयी थी और बदलती हुई परिस्थितियों को खण्डित कर सकती थी पोस्टमार्टम की रिपोर्ट—यह रिपोर्ट सारे मामले को उलट सकती थी—किसी को यह पता लगना उसके हक में नहीं था कि संध्या जहर से मरी है अतः किराये के गुण्डों से डॉक्टर गुप्ता का लड़का अगुवा कर मनचाही रिपोर्ट बनवाई—जब मैंने रूबी को थाने बुलवाकर हेयर-बैण्ड के बारे में सवाल-जवाब किये और बाद में उसे वहीं से भेज दिया तो निश्चित-रूप से उसने थाने में चल रही कार्यवाही की सूचना किसी माध्यम से भंवर को दी—यह सुनते ही उसके पेट में दर्द होने लगा कि विभा नामी कोई इन्वेस्टीगेटर केस की 'रि-इन्वेस्टीगेशन' कर रही है—सो उसने अपने किराये के गुण्डों को मुझे फॉलो करने का हुक्म दिया—यह भंवर की सबसे बड़ी भूल थी, थाने से निकलते ही गुण्डों ने हमारा पीछा शुरू कर दिया। वे मेरी नजर में आ गये और उसी का परिणाम था कि राजनगर में कदम रखते ही मैं पहली ही रात को सारा केस इतनी गहराई तक पकड़ गयी।"

विभा कहती चली गयी—'फिर भी, भंवर को फंसाने के लिये मुझे संध्या के फेस-मास्क की जरूरत थी योर ऑनर! यह गुत्थी भी सुलझानी थी मुझे कि किरन को संजय का मुकम्मल प्लान किस तरह पता लगा—अपने द्वारा पेश किये गये तथ्यों और तर्कों द्वारा ही मैं त्रिवेन्द्रम को इस हद तक कन्विन्स करने में कामयाब हुई कि इसने मेरे निर्देश पर किरन के विरुद्ध केस वापिस लिया—जैसा कि पहले ही कह चुकी हूं, मेरा सिद्धान्त अन्तिम समय तक मुजरिम को इस भ्रमजाल में फंसाये रखना है कि सबकुछ उसी की इच्छा के मुताबिक और फेवर में हो रहा

है—कहीं कोई गड़बड़ नहीं है। इसी सिद्धान्त पर अमल करती हुई मैंने कचहरी में भंवर से गिलास के बारे में सवालत करने के बहाने उसके दिमाग में यह बात बैठा दी कि मैं किरन की जगह संजय को संध्या का हत्यारा साबित करने जा रही हूं—ऐसा इसलिये किया क्योंकि समझ रही थी किरन पर से केस वापिस लिये जाने के कारण वह अन्दर-ही-अन्दर यह सोचकर घबराया हुआ है कि जाने मैं किस फिराक में हूं—उस वक्त वह इस शंका से मरा जा रहा होगा कि कहीं मैं उसकी करतूत न खोल दूं और डरा हुआ मुजरिम हमेशा खतरनाक होता है—बौखलाहट की उस अवस्था में वह मुझ पर या मेरे किसी साथी पर हमला कर सकता था—अपने गुर्गों की कैद में फंसे डॉक्टर गुप्ता के बेटे को नुकसान पहुंचा सकता था—जबकि कचहरी में हुई बातों के बाद उसने अपने गुर्गों से मुझे फॉलो नहीं कराया, करता भी क्यों—यह बात उसके दिमाग में मैंने ठूंस-ठूंसकर जो भर दी थी कि मैं उसके लिये किंचित-मात्र भी खतरनाक साबित नहीं होने जा रही हूं। मेरा सारा ध्यान संजय को कातिल साबित करने में है—मुझे जिन्दलपुरम् से श्रीकान्त वीणा और दोनों फेस मास्क पहुंचने का इन्तजार था। उसके पहुंचते ही मैंने त्रिवेन्द्रम को संजय को गिरफ्तार करके कोर्ट में पेश करने का निर्णय दिया—यह भी कहा कि वह अखबार वालों में इस गिरफ्तारी का खूब प्रचार करें—उद्देश्य वही था, भंवर को अंतिम समय तक खुशफहमी के भ्रमजाल में फंसाये रखना—आज सुबह ही वीणा ने विभा बनकर मेरी जगह ले ली थी और मैं सीधी पुलिस कमिश्नर के बंगले पर पहुंची—अपना 'इन्ट्रोडक्शन' देने के बाद ये ही सारी बातें बताईं जो अदालत सुन चुकी है। मैंने हैल्प मांगी और कमिश्नर साहब ने पूरी मदद की—इस अदालत में कदम रखने से पूर्व कमिश्नर साहब खुद अपने नेतृत्व में डॉक्टर गुप्ता के बेटे को भंवर के गुण्डों की कैद से आजाद कराकर डॉक्टर गुप्ता के सुपुर्द कर चुके हैं—कुल मिलाकर वे चार गुण्डे थे, चारों पकड़े गये—अब डॉक्टर गुप्ता बिना खौफ के संध्या की वास्तविक पोस्टमार्टम रिपोर्ट अदालत में प्रस्तुत करने के लिये तैयार है।"

भंवर का चेहरा अभी भी वैसा ही नजर आ रहा था।

कोल्हू के पाटों के बीच से निकले गन्ने जैसा।

□□□

जिस मुल्जिम के खिलाफ विभा ने सुबूत जुटाये हों, डॉक्टर गुप्ता और उसके बेटे जैसे गवाह जुटाये हों और फिर केस भी खुद ही लड़ा हो उस फांसी से कम सजा होती भी तो कैसे?

एक बार फिर मुझे एक 'पेचीदा' उपन्यास लिखने के लिये मसाला

मिल गया—इस कथानक पर उपन्यास लिखने के लिए मैंने संजय से बाकायदा इजाजत ली।

उसने इस शर्त के साथ इजाजत दी कि भले ही मैं घटनायें वहीं लिखूं मगर उसका और उसकी पत्नी का असली नाम न दूं अतः 'संजय' और 'किरन' नाम काल्पनिक हैं।

जब मैंने उसे अपने इस उपन्यास का 'शीर्षक' बताया तो झेंपकर रह गया बेचारा।

कानून ने संजय को बेगुनाह करार दिया था परन्तु किरन नें उसे माफ नहीं किया, उसने बेगुनाह नहीं माना।

अदालत में तलाक के लिये 'एप्लीकेशन' लगा दी उसने। अब वह अपने माता-पिता के घर रहती है—उसे मैंने ही नहीं, विभा ने भी समझाने की कोशिश की, कहा—"इतनी नफरत ठीक नहीं है किरन, जिसे कानून हत्यारा नहीं मानता उसे 'तुम' इतनी बड़ी सजा क्यों दे रही हो?"

ठीक नागिन की तरह फुंकारकर कहा था उसने—"आपके कानून के सीने में दिल नहीं पत्थर है विभाजी, जबकि किरन के सीने में दिल है—संजय ने मेरी सहेली की हत्या करने के पूरे-पूरे इरादे से उसे गोली मारी थी, उस वक्त उसके दिलो-दिमाग में दूर-दूर तक केवल एक ही विचार था—यह कि वह हत्या कर रहा है। ऐसा शख्स हत्यारा नहीं तो और क्या है—कमाल की बात है, आपका कानून उसे हत्यारा नहीं मानता। जलाकर फेंक दीजिये ऐसे कानून को।'"

□□□

इस उपन्यास का मुख्य किरदार आपकी आंखों के सामने एक मर्डर करेगा और फिर अचानक उपन्यास के पृष्ठों से निकलकर आपके सामने आ खड़ा होगा और कहेगा कि 'आप जान चुके हैं कि मैंने किस प्लानिंग के साथ हत्या की, क्या आप मुझे अदालत में हत्यारा साबित कर सकते हैं?'

उस वक्त आपको वह 'प्वाइंट' खोजना होगा जिसके बूते पर मुख्य किरदार को हत्यारा साबित किया जा सके, उस वक्त आपकी हैसियत एक जासूस की होगी और इस उपन्यास के अंतिम पृष्ठ तक पहुंचते-पहुंचते आप स्वयं जान जाएंगे कि आप एक सफल और सुलझे हुए जासूस हैं या नहीं।

बीवी का नशा

वेदप्रकाश शर्मा का आगामी नया थ्रिलर उपन्यास

सबसे बड़ी मर्डर मिस्ट्री

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है, अपनी प्रति तुरंत सुरक्षित करवाएं

ISBN 978-81-849-1084-1
9 788184 910841
Price : ₹ 80
A.H.W. TIGER SERIES